

لماذا أحبُّ مُحَمَّدًا ﷺ؟ بكل لغات العالم الحيّة -اللغة الهندية -

مैं मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से क्यों प्यार करता हूँ?
दुनिया की सभी जीवित भाषाओं में -हिंदी -



جامعة حيدر آباد

حدائق الشاي

लेखक: अहमद अल-हज्ज जौद अल-खैर

समीक्षा और संपादन: क़बास अल-अनी

मैं मुहम्मद ﷺ से प्रेम क्यों करता हूँ?

लेखक: अहमद अल-हाज्ज जूद अल-खैर

समर्पण

इस पुस्तक को हम हर उस सत्य के खोजी को समर्पित करते हैं, जो निष्पक्षता, वस्तुनिष्ठता और पारदर्शिता के साथ, गुटबंदी, कट्टरता और पूर्वाग्रह से दूर रहकर सत्य की खोज करता है, तथा अल्लाह के नेक बंदों और अंतिम नबियों व रसूलों में सबसे प्रिय, मुस्तफा ﷺ के चाहने वालों को भी समर्पित करते हैं। हम सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करते हैं कि वह इसे हमारी ओर से स्वीकार करे, इसे हमारे नेक कर्मों की तुला में रखे, और हमारे कार्यों का अंत भलाई पर करे।

संकलन: अहमद अल-हाज्ज जूद अल-खैर

1 रबीउलअव्वल 1448 हिजरी

भूमिका

“क्योंकि यदि वे तुम्हें जान जाएँगे, तो तुम्हें पथराव करके मार डालेंगे या तुम्हें अपने धर्म में लौटा लेंगे और उस समय तुम कभी सफल नहीं हो सकोगे।”

— कुरआन, सूरा अल-कहफ़ 18:20 (अनुवाद: अज़ीजुल हक़ अल-उमरी)

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, तथा दरूद व सलाम हो अल्लाह के रसूल पर, उनकी आल (परिजनों), उनके सहाबा और उनका अनुसरण करने वालों पर। अब आगे:

प्राच्यवाद (ओरिएंटलिज़्म) ने इस्लाम और मुसलमानों के बारे में एक विकृत, रूढ़िबद्ध छवि गढ़ने और उसे विशेष रूप से पश्चिमी लोगों के मन में जड़ जमाने में बड़ी भूमिका निभाई है, जो बिना किसी आलोचना या जाँच-पड़ताल के पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रही। इस घृणित रूढ़िबद्धता को इतिहास की सबसे बड़ी मीडिया संस्था – हॉलीवुड (Hollywood) – ने विभिन्न मकसदों और लक्ष्यों के लिए दुनिया भर में अरबों और मुसलमानों की छवि को धूमिल करने का साधन बना लिया।

तेरहवीं शताब्दी ईस्वी में शुरू हुआ प्राच्यवाद आंदोलन कई चरणों से गुज़रा, जो अपनी दृष्टि, उद्देश्य, तौर-तरीकों, लक्ष्यों और पद्धतियों में एक-दूसरे से भिन्न थे। इनमें से कुछ का उद्देश्य औपनिवेशिक था, कुछ का मिशनरी, आर्थिक, सांस्कृतिक या खुफिया प्रकृति का। कुछ प्राच्यविदों ने पवित्र कुरआन का अध्ययन इसलिए किया ताकि मुसलमानों के अपने रब की किताब पर दृढ़ ईमान को हिला सकें – यह जान लेने के बाद कि वह एक अभेद्य क़िला

है, जो उनके अक्रीदे की रक्षा करता है, उनके कदम जमाता है, उनकी अंतर्दृष्टि को रोशन करता है, उनके जीवन को व्यवस्थित करता है और उनके ईमान को मज़बूत बनाता है।

कुछ प्राच्यविदों ने नबी ﷺ के व्यक्तित्व और उनकी सुगंधित जीवनी का अध्ययन ताना मारने और संदेह पैदा करने के उद्देश्य से किया, कुछ ने अरबी भाषा तथा अरब व इस्लामी इतिहास के अध्ययन में विशेषज्ञता हासिल की, जबकि अन्य इस्लामी अक्रीदा और दर्शनशास्त्र के अध्ययन की ओर मुड़े, और कुछ ने फ़िक्ही, वैज्ञानिक, बौद्धिक और साहित्यिक विरासत पर ध्यान केंद्रित किया – कभी शोधात्मक दृष्टिकोण से, कभी भौतिकवादी दृष्टिकोण से, और कभी वैचारिक दृष्टिकोण से, और इसी तरह आगे भी।

इनके सामने वे प्राच्यविद् भी थे जिन्होंने इस्लाम के बारे में निष्पक्षता, वस्तुनिष्ठता और काफ़ी हद तक पूर्वाग्रह से मुक्त होकर, शोध, जाँच-पड़ताल और विश्लेषण के साथ लिखा – किंतु विशुद्ध रूप से सांसारिक और भौतिकवादी दृष्टिकोण से। अर्थात् उन्होंने नुबुव्वत (नबूवत) और रिसालत (पैगम्बरी) की चर्चा एक प्रकार की प्रतिभा, मानव-बुद्धि की एक अद्वितीय झलक, सुधार की एक अग्रणी पद्धति, शूरवीरों की श्रेष्ठता और साहस की चमक, तथा बुद्धिमानों की करिश्माई शख्सियत और सुधारकों व समझदारों की विशेषता व प्रभाव की एक किरण के रूप में की। जबकि नुबुव्वत और रिसालत भले ही इन सभी उत्तम व शानदार गुणों से युक्त हों और उन्हें समेटे हुए हों, परंतु वे इन्हीं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह तो ब्रह्मांड के महान रचयिता की ओर से वह वहय (प्रकाशना) है, जो वह अपनी सर्वश्रेष्ठ सृष्टि में से जिसे चाहे चुन ले, ताकि वह अपना संदेश मानव जाति में से जिसे चाहे और जब चाहे पहुँचाए।

इसके विपरीत, कुछ प्राच्यविदों ने इस्लाम का अध्ययन इसे अच्छी तरह समझने और आत्मसात करने के लिए किया, और उनमें से कुछ इस पर ईमान लाए और इसे अपना अक्रीदा व धर्म बना लिया। परंतु जब से डेनिश समाचार-पत्र यूलैंड्स-पोस्टेन (Jyllands-Posten) ने वर्ष 2005 में इस्लाम के विरुद्ध आपत्तिजनक व्यंग्य-चित्र प्रकाशित किए, तब से एक निरंतर, उग्र अभियान चल रहा है – कभी शांत होता है तो बिना किसी पूर्व-सूचना के फिर भड़क उठता है – जिसने दुनिया भर के करोड़ों मुसलमानों की भावनाओं को आहत किया है। इससे पहले बच्चों के लिए एक हास्य-चित्र पुस्तक प्रकाशित हुई थी, जिसमें आदरणीय रसूल ﷺ को विकृत रूपों में दिखाया गया था, फिर 'साउथ पार्क' (South Park) नामक एक कार्टून धारावाहिक आया, जिसमें नबी मुहम्मद ﷺ को ऐसे रूप में दिखाया गया जिसका जिक्र करना भी उचित नहीं। यह सब पादरी अनीस शोरोश (Anis Shorrosh) की पुस्तक 'अमेरिकी अल-फुरक़ान' के प्रकाशन के साथ ही घटित हुआ।

इस प्रकार उग्र मीडिया अभियान लगातार जारी रहे और मस्जिदों, अज़ान, हलाल भोजन, शरई पहनावे, इस्लामी तरीके से दफ़न, शरई विवाह, रमज़ान के रोज़े तथा हज व उमरा –

सभी को निशाना बनाते रहे, जिसके परिणामस्वरूप अनेक भ्रांतियाँ, समस्याएँ और उलझनें पैदा हुई, और लाखों गैर-मुस्लिमों के सामूहिक मानस में इस सत्य-धर्म की वास्तविकता को लेकर एक गहरी गलतफ़हमी जड़ पकड़ गई। इसके बाद तथाकथित पार्टी "स्ट्राम कुर्स" (या "कट्टर रेखा") के प्रमुख, डेनिश दक्षिणपंथी अतिवादी रासमुस पालूदान (Rasmus Paludan) ने बार-बार, खुलेआम और दिन-दहाड़े विभिन्न स्थानों पर पवित्र कुरआन की प्रतियाँ जलाई – जिसका बाद में स्वीडन और नॉर्वे में दक्षिणपंथी अतिवादियों द्वारा अनुकरण किया गया। इसी दौरान फ़्रांसीसी पत्रिका शार्ली एब्दो (Charlie Hebdo) ने अचानक फिर से वे आपत्तिजनक व्यंग्य-चित्र प्रकाशित कर दिए, और 'स्टॉप इस्लामाइज़ेशन ऑफ यूरोप' नामक संगठन ने नए आपत्तिजनक चित्रों की एक प्रतियोगिता आयोजित करने का संकल्प लिया। यह सब उन उकसाने वाली कार्रवाइयों की एक कड़ी है, जिन्हें 'इस्लामोफोबिया' और उसके साथ जुड़े 'महान प्रतिस्थापन' (Great Replacement) नामक सिद्धांत – या यूँ कहें कि परिकल्पना – के नाम से जाना जाता है।

प्रोफ़ेसर ओलिवर ले कूर ग्रांडमेज़ों (Olivier Le Cour Grandmaison), फ़्रांसीसी विश्वविद्यालय 'एवरी वाल देसों' (Évry Val d'Essonne) में राजनीति विज्ञान के प्राध्यापक, ने वर्ष 2021 में तुर्की समाचार एजेंसी अनादोलू (Anadolu Agency) को दिए एक साक्षात्कार में इन सभी कारणों का सार प्रस्तुत करते हुए पुष्टि की कि "फ़्रांस में इस्लाम और मुसलमानों को निशाना बनाना, उन्हें राक्षसीकृत करने के प्रयास, और आज उनके बारे में जो कुछ लिखा जा रहा है, वह उन्नीसवीं सदी के अंत से चली आ रही उसी परंपरा की निरंतरता है।"

ग्रांडमेज़ों आगे कहते हैं: "आज इस्लाम-विरोधी सिद्धांतों को बढ़ावा देने के प्रयास किए जा रहे हैं, जो औपनिवेशिक युग के समान सिद्धांतों और दावों की ही शाखाएँ हैं, साथ ही इस दावे को फिर से जीवित किया जा रहा है कि फ़्रांस में इस्लाम गणतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और लैंगिक समानता के सिद्धांतों के लिए खतरा है।"

हमने इस पुस्तक "मैं मुहम्मद ﷺ से प्रेम क्यों करता हूँ?" में – जो विश्व की सबसे अधिक बोली और प्रचलित 40 जीवित भाषाओं में प्रकाशित हो रही है – इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि हम उन बड़े-बड़े प्रसिद्ध हस्तियों की एक शृंखला प्रस्तुत करें, जिनके इस्लाम अपनाने का लोगों के दिलों पर गहरा प्रभाव पड़ा। इनमें से अधिकांश अल्लाह पर पालनहार के रूप में, इस्लाम पर धर्म के रूप में, मुहम्मद ﷺ पर नबी व रसूल के रूप में, पवित्र कुरआन पर एक प्रकाशमान किताब व स्पष्ट मार्गदर्शक के रूप में, काबा को क़िबला के रूप में, और पहली उत्तम पीढ़ी के सहाबा व नेक बुजुर्गों को अपने प्रिय व साथी के रूप में – ईमान लाए। उन्होंने इस सच्चे धर्म की सेवा के लिए कड़ी मेहनत की और इसी उद्देश्य के लिए सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, दावती (प्रचार) और परोपकारी केंद्र स्थापित करने शुरू किए, ताकि वे स्वयं दुर्भावनापूर्ण दावे करने वालों की मनगढ़ंत बातों का – "और उन्हीं में से एक

गवाह ने गवाही दी" या "तेरे ही मुँह से तुझे दोषी ठहराता हूँ" के अनुसार – जवाब दे सकें। यही वे लोग हैं जिन्होंने पूरी लगन से कमर कस ली ताकि सूझबूझ, हिकमत (बुद्धिमत्ता) और अच्छी नसीहत के साथ इस सीधे धर्म के सिद्धांत गैर-मुस्लिमों को समझा सकें, और उनका मार्गदर्शक-सिद्धांत नबी ﷺ का यह कथन था: "अल्लाह की कसम! यदि अल्लाह तेरे द्वारा एक भी व्यक्ति को हिदायत दे दे, तो यह तेरे लिए लाल ऊँटों (अर्थात् सबसे बहुमूल्य चीजों) से बेहतर है" – अर्थात् तेरी कलम के प्रभाव से, तेरी ज़बान की वाक्पटुता से, तेरे तर्क की मज़बूती से, तेरे तर्कों की दृढ़ता से, तेरे उच्च आचरण से, तेरी लगन और तेरे प्रयासों की सच्चाई से किसी एक व्यक्ति का मार्गदर्शन हो जाना, तेरे लिए सबसे बहुमूल्य और सबसे उत्तम चीज़ें दिए जाने से कहीं बेहतर है।

इसी सिलसिले में लाखों मुसलमान अपने नबी, अपने कुरआन और अपने धर्म की रक्षा के लिए उठ खड़े हुए – हर एक अपनी स्थिति, अपनी विशेषज्ञता और अपनी सामर्थ्य के अनुसार, और अल्लाह किसी भी आत्मा पर उसकी सामर्थ्य से अधिक बोझ नहीं डालता। जितना उस व्यवस्थित आपत्तिजनक अभियान ने हमें दुखी किया, उतना ही उसने हमारे दिलों में ईमानी जोश और आध्यात्मिक स्फूर्ति भी भर दी, जिसने हम लेखकों, साहित्यकारों, पत्रकारों, कहानीकारों और उपन्यासकारों को अपनी कलमों की सवारी करने और शब्दों की धूल को चीर देने के लिए प्रेरित किया। हमने अपनी कलमों में उँची उठाई, और इसमें हमारी तसल्ली यह है कि अल्लाह तआला ने कलम की कसम खाई है, तलवार की नहीं – और सिर्फ़ इतना ही नहीं, बल्कि उसने अपनी कसम को सत्य के नबी और समस्त सृष्टि के प्रिय ﷺ की रक्षा से भी जोड़ा है, अपने इस कथन में:

"नून! कसम है कलम की तथा उसकी जो वे लिखते हैं। आप, अपने रब के अनुग्रह से हरगिज़ दीवाना नहीं हैं।"

– कुरआन, सूरा अल-कलम 68:1-2 (अनुवाद: अज़ीजुल हक़ अल-उमरी)

और अब मैं आप सबके समक्ष यह संस्करण प्रस्तुत करता हूँ, जो सभी के लिए पूर्णतः निःशुल्क उपलब्ध है – उद्धरण, मुद्रण, प्रकाशन, प्रचार, नसीहत और अनुवाद के लिए – जिसका व्यापक व स्पष्ट शीर्षक है "मैं मुहम्मद ﷺ से प्रेम क्यों करता हूँ?", और जो विश्व की समस्त जीवित भाषाओं में प्रकाशित हो रहा है। यह उन लेखों की शृंखला का समग्र रूप व पूर्णता है, जो इसी लेखक ने वर्षों पूर्व इसी शीर्षक से अनेक समाचार-पत्रों व पत्रिकाओं – मुद्रित तथा इलेक्ट्रॉनिक – में प्रकाशित किए थे। मैं सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करता हूँ कि वह इसे स्वीकार करे और इसे बरकत प्रदान करे।

मैं समस्त प्रिय पाठकों को यह भी बता दूँ कि इस पुस्तक में अनेक विषयों व मुद्दों को सरल किंतु प्रभावशाली शैली में, एक रोचक पत्रकारिता अंदाज़ में तथा जटिलता व पेचीदगी से दूर, एक सहज मीडिया शैली में लिखा गया है। यदि हमने जो कुछ लिखा, प्रस्तुत किया

और बयान किया, उसमें हम सही रहे, तो यह केवल अल्लाह तआला की ओर से है – वही उपकार, सच्चाई और अनुग्रह का स्वामी है – और यदि हमसे कोई भूल हुई हो, तो वह हमारी अपनी कमी और शैतान की ओर से है। हम अल्लाह तआला से अच्छे अंत, निष्ठा, सफलता और क्षमा की प्रार्थना करते हैं। और हम इस धरती के समस्त राष्ट्रों व जनसमूहों से क्षमा चाहते हैं यदि हम आपके पास इस धर्म की सच्चाई को आपकी अपनी भाषाओं में पहुँचाने में देर से आए – बिना किसी अतिरेक व कोताही के, बिना उबाऊ लंबाई के और बिना अधूरे संक्षिप्तीकरण के, और सबसे अच्छी बात वही है जो कम हो पर पूरी बात कहे। जैसा कि कहावत है – देर से आना, कभी न आने से बेहतर है। और यदि डिजिटल, तकनीकी व सूचना-क्रांति से पहले हमारा बहाना आप तक पहुँचने की कठिनाई थी, तो अब हम क्या कहें, जबकि सारी दुनिया एक छोटे से गाँव में बदल चुकी है – बगदाद में एक अक्षर लिखते ही वह हवा में उड़कर साइबर-अंतरिक्ष को चीरता हुआ पलक झपकते और एक बटन दबाते ही बीजिंग तक जा पहुँचता है?!

नदी एल्बे के किनारे से यह कहानी शुरू हुई

“और (ऐ नबी!) हमने आपको समस्त संसार के लिए दया बनाकर भेजा है।”

– कुरआन, सूरा अल-अंबिया 21:107 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

वहाँ, नदी 'एल्बे' (Elbe) के किनारे, जहाँ जर्मनी का दूसरा सबसे बड़ा और सबसे घनी आबादी वाला व्यापारिक शहर 'हैम्बर्ग' (Hamburg) विश्राम करता है, यह कहानी शुरू हुई। वहीं से प्रेम एक व्यापक क्षितिज की ओर ऊँचा उड़ा – आज्ञापालन और अनुसरण का प्रेम, न कि अवज्ञा और नवाचार का प्रेम, क्योंकि प्रेम करने वाला अपने प्रियतम का आज्ञाकारी होता है। हम एक शानदार रेस्तराँ में देर रात एक गोल भोजन-मेज़ के इर्द-गिर्द बैठे बातचीत में मशगूल थे, कि तभी एक जर्मन नागरिक विमान-चालक (कैप्टन) हमारी मेज़ पर आ बैठा – उसने स्वयं को उस समय ऐसा ही परिचय दिया था, हालाँकि हमें नहीं मालूम कि उसका यह दावा सच था या नहीं – और जैसे ही उसे पता चला कि हम मुसलमान हैं, उसने हमसे एक अप्रत्याशित प्रश्न पूछा, जो सुनने वालों को जिज्ञासापूर्ण और सहज लग सकता था, परंतु वास्तव में वह आलोचनात्मक, व्यंग्यात्मक और निंदात्मक था, जिसकी पंक्तियों के बीच खुली दुर्भावना छिपी थी। उसे सुनकर हमारे रोंगटे खड़े हो गए, हमारे दाँत बज उठे, हमारे दिल दहल गए, और उसकी झकझोर देने वाली शैली से हमारे शरीर में सिहरन दौड़ गई, जब उसने हमसे शब्दशः कहा: (तुम लोग मुहम्मद की पूजा करते हो.. आखिर क्यों?!)

मेरे साथी ने, जो धाराप्रवाह अंग्रेज़ी बोल लेता था, व्यर्थ ही उसे यह समझाने की कोशिश की कि उसकी यह धारणा पूरी तरह ग़लत है – भला एक ऐसे यूरोपीय व्यक्ति से, जिसे शिक्षित माना जाता है, इस तरह की अन्यायपूर्ण बात कैसे निकल सकती है, और उसके जैसे व्यक्ति

को ऐसी गंभीर गलतियों में नहीं पड़ना चाहिए। यदि यह किसी बात का संकेत देता है, तो केवल घोर अज्ञानता का, और इस बात का कि उसने अपने पूरे जीवन में इस्लाम के बारे में कभी कुछ नहीं पढ़ा। और यदि इस नागरिक विमान-चालक जैसे 'शिक्षित' व्यक्ति का यह हाल है, तो अर्ध-शिक्षितों या बिल्कुल अनपढ़ लोगों का क्या हाल होगा?!

और स्थिति को और बिगाड़ने वाली बात यह थी कि हमें उस समय नबी ﷺ की सुगंधित जीवनी के बारे में लगभग कुछ भी याद नहीं था, और पवित्र कुरआन में से हमें केवल सूरा अल-फ़ातिहा और सूरा अल-इख़लास ही याद थीं। उस दिन हमें नबी ﷺ के गुणों, उनकी जीवनी, उनके आचरण और उनकी पवित्र सुन्नत के बारे में बहुत ही थोड़ा-सा ज्ञान था, यहाँ तक कि मैंने चुप्पी साध ली और सोचने लगा कि आखिर हम मुसलमान होते हुए भी अपने नबी के बारे में इस घोर अज्ञानता का शिकार क्यों हैं..!

उस समय यदि जर्मन कैप्टन बातचीत का रुख मोड़ता और हमसे गायकों-गायिकाओं, अभिनेताओं-अभिनेत्रियों, खिलाड़ियों, चाहे अरब हों या विदेशी, जीवित हों या मृत – उनकी जीवनीयों के बारे में पूछता, तो वह हमारे पास इतना गहरा ज्ञान पाता कि स्वयं संबंधित लोग भी दंग रह जाते, और हम उनके बारे में बहुत-बहुत कुछ बता सकते थे....!!

हम उस आलीशान रेस्तराँ से निराशा और हताशा का बोझ लिए हुए बाहर निकले, क्योंकि हम अपने नबी ﷺ की रक्षा करने में असफल रहे थे – हम, जिन्होंने अपने देशों में यहाँ-वहाँ मनाए जाने वाले उनके पवित्र जन्मोत्सव के किसी भी वार्षिक आयोजन को कभी नहीं छोड़ा। इसका कारण यह था कि इनमें से कुछ आयोजनों ने हमें वह नहीं सिखाया जो सिखाया जाना चाहिए था – अर्थात् नबी ﷺ की जीवनी, उनके गुणों, उनकी वाचिक, कर्मगत और अनुमोदित सुन्नत का परिचय, साथ ही उन सभी बातों से पूरी तरह दूर रहना जो उनकी शिक्षाओं से टकराती हों, उनके निर्देशों के विरुद्ध हों, या उस मार्ग के विपरीत हों जिसके साथ उन्हें समस्त मानवता के लिए दया बनाकर भेजा गया। कुछ उत्सव तो केवल एक वार्षिक परंपरा और एक ऐसा मानवीय जमावड़ा बनकर रह गए हैं, जो अपनी दृष्टि, उद्देश्यों, संदेशों और सामग्री से पूरी तरह खाली हैं – जिसमें बस आतिशबाजी के साथ गीत गाना, मिठाइयाँ बाँटना, खाना-पीना, सजावट टाँगना और झंडे फहराना ही शामिल रह गया है। शायद यह भी एक और नेक संदेश है, जिसे भविष्य में गहराई से समझने और आत्मसात करने की ज़रूरत है, ताकि विरासत में मिली कुछ वार्षिक परंपराओं व रीति-रिवाजों का सुधार व मूल्यांकन किया जा सके, और वे अपने दावती, बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक अच्छे लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। कवि अहमद शौकी ने कितनी सुंदर बात कही है:

“तेरे भाई ईसा ने एक मुर्दे को पुकारा तो वह जी उठा... और तूने तो सड़ी-गली हड्डियों की पूरी-पूरी पीढ़ियाँ जीवित कर दीं।”

[शेर – मूल अरबी काव्य-पंक्ति का अर्थानुवाद, मूल छंद व लय सुरक्षित नहीं रखी गई है]

हम भारी कदमों से पीछे मुड़कर 'इंटरकॉन्टिनेंटल होटल' (Intercontinental) लौटे, जहाँ हम हैम्बर्ग के मध्य में 'अल्स्टर झील' (Alster) के निकट ठहरे हुए थे। इसके 36 घंटे बाद, हमसे उम्र में बड़े एक तीसरे मित्र ने बताया कि नबी ﷺ के जीवन और उनके शाश्वत संदेश पर बनी एक फ़िल्म, जिसका अंग्रेज़ी संस्करण जर्मन भाषा में अनूदित किया गया था, जर्मनी के एक सिनेमाघर में पहली बार कड़ी सुरक्षा के बीच प्रदर्शित होने जा रही है – इस डर से कि कहीं नव-नाज़ी उस सिनेमाघर पर हमला न कर दें। फ़िल्म शुरू हुई, आँसू बह निकले, सन्नाटा छा गया, भावनाएँ उमड़ पड़ीं, यादें ताज़ा हो गईं, प्रश्न उठने लगे, और जब भी फ़्रांसीसी संगीतकार मॉरिस जार (Maurice Jarre) की सिम्फ़नी गूँजती, हम प्रेम में और डूब जाते और मुस्त्फ़ा ﷺ की चाहत में उड़ान भरते – यहाँ तक कि फ़िल्म समाप्त हो गई... और हमने शुरुआत कर दी!!

यह शुरुआत हुई पवित्र कुरआन की तिलावत तथा उसके तजवीद व पाठ के नियमों को सीखने से, निरंतर उसे सुनने और ध्यान से सुनने से, उसे सीखने और सिखाने में पूरी शक्ति लगाने से, उसकी सूरतों की तफ़सीर और आयतों के अवतरण-कारणों को पढ़ने से, उसके अर्थों को समझने तथा जो शब्द व वाक्य समझ में न आते हों उन्हें जानने से, उसके आदेशों व निषेधों को समझने से, उसके उदाहरणों, विज्ञानों व नियमों का अध्ययन करने से, उसकी नसीहतों व शिक्षाओं को समझने से, उसकी कहानियों तथा अल्लाह के रसूलों व नबियों की जीवनियों को पढ़ने से, उसके भाषाई चमत्कार, उसकी वाक्पटुता व वाक्-कौशल को समझने से – इसके बाद पवित्र सुन्नत का उसके प्रामाणिक व मान्य स्रोतों से अध्ययन, उसी तरह नबी ﷺ की सुगंधित जीवनी का उसके विश्वसनीय स्रोतों से अध्ययन, तथा अक़ीदा, इबादत, सुन्नतों, आचरण व लेन-देन के नियमों को जानने के लिए मान्य पुस्तकों को पढ़ना, और जिस हलाल का पालन करना अनिवार्य है उसे उस हराम से अलग पहचानना जिससे बचना अनिवार्य है।

यह सच है कि हम उस अजनबी मेज़-साथी से उसके बाद फिर कभी नहीं मिले, परंतु वह क्षणिक मुलाकात हमारी पूरी ज़िंदगी को उलट-पुलट देने के लिए काफ़ी थी – कभी-कभी हानि में भी लाभ छिपा होता है। जैसा कि इमाम शाफ़िई अपनी उपदेशात्मक कविता में कहते हैं:

“कितनी ही विपत्तियाँ ऐसी होती हैं, जिनमें युवक का दिल तंग हो जाता है, जबकि अल्लाह के पास ही उससे निकलने का रास्ता होता है। वह तंग होती चली जाती है, और जब उसकी कड़ियाँ पूरी तरह जकड़ जाती हैं, तो अचानक खुल जाती है – जबकि मैं समझता था कि वह कभी नहीं खुलेगी।”

[शेर – इमाम शाफ़िई की काव्य-पंक्तियों का अर्थानुवाद, मूल छंद व लय सुरक्षित नहीं रखी गई है]

शायद बुद्धिमानों की एक सुंदर बात, जो उन्होंने पवित्र कुरआन की तिलावत, उसे सीखने और सिखाने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कही, यह है: "जिस तरह हम जीवित रहने के लिए दिन-रात में तीन बार भोजन करते हैं, आओ हम भी अपने आचरण को ऊँचा उठाने और उन्नति पाने के लिए प्रतिदिन अल्लाह की किताब के तीन पृष्ठ पढ़ें और सीखें।" यदि पहला भोजन शरीरों की सेहत और ताकत के लिए है, तो दूसरा निःसंदेह मन, हृदय और आत्मा के लिए भोजन है।

मैं हर उस व्यक्ति को सलाह देता हूँ जो इलेक्ट्रॉनिक रूप से पवित्र कुरआन सीखना चाहता है – उसकी आयतों के अवतरण-कारणों को जानने, उसके नियमों, कहानियों, नसीहतों, शिक्षाओं व उदाहरणों को समझने, उसकी सूरतों, आयतों व शब्दों की तफ़सीर जानने, उसके अर्थों के अन्य भाषाओं में अनुवाद प्राप्त करने, तथा उसके कारियों व उनकी तिलावतों को सुनने के लिए – कि वह शानदार कुरआनी विश्वकोश 'सूरा कुरआन वेबसाइट' डाउनलोड करे, जो पवित्र कुरआन को कई रिवायतों के साथ, अनेक तफ़सीरों व अर्थ-अनुवादों सहित, इस्लामी जगत के सबसे प्रसिद्ध कारियों की आवाज़ में सुनने व डाउनलोड करने की सुविधा के साथ प्रस्तुत करता है। इसी तरह एक और उत्कृष्ट कुरआनी विश्वकोश है 'किंग सऊद विश्वविद्यालय इलेक्ट्रॉनिक मुसहफ़ परियोजना।' आम लाभ के लिए इन दोनों महत्वपूर्ण वेबसाइटों के लिंक प्रस्तुत हैं:

<https://surahquran.com/>

<https://quran.ksu.edu.sa/>

इना कफ़ैनाका अल-मुस्तहज़िर्इन (निःसंदेह हम मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध आपके लिए काफ़ी हैं)

“अतः आपको जो आदेश दिया जा रहा है, उसका ऐलान कर दें और मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) से मुँह फेर लें। निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफ़ी हैं।”

– कुरआन, सूरा अल-हिज़्र 15:94-95 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

यह एक चमत्कारी कुरआनी आयत है, जो अल्लाह की ओर से बुलाहट (दावत) से जुड़ी हुई है, जिसमें सर्वशक्तिमान ने स्वयं नबी ﷺ की रक्षा करने का ज़िम्मा लिया, अपने इस कथन में: (निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफ़ी हैं), तथा नबी ﷺ की पवित्र ज़ात और उनके शाश्वत संदेश को उनके उपहास करने वालों की एड़ी से बचाने का ज़िम्मा भी लिया। और यह बात प्रसिद्ध है कि नबी ﷺ के ज़माने में सबसे अधिक कष्ट देने वाले उपहासकर्ताओं का अंत बड़ा भयावह हुआ, हर एक का अंत ऐसा हुआ जिस पर पीढ़ी-दर-

पीढ़ी लानत भेजी जाती रही। उनमें सबसे प्रमुख था – अबू लहब – जिसे अल्लाह ने 'अदसा' नामक बीमारी से ग्रस्त कर दिया, जो शरीर पर प्लेग जैसी फुंसियाँ निकलने की बीमारी थी, जैसा कि सीरत की किताबें बताती हैं, तो वह मर गया और उसके दोनों बेटे उसे दो-तीन दिनों तक इस डर से दफ़नाए बिना छोड़े रहे कि कहीं वे भी बीमार न हो जाएँ, यहाँ तक कि उसकी लाश सड़ने-गलने लगी। तब कुरैश के एक व्यक्ति ने उनसे कहा: "क्या तुम्हें शर्म नहीं आती कि तुम्हारा बाप अपने घर में सड़ रहा है?" तो उन्होंने दूर से उस पर पानी डाला, फिर उसे उठाया और मक्का के ऊपरी हिस्से में एक दीवार के पास फेंक दिया, और उस पर पत्थर बरसाए! अर्थात् = निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफ़ी हैं।

रहा वलीद बिन मुगीरा, जो इस्लाम का सबसे बड़ा हठी विरोधी व शत्रु था, तो वह वर्षों पहले अपने पैर की एड़ी में लगी एक चोट के फिर से उभर आने से हुए घाव से मर गया, और इसी तरह अम्र बिन हिशाम – अबू जहल – जो नबी ﷺ को गालियाँ दिया करता था, बद्र की बड़ी लड़ाई में मारा गया, जब लड़ाई में सबसे छोटी उम्र के दो सहभागी – मुअव्विज़ और मुआज़, दोनों अंसारी – ने उसे पकड़ लिया।

इस प्रकार यह 'काफ़ी होना' (कफ़ाया) रात-दिन के बदलते क्रम के साथ जारी रहता है – कभी उपहासकर्ताओं के विनाश और उनके बुरे अंत के रूप में, कभी विशेषज्ञों द्वारा उनका जवाब देने, उनकी राय को निरर्थक साबित करने और उनके मनगढ़ंत आरोपों का खंडन करने के रूप में – कभी तो उनके अपने ही धर्म, राष्ट्रीयता, समुदाय या मत के साथियों द्वारा, उनके विरोधियों से पहले ही – जैसा कि नबी ﷺ का यह कथन सत्य सिद्ध होता है: "निःसंदेह अल्लाह इस धर्म की मदद एक फ़ाजिर (पापी) व्यक्ति के द्वारा भी करता है" – अर्थात् कुछ लोगों की नीयत भले ही अल्लाह के धर्म की मदद करने की न हो, फिर भी अंततः उनका कार्य नबी ﷺ की रक्षा में ही परिणत होता है – जैसे रूसी प्राच्यवाद-विद्यालय की फ़्रांसीसी प्राच्यवाद-विद्यालय पर, या इसके उलट, प्रतिक्रियाएँ, जो दोनों विद्यालयों के बीच लंबे समय से चले आ रहे संघर्ष के अंतर्गत आती हैं, जिसमें एक-दूसरे के मनगढ़ंत आरोपों का पर्दाफ़ाश करता है, उनकी राय को निरर्थक ठहराता है, उनकी शख्सियतों को नीचा दिखाता है, और ठोस प्रमाणों व निर्णायक दलीलों से उनकी शोध-पद्धति पर प्रहार करता है – यह सब भी "निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफ़ी हैं" के अनुरूप ही है। कभी यह स्वयं आलोचकों के पछतावे, उनकी वापसी और उनकी माफ़ी के रूप में होता है, और कभी उनके व्यक्तिगत रूप से इस्लाम अपना लेने और इसकी आलोचना करने के बजाय इसकी रक्षा में उतर आने के रूप में – और इतिहास में ऐसी अनगिनत मिसालें मौजूद हैं, जितनी चाहो गिन लो।

जुलाई 2021 में डेनिश कार्टूनिस्ट कुर्ट वेस्टरगार्ड (Kurt Westergaard) की नींद में ही, एक लंबी बीमारी से जूझने के बाद, मृत्यु हो गई। वही व्यक्ति था जिसने वर्ष 2005 में इस्लाम-विरोधी 12 आपत्तिजनक व्यंग्य-चित्र बनाए और उन्हें डेनिश समाचार-पत्र 'यूलैंड्स-पोस्टेन' में

'मुहम्मद का चेहरा' शीर्षक के तहत प्रकाशित किया, इससे पहले कि कई यूरोपीय समाचार-पत्रों ने उन्हें दोबारा प्रकाशित किया, जिसने विश्व स्तर पर आक्रोश की एक बड़ी लहर पैदा कर दी, साथ ही डेनिश उत्पादों का लगभग पूर्ण बहिष्कार भी हुआ।

वेस्टरगार्ड की मृत्यु उनकी अनिवार्य सेवानिवृत्ति के कई वर्षों बाद हुई, कड़ी सुरक्षा के तहत घर में बिताए लंबे वर्षों के एकांतवास के बाद, और उस समय के बाद जब उन्होंने अपने देश डेनमार्क को शर्मिंदा कर दिया और उसे – डेनिश विदेश मंत्रालय के अनुसार – द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से अब तक की सबसे कठिन आर्थिक, राजनीतिक और कूटनीतिक चुनौती का सामना करवाया। अर्थात = निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफ़ी हैं।

इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि दूसरा आपत्तिजनक व्यंग्य-चित्रकार, स्वीडिश लार्स विल्क्स (Lars Vilks), की मृत्यु अक्टूबर 2021 में जलकर हुई – यानी अपने डेनिश समकक्ष वेस्टरगार्ड की मृत्यु के केवल दो महीने बाद – यह एक भयावह सड़क दुर्घटना में हुआ, जिसमें उनकी सुरक्षा में तैनात दो अधिकारी भी उनके साथ थे, जब उनकी गाड़ी स्वीडन के मार्कारिड शहर के बाहर हाईवे E4 पर एक ट्रक से टकरा गई, जिसके परिणामस्वरूप गाड़ी और उसमें सवार सभी लोग पूरी तरह जलकर राख हो गए। विल्क्स ने भी अपने अंतिम वर्ष अपने साथी की तरह ही एकांत और छिपकर बिताए, वर्ष 2007 में स्वीडिश समाचार-पत्र 'नरीकेस अलेहांदा' (Nerikes Allehanda) में आपत्तिजनक चित्र प्रकाशित करने के बाद। अर्थात = निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफ़ी हैं।

ऑस्ट्रेलियाई कार्टूनिस्ट बिल लीक (Bill Leak) की मार्च 2017 में अचानक दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो गई, जिसने उन्हें न कोई मोहलत दी और न कोई राहत। वे समाचार-पत्र 'द वीकेंड ऑस्ट्रेलियन' (The Weekend Australian) में नबी मुहम्मद ﷺ के विरुद्ध एक आपत्तिजनक व्यंग्य-चित्र प्रकाशित करने के बाद एक अस्त-व्यस्त, बोहेमियन जीवन जीते रहे। अर्थात = निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफ़ी हैं।

इसी तरह तुर्की कार्टूनिस्ट दोआन बाहचिवान (Doğan Bahçivan), जिसने तुर्की पत्रिका 'लमान' (Leman) में नबी मुहम्मद और नबी मूसा – दोनों पर अल्लाह की दुआएँ व सलामती हो – के विरुद्ध एक आपत्तिजनक चित्र प्रकाशित किया था, अंततः उस पत्रिका के संपादक के साथ जेल में जा पहुँचा, व्यापक जनक्रोध और विरोध-प्रदर्शनों की लहर के बाद, जिसमें कुछ प्रदर्शनकारियों ने इसे "हास्य-चित्रों की आड़ में छिपी घटिया धार्मिक भड़काऊ हरकत" बताते हुए पत्रिका के भवन पर पथराव भी किया, जबकि पत्रिका ने जनता से माफ़ी माँगते हुए ऐसी गंभीर ग़लतियाँ दोबारा न दोहराने का वादा किया, जो करोड़ों लोगों की

भावनाओं को आहत करती हैं और उनके अधिकारों का हनन करती हैं। अर्थात = निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफ़ी हैं।

रहे डच फ़िल्म 'फ़िल्ना' के आपत्तिजनक निर्देशक अरनूद फ़ान डोर्न (Arnoud van Doorn), जो दक्षिणपंथी अतिवादी पार्टी 'पार्टी फ़ॉर फ़्रीडम' (Partij voor de Vrijheid) के एक प्रमुख नेता थे, तो उनकी 'काफ़ी होने' की कहानी अपने पूर्ववर्तियों से बिल्कुल अलग है। नबी ﷺ की सुगंधित जीवनी, पवित्र सुन्नत, तथा पवित्र कुरआन के अर्थों के अनुवाद की एक प्रति पढ़ने के बाद, फ़ान डोर्न ने इस सीधे धर्म, इसकी शाश्वत शिक्षाओं और इसके आदरणीय नबी के प्रति अपनी गहरी प्रशंसा व्यक्त की, और अपनी इस धर्म के बारे में ग़लतफ़हमी के लिए गहरा खेद व माफ़ी व्यक्त की, यह स्वीकार करते हुए कि किसी ने उन्हें पैसे और पद का लालच देकर इस धिनौने कृत्य के लिए उकसाया था – इसके बाद उन्होंने वर्ष 2013 में इस्लाम स्वीकार कर लिया, फिर कई बार हज व उमरा के लिए गए, साथ ही उन्होंने एक ऐसी फ़िल्म बनाने का इरादा जताया जो इस बार इस्लाम का असली पहलू दिखाए – वह पहलू जिसे पक्षपाती मीडिया छिपाने और विकृत करने की कोशिश करता है। हज व उमरा अदा करने के बाद उन्होंने कहा: "नबी ﷺ की क़ब्र के सामने मेरी शर्मिंदगी दोगुनी हो गई, जब मुझे एहसास हुआ कि मैंने कितनी बड़ी ग़लती की थी, इससे पहले कि अल्लाह मेरे दिल को इस्लाम के लिए खोल दे। खोज की इस प्रक्रिया ने मुझे उस बड़े जुर्म के आकार का एहसास कराया जो मैंने किया था।" इसके बाद वर्ष 2014 में उनके गोद लिए हुए बेटे ने भी उनका अनुसरण करते हुए इस्लाम अपनाने और अपना नाम बदलकर 'अली' रखने की घोषणा की। अर्थात = निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफ़ी हैं।

स्वीडिश समाचार-पत्र 'एक्सप्रेसन' (Expressen) ने 1 जनवरी 2026 को यह खुलासा किया कि इराक़ी अतिवादी नास्तिक सलवान मोमिका (Salwan Momika) – जो अपने देश में कई आपराधिक मामलों में आरोपी था और अपने ख़राब आचरण व चाल-चलन के लिए जाना जाता था, तथा जिसने बिना किसी पूर्व-सूचना के, दर्जनों नाराज़ मुसलमानों के सामने विभिन्न स्थानों पर पवित्र कुरआन की प्रतियाँ जलाई, इस ज़िद के साथ कि वह दुनिया भर के दो अरब से अधिक मुसलमानों की भावनाओं को भड़काए, यह सब यूरोपीय दक्षिणपंथी अतिवाद को रिझाने के लिए किया – जिससे वह संबद्ध था, इस लालच में कि उसे स्वीडिश नागरिकता मिल जाएगी, जो उसे कभी नहीं मिली – की क़ब्र का पत्थर हटा दिया गया है। स्वीडिश आव्रजन अदालत ने मोमिका की अपील को खारिज कर दिया था और आव्रजन विभाग के उस निर्णय को बरकरार रखा था जिसमें उसे स्वीडन से निर्वासित करने, उसका निवास परमिट रद्द करने और शरणार्थी के रूप में उसकी स्थिति समाप्त करने का आदेश दिया गया था – स्वीडिश 'कॉम्ब्स नेटवर्क' के अनुसार उसकी गतिविधियों के आधार पर – जबकि नॉर्वे ने स्वीडन में उसका निवास परमिट रद्द होने के बाद वहाँ शरण लेने पर सलवान मोमिका को हिरासत में ले लिया और फ़्रांस प्रेस एजेंसी के अनुसार, शरणार्थी संबंधी

'डबलिन समझौते' के तहत उसे वापस स्वीडन भेजने का निर्णय लिया। इन्हीं घटनाक्रमों की पृष्ठभूमि में डेनिश संसद ने वर्ष 2023 के अंत में बहुमत से एक कानून पारित किया, जो धार्मिक ग्रंथों के साथ 'अनुचित व्यवहार' पर रोक लगाता है और धार्मिक ग्रंथों को सार्वजनिक रूप से या ऐसे वीडियो में जलाने, फाड़ने या अपवित्र करने पर प्रतिबंध लगाता है जिन्हें व्यापक रूप से प्रसारित करने का इरादा हो – अन्यथा पूरे दो वर्ष की जेल और भारी आर्थिक जुर्माना ही इस दुनिया में दोषियों की सज़ा होगी, जबकि आखिरत की सज़ा तो अपराधियों का इंतज़ार करती ही रहेगी, जब तक कि वे तौबा न कर लें या रुक न जाएँ।

और 'एक्सप्रेसन' समाचार-पत्र यह पुष्टि करता है कि मुनाफ़िक़ सलवान मोमिका की कब्र का पत्थर स्वीडिश कब्रिस्तान प्रशासन विभाग द्वारा उसकी 'हॉफ़शाँ' क्षेत्र में स्थित अपनी फ़्लैट में रहस्यमय परिस्थितियों में हत्या के केवल एक वर्ष बाद हटा दिया गया – बिना इस घटना की अंतिम परिस्थितियों की घोषणा किए, इस लेख के लिखे जाने तक – 'रूस टुडे' के अनुसार, अर्थात = निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफ़ी हैं।

प्रसिद्ध फ़्रांसीसी चित्रकार व प्राच्यविद् एतिएन दिने (Étienne Dinet), जिनके कार्यों को 'लारूस शब्दकोश' (Larousse) में दर्ज किया गया, और जिन्होंने अपना इस्लाम प्रकट करते हुए अपना नाम बदलकर नसीरुद्दीन दिने रख लिया था तथा इस्लाम पर ही मृत्यु पाई और अपनी वसीयत के अनुसार अल्जीरियाई गाँव 'बूसआदा' में दफ़नाए गए – उन्होंने इससे पहले इस्लाम के बारे में अपनी कूची से कई पेंटिंग बनाई, जिनमें सबसे प्रमुख हैं 'अरफ़ात का दृश्य', 'जबल अन-नूर' (प्रकाश का पर्वत), और 'काबा के चारों ओर नमाज़'। उन्होंने कई पुस्तकें भी लिखीं जिनमें उन्होंने पूरी लगन व प्रेम से इस्लाम का समर्थन व बचाव किया, जिनमें सबसे प्रमुख हैं 'दिलों का बहार', 'पश्चिम की नज़र में पूरब', 'अल्लाह के पवित्र घर की ओर हज' मक्का की अपनी यात्रा के बाद, तथा साझे रूप से लिखी गई पुस्तक 'मुहम्मद, अल्लाह के रसूल'। उनकी पुस्तकों ने विशेष रूप से प्राच्यवादी हलकों में दुनिया भर में बड़ी हलचल मचाई।

वे अपनी अंतिम पुस्तक में कहते हैं: "प्राच्यविद् अपनी भावनाओं, अपने परिवेश और अपनी अलग-अलग प्रवृत्तियों से मुक्त नहीं हो सके, इसीलिए नबी ﷺ और सहाबा की जीवनी में उनकी विकृति इस हद तक पहुँच गई कि इतनी अधिक विकृति के कारण उनकी असली तस्वीर ही धुँधली हो गई है.. प्राच्यविद् हमें ऐसी काल्पनिक तस्वीरें प्रस्तुत करते हैं जो सच्चाई से कोसों दूर हैं।" अर्थात = निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफ़ी हैं।

यह फ़्रांसीसी प्राच्यविद् गास्तों वियेत (Gaston Wiet), जो बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में अरब पुरातत्व विभाग के निदेशक रह चुके थे, स्वयं उन सबसे अधिक पूर्वाग्रही और नबी ﷺ, उनके पवित्र परिजनों तथा उनके नेक सहाबा के प्रति सबसे अधिक शत्रुतापूर्ण रवैया रखने वाले

प्राच्यविदों में से एक – बेल्जियाई हेनरी लामांस (Henri Lammens) – का जवाब देते हैं, जिनके वे समकालीन भी थे। 'वियेत' ने अपने समकक्ष 'लामांस' पर आक्रमण करते हुए उनकी एक प्रमुख पुस्तक के बारे में कहा: "लामांस की पुस्तक को पूरे विश्वास और बिना किसी सावधानी के स्वीकार करना कठिन है, क्योंकि उसमें पूर्वाग्रह और आक्रामक रुझान काफ़ी हद तक हावी है।" अर्थात् = निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफ़ी हैं।

अपनी ओर से, प्रसिद्ध प्राच्यविद् व इतिहासकार, रूसी प्राच्यवाद के ऐतिहासिक विद्यालय के संस्थापक वासीली व्लादीमिरोविच बार्तोल्द (Vasily Vladimirovich Bartold) ने अपनी तीन पुस्तकों – 'इस्लाम', 'इस्लामी जगत' और 'इस्लामी सभ्यता' – के माध्यम से यूरोपीय प्राच्यविदों के दावों का वैज्ञानिक ढंग से खंडन व आलोचना की, इनमें से एक में उन्होंने बताया कि "अरब इतिहास व सभ्यता से निपटने की पश्चिमी पद्धति गंभीर रूप से त्रुटिपूर्ण है और मूल स्रोतों के सही वाचन पर आधारित वैज्ञानिक पद्धति का पालन नहीं करती, बल्कि यह पुराने प्राच्यवाद के जनकों द्वारा स्थापित जड़ साँचों व निष्कर्षों पर आधारित है।" अर्थात् = निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफ़ी हैं।

जब यूरोपीय दक्षिणपंथी शक्तियों के कुछ नेताओं ने 'सॉफ़्ट पावर' – यानी लेखकों, साहित्यकारों, मीडिया-कर्मियों, गायकों, अभिनेताओं व खिलाड़ियों – को रिझाने की कोशिश की, ताकि वे आदरणीय नबी ﷺ के विरुद्ध उनके बार-बार के अपमानजनक रुख का समर्थन करें, और आपत्तिजनक चित्रों को दोबारा प्रकाशित करने के विचार का समर्थन करते हुए उनके लिए माफ़ी माँगने से इनकार करें, तो फ़्रांसीसी सॉफ़्ट पावर के प्रतीक – फ़्रांसीसी निर्देशक व अभिनेता जेरार दपार्दियु (Gérard Depardieu), जो अपनी विवादास्पद भूमिकाओं के लिए जाने जाते हैं और जिन्हें सेज़ार (César) व गोल्डन ग्लोब (Golden Globe) सहित कई पुरस्कार व सम्मान मिल चुके हैं – इस बार उन उकसाने वाली अपीलों का साथ देने के बजाय – और अल्लाह ही बेहतर जानता है कि उनके दिल में क्या था, और क्या यह अचानक रुख दक्षिणपंथ व वामपंथ के बीच चल रहे संघर्ष का हिस्सा था, जो उनके चुनावी व राजनीतिक आपसी दोषारोपण अभियानों के तहत आता हो या नहीं – उन्होंने अपने 'एक्स' (पूर्व में ट्विटर) खाते पर एक ट्वीट में यह जवाब दिया: "मुसलमानों ने ऐसा क्या किया है कि हम उन्हें गालियाँ दें? क्या हो अगर हम उनके धर्म का सम्मान करें और उनके अक़ीदे में हस्तक्षेप न करें? मैं इस अपमान व तिरस्कार के लिए माफ़ी माँगता हूँ, और आइए हम शांति से साथ रहें।" अर्थात् = निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफ़ी हैं।

पुस्तक 'पतन' (जिसमें पश्चिमी सभ्यता के पतन की भविष्यवाणी की गई थी) के लेखक, फ़्रांसीसी उत्तर-आधुनिकतावादी दार्शनिक मिशेल ऑफ़्रे (Michel Onfray) ने प्रसिद्ध फ़्रांसीसी कार्यक्रम 'फ़ास आ ल'एंफ़ो' (Face à l'Info) के दौरान एक बड़ा धमाकेदार बयान दिया, जब

उन्होंने कार्यक्रम में मौजूद विपरीत विचारधारा वाले अतिथि को जवाब देते हुए कहा: "मुसलमानों में नैतिकता व मूल्य हैं; वे मानते हैं कि जब भी चाहो और जैसे भी चाहो किसी के साथ यौन-संबंध बनाना ज़रूरी नहीं कि महिलाओं के प्रति बहुत सम्मानजनक हो – ये लोग सम्मान की नैतिकता रखते हैं, और मुसलमान हमें भौतिकवाद-विरोध का एक सबक सिखाते हैं।" अर्थात = निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफी हैं।

तीन शताब्दियों के दौरान प्राच्यवादी लेखन के विशाल भंडार के बावजूद, जिसने अपने समग्र रूप में यूरोपीय लोगों के दिमाग को धोने और इस्लाम व मुसलमानों की छवि को विकृत करके उनके भीतर एक विरोधी सामूहिक चेतना गढ़ने की कोशिश की, माइकल हार्ट (Michael Hart) ने अपनी पुस्तक 'द हंड्रेड' (The 100 / सौ महानतम व्यक्ति) लिखी और नबी मुहम्मद ﷺ को उनमें प्रथम स्थान देने का कारण बताते हुए कहा: "इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण व महानतम पुरुषों में मुहम्मद को प्रथम चुनना पाठकों को चौंका सकता है, परंतु वे संपूर्ण इतिहास में एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जो धार्मिक और सांसारिक – दोनों स्तरों पर सर्वोच्च रूप से सफल रहे, क्योंकि कई रसूल, नबी व बुद्धिमान लोग महान अभियानों की शुरुआत करते हुए मर गए, बिना उन्हें पूरा किए।" अर्थात = निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफी हैं।

रहीं इतालवी प्राच्यविद् व शोधकर्ता लौरा वेच्चिआ वाल्येरी (Laura Veccia Vaglieri), जो नेपल्स विश्वविद्यालय में अरबी भाषा की प्राध्यापिका थीं, तो उन्होंने पश्चिम में इस्लाम के बारे में प्रचलित कई ग़लत धारणाओं को सुधारने के लिए दो पुस्तकें लिखीं – पहली 'इस्लाम के गुण' शीर्षक से, और दूसरी 'इस्लाम की रक्षा में' शीर्षक से। अर्थात = निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफी हैं।

पूर्वाग्रही लोगों ने मध्य-पूर्व व उत्तरी अफ्रीका के ईसाइयों को रिझाकर उन्हें इस्लाम के विरुद्ध अपने बार-बार के पूर्वाग्रही अभियानों में अपने साथ मिलाने की कोशिश की, परंतु यह असंभव सिद्ध हुआ, क्योंकि सोशल मीडिया मंच आपत्तिजनक चित्रों की अस्वीकृति से संबंधित तस्वीरों से भर गए, जिनमें से एक में सबस्तिया के रूढ़िवादी आर्चबिशप 'अतल्लाह हन्ना' (Atallah Hanna) आपत्तिजनक चित्रों के विरुद्ध मुसलमानों के साथ एकजुटता दिखाते हुए एक तख्ती उठाए दिखाई दिए, जिस पर लिखा था: "मेरे माता-पिता आप पर न्योछावर हों, ऐ अल्लाह के रसूल" – अर्थात = निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफी हैं। और इस तस्वीर व उसके सम्मानित लेखक की स्थिति की भाषा वही दोहराती है जो ईसाई कवि जाक शम्मास (Jacques Chammas) ने अतीत में कहा था:

"मैं एक ईसाई हूँ, फिर भी मुहम्मद का आदर करता हूँ.. और उस 'ज़ाद' (अरबी भाषा) का भी आदर करता हूँ जिसका पालना इस्लाम है। मैं रसूल के साथियों और उनके परिजनों का भी

आदर करता हूँ, जहाँ सहाबा चुने हुए व उच्च मर्तबे वाले हैं। मैंने अपनी आत्मा मुहम्मद के प्रेम में सौंप दी है, जिनके आगे अरब और गैर-अरब – सभी नतमस्तक हुए।”

[शेर – जाक शम्मास की काव्य-पंक्तियों का अर्थानुवाद, मूल छंद व लय सुरक्षित नहीं रखी गई है]

और उनकी बात के साथ-साथ उनकी स्थिति की भाषा भी प्रवासी ईसाई कवि जॉर्ज सलेस्ती (George Salesti) की उस बात को दोहराती है, जो उन्होंने नबी ﷺ के बारे में अपनी कविता 'महानतम रसूल की फ़रियाद' में कही थी:

“हे मेरे आका, हे अल्लाह के रसूल! मुझे क्षमा करें, यदि आपके बारे में मेरा वर्णन व अभिव्यक्ति डगमगा जाए। मैं आपको क्या हक़ व सम्मान दे सकता हूँ, जबकि आप तो मेरी सोच व अनुमान से कहीं ऊपर हैं।”

[शेर – जॉर्ज सलेस्ती की काव्य-पंक्तियों का अर्थानुवाद, मूल छंद व लय सुरक्षित नहीं रखी गई है]

इसके बाद आइए जर्मन प्राच्यविद् व शोधकर्ता सिग्रिड हुंके (Sigrid Hunke) की पुस्तक 'सूरज पश्चिम पर चमकता है' (Allahs Sonne über dem Abendland) पढ़ें, जिसका 17 विश्व-भाषाओं में अनुवाद हो चुका है, साथ ही उनकी दूसरी पुस्तक 'अल्लाह वैसा नहीं जैसा वे दावा करते हैं' भी – और वही कहती हैं: "निःसंदेह इस्लाम धरती पर सबसे महान धर्म है, सहनशीलता और न्याय के मामले में।" अर्थात् = निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफ़ी हैं।

इन तमाम भ्रामक व निरंतर अभियानों के बावजूद, जो दिन-रात इस्लाम, पवित्र कुरआन और नबियों व रसूलों की मुहर मुहम्मद ﷺ को बदनाम करने के लिए चलाए जाते रहे, अमेरिकी शोध संस्था 'प्यू रिसर्च सेंटर' (Pew Research Center) ने जून 2025 में जो खुलासा किया, उसने अधिकांश पूर्वाग्रही लोगों को गहरे सदमे व निराशा में डाल दिया – यह खुलासा करते हुए कि "दुनिया भर में मुसलमानों की संख्या वर्ष 2010 से 2020 के बीच 34 करोड़ 70 लाख की दर से बढ़ी है", और यह बताते हुए कि "उनका यह आँकड़ा 2700 से अधिक स्रोतों से प्राप्त डेटा के विश्लेषण पर आधारित है, जिसमें राष्ट्रीय जनगणनाएँ, आधिकारिक अभिलेख, सर्वेक्षण, तथा 201 देशों के प्रतिभागियों द्वारा उनकी धार्मिक संबद्धता से जुड़े प्रश्नों के उत्तर शामिल हैं, जो 10 वर्षों से अधिक की समयावधि में एकत्र किए गए।" अर्थात् = निःसंदेह हम आपकी ओर से मज़ाक उड़ाने वालों के विरुद्ध काफ़ी हैं।

इस्लामोफोबिया: दक्षिणपंथी परिकल्पनाओं, षड्यंत्र-सिद्धांतों और वास्तविकता के बीच

चार वर्ष पहले, इस्लामी सहयोग संगठन (OIC) के सूचना मंत्रियों के सम्मेलन में जारी 'इस्तांबुल घोषणापत्र' ने 'इस्लामोफोबिया' की घटना से – उसके सभी रूपों में – निपटने की आवश्यकता पर बल दिया, तथा मीडिया-भ्रामकता के विरुद्ध खड़े होने का आह्वान किया। तो आखिर 'इस्लामोफोबिया' शब्द का क्या अर्थ है, और इसके प्रमुख कारण, परिणाम व अभिव्यक्तियाँ क्या हैं?

'इस्लामोफोबिया' शब्द पहली बार वर्ष 1923 में 'ऑक्सफोर्ड शब्दकोश' (Oxford Dictionary) में प्रकट हुआ।

फिर यह शब्द वर्ष 1997 में व्यावहारिक रूप से प्रचलन में आया, जब पूर्व ब्रिटिश विदेश मंत्री जैक स्ट्रॉ (Jack Straw) ने शोध संस्था 'रनीमीड ट्रस्ट' (Runnymede Trust) की एक रिपोर्ट प्रकाशित की। इस शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया गया: मुसलमानों के विरुद्ध निराधार घृणा व भय पर आधारित विश्व-दृष्टिकोण, जो उनके विरुद्ध भेदभावपूर्ण व्यवहार की ओर ले जाता है। इस्लामोफोबिया की अभिव्यक्तियों में बहिष्करण, भेदभाव व हाशिए पर धकेलना शामिल है,

साथ ही हिजाब पहनने पर पाबंदियाँ, प्रवासन पर प्रतिबंध, और मस्जिदों के निर्माण पर रोक भी इसमें शामिल हैं,

इसके अतिरिक्त तथाकथित 'हलाल ज़बह व भोजन', अज्ञान देने पर रोक, मीनारों के निर्माण पर पाबंदी, तथा इस्लामी तरीके से दफ़न पर प्रतिबंध भी इसमें शामिल हैं – विशेष रूप से इसके बाद कि 'प्यू केंद्र' (Pew Center) के वर्ष 2011 के आँकड़ों के अनुसार मुसलमान यूरोप की जनसंख्या के 6% से अधिक हिस्से का प्रतिनिधित्व करने लगे।

आमतौर पर 'इस्लामोफोबिया' शब्द को समूचे यूरोप में, विशेष रूप से फ्रांस में,

'महान प्रतिस्थापन' (Great Replacement) सिद्धांत से जोड़ा जाता है, जिसे फ्रांसीसी लेखक रेनो कामू (Renaud Camus) ने वर्ष 2012 में गढ़ा, तथा उपन्यासकार ज्यॉ रास्पॉई (Jean Raspail) के 1973 में प्रकाशित उपन्यास 'द कैम्प ऑफ़ द सेंट्स' (Le Camp des Saints) से प्रेरणा ली। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश लेखिका व इतिहासकार जीज़ेल लिटमान (Gisèle Littman) का वर्ष 2005 का 'यूरेबिया' (Eurabia) सिद्धांत भी है, जो यूरोप के 'इस्लामीकरण' या 'अरबीकरण' के प्रति आगाह करता है – ये सभी सिद्धांत व परिकल्पनाएँ यूरोपीय दक्षिणपंथ द्वारा अपनाई जाती हैं, ताकि तीसरी दुनिया से आने वाली – उनके ही शब्दों में – मानव-सैलाब व अनियंत्रित प्रवासन की लहर के कारण पश्चिमी संस्कृति के पतन, उसके प्रभुत्व के कमज़ोर पड़ने और उसकी पहचान मिट जाने के खतरे से आगाह किया जा सके। वर्ष 2021 के अंत में अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के 219 सदस्यों ने मुस्लिम

डेमोक्रेटिक प्रतिनिधि इल्हान उमर (Ilhan Omar) द्वारा प्रस्तुत इस्लामोफोबिया से निपटने संबंधी विधेयक पर मतदान किया था।

वर्ष 2008 के वित्तीय संकट के बाद इस्लामोफोबिया की गति तेज़ हो गई, विशेष रूप से वर्ष 2016 में मध्य-पूर्व व उत्तरी अफ्रीका से आने वाले प्रवासियों व शरणार्थियों की बढ़ती संख्या के साथ, जब यह विचार फैलाया गया कि ये प्रवासन यूरोपीय देशों पर भारी आर्थिक बोझ डालते हैं, वित्तीय संकट पैदा करते हैं, और बहु-सांस्कृतिकता के लिए खतरा बनते हैं। जबकि कई इतिहासकारों ने इसे 11 सितंबर की घटनाओं से जोड़ा, जिसका फ़ायदा कुछ दक्षिणपंथी लेखकों ने उठाया

इस्लाम को एक नए शत्रु के रूप में प्रस्तुत करने के लिए, जिसका विरोध करना और जिससे सावधान रहना अनिवार्य समझा जाए – क्योंकि वाशिंगटन स्थित 'प्यू धर्म व जनसंख्या शोध केंद्र' के अनुसार यह यूरोप में सबसे तेज़ी से बढ़ने वाला धर्म है। तो क्या 'इस्तांबुल घोषणापत्र' की सिफ़ारिशें व सुझाव यूरोपीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस्लामोफोबिया की बढ़ती घटना को जागरूकता फैलाने व सीमित करने में सफल होंगे? इसका पता आने वाले दिनों में ही चलेगा।

मशहूर हस्तियाँ जिन्होंने इस्लाम अपनाया, अल्लाह से डरे और सुधरे

और मैं आपका ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूँ कि जब मैंने नए मुसलमानों के बारे में, जिन्होंने आदरणीय नबी ﷺ के बारे में अच्छी बातें कही हों, हर उपलब्ध सामग्री इकट्ठा करने का निश्चय किया ताकि उसे इस शृंखला में शामिल किया जा सके, तो मैंने अपने सामने यह लक्ष्य रखा कि पहले इनमें से केवल बड़ी हस्तियों व मशहूर लोगों को ही शामिल करूँ, न कि आम लोगों को, और दूसरा यह कि संबंधित व्यक्ति ने अंततः अपना इस्लाम भी प्रकट किया हो – अर्थात् केवल प्रशंसकों व चाहने वालों की ओर से की गई अधूरी तारीफ़ पर ही संतोष न किया जाए, न ही यह किसी की चापलूसी, पक्षपात या खुशामद हो, न ही नक़ल करने व लिखने वालों की कलम से सजाई गई अतिशयोक्ति हो, और न ही किसी चालबाज़ या धोखेबाज़ की 'तकिय्या' (छिपाव)। और ताकि मैं उस ग़लती में न पड़ूँ जिसमें मुझसे पहले कुछ लोग पड़ चुके हैं, मैंने यह इरादा किया कि मैं शोध के लिए मशहूर हस्तियों में से केवल उन्हीं को चुनूँ जिन्होंने दोपहर के सूरज की किरण जैसी स्पष्ट छाप छोड़ी हो, जिसे कोई छलनी न छिपा सके, अल्लाह के धर्म और उसके आदरणीय नबी की सुन्नत की मदद के लिए – और उन आलसी लोगों से पूरी तरह व हमेशा के लिए दूर रहते हुए, जिनके बारे में प्राचीन कवि ने कहा था:

“न तो हनून ने इस्लाम में राई-भर भी इज़ाफ़ा किया... न ही ईसाइयों को हनून से कोई सरोकार रहा।”

[शेर – अर्थानुवाद; यह एक व्यंग्यात्मक प्राचीन काव्य-पंक्ति है जिसका सटीक ऐतिहासिक संदर्भ स्रोत में स्पष्ट नहीं है]

पादरी बिन्यामिन कल्दानी

हम शुरुआत करते हैं पादरी प्रोफेसर डेविड बिन्यामिन कल्दानी (David Benjamin Keldani) से, जिन्होंने इस्लाम अपनाया और अपना नाम बदलकर अब्दुल अहद दाऊद (Abdul Ahad Dawud) रख लिया। अपनी पुस्तक 'मुहम्मद इन द बाइबल' (बाइबिल में मुहम्मद) में उन्होंने लिखा: "मुहम्मद ही वे एकमात्र व्यक्ति थे जिन्होंने अल्लाह, उसकी एकता व उसके धर्म के बारे में पूरी सच्चाई स्पष्ट की, तथा उन झूठे आरोपों व मनगढ़ंत बातों को सुधारा जो अल्लाह की पवित्र ज्ञात के विरुद्ध, तथा उसके कई नेक बंदों के विरुद्ध प्रचलित व मान्य थीं।"

साहित्य के नोबेल पुरस्कार की उम्मीदवार

हम इसके साथ जोड़ते हैं भारत की सबसे प्रसिद्ध कवयित्री व लेखिका, जो साहित्य के नोबेल पुरस्कार के लिए नामांकित हुईं और उसकी संक्षिप्त सूची में भी शामिल हुईं – कमला दास (Kamala Das) – जिन्होंने इस्लाम अपनाने के बाद कहा: (मैंने इस्लाम धर्म को इसलिए चुना क्योंकि यह महिला की रक्षा करता है, और मैंने दो नेत्रहीन मुस्लिम बच्चों की देखभाल करने के बाद इस्लाम अपनाने का दृढ़ निश्चय किया, जिसके दौरान मैंने इस्लाम के बारे में बहुत कुछ सीखा, और मैंने अपना नया नाम 'कमला सुरैया' रखा, और मैं भारतीय जनता पार्टी की तमाम धमकियों की परवाह नहीं करूँगी।)

तॉल्स्टॉय

तीसरे स्थान पर हम महान रूसी साहित्यकार लियो तॉल्स्टॉय (Leo Tolstoy) की बात रखते हैं, जो उपन्यास 'युद्ध और शांति' तथा 'अन्ना कारेनिना' के लेखक हैं, जिन्होंने वर्ष 1909 में 'नबी मुहम्मद की हिकमतें' शीर्षक से एक महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी, जिसमें उन्होंने 56 नबवी हदीसों का संग्रह किया। उनकी बातों में से एक यह है: "मुझे यह प्रतीत हुआ कि मुहम्मद हर समय दूसरों से श्रेष्ठ रहे; उन्होंने कभी स्वयं की तुलना अल्लाह से नहीं की और न ही किसी इंसान को ईश्वर माना।" उन्होंने आगे कहा: "मुहम्मद की शरीअत बुद्धि व हिकमत के अनुरूप होने के कारण पूरी दुनिया पर छा जाएगी.. मैं उन लोगों में से एक हूँ जो नबी मुहम्मद के व्यक्तित्व से चकित हैं, जिन्हें एक अल्लाह ने चुना ताकि अंतिम संदेश उनके हाथों आए, और वे भी अंतिम नबी हों।"

राजनयिक विल्फ्रीड हॉफ़मन

स्पष्टवादिता व खुलेपन की उस नाव को अंततः जर्मन राजनयिक विल्फ्रीड हॉफमन (Wilfried Hofmann) के तट पर लंगर डालना ही था, जो हार्वर्ड विश्वविद्यालय से कानून में डॉक्टरेट की उपाधि रखते हैं, कभी बैले नर्तक व शिक्षक रह चुके हैं, जैज़ संगीतकार रहे हैं, कई देशों में जर्मनी के राजदूत रहे हैं, तथा परमाणु रक्षा के क्षेत्र में विशेषज्ञ रहे हैं। उन्होंने वर्ष 1980 में इस्लाम अपनाया और अपना नाम बदलकर मुराद (Murad) रख लिया, फिर अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'डायरी ऑफ़ ए जर्मन मुस्लिम', तथा 'इस्लाम इन द थर्ड मिलेनियम', 'जर्नी टू मक्का', तथा 'इस्लाम जैसा एक जर्मन मुसलमान देखता है' – ये सभी पुस्तकें जर्मन भाषा में लिखीं। इस्लाम के बारे में उनकी बातों में से एक यह है: "इस्लाम जीवन के सभी पहलुओं को आपस में जोड़ देता है, इसीलिए इस्लामी देशों में मानसिक समस्याएँ यूरोपीय देशों की तुलना में कहीं कम हैं", आगे जोड़ते हुए: "अल्लाह हमारी मदद तभी करेगा जब हम स्वयं में बदलाव लाएँगे – इस्लाम को सुधारकर नहीं, बल्कि इस्लाम के प्रति अपने रवैये व अपने कार्यों को सुधारकर.. इस्लाम एक शाश्वत परियोजना के रूप में जीवन का विकल्प है, जो न पुराना पड़ता है और न ही अपनी वैधता खोता है; इस्लाम को कोई समय या स्थान सीमित नहीं करता।"

गोएठे

हम आगे बढ़ते हैं महान जर्मन कवि योहान वोल्फगांग फ़ॉन गोएठे (Johann Wolfgang von Goethe) की उन बातों की ओर, जो उन्होंने इस्लाम के बारे में लिखीं – वे इस धर्म और इसके नबी मुहम्मद ﷺ से बेहद प्रभावित थे, यहाँ तक कि कुछ साहित्यकार व आलोचक मानते हैं कि गोएठे वास्तव में मुसलमान हो गए थे, भले ही उन्होंने इसकी घोषणा न की हो। वे अपनी पुस्तक 'वेस्ट-ईस्टर्न दीवान' में लिखते हैं: "जब भी मैं कुरआन पढ़ता हूँ, मुझे लगता है कि मेरी आत्मा मेरे शरीर के भीतर काँप उठती है। कुरआन किताबों की किताब है, और मैं भी वही विश्वास रखता हूँ जो हर मुसलमान रखता है, और यदि इस्लाम का अर्थ अल्लाह के आगे समर्पण है, तो हम सब इस्लाम पर ही जीते और मरते हैं।"

प्राच्यविद् आन्नेमारी शिमेल

उन्हीं के पदचिह्नों पर निष्पक्ष जर्मन शोधकर्ता, बॉन विश्वविद्यालय में अरबी भाषा व इस्लामी विज्ञान की प्राध्यापिका, तथा हार्वर्ड व अमेरिका के दोनों विश्वविद्यालयों में व्याख्याता – प्राच्यविद् आन्नेमारी शिमेल (Annemarie Schimmel) चलीं, जिन्हें 'नबी मुहम्मद ﷺ की आशिक' का उपनाम दिया गया, और जिन्हें जर्मन 'फ्रीड्रिष रुकर्ट' पुरस्कार तथा अंतरराष्ट्रीय शांति पुरस्कार से नवाज़ा गया। उनके पास दो डॉक्टरेट उपाधियाँ थीं – पहली प्राच्यविद्या में, बर्लिन विश्वविद्यालय से वर्ष 1941 में, और दूसरी धर्मों के इतिहास में, वर्ष 1951 में। उन्होंने 100 शोध व पुस्तकें लिखीं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध है 'एंड मुहम्मद इज़ हिज़ मैसेंजर'। अपनी मृत्यु से पहले, वर्ष 2003 में, उन्होंने वसीयत की थी कि जब वे

मरणासन्न हों तो उनके सिर के पास पवित्र कुरआन की आयतें पढ़ी जाएँ, और उनके कब्र के पत्थर पर यह प्रसिद्ध इस्लामी वाक्य लिखा जाए: "लोग सोए हुए हैं, जब मरते हैं तो जाग जाते हैं।" वे अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में लिखती हैं: "सच तो यह है कि नबी ﷺ के लिए साकार हुआ सबसे बड़ा चमत्कार एक आध्यात्मिक रूप से एकजुट उम्मत के निर्माण में निहित है, और नबी के आचरण व उनके उत्तम विचारों का अनुकरण – उन्हें उत्तम आदर्श मानते हुए – मोरक्को से लेकर इंडोनेशिया तक मुसलमानों को सोच व कर्म की एकता प्रदान करता रहा है.. तो मुझे मेरे इस्लाम के रसूल के प्रति प्रेम के लिए दोष मत दो, क्योंकि इस्लाम और उसके रसूल के प्रति मेरा प्रेम व मेरा जुनून असीम है।" कुछ शोधकर्ता इस बात की पुष्टि करते हैं कि प्रोफेसर आन्नेमारी शिमेल वास्तव में मुसलमान हो चुकी थीं, भले ही उन्होंने इसे खुलकर व्यक्त न किया हो।

गणितज्ञ जेफ्री लैंग

हमने अमेरिकी गणितज्ञ जेफ्री लैंग (Jeffrey Lang) की जीवनी पढ़ी, जो सैन फ्रांसिस्को विश्वविद्यालय में, फिर कैनसस विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहे। उन्होंने पवित्र कुरआन के अर्थों का अनुवाद पढ़ने के बाद अपना इस्लाम घोषित किया, और अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक 'स्ट्रगलिंग टु सरेंडर' लिखी, इसके बाद 'लॉसिंग माय रिलीजन', 'इवन एंजल्स आस्क', और 'इवन खलील इब्राहीम वांट्स टु बी अशयर्ड' लिखीं।

उनकी बातों में से एक:

"कुरआन ने तुम्हें देख लिया है और यह एक ऐसा दर्पण बन गया है जिसमें से तुम अपनी कमियाँ, अपनी कमज़ोरियाँ, अपने दर्द, अपनी भटकन, अपनी संभावनाएँ और अपनी असफलताएँ देख सकते हो।"

इतालवी रोज़ारियो पास्क्विनी

उन्हीं की तरह इतालवी प्रचारक रोज़ारियो पास्क्विनी (Rosario Pasquini) की जीवनी भी है, जो इस्लाम अपनाने से पहले कैथोलिक थे – उन्होंने वर्ष 1973 में इस्लाम अपनाया और अपना नाम बदलकर अब्दुर्रहमान पास्क्विनी रख लिया, फिर इटली में पहला इस्लामी केंद्र स्थापित किया, साथ ही 'मस्जिद अर-रहमान', 'इस्लामिक वक्फ़' तथा प्रकाशन-गृह 'दार अल-कलम' की भी स्थापना की।

उन्होंने पत्रिका 'अर-रिसाला अल-इस्लामिया' भी प्रकाशित की, साझे रूप से पवित्र कुरआन के अर्थों का इतालवी अनुवाद भी किया, और उनकी सबसे प्रमुख पुस्तकों में से एक है 'इस्लाम इटली के सभ्यता के मार्ग का रास्ता था'।

अमेरिकी रॉबर्ट क्रेन

और यह अमेरिकी डॉक्टर रॉबर्ट क्रेन (Robert Dickson Crane), जिनके पास हार्वर्ड विश्वविद्यालय से अंतरराष्ट्रीय कानून में डॉक्टरेट की उपाधि है, और जो पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन के सलाहकार रह चुके हैं – उन्होंने 1980 के दशक में इस्लाम अपनाया और अपना नाम बदलकर फ़ारूक अब्दुल हक रख लिया। उनकी सबसे महत्वपूर्ण रचनाओं में से एक है 'अमेरिका में मुसलमानों के अधिकार', और उनकी सबसे प्रसिद्ध बातों में से एक यह है: "इस्लाम ही एकमात्र समाधान है, क्योंकि यही शरीअत के मक़ासिद (उद्देश्यों) में न्याय को समेटे हुए है, और मैंने इस्लाम में वे सभी कानून पाए जिनका मैंने अध्ययन किया – बल्कि हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अपनी पढ़ाई के दौरान मुझे उनके कानूनों में 'न्याय' शब्द तक नहीं मिला, जबकि इस्लाम में मैंने इसे बार-बार पाया।"

जापानी र्योइची मीता

जापानी र्योइची मीता (Ryoichi Mita), जो पश्चिमी जापान के समुराई योद्धाओं के एक बौद्ध परिवार से संबंध रखते थे, 'वाणिज्य महाविद्यालय' से स्नातक होने से पहले, उन्होंने वर्ष 1941 में औपचारिक रूप से अपना इस्लाम घोषित किया। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाओं में शामिल हैं 'इस्लाम को समझना' और 'इस्लाम का परिचय', तथा पुस्तक 'सहाबा का जीवन' का अनुवाद – इसके बाद उन्होंने 69 वर्ष की आयु में पवित्र कुरआन के अर्थों का जापानी में अनुवाद शुरू किया, और इसे 80 वर्ष की आयु तक पहुँचने के बाद ही पूरा कर पाए – उनका यह अनुवाद जापानी भाषा (जिसे 13 करोड़ लोग बोलते हैं) में सबसे प्रसिद्ध अनुवाद बन गया।

हंगेरियाई ज्यूला जर्मानुस

इसी तरह प्राच्यविद् व भाषा-विशेषज्ञ ज्यूला जर्मानुस (Gyula Germanus) भी हैं, जिन्होंने भारत में – जहाँ उन्हें वहाँ के विश्वविद्यालयों में पढ़ाने के लिए नियुक्त किया गया था – इस्लाम अपनाया और अब्दुल करीम जर्मानुस के नाम से पुकारे जाने लगे। उन्होंने बुडापेस्ट विश्वविद्यालय में प्राच्य अध्ययन विभाग के अध्यक्ष का पद चालीस वर्षों तक संभाला।

उनकी सबसे प्रमुख रचनाओं में 'अर्धचंद्र के प्रकाश के मार्गदर्शन में', तथा हज की अपनी यात्रा के बाद लिखी गई पुस्तक 'अल्लाहु अकबर' शामिल हैं।

उनकी सबसे प्रसिद्ध बातों में से एक यह है: (इस्लाम की शिक्षाओं में ऐसा कुछ भी नहीं जिसे व्यावहारिक रूप से पूरा न किया जा सके, यह प्रबुद्ध बुद्धि का धर्म है, और यही स्वतंत्र लोगों का अक़ीदा बनेगा), आगे जोड़ते हुए (मैंने चाहा कि मैं 100 वर्ष जियूँ, ताकि पवित्र कुरआन की भाषा की सेवा के लिए जो कुछ भी मैं चाहता हूँ, वह पूरा कर सकूँ। मैंने

इस्लाम से इसलिए प्रेम किया क्योंकि यह पवित्रता व स्वच्छता का धर्म है – शरीर की स्वच्छता, सामाजिक व्यवहार की स्वच्छता, और मानवीय भावना की स्वच्छता।)

नस्लीय भेदभाव-विरोधी मैल्कम एक्स

उन्हीं की तरह अमेरिकी नस्लीय भेदभाव-विरोधी कार्यकर्ता, तथा विश्व में सामाजिक न्याय व मानवाधिकारों के सबसे प्रमुख रक्षकों में से एक – मैल्कम एक्स (Malcolm X) – जिनके पिता एक बैप्टिस्ट पादरी थे, जिनकी नस्लभेदी समूह 'कू क्लक्स क्लान' के हाथों हत्या कर दी गई थी। एक्स ने वर्ष 1948 में इस्लाम अपनाया और अपना नाम बदलकर मलिक शबाज़ (Malik Shabazz) रख लिया। वे वर्ष 1964 में मक्का मुकर्रमा की अपनी हज यात्रा से बहुत प्रभावित हुए, तथा वहाँ विभिन्न नस्लों, रंगों, राष्ट्रीयताओं व जातियों के बीच नस्लीय भेदभाव के पूर्ण अभाव को देखकर चकित रह गए, और उन्होंने अपनी पत्नी 'बेट्टी' को लिखा: "प्रिय बेट्टी, मैं अभी मक्का में हूँ, एक गोरे आदमी के बगल में एक अफ्रीकी मूल के व्यक्ति के पीछे नमाज़ पढ़ रहा हूँ, और उसी थाली से खा रहा हूँ जिससे एक नीली आँखों वाला व्यक्ति खा रहा है।" अपने लगातार भाषणों में उन्होंने आगे कहा: "मुझे पूरा विश्वास है कि अमेरिका को इस्लाम की सख्त ज़रूरत है, और केवल एक अल्लाह की इबादत ही मनुष्य को उस शांति के करीब ला सकती है जिसकी बात सब करते हैं पर कोई उसे हासिल करने के लिए कुछ नहीं करता।"

कनाडाई गैरी मिलर

हमने डॉक्टर गैरी मिलर (Gary Miller) की जीवनी देखी, जो एक कनाडाई गणितज्ञ व धर्मशास्त्री और टोरंटो विश्वविद्यालय के पूर्व प्राध्यापक हैं। उन्होंने वर्ष 1977 में इस्लाम अपनाया और अपना नाम बदलकर अब्दुल अहद उमर रख लिया, इसके बाद उन्होंने इस्लाम के बारे में कई टीवी व रेडियो कार्यक्रम प्रस्तुत किए तथा दर्जनों व्याख्यान दिए, जिनसे प्रभावित होकर सैकड़ों यूरोपीय व अमेरिकी लोगों ने इस्लाम अपनाया। उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध हैं 'कुरआन और बाइबिल के बीच अंतर', 'द अमेज़िंग कुरआन', और 'मिशनरियों के तरीकों पर एक इस्लामी दृष्टिकोण'।

उनकी शानदार बातों में से एक यह है: "वैज्ञानिक सिद्धांतों में से एक प्रसिद्ध सिद्धांत यह है कि सिद्धांतों में गलतियाँ खोजते रहो जब तक कि उनकी सत्यता सिद्ध न हो जाए, और आश्चर्य की बात है कि कुरआन स्वयं मुसलमानों व गैर-मुसलमानों दोनों को इसमें गलतियाँ खोजने के लिए बुलाता है – और वे कभी नहीं पाएँगे.. कुरआन में एक पूरी सूरा है जिसका नाम 'मरयम' है, जबकि नबी मुहम्मद ﷺ की किसी पत्नी या बेटी के नाम पर कोई सूरा नहीं है। इसी तरह ईसा अलैहिस्सलाम का नाम कुरआन में 25 बार आया है, जबकि नबी मुहम्मद का नाम केवल 5 बार आया है।"

कोरियाई छोई

कहानी दक्षिण कोरियाई डॉक्टर छोई युंग-किल (Choi Young-kil) के साथ भी अलग नहीं रही, जिन्होंने वर्ष 1980 में अपना इस्लाम प्रकट किया और अपना नाम बदलकर हामिद रख लिया, फिर अपनी पहली पुस्तक 'कोरिया में इस्लामी दावत' प्रकाशित की, तथा 'म्युंग जी विश्वविद्यालय' में कई शैक्षणिक पदों पर रहे, जिनमें अरबी अध्ययन विभाग व स्नातकोत्तर विभाग की अध्यक्षता, तथा कोरियाई इस्लामिक फ़ेडरेशन (FMK) के अध्यक्ष का पद शामिल है।

उन्होंने इस्लाम पर 100 पुस्तकें लिखीं व अनूदित कीं, जिनमें सबसे प्रमुख हैं 'नबी मुहम्मद ﷺ का जीवन', 'सहीह अल-बुखारी का संक्षिप्त सार', साथ ही 'अरबी भाषा सीखने का मार्ग', 'अल-अरबईन अन-नववीय्या', 'रियाज़ अस-सालिहीन', 'पवित्र कुरआन के शब्दों की अनुक्रमणिका', तथा पुस्तक 'नबवी हदीस: 1.8 अरब मुसलमानों की परंपराएँ व रीति-रिवाज़' और कई अन्य।

हामिद छोई युंग-किल, अब्दुल्लाह यूसुफ अली के अंग्रेज़ी अनुवाद पर आधारित पवित्र कुरआन के अर्थों के कोरियाई में पहले अनुवादक माने जाते हैं, और डॉक्टर छोई का यह अनुवाद दक्षिण कोरिया के लगभग 2 लाख मुसलमानों के लिए मुख्य व एकमात्र संदर्भ माना जाता है। उन्होंने कुरआन के अध्ययन के लिए पहला डिजिटल उपकरण भी बनाया, तथा कोरियाई भाषा में इस्लाम के परिचय की पहली इलेक्ट्रॉनिक पुस्तक भी तैयार की।

ऑस्ट्रियाई लियोपोल्ड वाइस

इसके बाद हमने ऑस्ट्रियाई विचारक व पत्रकार लियोपोल्ड वाइस (Leopold Weiss) की जीवनी की ओर रुख किया, जिन्होंने वर्ष 1926 में इस्लाम अपनाया और अपना नाम बदलकर मुहम्मद असद (Muhammad Asad) रख लिया। उन्होंने पाकिस्तान राष्ट्र की स्थापना में योगदान दिया, तथा लाहौर में इस्लामिक स्टडीज़ संस्थान की अध्यक्षता की। उनकी सबसे महत्वपूर्ण रचनाओं में शामिल हैं 'द रोड टु मक्का', 'इस्लाम एट द क्रॉसरोड्स', तथा पवित्र कुरआन के अर्थों का अंग्रेज़ी में अनुवाद 'द मैसेज ऑफ़ द कुरआन'।

इस्लाम के बारे में उनकी प्रसिद्ध बातों में से एक यह है: "यह मुसलमान नहीं थे जिन्होंने इस्लाम को महान बनाया, बल्कि इस्लाम ने ही मुसलमानों को महान बनाया... यदि हम नबी मुहम्मद के उस मार्गदर्शन को नकारते हैं जिसे अल्लाह ने समस्त संसार के लिए दया बनाकर भेजा, तो इसका अर्थ है कि हम अल्लाह की दया को ही नकार रहे हैं... और तमाम बाधाओं के बावजूद इस्लाम आज भी मानव-जाति द्वारा जानी गई सबसे बड़ी उत्थान-शक्ति बना हुआ है।"

फ्रांसीसी गायिका डियाम्स

इसी तरह पूर्व फ्रांसीसी रैप गायिका मेलानी जॉर्जियाडेस (Mélanie Georgiades), जो 'डियाम्स' (Diam's) के नाम से मशहूर हैं – उन्होंने पहले गाने रिकॉर्ड किए और वर्ष 1999 से 2009 के बीच 40 लाख से अधिक एल्बम बेचे, इसके बाद उन्होंने अपना इस्लाम घोषित किया, हिजाब पहनना शुरू किया और मक्का की हज-यात्रा की, फिर अपने मानवीय संगठन 'बिग अप प्रोजेक्ट' के माध्यम से अफ्रीका महाद्वीप में भूखे, बीमार व विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की मदद के लिए खुद को समर्पित कर दिया।

अपने इस्लाम के बाद उनकी बातों में से एक यह है: "अब, जब से मैंने इस्लाम अपनाया है, जब भी मेरे जीवन में कुछ होता है – चाहे खुशी का हो या ग़म का – मुझे पता होता है कि अल्लाह मेरी दुआ सुन रहा है, और जितना अधिक मैं कुरआन पढ़ती हूँ, उतना ही मेरा विश्वास बढ़ता जाता है।"

जर्मन टीवी सितारा क्रिस्टियाने बैकर

हमने प्रसिद्ध जर्मन टीवी सितारा क्रिस्टियाने बैकर (Kristiane Backer) की जीवनी पर भी गौर किया, जिन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'फ्रॉम MTV टु मक्का: हाउ इस्लाम चेंज्ड माई लाइफ़' में इस्लाम की ओर अपने बदलाव के कारणों तथा अपना नाम बदलकर 'मक्का' रखने की बात बताई, वे कहती हैं:

"नब्बे के दशक में मेरी मुलाकात पाकिस्तानी क्रिकेट सितारे इमरान खान से हुई, तो मेरा जीवन धीरे-धीरे इस्लाम की ओर बदलना शुरू हुआ, क्योंकि इमरान खान भूखों व वंचितों की परवाह करते थे, और वे गरीब लोग दुनिया की चमक-दमक की उतनी परवाह नहीं करते थे जितनी अल्लाह की आज्ञाकारिता की.. आज मैं नमाज़ पढ़ती हूँ और अपने ईमान व अपनी नमाज़ के साथ खुद को खुश पाती हूँ", और क्रिस्टियाने की एक और उतनी ही महत्वपूर्ण पुस्तक है, जिसका शीर्षक है 'इस्लाम, दिल का साधन: मैं मुसलमान क्यों हूँ'।

जर्मन फ़ॉन डेनफ़र

रहे जर्मन लेखक प्रोफ़ेसर अहमद फ़ॉन डेनफ़र (Ahmad von Denffer), जो म्यूनिख के इस्लामिक सेंटर के उप-निदेशक तथा जर्मन भाषा में प्रकाशित होने वाली एक सांस्कृतिक पत्रिका के प्रधान संपादक रह चुके हैं – उन्होंने इस्लाम अपनाया और इस विषय पर कई पुस्तकें लिखीं। एक समाचार-साक्षात्कार में उन्होंने प्रचारकों के आचरण के बारे में कहा: "प्रचारक को अपने देश के लोगों के सामने नबी ﷺ के गुणों से युक्त होना चाहिए, ताकि लोगों को उसमें एक जीवंत आदर्श मिले जिससे वे प्रभावित हों, और उसे उस देश के लोगों

की भाषा में निपुण होना चाहिए ताकि वह उन्हें इस्लाम की वास्तविकता स्पष्ट कर सके, और उस देश की संस्कृति को जानना भी ज़रूरी है जहाँ वह दावत दे रहा है।"

स्पेनिश अमांडा

स्पेनिश पत्रकार अमांडा फ़िगेरास (Amanda Figueras), जिन्होंने स्पेनिश समाचार-पत्र 'एल मुंडो' में काम करते हुए अपना इस्लाम घोषित किया, उन्होंने 'क्यों इस्लाम?' शीर्षक से एक पुस्तक लिखी, जिसके पन्नों में उन्होंने अपनी पूरी कहानी बताई – वे कैसे और क्यों मुसलमान बनीं – यूरोपीय देशों, जिनमें उनका अपना देश स्पेन भी शामिल है, में इस्लाम के बारे में फैली कई ग़लत धारणाओं व मान्यताओं का जवाब देने के लिए। उनकी पुस्तक में यह भी दर्ज है: "मुझे असली इस्लाम के बारे में पता नहीं था, और मैंने बदलने का फैसला किया और उसमें सफल रही.. अब मैं अपनी पुस्तक के ज़रिए एक यूरोपीय मुस्लिम महिला का जीवन बयान करने की कोशिश कर रही हूँ, क्योंकि ऐसी कई पुस्तकें हैं जिन्होंने इस्लाम धर्म को मानवीय व सामाजिक रूप से सही ढंग से नहीं समझाया।"

रूसी पोरखोवा

रहीं रूसी साहित्यकार, जिन्होंने मॉस्को में दर्शनशास्त्र महाविद्यालय व विदेशी भाषा संस्थान से स्नातक किया, तथा रूसी लेखक संघ की सदस्या रहीं – वालेरिया पोरखोवा (Valeria Porokhova) – उन्होंने अपना इस्लाम घोषित किया और अपना नाम बदलकर ईमान रख लिया, तथा पवित्र कुरआन के संपूर्ण अर्थों का रूसी में अनुवाद किया, जिसे रूस में सबसे उत्तम व सर्वाधिक व्यापक अनुवाद माना जाता है। उनकी प्रसिद्ध बातों में से एक यह है: "मुझे यह अहसास होता है कि मैं जीवन भर मुसलमान ही रही हूँ, और मैंने इस्लाम को तभी पहचाना जब मैंने कुरआन पढ़ा, जिसने जीवन से जुड़े मेरे कई सवालों का जवाब दिया।"

अंग्रेज़ गायक कैट स्टीवंस

ब्रिटिश रॉक एंड रोल गायक कैट स्टीवंस (Cat Stevens), जिन्हें आठ वैश्विक स्वर्ण एल्बम मिल चुके हैं, उन्होंने अस्पताल में – जहाँ वे थोड़े समय के लिए भर्ती थे – पवित्र कुरआन के अर्थों के अनुवाद की एक प्रति पढ़ने के बाद इस्लाम अपनाया, फिर वर्ष 1983 में इंग्लैंड में बच्चों के लिए एक इस्लामी विद्यालय की स्थापना शुरू की, तथा दुनिया भर में अकाल व युद्धों के पीड़ितों की मदद के लिए 'इस्लामिक रिलीफ़' संगठन की स्थापना की। अपने इस्लाम के बारे में वे कहते हैं: (मुसलमानों को विशेष रूप से यह जान लेना चाहिए कि इस्लाम के सिद्धांतों के अनुसार स्वयं को शिक्षित करें, क्योंकि बच्चों को परवरिश के दायरे में एक नैतिक मार्ग का अनुकरण करने की ज़रूरत होती है।)

और भी बहुत से लोग हैं, जिनका दसवाँ हिस्सा भी बताने की गुंजाइश यहाँ नहीं है, ज्ञात रहे कि वर्ष 2023 के आँकड़ों के अनुसार दुनिया भर में मुसलमानों की संख्या 2 अरब से अधिक है, जो पृथ्वी की जनसंख्या का लगभग 25% है, और 'प्यू' शोध संस्था के अनुसार इस्लाम दुनिया भर में सबसे तेज़ी से फैलने वाला धर्म है। जबकि 'मुहम्मद' नाम – जो अत्यधिक प्रशंसा से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है 'प्रशंसित' व 'उत्तम गुणों वाला' – बच्चों व नवजातों के नामों की गणना करने वाली विशेष वेबसाइट 'फ़ोरबियर्स' (Forebears) की नामकरण-विज्ञान से जुड़ी नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, विश्व भर में सबसे अधिक प्रचलित नाम है – नबी मुहम्मद का नाम विश्व के सर्वाधिक प्रचलित नामों की सूची में शीर्ष पर है, जिसे लगभग 13 करोड़ 40 लाख लोग धारण करते हैं।

मुहम्मद ﷺ – नबियों व रसूलों की मुहर

“मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं। बल्कि वह अल्लाह के रसूल और नबियों के समापक हैं। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु को भली-भाँति जानने वाला है।”

– कुरआन, सूरा अल-अहज़ाब 33:40 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

आज, जब भी मैं अंतरराष्ट्रीय व अरबी समाचार बुलेटिनों का अनुसरण करता हूँ, और जब भी मैं दृश्य, लिखित व श्रव्य समाचार-कक्षों में इनमें से कुछ का संपादन करता हूँ, तो मुझे यह बात स्पष्ट रूप से समझ में आती है कि "संपूर्ण मानवता को नबी मुहम्मद ﷺ की शिक्षाओं की बेहद ज़रूरत है, जिससे न कोई मुक्ति है और न कोई बचाव" – और मैं यह बात भावुकता में बहकर नहीं कह रहा, न ही अपने धार्मिक जुड़ाव के कारण – हालाँकि यह मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान है – बल्कि यह वह ठोस सच्चाई है जिसकी सुगंध मैं महसूस करता हूँ, जिसकी हवा मैं साँस में लेता हूँ, और जिसका प्रभाव मैं हर उस ख़बर के साथ अनुभव करता हूँ जो मेरे हाथों से गुज़रती है, या मेरी आँखों के सामने स्क्रीन पर आती है – इस पत्रकारिता के पेशे में अपने काम के आधार पर, जिसकी चक्की और हथौड़े के बीच मैं पूरे 30 वर्षों से पिसता रहा हूँ!

क्योंकि हर उस घटना के साथ, जो दोनों ध्रुवों के बीच फँसकर मेरे दिल को कचोटती है – प्रत्येक कार्यक्रम व वृत्तचित्र रिपोर्ट की तो बात ही छोड़ दें – मुझे उस महान आयत की गहराई महसूस होती है (और हमने आपको समस्त संसार के लिए दया बनाकर ही भेजा है), और मुझे 'सही ढंग से नक़ल की गई बात और स्पष्ट बुद्धि के बीच सामंजस्य, तथा दोनों के बीच किसी भी टकराव को दूर करने' की उस बात की सच्चाई महसूस होती है, जैसा कि नेक पूर्वजों की किताबों में आया है। जो कोई भी विश्लेषकों, पर्यवेक्षकों व पत्रकार-संपादकों की नज़र से समाचार बुलेटिनों का अनुसरण करता है, वह समझ जाता है कि पूरी दुनिया, एक छोर से दूसरे छोर तक, हर प्रकार व रूप के पापों, बुराइयों व गुनाहों में डूबी हुई है, और

इसकी जलाने वाली आग बुझाने का, तथा इसकी विनाशकारी अति को सीमित करने का कोई रास्ता नहीं, सिवाय इसके कि (और जो कुछ रसूल तुम्हें दें, उसे ले लो, और जिससे वे तुम्हें रोकें, उससे रुक जाओ)।

अल्लाह के रसूल ﷺ दयालु, उदार व विनम्र थे – उन्होंने अपने पूरे जीवन में कभी किसी सेवक या किसी स्त्री पर हाथ नहीं उठाया, नबी ﷺ ने कभी किसी भोजन में ऐब नहीं निकाला – यदि उनकी इच्छा होती तो खाते, वरना छोड़ देते। वे सबसे अधिक उदार व्यक्ति थे, और रमज़ान के महीने में उनकी उदारता और भी बढ़ जाती थी। वे इतने त्यागी थे कि पूरा महीना गुज़र जाता और वे अपने घर वालों के साथ खजूर व पानी के अलावा कुछ न खाते। अपनी मृत्यु के बाद उन्होंने अपने परिजनों के लिए विरासत में केवल अपना हथियार, अपना खच्चर और कुछ ज़मीन छोड़ी, जिसे उन्होंने सदका करार दे दिया था। वे तेजोमय व सुंदर थे, और उनसे हमेशा खुशबू महकती रहती थी।

जब वे प्रसन्न होते तो उनका चेहरा चाँद के टुकड़े की तरह चमक उठता था, और वे अपने घर में विनम्र रहते थे – अपने कपड़े खुद सिलते, अपनी जूती खुद गाँठते, और वही काम करते जो पुरुष अपने घरों में करते हैं। वे रात को लंबी इबादत करते, जबकि उनके सभी साथी व परिजन सोए होते, और जब उनसे इसका कारण पूछा जाता – जबकि अल्लाह ने उन्हें क्षमा कर दिया था और जन्नत की गारंटी दे दी थी – तो वे कहते: "तो क्या मैं एक शुक़रगुज़ार बंदा न बनूँ?"

उन्हें अपने कुछ साथियों से, जो सुरीली व सुंदर आवाज़ रखते थे, पवित्र कुरआन सुनना पसंद था, और वे स्वयं पर उतरे पवित्र कुरआन को सुनकर रो पड़ते थे। लोगों ने उनसे अधिक बच्चों व परिवार पर दयालु किसी को नहीं देखा। उनकी सेवा में समर्पित रहने वाले एक व्यक्ति ने कहा: "मैंने अल्लाह के रसूल की दस वर्षों तक सेवा की, तो उन्होंने मुझसे कभी 'उफ़' तक नहीं कहा, और न ही कभी किसी काम के न होने पर यह कहा कि तुमने ऐसा क्यों किया?"

नबी ﷺ अपने घर वालों व साथियों के साथ मज़ाक़ किया करते थे, परंतु अपने मज़ाक़ में भी हमेशा सच ही कहते, न किसी को दुख पहुँचाते और न किसी की निंदा करते, और केवल मुस्कुराकर ही हँसते थे। उनके सच्चे मज़ाक़ की एक मिसाल यह है कि उन्होंने एक दिन एक बूढ़ी औरत को देखा तो मज़ाक़ में उससे कहा: "बूढ़ी औरत जन्नत में प्रवेश नहीं करेगी।" वह औरत उदास हो गई, तो उन्होंने उससे यह भावार्थ कहा: "बूढ़ी औरत के रूप में कोई जन्नत में प्रवेश नहीं करेगी, क्योंकि अल्लाह तआला वहाँ उसे युवा अवस्था में, पूर्ण सुंदरता व यौवन के साथ, वापस लौटा देगा।"

मुश्रिकों ने उन्हें अपना बादशाह बनाने, तथा उन पर धन-दौलत व उपहारों की भरमार करने का प्रस्ताव रखा, इस शर्त पर कि वे एक अकेले अल्लाह की, जिसका कोई साझी नहीं,

इबादत की अपनी दावत छोड़ दें – तो इसने उन्हें अपनी दावत पर दृढ़ रहने के संकल्प में और भी मज़बूत कर दिया, और उन्होंने उनसे कहा: "अल्लाह की कसम! यदि वे सूरज को मेरे दाहिने हाथ में और चाँद को मेरे बाएँ हाथ में रख दें, इस शर्त पर कि मैं यह काम छोड़ दूँ – जब तक कि अल्लाह इसे प्रकट न कर दे, या मैं इसी राह में मिट न जाऊँ – तो भी मैं इसे नहीं छोड़ूँगा।"

वे सबसे सुंदर चेहरे वाले थे, गोरे रंग में लालिमा लिए हुए, उनकी आँखें बड़ी थीं और पुतलियाँ गहरी काली, न बहुत लंबे थे और न बहुत नाटे, बिना ज़रूरत के बात नहीं करते थे, बहुत शर्मीले थे, अपनी बात अल्लाह के नाम से शुरू करते थे, हर नेमत को – चाहे वह कितनी भी छोटी हो – अहमियत देते थे और उसमें कोई कमी नहीं निकालते थे, और युद्ध में वे सबसे अधिक बहादुर थे, पंक्तियों में सबसे आगे बढ़ते ताकि उनके साथी उनकी आड़ में एक मज़बूत ढाल की तरह सुरक्षित रहें। यदि किसी बात पर नाराज़ होते तो मुँह फेर लेते, और यदि प्रसन्न होते तो अपनी नज़रें नीची कर लेते। जो कोई पहली बार उन्हें देखता उसके दिल में उनका रोब बैठ जाता, और जो कोई उनसे घुलता-मिलता वह उनसे प्रेम करने लगता। न उनसे पहले और न उनके बाद उन जैसा कोई हुआ। उन्हें खुशबू लगाना और मुसलमानों के साथ बैठना पसंद था। जब उन्हें छींक आती तो अपना कपड़ा मुँह पर रख लेते, अपनी आवाज़ धीमी कर लेते और अपने रब का शुक्र अदा करते, और जब उन्हें जम्हाई आती तो अपना पवित्र हाथ मुँह पर रख लेते और शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह माँगते।

इमाम तिमिज़ी की पुस्तक 'अश-शमाइल अल-मुहम्मदिय्या' में यह भी दर्ज है कि "अल्लाह के रसूल ﷺ निरंतर चिंतनशील रहते थे, हमेशा सोच में डूबे रहते थे, उन्हें कोई आराम नहीं होता था, देर तक चुप रहते थे, बिना ज़रूरत के बात नहीं करते थे, अपनी बात अल्लाह के नाम से शुरू करते और उसी पर समाप्त करते थे, संक्षिप्त पर व्यापक अर्थ वाली बातें करते थे, उनकी बात स्पष्ट व निर्णायक होती थी, न ज़्यादा न कम, न रूखे थे और न अपमानजनक, हर नेमत को – चाहे वह छोटी ही क्यों न हो – अहमियत देते थे और उसकी बुराई नहीं करते थे, फिर भी वे न किसी खाने की बुराई करते थे और न उसकी तारीफ़, दुनिया या उससे जुड़ी चीज़ें उन्हें नाराज़ नहीं करती थीं, परंतु जब सत्य का उल्लंघन होता तो उनके गुस्से के आगे कुछ भी टिक नहीं पाता जब तक कि वे सत्य की मदद न कर देते, और वे कभी अपने लिए गुस्सा नहीं होते थे और न अपने लिए बदला लेते थे।"

नबी ﷺ के नामों व गुणों में से कुछ ऐसे हैं जो केवल उन्हीं से विशिष्ट हैं, न कि उनसे पहले के अन्य रसूलों व नबियों (उन सब पर सलामती हो) से, और कुछ ऐसे हैं जो उन सबमें साझा हैं, परंतु नबी ﷺ में वे पूर्णता तक पहुँचे हैं – और ये सभी उनकी चमकदार विशेषताओं की एक झलक हैं, उनके उत्तम आचरण व चरित्र से उद्धृत जगमगाते सितारे। इन नामों व विशेषणों में शामिल हैं: "मुहम्मद, अहमद, अल-माही, अल-हाशिर, अल-आक्रिब, अल-मुक़फ़ी, नबी अर-रहमा (दया के नबी), नबी अत-तौबा (तौबा के नबी), अल-मुख्तार, अल-हादी, अश-

शाहिद, अल-बशीर, अन-नज़ीर, अल-मुतवक्किल, अल-फ़ातिह, अल-अमीन, अस-सादिक, अल-मसदूक, अश-शफ़ी, अल-खातिम, अस-सिराज अल-मुनीर, अल-मुस्तफ़ा, अर-रसूल, अन-नबी" – और इसी तरह कई और नाम।

यह आश्चर्य की बात नहीं कि नबी ﷺ का शाश्वत चमत्कार "पवित्र कुरआन" है, जो उन पर वह्य के रूप में उतारा गया, जिसकी आयतें एक हिकमतवाले, ज्ञानी की ओर से विस्तृत की गई हैं – वह किताब जिसकी सुरक्षा की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआला ने खुद ली है, ताकि वह किसी भी प्रकार की तहरीफ़ व त्रुटि से सुरक्षित रहे, और उसने क़यामत के दिन तक इसकी हिफ़ाज़त, लेखन, तफ़सीर, शिक्षण, तिलावत व श्रवण की ज़िम्मेदारी उठाने वालों को तैयार किया। यह वह महान चमत्कारी किताब है, जिसके अजूबे कभी समाप्त नहीं होते, और जो बार-बार दोहराए जाने से पुरानी नहीं पड़ती।

नबी ﷺ के प्रत्यक्ष चमत्कारों में शामिल हैं: इसरा (रात्रि-यात्रा) का चमत्कार, चाँद का दो भागों में बँटना, पानी का उनकी उंगलियों से फूटना, क़तादा की आँख का वापस लौटना, दीयों का चमत्कार, बारिश की दुआ, खज़ूर के तने का रोना, उहुद पहाड़ का हिलना, थैले का पानी, नजाशी की मृत्यु की सूचना देना, सुराका बिन मालिक की घटना, हातिब बिन अबी बल्लआ का पत्र, मुता के शहीदों की शहादत, भोजन में बरकत, समुद्र की शहीदा (घटना), तथा नबी ﷺ के चमत्कारों में भविष्य की अनदेखी बातों की सूचना देना भी शामिल है, और इनके अलावा भी बहुत कुछ – यहाँ तक कि हमारे प्रतिष्ठित उलमा कहते हैं कि नबी ﷺ के प्रत्यक्ष चमत्कारों की संख्या 1000 से अधिक है।

नुबुव्वत की मुहर अल्लाह के रसूल ﷺ के दोनों कंधों के बीच थी – कबूतर के अंडे जैसी एक लाल गिल्टी, और यह मुहर बाईं ओर, पवित्र हृदय के स्थान के अधिक निकट थी।

और यह बिल्कुल सत्य है कि फ़्रांसीसी चिकित्सक मॉरिस बुकाई (Maurice Bucaille) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक – जिसका दुनिया की कई भाषाओं में अनुवाद हुआ – 'द बाइबल, द कुरआन एंड साइंस' (आधुनिक ज्ञान के प्रकाश में पवित्र ग्रंथों का अध्ययन) में क्या कहा: "कुरआन पढ़ने वाला उसमें ऐसे वैज्ञानिक स्वरूप वाले वाक्य पाता है, जिनके साथ यह कल्पना करना असंभव है कि मुहम्मद के युग में कोई व्यक्ति उन्हें स्वयं रच सकता था। इस्लाम ने हमेशा धर्म व विज्ञान को एक-दूसरे से जुड़े जुड़वाँ माना है।"

उनसे पहले इंग्लैंड की पहली मस्जिद के निर्माता, वकील विलियम हेनरी क्विलियम (William Henry Quilliam) थे, लिवरपूल शहर में, जिन्होंने वर्ष 1887 में इस्लाम अपनाया और अपना नाम बदलकर अब्दुल्लाह क्विलियम (Abdullah Quilliam) रख लिया, इसके अतिरिक्त उन्होंने एक अनाथालय बनाया, तथा मासिक पत्रिका 'अल-हिलाल' प्रकाशित की, यहाँ तक कि उन्हें 'ब्रिटिश द्वीपों के शेख' का उपनाम दिया गया..!

उनके इस्लाम अपनाने के कारणों के बारे में यह कहा जाता है कि वे मुसलमानों की सहनशीलता और उनकी नैतिक व धार्मिक प्रतिबद्धता से बेहद प्रभावित हुए – विशेष रूप से इस बात से कि वे तेज़ तूफानी हवाओं के कारण उफनते समुद्र के बीच हिचकोले खाते जहाज़ के डेक पर भी सामूहिक नमाज़ को कतारबद्ध होकर अदा करते रहे। क्विलियम उस जहाज़ पर फ्रांस से मोरक्को जाने के रास्ते में सवार थे, और वे उस समय इन मेहनतकश मुसलमान नमाज़ियों के चेहरों पर दिखने वाले ईमान की उस शक्ति को करीब से देख रहे थे, जिसकी उनमें स्वयं कमी थी। उनकी रचनाओं में शामिल हैं 'दीन अल-इस्लाम' तथा 'अहसन अल-अजविबा'। उनकी प्रसिद्ध बातों में से एक यह है: (मैंने कुरआन के अर्थों का अनुवाद पढ़ा, तथा 'किताब अल-अब्तल', और कई अन्य किताबें भी, और जब मैंने तांजियर छोड़ा, तब तक मैं इस्लाम अपना चुका था और यह स्वीकार कर चुका था कि यही सच्चा धर्म है।)

नबी ﷺ – आदर्श व अनुकरणीय व्यक्तित्व

“निःसंदेह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में उत्तम आदर्श है। उसके लिए, जो अल्लाह और अंतिम दिन की आशा रखता हो, तथा अल्लाह को अत्यधिक याद करता हो।”

– कुरआन, सूरा अल-अहज़ाब 33:21 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

निःसंदेह अल्लाह के रसूल ﷺ इस नीले ग्रह की समस्त सृष्टि के लिए एक आदर्श व अनुकरणीय व्यक्तित्व हैं। उनके पिता 'अब्दुल्लाह' का देहांत उनके जन्म से पहले ही हो गया था, जब वे अभी अपनी माँ के गर्भ में ही थे – यह घटना 'आम अल-फील' (हाथी वाले वर्ष) के रबीउल अव्वल महीने में, जो 571 ईस्वी के अनुरूप है, हुई थी – इस तरह नबी मुहम्मद ﷺ जन्म से ही पितृहीन हो गए। इसके 6 वर्ष बाद उनकी माँ 'आमिना' का भी देहांत हो गया, और इस भारी सदमे के साथ वे मातृ-पितृ दोनों से विहीन हो गए। इसके बाद उनके दादा 'अब्दुल मुत्तलिब' ने उनकी परवरिश की ज़िम्मेदारी संभाली, परंतु वे भी तब गुज़र गए जब नबी की आयु 8 वर्ष हो चुकी थी, फिर उनके चाचा 'अबू तालिब' ने उनकी परवरिश की ज़िम्मेदारी उठाई।

और ताकि नबी ﷺ उनके बाद आने वाली संपूर्ण मानवता के लिए एक उत्तम आदर्श व अनुकरणीय व्यक्तित्व बन सकें, उन्हें बड़ी-बड़ी परीक्षाओं में डाला गया, जिन पर उन्होंने बड़ा धैर्य रखा – ऐसा धैर्य जिसे धरती पर कोई भी प्राणी सहन करने में सक्षम नहीं। उन्होंने अनाथता, गरीबी, भुखमरी, घेराबंदी, अपने शहर – मक्का – से ज़बरन निर्वासन, पीछा किए जाने, झुठलाए जाने, तथा बीमारी की पीड़ा – जब वह उन पर बढ़ जाती – का सामना किया, इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने चाचाओं व बेटों को भी खोया। नबी ﷺ के तीनों बेटे – कासिम, अब्दुल्लाह और इब्राहीम – उनके जीवनकाल में एक के बाद एक गुज़र गए, और वे

सभी बचपन में ही थे। इसके अलावा उनकी तीन बेटियाँ – ज़ैनब, रुक़य्या और उम्म कुल्सूम – भी उनके जीवनकाल में ही, अपनी युवावस्था में, गुज़र गईं।

इसी दौरान उनकी पहली पत्नी 'खदीजा', जिन्हें वे बहुत आदर व प्रेम देते थे, का देहांत भी उनके जीवनकाल में ही हुआ – यह उनके चाचा 'अबू तालिब', जिन्होंने उनकी परवरिश की थी, की मृत्यु के केवल तीन दिन बाद हुआ। ये दोनों दुखद घटनाएँ मुश्रिकों द्वारा नबी ﷺ के परिवार, रिश्तेदारों व साथियों पर 'शे'ब बनी हाशिम' नामक क्षेत्र में लगाई गई एक अन्यायपूर्ण घेराबंदी के बाद हुई, जो लगातार 3 वर्षों तक जारी रही – इस दौरान मुश्रिकों ने नबी ﷺ की दावत व उनके शाश्वत आसमानी संदेश पर ईमान लाने वाले सभी लोगों के साथ खरीद-फ़रोख़्त, विवाह व किसी भी प्रकार के लेन-देन पर पाबंदी लगा दी थी।

मुश्रिकों ने नए मुसलमानों तथा आदरणीय नबी ﷺ के रिश्तेदारों, परिवार व साथियों पर हर प्रकार के भोजन, पेय व दवा पर रोक लगा दी, यहाँ तक कि उन्हें ज़मीन की घास व पेड़ों के पत्ते खाने पड़े। मुश्रिकों ने इस बहिष्कार को लिखकर एक दस्तावेज़ में दर्ज किया और उसे काबा के पर्दों पर टाँग दिया, ताकि नबी ﷺ पर दबाव डालकर उन्हें अपने संदेश व मूर्ति-पूजा त्यागने की अपनी दावत छोड़ने पर मजबूर किया जा सके। वे उन पर दबाव डाल रहे थे कि वे एक अकेले अल्लाह की – जिसका राज्य में कोई साज़ी नहीं, न कोई पत्नी और न कोई संतान – इबादत की अपनी दावत बंद कर दें, और यह भी कि वे प्राचीन जाहिलिय्यत की उन प्रथाओं के प्रति चेतावनी देना बंद कर दें, जो क़बीलों के बीच निरंतर युद्धों व आपसी संघर्ष, छोटी बच्चियों को ज़िंदा दफ़नाने, महिलाओं को विरासत से वंचित रखने, मनुष्यों को गुलाम बनाने, जादू-टोने व अंधविश्वास व ज्योतिष में विश्वास करने, जुआ खेलने, शराब पीने, सूअर का माँस खाने और डकैती डालने के रूप में प्रचलित थीं – यहाँ तक कि वह दिन आया जब दीमक ने उस बहिष्कार-दस्तावेज़ को खा डाला, सिवाय इस वाक्य के: "बिस्मिका अल्लाहुम्मा" (हे अल्लाह, तेरे नाम से)। यहाँ मुश्रिकों को यह एहसास हुआ कि आर्थिक व सामाजिक बहिष्कार अब कारगर नहीं रहा, और यह कि आसमानी संदेश अपने रास्ते पर आगे बढ़ता रहेगा, और कोई भी इसे रोकने या सीमित करने में सक्षम नहीं...

यहाँ मुश्रिकों ने नबी ﷺ को नीचा दिखाने, उनका उपहास उड़ाने व उन्हें झुठलाने के लिए अपने भ्रामक दुष्प्रचार-तंत्र को सक्रिय कर दिया, उन्हें जादूगर, ज्योतिषी, कवि, झूठा और पागल कहते हुए – परंतु वे इन सबमें सफल न हो सके, क्योंकि वे लंबे वर्षों से, अपनी दावत की घोषणा से पहले ही, उनके बीच 'अस-सादिक अल-अमीन' के नाम से जाने जाते थे। तब उन्होंने उनके सबसे कमज़ोर साथियों – ग़रीबों, निर्धनों, मेहनतकशों व गुलामों – पर यातना, दमन, बहिष्कार व हाशिए पर धकेलने की नीति अपनाई, ताकि इस दावत को उसके पालने में ही ख़त्म कर दिया जाए, इससे पहले कि यह अरब प्रायद्वीप में फैल जाए। परंतु मुसलमानों की संख्या घटने के बजाय बढ़ती चली गई, तो मुश्रिकों ने – हैरान व असहाय होकर – मुसलमानों के विरुद्ध सैन्य युद्ध छेड़ दिया, जिसमें नबी मुहम्मद ﷺ ने अपने प्रिय

साथियों, अनुयायियों व समर्थकों को, तथा अपने दिल के सबसे करीबी रिश्तेदारों को खोया, जिनमें उनके चाचा 'हम्ज़ा' भी शामिल थे – फिर भी वे इसमें भी सफल न हो सके, यहाँ तक कि इस्लाम पूरे अरब प्रायद्वीप में फैल गया और नबी ﷺ के जीवनकाल में ही लोग समूहों में इसमें प्रवेश करने लगे।

इस बारे में स्कॉटिश लेखक थॉमस कार्लाइल (Thomas Carlyle) अपनी पुस्तक 'हीरोज़' में कहते हैं: "आज के सभ्य युग के किसी भी व्यक्ति के लिए यह शर्म की बात हो गई है कि वह इस धारणा पर कान दे कि इस्लाम धर्म झूठा है और मुहम्मद एक धोखेबाज़ जालसाज़ थे, और अब समय आ गया है कि हम इस तरह की शर्मनाक बातों के प्रचार के विरुद्ध खड़े हों, क्योंकि उस रसूल द्वारा पहुँचाया गया संदेश बारह शताब्दियों से एक प्रकाशमान दीपक बना हुआ है।"

प्रसिद्ध आयरिश लेखक जॉर्ज बर्नार्ड शॉ (George Bernard Shaw) ने उनके बारे में कहा: "मुझे ज्ञात धर्मों में इस्लामी शिक्षाओं पर आधारित सामाजिक व्यवस्था जैसी कोई अन्य उत्तम सामाजिक व्यवस्था नहीं है, और मैंने भविष्यवाणी की थी कि मुहम्मद का धर्म कल यूरोप में स्वीकार्य होगा, और वह आज पहले ही स्वीकार्य होना शुरू हो चुका है।"

फ्रांसीसी इतिहासकार गुस्ताव ल-बॉ (Gustave Le Bon) ने अपनी पुस्तक 'अरबों का इतिहास' में उनके बारे में कहा: "इस्लाम आधुनिक विज्ञान की खोजों के सबसे अनुकूल धर्मों में से है, और यह आत्माओं को संस्कारित व सुधारने, तथा न्याय, सहनशीलता, परोपकार, आपसी मेल-मिलाप व सह-अस्तित्व की ओर प्रेरित करने वाले सबसे महान धर्मों में से एक है। इस्लामी क्षेत्र में एक चीनी मुसलमान और एक अरब मुसलमान के बीच समस्त अधिकारों के उपभोग में कोई अंतर नहीं है।"

इस प्रकार नबियों व रसूलों की मुहर, मुहम्मद ﷺ, उनके बाद आने वाली संपूर्ण मानवता के लिए एक उत्तम आदर्श व अनुकरणीय व्यक्तित्व बन जाते हैं। जिसने भी अपने माता या पिता में से किसी एक को, या दोनों को खोया हो और अनाथ होकर जिया हो, वह नबी मुहम्मद ﷺ का अनुसरण करे। जिसने भी अपने जीवनसाथी को खोया हो, वह नबी मुहम्मद ﷺ को याद करे.. जिसने भी अपने जीवनकाल में अपने किसी बेटे या बेटे को खोया हो, वह नबी मुहम्मद ﷺ को याद करे.. जिसने भी अपने जीवनकाल में अपने दादा व चाचा को खोया हो, वह नबी मुहम्मद ﷺ को याद करे.. जिसे भी अपने जीवनकाल में निर्वासन व उत्पीड़न का सामना करना पड़ा हो, वह नबी मुहम्मद ﷺ को याद करे.. जिसे भी घेराबंदी, ज़बरन भुखमरी व पीछा किए जाने का सामना करना पड़ा हो, वह नबी मुहम्मद ﷺ को याद करे.. जिसे भी अपने कबीले व विरोधियों की ओर से झुठलाए जाने, उपहास व तंग किए जाने का सामना करना पड़ा हो, वह नबी मुहम्मद ﷺ को याद करे.. जो कोई बीमार पड़ा हो या घायल हुआ हो, वह नबी मुहम्मद ﷺ को याद करे और धैर्य रखते हुए अल्लाह से प्रतिफल की आशा

रखे.. इस प्रकार नबी मुहम्मद ﷺ संपूर्ण मानवता के लिए, हर कठिन सामाजिक परिस्थिति में, तथा उनके पूरे जीवनकाल में सामने आने वाली हर भौतिक, मानसिक, मानवीय व प्राकृतिक आपदा की कठिन परिस्थिति में, एक उत्तम आदर्श बन जाते हैं।

भारतीय साहित्यकार, जो अंधे व अनाथ बच्चों के माध्यम से इस्लाम पर ईमान लाईं

यह हैं भारत की महान कवयित्री व साहित्यकार कमला दास, जिन्हें वर्ष 1964 का एशियाई काव्य पुरस्कार, वर्ष 1965 का 'केंट' पुरस्कार, तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से मानद डॉक्टरेट प्राप्त हुई, और जो साहित्य के नोबेल पुरस्कार की संक्षिप्त सूची में पूर्व नामांकित रह चुकी हैं। इस्लाम अपनाने के बाद उन्होंने कहा – यह उनके द्वारा दो अनाथ मुस्लिम बच्चों की परवरिश, देखभाल व शिक्षा के दौरान हुआ, जिसने उनकी आँखें इस्लाम और उसकी शाश्वत मानवीय शिक्षाओं के प्रति खोल दीं, तो उन्होंने – जो पहले हिंदू थीं – अपना इस्लाम घोषित किया और अपना नाम बदलकर कमला सुरैया रख लिया, भारतीय जनता पार्टी की ओर से आने वाली लगातार धमकियों के बावजूद: "मैं मदीना मुनव्वरा की मिट्टी को चूमना चाहती हूँ।" उन्होंने अल्लाह तआला के प्रेम में, और उसके आदरणीय रसूल मुहम्मद ﷺ के प्रेम में कई कविताएँ रचीं, जिनमें से एक है:

"तुम अचानक आए, मूसलाधार बारिश की तरह, जबकि उस बरसात का सिलसिला उन युगों से थम चुका था, फिर भी उसकी एक सुनहरी याद बाक़ी रह गई है – रेत के हर एक कण में।"

[शेर – कमला दास की काव्य-पंक्तियों का अर्थानुवाद, मूल छंद व लय सुरक्षित नहीं रखी गई है]

ज़िक्र को ऊँचा उठाना

"और हमने आपके लिए आपका ज़िक्र ऊँचा कर दिया। निःसंदेह हर कठिनाई के साथ एक आसानी है। निःसंदेह (उस) कठिनाई के साथ एक (और) आसानी है।"

– कुरआन, सूरा अश-शर्ह 94:4-6 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

कई कारणों ने मुझे धीरे-धीरे इतिहास के सबसे प्रसिद्ध नेताओं, शासकों, दार्शनिकों व विचारकों के संस्मरण, डायरियाँ व आत्मकथाएँ पढ़ने के लिए प्रेरित किया, जिसके अंत में मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि उनमें से हर एक ने केवल किसी एक पहलू या कुछ पहलुओं को ही छुआ और बाक़ी को नज़रअंदाज़ कर दिया – किसी ने अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शन, राजनीति या क़ानून पर ध्यान केंद्रित किया, बाक़ी विषयों को छोड़ते हुए, या किसी ने मानव-

समूह के किसी एक वर्ग को संबोधित किया और बाकी को भुला दिया। उनमें से कुछ अपने सिद्धांतों, परिकल्पनाओं व लेखन में उसी परिवेश से बाहर नहीं निकल सके जिसमें वे जिए, और न ही उस भौगोलिक क्षेत्र से, जिसमें उनकी मृत्यु हुई। परंतु केवल एक ही व्यक्ति ऐसे थे, जिन्हें अल्लाह तआला ने नुबुव्वत के लिए चुना और समस्त मानवता के लिए विश्व-व्यापी संदेश का भार सौंपा – उन्होंने मानवीय जीवन के किसी भी पहलू या दिशा को अछूता नहीं छोड़ा। अकीदे से लेकर इबादत तक, आचरण से लेकर मूल परिवार तक, विस्तृत परिवार से लेकर समाज तक, नैतिकता से लेकर परवरिश तक, व्यापार से लेकर सड़क के शिष्टाचार तक, लेन-देन से लेकर विरासत तक, पवित्रता व स्वच्छता से लेकर युद्ध व शांति तक, शिक्षा देने व सीखने से लेकर राजनीति तक, न्यायपालिका से लेकर शासक व शासित के संबंध तक, माता-पिता व संतान के रिश्ते से लेकर पति-पत्नी के रिश्ते तक, व्यक्ति के अपने रिश्तेदारों, बिरादरी, मित्रों व पड़ोसियों से संबंध से लेकर मुसलमान के अपने धार्मिक भाई तथा अपने मानव-भाई से संबंध तक, मनुष्य के पशुओं से संबंध से लेकर मनुष्य के अपने पर्यावरण व परिवेश से संबंध तक – इस हद तक कि निकट व दूर के लोग चकित रह गए, और अब कोई भी भलाई या सद्गुण ऐसा नहीं बचा जिसका जिक्र चुने हुए नबी ﷺ के बिना किया जाए – वे जो अपनी इच्छा से नहीं बोलते, बल्कि जो कुछ वे कहते हैं वह तो बस एक वक़्त है जो उन पर उतारी जाती है। इस संदर्भ में फ्रांसीसी प्राच्यविद् एतिएन दिने (Étienne Dinet) ने कहा: "इस्लाम ने अपने प्रकट होने की पहली घड़ी से ही यह घोषित किया कि यह हर काल व स्थान के लिए उपयुक्त धर्म है, क्योंकि यह फ़ितरत का धर्म है, और फ़ितरत एक मनुष्य से दूसरे में भिन्न नहीं होती।"

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि सदियों से चली आ रही निरंतर ऊँचाई व सम्मान, ऐसे अद्भुत ढंग से नया होता रहता है, जो किसी भी मनुष्य की कल्पना में नहीं आ सकता, चाहे उसकी सोच व ज्ञान का दायरा कितना भी विस्तृत क्यों न हो – हजारों पूर्वाग्रही प्राच्यवादी अभियानों व भ्रामक मीडिया-हमलों के बावजूद। हर अज्ञान, हर नमाज़, हर तशहहूद व हर तिलावत के साथ, मुहम्मद ﷺ के नाम का जिक्र पूरी धरती पर ऊँचा होता है। और निःसंदेह 'जिक्र को ऊँचा उठाने' की एक शानदार मिसाल वह निर्णय है जो अमेरिकी राज्य केंटकी के लुइसविल शहर की नगर-पालिका ने 2019 की शुरुआत में लिया, जब विश्व मुक्केबाज़ी के महान खिलाड़ी मुहम्मद अली क्ले (Muhammad Ali Clay) के सम्मान में उनका नाम शहर के प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे को दे दिया गया। क्यों? इसका जवाब देते हुए नगर-पालिका के मेयर ग्रेग फ़िशर (Greg Fischer) ने कहा कि क्योंकि "मुहम्मद अली ने मानवीय व खेल-संबंधी मूल्यों की एक विरासत छोड़ी, जिसने करोड़ों लोगों को प्रेरित किया, और यह अच्छी बात है कि हम उनके नाम को शहर के हवाई अड्डे के ज़रिए अमर कर दें।" इस कार्य से मुहम्मद ﷺ का नाम, और उनके चचेरे भाई अली बिन अबी तालिब का नाम – दोनों ऊँचे हो गए, ऐसे स्थान से जहाँ प्राच्यविदों की कल्पना भी न पहुँची हो, अपने ही देशों के दिल में, अपने ही घर की दहलीज़ पर!

इस बारे में कले, जिन्होंने खुद को इस्लाम के लिए समर्पित कर दिया था और एक मस्जिद बनवाई तथा नबी ﷺ की सहायता के लिए 20 करोड़ डॉलर समर्पित किए, कहते हैं: "नक्शे बदलने के लिए अंतरराष्ट्रीय युद्ध लड़े जाते हैं, परंतु परिवर्तन का नक्शा बनाने के लिए गरीबी के विरुद्ध युद्ध लड़े जाते हैं। मैं मुसलमान हूँ, और दुनिया में कहीं भी निर्दोष लोगों की हत्या का इस्लाम से कोई संबंध नहीं है। मैंने इस्लाम में ऐसा धर्म पाया जो समस्त मानवता के लिए खुशी लाता है, जो रंग, जाति व नस्ल में कोई भेद नहीं करता, और सभी अल्लाह के सामने बराबर हैं – यह एक दिव्य सत्य है जो किसी मनुष्य से नहीं आ सकता।" – जैसा कि मुहम्मद तमाशी की पुस्तक 'महान व्यक्तित्व व विचारक जो इस्लाम अपनाते हैं' में दर्ज है।

इस बारे में उनके समकक्ष मैल्कम एक्स ने वर्ष 1964 में हज अदा करने के बाद कहा: "मैंने वहाँ दो हफ्तों में वह देखा जो मैंने 39 वर्षों में नहीं देखा था। मैंने गोरी व काली त्वचा वाली सभी नस्लों को देखा, जिनके दिलों में एकता व सच्ची भाईचारे की भावना पैदा हो गई थी, यहाँ तक कि वे एक अकेले अल्लाह की छत्रछाया में मानो एक ही आत्मा बनकर जी रहे थे।"

स्पेनिश समाचार-पत्र 'एबीसी' (ABC) ने अपनी एक पूर्व रिपोर्ट में यह खुलासा किया कि "नबी मुहम्मद ﷺ का नाम दुनिया में सबसे अधिक प्रचलित है, और फ्रांस के कुछ प्रशासनिक क्षेत्रों में नवजातों के लिए सबसे लोकप्रिय नाम है", जबकि ब्रिटिश समाचार-पत्र 'द इंडिपेंडेंट' (The Independent) ने ब्रिटेन के राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के हवाले से खुलासा किया कि "मुहम्मद नाम इंग्लैंड व वेल्स – दोनों में पुरुष नवजातों के बीच सबसे अधिक प्रचलित है, और इसके ज्ञात रूपों – मुहम्मद, महमूद, अहमद व मामादू – के तहत 7361 नवजातों को यह नाम दिया गया"। तो क्या यूरोप, कनाडा, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया व अमेरिका महाद्वीपों में कहीं भी किसी ने कभी यह कल्पना की थी कि ऐसी बात किसी दिन, चाहे संयोगवश ही सही, घटित होगी?!

'ज़िक्र को ऊँचा उठाने' का यह अद्भुत सिलसिला फुटबॉल विश्व कप के 21वें संस्करण में फिर से दोहराया गया, जो जुलाई 2018 में रूस में आयोजित हुआ था, जहाँ कमेंट्री मंचों व स्टेडियम की दर्शक-दीर्घाओं में 'मुहम्मद' नाम सबसे अधिक प्रचलित नाम रहा, क्योंकि टूर्नामेंट में भाग लेने वाली कई टीमों की पंक्तियों में यह नाम रखने वाले 10 खिलाड़ी खेल रहे थे। ऐसा ही क्रतर 2022 फुटबॉल विश्व कप में हुआ, और वर्ष 2026 के उस टूर्नामेंट में भी, जो अमेरिका, कनाडा व मेक्सिको के साझे आयोजन में हो रहा है!

इससे पहले बीबीसी (BBC) ने भी ब्राज़ील में आयोजित 'रियो डी जनेरो' ओलंपिक 2016 में सबसे अधिक ध्यान खींचने वाली एक बात पर प्रकाश डाला था – वह है 'हिजामा' (कपिंग थेरेपी), जिसके बारे में सच्चे व सत्यापित नबी ﷺ ने कहा: "शिफ़ा तीन चीज़ों में है – शहद पीने में, पिचकारी लगवाने में, और आग से दागने में – और मैं अपनी उम्मत को दागने से

रोकता हूँ।" इस दौरान प्रसिद्ध तैराकों व जिमनास्टिक खिलाड़ियों की दर्जनों तस्वीरें खींची गईं, जिनके शरीर पर हिजामा के निशान दिखाई दिए, जिसके कारण दर्शकों ने उनके शरीर को ढकने वाले उन नीले घेरों के रहस्य के बारे में पूछना शुरू कर दिया, और यह सोचने लगे कि क्या यह किसी प्रकार का टैटू है, या कोई ऐसा गूढ़ चिह्न जिसका अर्थ उन्हें नहीं पता – यहाँ तक कि अंततः उन्हें पता चला कि यह एक बरकत वाली नबवी सुन्नत है। शायद हिजामा के निशान के साथ सबसे अधिक चर्चित व्यक्ति अमेरिकी तैराक माइकल फ़ेल्प्स (Michael Phelps) थे, जिन्होंने उसी ब्राज़ील ओलंपिक में पाँच स्वर्ण व एक रजत पदक जीते। इसी तरह अमेरिकी जिमनास्टिक चैंपियन एलेक्स नादोर (Alex Naddour) ने, 'यूएसए टुडे' समाचार-पत्र के अनुसार, कहा: "हिजामा उन तमाम अन्य तरीकों से बेहतर है जिन पर पैसा खर्च किया गया है – यही मेरी शारीरिक तंदुरुस्ती बनाए रखने और कई दर्दों से बचाव का रहस्य है।" इस प्रकार हिजामा – जो एक नबवी सुन्नत है और जिसका मुसलमान पालन करते हैं – ऊर्जा-पेय, सौना, जकूज़ी, योग, बा दुआनजिन, एक्यूप्रेशर व चीनी एक्यूपंकचर सुई-चिकित्सा, तथा भारतीय चक्रों व मंत्रों जैसी शारीरिक क्षमता बढ़ाने की तकनीकों पर, और ओलंपिक व चिकित्सकीय रूप से प्रतिबंधित उत्तेजक दवाओं पर भारी पड़ी!

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) तथा एड्स-रोकथाम हेतु संयुक्त राष्ट्र कार्यक्रम ने वर्ष 2007 में यह माँग रखी, और बार-बार दोहराई, कि पुरुष खतना को इम्यूनो-डेफ़िशिएंसी रोग की रोकथाम की रणनीतियों में शामिल किया जाए, यह इंगित करते हुए कि "यदि खतना को व्यापक रूप से अपनाया जाए, तो विशेष रूप से अफ़्रीका में, बिना खतना वाले लोगों की तुलना में 60% तक की दर से लाखों लोगों की जान बचाई जा सकती है" – और यह एक पवित्र नबवी सुन्नत है, जिससे हम और हमारे साथ पूरी दुनिया, उन नबवी सुन्नतों की ओर लौट आते हैं, जो उस प्रिय चिकित्सक नबी ﷺ की हैं, जिन्हें अल्लाह तआला ने समस्त संसार के लिए दया बनाकर भेजा। कितनी सुंदर बात कही है कहने वाले ने:

"मैं मुहम्मद की प्रशंसा में कहाँ से शुरुआत करूँ?... न काव्य उनके साथ न्याय कर सकता है और न कलमें।"

[शेर – अर्थानुवाद; मूल छंद व लय सुरक्षित नहीं रखी गई है]

नबी मुहम्मद ﷺ और उत्तम आचरण की दावत

"और निःसंदेह निश्चय आप एक महान चरित्र पर हैं।"

– कुरआन, सूरा अल-कलम 68:4 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

आदरणीय नबी मुहम्मद ﷺ ने, जिन्होंने फ़रमाया: "मुझे केवल इसलिए भेजा गया है कि मैं उत्तम आचरण को पूर्णता तक पहुँचाऊँ" – एक अन्य रिवायत में "मकारिम अल-अख़लाक़" के

शब्द आए हैं – हमें उत्तम आचरण की, तथा उन नेक कार्यों की वसीयत की जिनका लाभ दूसरों तक पहुँचता है, ताकि लोग भाइयों की तरह जिँ – एक-दूसरे से प्रेम करें, एक-दूसरे की मदद करें, एक-दूसरे पर अत्याचार न करें, एक-दूसरे को धोखा न दें, और एक-दूसरे के साथ विश्वासघात न करें – साथ ही उन्होंने भौतिकवाद, व्यक्तिवाद, लालच, कंजूसी, जमाखोरी, स्वार्थपरता, नस्लवाद, घमंड, अहंकार व दंभ के विरुद्ध चेतावनी भी दी। उनकी इससे जुड़ी कुछ वसीयतें इस प्रकार हैं:

- भूखे, बीमार व कैदी की देखभाल के बारे में नबी ﷺ की वसीयत: "भूखे को खाना खिलाओ, बीमार की देखभाल करो, और कैदी को छुड़ाओ।"
- नबी ﷺ के साथियों के सम्मान के बारे में वसीयत: "मेरे साथियों को गाली मत दो, क्योंकि उस ज्ञात की कसम जिसके हाथ में मेरी जान है, यदि तुममें से कोई उहुद पहाड़ के बराबर सोना खर्च कर दे, तब भी वह उनके एक मुद या उसके आधे हिस्से के बराबर भी नहीं पहुँच सकता।"
- नबी ﷺ का अपने घर वालों के बारे में कथन: "और मेरे घर वाले – मैं तुम्हें अल्लाह की याद दिलाता हूँ मेरे घर वालों के बारे में" (तीन बार दोहराया)।
- नबी ﷺ द्वारा उन सात प्रकार के लोगों का वर्णन जिन्हें अल्लाह क़यामत के दिन अपनी छाया में छाया देगा: "सात लोग हैं जिन्हें अल्लाह अपनी छाया में छाया देगा, उस दिन जब उसकी छाया के सिवा कोई छाया नहीं होगी: न्यायप्रिय शासक, वह युवक जो अपने रब की इबादत में पला-बढ़ा हो, वह व्यक्ति जिसका दिल मस्जिदों से जुड़ा हो, वे दो व्यक्ति जिन्होंने अल्लाह के लिए प्रेम किया, वह व्यक्ति जिसे किसी सुंदर व ऊँचे पद वाली स्त्री ने बुलाया और उसने कहा 'मैं अल्लाह से डरता हूँ', वह व्यक्ति जिसने इतनी गुप्त रूप से दान किया कि उसके बाएँ हाथ को भी पता न चले कि दाहिने हाथ ने क्या खर्च किया, और वह व्यक्ति जिसने एकांत में अल्लाह को याद किया तो उसकी आँखें बह पड़ीं।"
- कमज़ोर वर्गों की देखभाल के बारे में नबी ﷺ की वसीयत – बेरोज़गार, ग़रीब, अनाथ बच्चे, बेघर, आपदाओं व युद्धों से विस्थापित, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, वृद्ध, दिव्यांग, नेत्रहीन, बधिर व मूक – फ़रमाया: "मेरे लिए कमज़ोरों को तलाश करो, क्योंकि तुम्हें रोज़ी व मदद तुम्हारे कमज़ोरों के ही सबब से मिलती है।"
- भाईचारे व सलाम फैलाने के बारे में नबी ﷺ की वसीयत: "तुम जन्नत में तब तक प्रवेश नहीं करोगे जब तक ईमान न ले आओ, और तुम ईमान वाले तब तक नहीं बन सकते जब तक आपस में प्रेम न करो। क्या मैं तुम्हें एक ऐसी बात न बताऊँ जिसे करने से तुम आपस में प्रेम करने लगोगे? आपस में सलाम फैलाओ।"

- न्यायाधीशों को ज्ञान व समझदारी के साथ, सबके लिए समान रूप से, व्यक्तिगत इच्छाओं व पूर्वाग्रहों से दूर रहकर न्याय लागू करने की नबी ﷺ की वसीयत: "न्यायाधीश तीन प्रकार के हैं: दो जहन्नम में जाएँगे और एक जन्नत में। जिसने अपनी इच्छा के अनुसार फैसला किया, वह जहन्नम में; जिसने बिना ज्ञान के फैसला किया, वह भी जहन्नम में; और जिसने सत्य के अनुसार फैसला किया, वह जन्नत में।"
- आम मुसलमानों के लिए नबी ﷺ की वसीयत: "मुसलमान का मुसलमान पर पाँच अधिकार हैं: सलाम का जवाब देना, बीमार की देखभाल करना, जनाजे के साथ जाना, दावत कुबूल करना, और छींकने वाले के लिए दुआ करना।"
- सहयोग व समर्थन की नबी ﷺ की वसीयत: "मुसलमान मुसलमान का भाई है, न उस पर अत्याचार करता है और न उसे धोखा देकर छोड़ देता है। जो अपने भाई की ज़रूरत पूरी करने में लगा रहता है, अल्लाह उसकी ज़रूरत पूरी करने में लगा रहता है, और जो किसी मुसलमान की कोई मुसीबत दूर करता है, अल्लाह क़यामत के दिन उसकी मुसीबतों में से एक मुसीबत दूर करेगा, और जो किसी मुसलमान का परदा ढाँकता है, अल्लाह क़यामत के दिन उसका परदा ढाँकेगा।"
- अनाथों की देखभाल व परवरिश की नबी ﷺ की वसीयत: "मैं और अनाथ की परवरिश करने वाला जन्नत में इस तरह होंगे" – और उन्होंने अपनी तर्जनी व मध्यमा उंगली से इशारा किया, दोनों के बीच थोड़ी दूरी रखते हुए।
- उत्तम आचरण व परिवार की देखभाल के बारे में नबी ﷺ की वसीयत: "ईमान में सबसे पूर्ण मोमिन वह है जिसका आचरण सबसे अच्छा हो, और तुममें सबसे अच्छे वे हैं जो अपने घर वालों के लिए सबसे अच्छे हों।"
- समस्त सृष्टि – मनुष्य, पशु व पौधे – पर दया की नबी ﷺ की वसीयत: "दया करने वालों पर रहमान अल्लाह दया करता है; तुम धरती वालों पर दया करो, आसमान वाला तुम पर दया करेगा।"
- दान, विनम्रता व क्षमा के महत्व की नबी ﷺ की वसीयत: "दान करने से धन कम नहीं होता, और अल्लाह क्षमा करने से बंदे की इज़्ज़त ही बढ़ाता है, और जो कोई अल्लाह के लिए विनम्रता अपनाता है, अल्लाह उसे ऊँचा उठाता है।"
- मेहमान-नवाज़ी, रिश्तेदारी व अच्छी बात कहने की नबी ﷺ की दावत: "जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखता हो, वह अपने मेहमान का सम्मान करे, और जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखता हो, वह अपने रिश्तेदारों से संबंध जोड़े

रखे, और जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखता हो, वह अच्छी बात कहे या चुप रहे।"

- मेहनत व हलाल रोज़ी की तलाश की नबी ﷺ की दावत: "किसी ने भी अपने हाथों की कमाई से खाने से बेहतर कोई भोजन नहीं खाया, और अल्लाह के नबी दाऊद अपने हाथ की कमाई से ही खाते थे।"
- नस्लवाद तथा रंग, नस्ल व राष्ट्रीयता के आधार पर उपहास के विरुद्ध नबी ﷺ की चेतावनी: "हे लोगो! निःसंदेह तुम्हारा रब एक है। सुन लो, किसी अरब को किसी गैर-अरब पर, और किसी गैर-अरब को किसी अरब पर कोई श्रेष्ठता प्राप्त नहीं, न ही किसी गोरे को किसी काले पर, या किसी काले को किसी गोरे पर – सिवाय तक्रवा के। निःसंदेह अल्लाह के निकट तुममें सबसे सम्मानित वह है जो तुममें सबसे अधिक तक्रवा वाला हो।"
- स्त्रियों व अनाथों के साथ भलाई और उन पर अत्याचार से दूर रहने की नबी ﷺ की वसीयत: "हे अल्लाह! मैं दो कमज़ोर वर्गों – अनाथ और स्त्री – के अधिकार के हनन से सख्ती से मना करता हूँ।"
- मानवता की सेवा करने वाले उपयोगी ज्ञान – जिसमें शरई ज्ञान तथा हर वह उपयोगी विज्ञान शामिल है जो मानवता की समृद्धि व कल्याण में योगदान दे – की तलाश करने की नबी ﷺ की दावत: "जो कोई ऐसे रास्ते पर चले जिसमें वह ज्ञान की तलाश करे, अल्लाह उसके लिए जन्नत का रास्ता आसान कर देता है।"
- भीख माँगने तथा जबरन, स्वैच्छिक व छिपी बेरोज़गारी के विरुद्ध नबी ﷺ की चेतावनी: "उस ज्ञात की कसम जिसके हाथ में मेरी जान है, तुममें से किसी का अपनी रस्सी लेकर लकड़ियाँ इकट्ठा करना, उन्हें अपनी पीठ पर लादकर लाना, फिर उन्हें बेचना, जिससे वह खाए और दान भी करे – यह उससे कहीं बेहतर है कि वह किसी ऐसे व्यक्ति के पास जाए जिसे अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से दिया हो, और उससे माँगे – चाहे वह उसे दे या न दे।"
- खरीद-फ़रोख़्त, पढ़ाई, नौकरी व काम में हर प्रकार की धोखाधड़ी के विरुद्ध, तथा हथियार के बल पर डराने, धमकाने व लूटने के विरुद्ध नबी ﷺ की चेतावनी: "जो हम पर हथियार उठाए, वह हममें से नहीं, और जो हमें धोखा दे, वह भी हममें से नहीं।"
- माँओं, पत्नियों, बहनों, बेटियों, पोतियों व समस्त स्त्रियों सहित, स्त्रियों की देखभाल व उनके साथ नम्रता व सम्मान से व्यवहार करने की नबी ﷺ की वसीयत: "स्त्रियों के साथ अच्छा व्यवहार करने की एक-दूसरे को नसीहत करो।"

- छोटों पर स्नेह व बड़ों के सम्मान की नबी ﷺ की वसीयत: "वह हममें से नहीं जो हमारे छोटों पर दया न करे और हमारे बड़ों का सम्मान न जाने।"
- माता-पिता की सेवा, उनसे प्रेम, उनकी आज्ञाकारिता व सम्मान, तथा यथासंभव उनकी सेवा की नबी ﷺ की वसीयत (जब तक यह धर्म के मूल सिद्धांतों के विरुद्ध न हो): "जो चाहता हो कि उसकी उम्र लंबी हो और उसकी रोज़ी में बढ़ोतरी हो, उसे चाहिए कि अपने माता-पिता के साथ नेकी करे और अपने रिश्तेदारों से संबंध बनाए रखे।"
- पड़ोसियों के सम्मान, उनकी मदद, उन्हें परेशान न करने व उनकी जासूसी न करने की नबी ﷺ की वसीयत: "जिब्रील मुझे पड़ोसी के बारे में इतनी बार वसीयत करते रहे कि मैंने सोचा वे उसे वारिस ही बना देंगे।" तथा उनका यह कथन भी: "वह मुझ पर ईमान नहीं लाया जो रात को पेट भरकर सोए जबकि उसका पड़ोसी उसके बगल में भूखा हो और उसे इसका पता हो।"
- पेड़ लगाने व खेती करने के लिए नबी ﷺ का प्रोत्साहन: "जो कोई मुसलमान कोई पौधा लगाए या कोई खेती करे, फिर उसमें से कोई पक्षी, इंसान या जानवर खाए, तो यह उसके लिए दान बन जाता है।"
- पशुओं की देखभाल, तथा उन्हें सताने, तड़पाने, भूखा-प्यासा रखने, विकृत करने, निशाना बनाकर शिकार करने, अनावश्यक रूप से मारने, या मनोरंजन के लिए घातक पशु-लड़ाइयों में झोंकने के विरुद्ध – तथा उन्हें पानी-भोजन देने व उनकी देखभाल करने की नबी ﷺ की वसीयत – जब साथियों ने एक दिन पूछा 'ऐ अल्लाह के रसूल! क्या पशुओं के मामले में भी हमें सवाब मिलता है?' तो उन्होंने कहा: "हर जीवित प्राणी में सवाब है।" उन्होंने उस स्त्री के बुरे अंजाम का भी जिक्र किया जिसने अपनी बिल्ली को बाँधे रखा और न उसे खाना दिया, न ही यह होने दिया कि वह खुद निकलकर खा सके, यहाँ तक कि वह मर गई – और उस स्त्री के अच्छे अंजाम का भी जिक्र किया जिसने एक बेहद प्यासे आवारा कुत्ते को पानी पिलाकर उसकी जान बचाई।
- कर्ज़दारों को उनका कर्ज़ चुकाने में मदद करने, उनकी ओर से कर्ज़ अदा करने, बिना सूद के भलाई की नीयत से कर्ज़ देने, और उन्हें कर्ज़ चुकाने तक मोहलत देने की नबी ﷺ की वसीयत: "जो किसी तंगदस्त को मोहलत दे, या उसका कर्ज़ माफ़ कर दे, अल्लाह क़यामत के दिन उसे अपने अर्श की छाया में छाया देगा, उस दिन जब उसकी छाया के सिवा कोई छाया नहीं होगी।"
- भलाई का आदेश देने व बुराई से रोकने के लिए नबी ﷺ की अपनी उम्मत को दावत: "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम्हें ज़रूर भलाई का आदेश देना

होगा और बुराई से रोकना होगा, वरना अल्लाह जल्द ही तुम पर अपनी ओर से कोई सज़ा भेजेगा, फिर तुम उसे पुकारोगे तो वह तुम्हारी दुआ कुबूल नहीं करेगा।"

- सेवकों की देखभाल व उन पर दया की नबी ﷺ की वसीयत: एक दिन नबी मुहम्मद ﷺ के एक साथी को अपने सेवक के साथ चलते हुए देखा गया, दोनों एक जैसे सुंदर कपड़े पहने हुए थे। एक राहगीर को आश्चर्य हुआ और उसने कारण पूछा, तो उस साथी ने बताया: "एक बार मैंने अपने सेवक और उसकी माँ का मज़ाक उड़ाया था, तो नबी मुहम्मद ﷺ ने मुझे डाँटा और कहा: 'तुझमें जाहिलियत की एक बात है – तुम्हारे भाई तुम्हारे मातहत हैं, अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे हाथ में रखा है, तो जिसका भाई उसके मातहत हो, उसे चाहिए कि वह उसे वही खिलाए जो खुद खाता है, और वही पहनाए जो खुद पहनता है, और उन पर ऐसा बोझ न डालो जो उन्हें भारी पड़े, और यदि डालो भी तो उनकी मदद करो।' उसी दिन से मैं अपने सेवक के साथ तभी चलता हूँ जब उसे वैसे ही कपड़े पहनाऊँ जैसे खुद पहनता हूँ, उसके काम में उसकी मदद करता हूँ, और उसे अपने भोजन में से खिलाता हूँ।"
- सलाम फैलाने व लोगों के बीच भोजन बाँटने के महत्व की नबी ﷺ की वसीयत: "हे लोगो! सलाम फैलाओ, खाना खिलाओ, रिश्तेदारी जोड़े रखो, और रात को नमाज़ पढ़ो जब लोग सोए हों – तुम सलामती के साथ जन्नत में प्रवेश करोगे।"
- मुसलमान को अपने हाथ व जुबान से दूसरों को नुकसान पहुँचाने से बचने, तथा पिछले सभी गुनाहों को त्यागने की नबी ﷺ की वसीयत: "मुसलमान वह है जिसकी जुबान व हाथ से दूसरे मुसलमान सुरक्षित रहें, और मुहाजिर वह है जो उन चीज़ों को छोड़ दे जिनसे अल्लाह ने मना किया है।"
- अश्लील बातों, गंदी जुबान, वंश-कुल पर ताने व लोगों पर लानत भेजने के विरुद्ध नबी ﷺ की चेतावनी: "मोमिन न ताना मारने वाला होता है, न लानत भेजने वाला, न अश्लील बोलने वाला, और न गंदी जुबान वाला।"
- हर उस दिन भलाई करने व दान देने की नबी ﷺ की वसीयत जिसमें सूरज उगे – जब साथियों ने पूछा कि यह हर दिन कैसे संभव है, जबकि उनके पास इतना साधन नहीं, तो नबी ﷺ ने कहा: "निःसंदेह भलाई के दरवाज़े बहुत हैं: तसबीह, तहमीद, तकबीर व तहलील कहना, भलाई का आदेश देना व बुराई से रोकना, रास्ते से तकलीफ़देह चीज़ हटाना, बहरे को सुनाना, अंधे को रास्ता दिखाना, रास्ता पूछने वाले को उसकी ज़रूरत की जगह बताना, फ़रियाद करने वाले की सहायता के लिए तेज़ कदमों से दौड़ना, और कमज़ोर के साथ अपनी पूरी ताकत से बोझ उठाना – यह सब तुम्हारी अपनी ओर से तुम्हारे लिए दान है।" अर्थात् दान केवल धन से ही नहीं होता, बल्कि हर वह नेक कार्य दान है जो दूसरों के लिए लाभदायक हो और उन्हें खुशी दे

– हर भलाई दान है, यहाँ तक कि दूसरों के सामने मुस्कुराना भी दान माना जाता है, और अच्छी बात कहना भी दान है।

- स्थायी सवाब व निरंतर लाभ वाले दान – जैसे ज्ञान फैलाना, विद्यालय बनवाना, वृद्धों, अनाथों या बेघरों के लिए घर बनवाना, और पानी की कमी वाले क्षेत्रों में कुएँ खुदवाना – पर स्थिर रहने की नबी ﷺ की वसीयत: "निःसंदेह उन कार्यों व नेकियों में से जो एक मोमिन को उसकी मृत्यु के बाद भी मिलती रहती हैं, वे हैं: ऐसा ज्ञान जो उसने सिखाया व फैलाया, एक नेक संतान जो उसने छोड़ी, एक कुरआन जो उसने विरासत में छोड़ा, या एक मस्जिद जो उसने बनवाई, या मुसाफिरों के लिए एक घर जो उसने बनवाया, या एक नहर जो उसने बहाई, या वह दान जो उसने अपने स्वस्थ जीवनकाल में अपने धन से निकाला – यह सब उसकी मृत्यु के बाद भी उसे मिलता रहता है।"
- माता-पिता की नाफरमानी, अल्लाह के साथ शिर्क, तथा हर प्रकार की जालसाज़ी – झूठी बात, झूठी गवाही, मुद्रा जालसाज़ी, प्रमाणपत्रों की जालसाज़ी, स्वीकारोक्तियों की जालसाज़ी, वंश-कुल की जालसाज़ी, दस्तावेज़ों व तथ्यों की जालसाज़ी – के विरुद्ध नबी ﷺ की चेतावनी: नबी ने एक दिन अपने साथियों से कहा: "क्या मैं तुम्हें सबसे बड़े गुनाहों के बारे में न बताऊँ?" उन्होंने कहा: 'क्यों नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल!' उन्होंने कहा: "अल्लाह के साथ शिर्क करना, और माता-पिता की नाफरमानी करना" – वे उस समय टेक लगाकर बैठे थे, फिर सीधे बैठ गए और कहा: "सुन लो! और झूठी बात कहना, और झूठी गवाही देना, सुन लो! और झूठी बात कहना, और झूठी गवाही देना।"
- सात विनाशकारी गुनाहों के विरुद्ध नबी ﷺ की चेतावनी: "सात विनाशकारी गुनाहों से बचो: अल्लाह के साथ शिर्क करना, जादू करना, किसी ऐसी जान की हत्या करना जिसे अल्लाह ने हराम ठहराया है – सिवाय सही कारण के, सूद खाना, अनाथ का धन खाना, युद्ध के मैदान से पीठ फेरकर भागना, और पाकदामन, भोली-भाली मोमिन स्त्रियों पर झूठा आरोप लगाना।"
- संसार भर के सभी मुसलमानों के लिए, हर काल में, नबी ﷺ की शाश्वत वसीयत: "आपस में एक-दूसरे से ईर्ष्या मत करो, धोखे से बोली मत बढ़ाओ, आपस में द्वेष मत रखो, एक-दूसरे से मुँह मत मोड़ो, और कोई अपने भाई की बिक्री पर बिक्री मत करे, और अल्लाह के बंदे बनकर आपस में भाई-भाई बन जाओ। मुसलमान मुसलमान का भाई है, न वह उस पर अत्याचार करता है, न उसे रुसवा करता है, और न उसे हकीर समझता है – तक्रवा यहाँ है" (और उन्होंने तीन बार अपने सीने की ओर इशारा किया) – "किसी व्यक्ति के लिए इतनी बुराई काफ़ी है कि वह अपने मुसलमान भाई

को हकीर समझे। हर मुसलमान का खून, माल और इज्जत, दूसरे मुसलमान पर हाराम है।"

इस्लाम नास्तिकता, अधर्मवाद व अज्ञेयवाद को हाराम ठहराता है

"और सबसे अच्छे नाम अल्लाह ही के हैं। अतः उसे उन्हीं के द्वारा पुकारो और उन लोगों को छोड़ दो, जो उसके नामों के बारे में सीधे रास्ते से हटते हैं। उन्हें शीघ्र ही उसका बदला दिया जाएगा, जो वे किया करते थे।"

— कुरआन, सूरा अल-आराफ़ 7:180 (अनुवाद: अज़ीजुल हक़ अल-उमरी)

'इल्हाद' (नास्तिकता) भाषाई दृष्टि से सत्य के मार्ग से हट जाने और सही राह से भटक जाने को कहते हैं, जबकि पारिभाषिक रूप से इसका अर्थ है अल्लाह तआला पर ईमान न रखना और सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को नकारना।

नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह के निकट सबसे अधिक घृणित तीन प्रकार के लोग हैं: हरम में नास्तिकता फैलाने वाला, इस्लाम में जाहिलिय्यत की रीति खोजने वाला, और बिना किसी हक़ के किसी व्यक्ति का खून बहाने की तलाश में रहने वाला।"

इस्लाम में संदेह व नास्तिकता को निरस्त करने वाला ईमान यह है कि "तुम अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, अंतिम दिन पर, तथा तक्रदीर के अच्छे व बुरे दोनों पर विश्वास रखो", और ईमान वह है जो दिल में स्थिर हो और कर्म उसकी पुष्टि करे। ईमान दिल से सच मानना, जुबान से इकरार करना और अंगों से अमल करना है — यह आज्ञाकारिता से बढ़ता है और गुनाह से घटता है।

यदि तुम खगोलविदों व उन्नत खगोलीय वेधशालाओं द्वारा इस ब्रह्मांड के आकार के बारे में प्राप्त किए गए अद्भुत आँकड़ों पर गहराई से विचार करो, और उस पर भी जो अभी तक उनसे छिपा हुआ है — जो कहीं अधिक विशाल है — तो जो कुछ तुम पढ़ते व सुनते हो, वह तुम्हें चकित कर देगा। हमारा यह पृथ्वी-ग्रह, जिस पर मानवता — अल्लाह जिस पर दया करे उनके सिवा — भ्रष्टाचार व बिगाड़ फैलाती रहती है, आकाशगंगा 'मिल्की वे' में मौजूद 3 ट्रिलियन समान ग्रहों में से — जो पृथ्वी से छोटे या बड़े हो सकते हैं — केवल एक ग्रह है। और हमारे सौरमंडल का सूरज भी हमारी आकाशगंगा में मौजूद 200 अरब समान सूर्यों में से केवल एक है। जहाँ तक हमारी आकाशगंगा का सवाल है, तो वह भी 2 ट्रिलियन समान आकाशगंगाओं में से एक है — स्पंदित तारे, न्यूट्रॉन तारे, सुपरनोवा, ब्रह्मांडीय धूल, महाविस्फोट, ब्रह्मांडीय गुरुत्वाकर्षण, प्रकाश-वर्ष, गामा किरणें, श्वेत बौने तारे, और ब्लैक होल — ये सभी एक सटीक संतुलन के साथ जन्म लेते और मरते रहते हैं, इनमें से कुछ की पहचान हो चुकी है और बहुत से अभी तक अदृश्य व अनदेखे हैं। ये सचमुच ऐसी भयावह

खगोलीय परिघटनाएँ व आँकड़े हैं, जो इस सुसंगत, सामंजस्यपूर्ण, विशाल व असीमित ब्रह्मांड के लिए एक महान सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को अनिवार्य ठहराते हैं – एक ऐसा सृष्टिकर्ता जो रचयिता, आकार देने वाला व आवश्यक-अस्तित्व वाला हो, एक अकेला अल्लाह, जो अकेला है, जिसका अपने राज्य में कोई साझी नहीं, जो हर समय पूजनीय व अभीष्ट है। इसके बावजूद, दुनिया लंबे समय से 'नास्तिकता' नामक परिघटना के उभार को देख रही है, जो अल्लाह तआला के अस्तित्व को नकारने के रूप में प्रकट होती है – साथ ही 'अधर्मवाद' की परिघटना का उभार भी, जो धर्मों, रसूलों, नबियों व पवित्र ग्रंथों को न मानने के रूप में प्रकट होता है, जबकि ब्रह्मांड के लिए एक महान सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को स्वीकार करता है – परंतु उनके दावे के अनुसार, वह अपनी सृष्टि के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता। इसके अतिरिक्त 'अज्ञेयवाद' की परिघटना का उभार भी है, जिसके अनुयायी यह दावा करते हैं कि उन्हें नहीं पता – क्या अल्लाह वास्तव में अस्तित्व रखता है या नहीं?। क्या मृत्यु के बाद कोई अन्य जीवन है या नहीं?। क्या पवित्र ग्रंथ, रसूल व नबी वास्तविक हैं, या केवल कल्पनाएँ व भ्रम – उनके ही शब्दों में।

इन सबके बीच, सबसे प्रभावशाली नास्तिकों में से एक, ब्रिटिश दार्शनिक एंटनी गैरार्ड न्यूटन फ़्लू (Antony Garrard Newton Flew), जो "एंटनी फ़्लू" के नाम से मशहूर हैं और सबसे कट्टर नास्तिकों में गिने जाते थे, जिन्होंने लगातार 50 से अधिक वर्ष नास्तिकता के प्रचार, उस पर सिद्धांत गढ़ने व उस पर लिखने में बिताए – उन्होंने वर्ष 2004 में, अपने जीवन के अंतिम दौर में अचानक ही दस अध्यायों व एक परिशिष्ट वाली एक पुस्तक लिखी, जिसमें उन्होंने नास्तिकता के पूरे विचार को ही ध्वस्त कर दिया और ब्रह्मांड के लिए एक सृष्टिकर्ता के अस्तित्व पर अपने विश्वास की घोषणा कर दी – इस बात ने दुनिया भर के नास्तिकों को पूरी तरह स्तब्ध कर दिया, और उन्हें ऐसा सदमा पहुँचाया जिससे वे इन पंक्तियों के लिखे जाने तक भी नहीं उबर सके। उनकी इस पुस्तक का शीर्षक है 'देयर इज़ अ गॉड' (वहाँ एक ईश्वर है), जिसमें उन्होंने लिखा: "अल्लाह के अस्तित्व के सबसे प्रभावशाली तर्क वे हैं जिनका समर्थन आधुनिक वैज्ञानिक खोजें करती हैं।"

अमेरिकी विचारक इयान मार्खम (Ian Markham) का मामला भी अलग नहीं रहा, जिन्होंने वर्ष 2021 में 'अगेंस्ट एथीज़्म' शीर्षक से एक पुस्तक लिखी, जिसमें उन्होंने नास्तिकों के तर्कों का वैज्ञानिक, तार्किक व वस्तुनिष्ठ ढंग से खंडन व आलोचना की।

और यदि हम महान फ़्रांसीसी दार्शनिक रोज़े गारोदी (Roger Garaudy) की जीवनी पर गौर करें, जो अपने जीवन के 40 से अधिक वर्षों तक नास्तिक रहे, परंतु अधर्मवाद, संदेह व वैचारिक उथल-पुथल की एक लंबी यात्रा के बाद उन्होंने इस्लाम अपनाया, और कई पुस्तकें लिखीं जिनका दुनिया की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ – जिनमें सबसे प्रमुख हैं 'मैंने इस्लाम क्यों अपनाया?', 'इस्लाम हमारा भविष्य है', तथा 'इस्लाम और पश्चिम का संकट'।

वे अपने इस्लाम के बारे में कहते हैं: "इस्लाम में सृजन, नवाचार, निर्माण, शांति फैलाना, प्रेम, दया, भलाई व ज्ञान – ये सब हिकमत से, ईमान से, और नेक उद्देश्य से अलग नहीं हैं, जैसे धर्म राजनीति से अलग नहीं और न ही अर्थशास्त्र से – बल्कि यह सब एक सक्रिय इकाई है, जो धरती पर अल्लाह के क़ानून को स्थापित करने की दिशा में काम करती है।"

उन्हीं की तरह अंग्रेज़ लेखक व पत्रकार पीटर हिचेंस (Peter Hitchens), जो ब्रिटिश सांस्कृतिक हलकों में एक जाना-पहचाना नास्तिक थे, नास्तिकता छोड़ने से पहले, उन्होंने वर्ष 2010 में अपनी पुस्तक 'द रेज अगेंस्ट गॉड: हाउ अथीइज़्म लेड मी टु फ़ेथ' लिखी, अपने इस बदलाव के रहस्य के बारे में कहते हुए: "इस दुनिया में अल्लाह का अस्तित्व कोई ग़लती नहीं है, और मनुष्य के जीवन में धर्म का होना उसके आसपास की हर चीज़ को ज़हरीला नहीं बनाता" – यह उन्होंने नास्तिकों द्वारा प्रचारित झूठ, अंधविश्वास व कमज़ोर दर्शनशास्त्र के जवाब में कहा, विशेष रूप से अपने भाई क्रिस्टोफ़र हिचेंस (Christopher Hitchens) द्वारा प्रस्तुत विचारों के जवाब में।

थियोडोर बीले (Theodore Beale), जो 'वॉक्स डे' (Vox Day) के नाम से भी जाने जाते हैं, ने अपनी पुस्तक 'द इर्रेशनल एथीइस्ट' लिखी, जिसमें उन्होंने नास्तिकता की आलोचना की और तार्किक, बुद्धिसंगत व वैज्ञानिक ढंग से, वस्तुनिष्ठता के साथ नास्तिकों को जवाब दिया, यह पुष्टि करते हुए कि "दुनिया भर में 22 नास्तिक व्यवस्थाओं के कारण मारे गए लोगों की संख्या 15 करोड़ 40 लाख से अधिक है" – और इसलिए आसमानी धर्मों पर धरती पर हुए युद्धों व खूनखराबे की ज़िम्मेदारी डालना तर्कसंगत नहीं, क्योंकि जो कुछ उनसे विमुख होने वालों व झूठे ढंग से उनसे जुड़ाव जताने वालों ने किया है – उनके बारे में ईसा मसीह (उन पर सलामती हो) ने कहा था, जब उनसे उन लोगों के बारे में पूछा गया जो लोगों को धोखा देने के लिए नेकी व परहेज़गारी का वस्त्र पहनते हैं, जबकि हकीकत में वे बुरे व भ्रष्ट इंसान होते हैं: "तुम उन्हें उनके फलों से पहचानोगे। क्या काँटों से अंगूर लगते हैं, या झाड़ी से अंजीर?" – और इसी तरह मूर्तिपूजकों, टोटमवादियों, अधर्मवादियों, अज्ञेयवादियों, नास्तिकों व संशयवादियों ने भी इतिहास भर में विशुद्ध मानवीय लालच व घटिया सांसारिक उद्देश्यों के लिए, इससे भी अधिक जघन्य कार्य किए हैं।

मैं जागरूक व शिक्षित युवाओं को इस विषय पर महत्वपूर्ण व लाभदायक पुस्तकें पढ़ने की सलाह देता हूँ, जिनमें मेरी दृष्टि में सबसे प्रमुख हैं: डॉक्टर हैसम तलअत की पुस्तक 'नास्तिकों की सबसे प्रसिद्ध शंकाओं का जवाब', अम्र शरीफ़ की पुस्तक 'नास्तिकता का मिथक', सामी आमिरी की पुस्तक 'आत्मा, बुद्धि व विज्ञान में अल्लाह के अस्तित्व के प्रमाण' तथा उनकी दूसरी पुस्तक 'नास्तिकता स्वयं के विरुद्ध', ब्रिटिश गणितज्ञ व विज्ञान-दर्शनशास्त्री डॉक्टर जॉन लेनक्स (John Lennox) की पुस्तक 'जॉन लेनक्स के सबसे सशक्त प्रमाण', डॉक्टर मुस्तफ़ा महमूद की पुस्तक 'मेरे नास्तिक मित्र के साथ संवाद' तथा उनकी दूसरी पुस्तक 'संदेह से ईमान तक मेरी यात्रा', इसी तरह शिक्षाविदों व शोधकर्ताओं के

एक समूह की पुस्तक 'नास्तिकता', साथ ही पृथ्वी-भौतिकी के अंतरराष्ट्रीय वर्ष के अवसर पर डॉक्टर जॉन क्लोवर मॉनिस्मा की देखरेख में अमेरिकी वैज्ञानिकों के एक समूह की पुस्तक 'अल्लाह विज्ञान के युग में प्रकट होता है', तथा डॉक्टर खालिद फ़ाइक अल-उबैदी की व्यवस्थित शोध-शृंखला, और कई अन्य पुस्तकें, जो पुस्तकालयों की अलमारियों को भरे हुए हैं और हर वर्ष स्थानीय व अंतरराष्ट्रीय पुस्तक-मेलों में भरपूर मात्रा में उपलब्ध रहती हैं।

मैं इस बात के साथ समापन करता हूँ कि नास्तिक, अधर्मवादी व अज्ञेयवादी – सामान्य रूप से, दर्जनों शोधों व खोजी पत्रकारिता जाँचों के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक व मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार – विभिन्न प्रकार की मानसिक व मनोवैज्ञानिक बीमारियों से पीड़ित होते हैं, इसके अतिरिक्त विभिन्न व्यक्तित्व-विकारों व व्यवहार-संबंधी गड़बड़ियों से भी – जबकि उनमें आत्महत्या, चिंता, अवसाद, विभिन्न प्रकार के फ़ोबिया, सिज़ोफ़्रेनिया, विघटनकारी व्यक्तित्व, व्यसन व पारिवारिक विघटन आदि की दर अधिक पाई जाती है, ऐसा इस पुस्तक के लेखक का दावा है। मैंने पिछले पाँच वर्षों में – विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के फैलने के बाद से – दुनिया भर के सबसे प्रसिद्ध नास्तिकों के दुखद अंत व दुर्भाग्यपूर्ण परिणामों को करीब से देखा व दर्ज किया है, जिससे व्यक्ति उस स्तर की बर्बादी, अस्तव्यस्तता, पतन व आत्म-केंद्रण पर बहुत रुककर सोचने लगता है, जिसके जाल में ऐसे लोग फँस जाते हैं। मैं उनके नाम लेने से बचना चाहता हूँ, और न ही उनके भयावह अंत के बारे में विस्तार से बताना चाहता हूँ – यह उनके परिवारों के सम्मान की खातिर है। इनमें से जिसे भी बचाया जा सके, उसे बचाना और सही राह पर लाना ज़रूरी है, तथा समय रहते सूझबूझ, हिकमत व अच्छी नसीहत के साथ उन्हें मार्गदर्शन देने का प्रयास करना ज़रूरी है – इससे पहले कि बहुत देर हो जाए। क्योंकि धरती पर रास्ते हैं, आसमान में बुर्ज हैं, और मृत्यु उन्हें अचानक आ दबोचती है – तो क्या यह उन्हें उस अकेले, स्थायी, गौरवशाली स्वामी की ओर संकेत नहीं करता, तथा उस पुनरुत्थान व मिलन के दिन की ओर, जहाँ न धन का घमंड होगा, न प्रसिद्धि का, न संतान का, और न सत्ता का?

एक और महत्वपूर्ण पुस्तक है 'धर्म के प्रमाण अधर्मवाद के विरुद्ध', लेखक अहमद अब्दुल अज़ीज़, जो अपनी भूमिका में कहते हैं: "लंबे समय तक मैं उन प्रश्नों का उत्तर देने तक ही सीमित रहा जो कुछ संवाद करने वाले भाइयों को उलझन में डाल सकते थे, और मैंने नास्तिकों व उनके जैसे भटके हुए लोगों से बहस की, तथा संशयवादियों को जवाब दिया, और यह स्पष्ट किया कि जो तर्क कुरआन व सुन्नत के किसी पाठ के विरुद्ध हो, वह वास्तव में सही नहीं हो सकता, बल्कि वह मात्र एक मानसिक कल्पना है जो कुछ लोगों को भ्रमित कर सकती है।"

इसी तरह डॉक्टर हिशाम अल-मशाली की पुस्तक 'समकालीन शंकाओं का जवाब' है, जो मुसलमानों या गैर-मुसलमानों की ओर से उठाई गई कुछ शंकाओं का जवाब देती है, और इस धर्म के मूल सिद्धांतों व स्थायी बुनियादों की रक्षा करती है, साथ ही एक ऐसा उदाहरण

प्रस्तुत करती है जो विमर्श के नवीनीकरण के लिए ज्ञान की बुनियादों को पुनर्जीवित करने तथा उसे स्पष्ट, व्यवस्थित, वैज्ञानिक व वस्तुनिष्ठ शैली में प्रस्तुत करने पर आधारित हो।

इसी तर्ज पर 'नास्तिकता का भ्रम.. जैविक व भौतिकी सिद्धांतों पर आधारित वैज्ञानिक उत्तर' शीर्षक पुस्तक है, तथा 'नास्तिकता एक मानसिक समस्या है' पुस्तक, और डॉक्टर हैसम तलअत की पुस्तक 'नास्तिकों का क्लीनिक', जिसमें नास्तिकता, ईश्वरवाद व संशय के मुद्दों का जवाब देने वाले एक विशेषज्ञ की ओर से 57 उपचारात्मक खुराकें दी गई हैं, तथा डॉक्टर जाफ़र शेख इदरीस की पुस्तक 'भौतिकी और सृष्टिकर्ता का अस्तित्व', और 'क्या नुबुव्वत में कोई संदेह है?।' शीर्षक पुस्तक, जिसमें नबी मुहम्मद ﷺ की नुबुव्वत के तार्किक व नक़ली प्रमाण संकलित हैं, लेखिका डॉक्टर सामिया बिनत यासीन अल-बद्री, जिसका मूल उम्म अल-कुरा विश्वविद्यालय में एक डॉक्टरेट शोध-प्रबंध था जिसने उत्कृष्टता की उपाधि प्राप्त की। इसी क्रम में पुस्तक 'द लैंग्वेज ऑफ़ गॉड' है, जिसे अमेरिकी चिकित्सक व आनुवंशिकी-वैज्ञानिक फ्रांसिस कॉलिन्स (Francis Collins) ने लिखा – वे स्वयं एक अल्लाह के अस्तित्व पर विश्वास करने से पहले नास्तिक थे, और उन्होंने जीव-विज्ञान, खगोल-भौतिकी, मनोविज्ञान तथा अन्य अनुप्रयुक्त विज्ञानों के माध्यम से महान अल्लाह पर ईमान के बारे में एक पुस्तक लिखी।

इस्लाम अल्लाह के साथ शिर्क को हARAM ठहराता है

“तथा (याद करो) जब लुक़मान ने अपने बेटे से कहा, जबकि वह उसे समझा रहा था: ऐ मेरे बेटे! अल्लाह के साथ किसी को साझी न ठहराना। निःसंदेह शिर्क महा अत्याचार है।”

– कुरआन, सूरा लुक़मान 31:13 (अनुवाद: अजीज़ुल हक़ अल-उमरी)

नबी ﷺ ने फ़रमाया: "हे बालक! मैं तुम्हें कुछ बातें सिखाता हूँ – अल्लाह के आदेशों की रक्षा करो, वह तुम्हारी रक्षा करेगा; अल्लाह के आदेशों की रक्षा करो, तुम उसे अपने सामने पाओगे; जब माँगो तो अल्लाह ही से माँगो, और जब मदद चाहो तो अल्लाह ही से मदद माँगो। और जान लो कि यदि पूरी उम्मत मिलकर तुम्हें कोई फ़ायदा पहुँचाना चाहे, तो वे तुम्हें केवल उतना ही फ़ायदा पहुँचा सकते हैं जो अल्लाह ने पहले से तुम्हारे लिए लिख दिया हो, और यदि वे सब मिलकर तुम्हें कोई नुक़सान पहुँचाना चाहें, तो वे तुम्हें केवल उतना ही नुक़सान पहुँचा सकते हैं जो अल्लाह ने पहले से तुम पर लिख दिया हो – क़लमें उठ चुकी हैं और पन्ने सूख चुके हैं।"

सीधे धर्म इस्लाम ने हमें आदेश दिया है कि हम अल्लाह तआला को ही – उसकी बाक़ी सृष्टि में से किसी को भी नहीं – इबादत, सम्मान व पवित्रता के लिए ख़ास मानें, तथा यह दृढ़ विश्वास रखें कि अल्लाह तआला ही इस ब्रह्मांड का सृष्टिकर्ता है, और वही इसके मामलों को नियंत्रित करता है, तथा यह विश्वास रखें कि अल्लाह तआला का न कोई साझी

है, न कोई समकक्ष, न कोई प्रतिद्वंद्वी, न कोई तुल्य और न कोई सदृश – और उसे हर कमी, अन्याय व दोष से पाक मानें। अल्लाह – जो अत्यंत महान है – 'अल-अव्वल' है, जिससे पहले कुछ नहीं; 'अल-आखिर' है, जिसके बाद कुछ नहीं; 'अल-बातिन' है, जिससे परे कुछ नहीं; और 'अज़-ज़ाहिर' है, जिसके ऊपर कुछ नहीं। जो कुछ भी तुम्हारे मन में आए, अल्लाह तआला उससे परे है – वह 'अल-वाहिद अल-अहद', 'अल-फ़र्द अस-समद' है, जिसने न कोई पत्नी बनाई और न कोई संतान। वह 'अर-रहमान अर-रहीम', 'अल-ग़नी अल-मुग़नी', 'अल-करीम अर-रज़्ज़ाक़', 'अल-मुहयी अल-मुमीत', 'अद-दार् अन-नाफ़ेअ', 'अल-काबिज़ अल-बासित', 'अर-राफ़ेअ अल-खाफ़िज़', 'अल-मुइज़्ज़ अल-मुज़िल्ल' है। उसके समान कुछ भी नहीं, और इस ब्रह्मांड की हर चीज़ उसके ज्ञान व अनुमति से चलती है, और वह 'अस-समीअ अल-अलीम' है।

इस्लाम आत्माओं के पुनर्जन्म, 'वहदत अल-वुजूद' (सर्वेश्वरवाद), ईश्वरत्व के मानवीय काया में समाहित होने, तथा मानवत्व के ईश्वरत्व में विलीन होने की अवधारणा को – जिसे 'निर्वाण' के नाम से भी जाना जाता है – पूर्णतः हराम ठहराता है। साथ ही यह मूर्तियों, प्रतिमाओं, ग्रहों, तारों व प्राकृतिक परिघटनाओं की पूजा तथा जिन्नात, मनुष्यों, गायों, पेड़ों, पत्थरों और आकाश, थल व समुद्र में मौजूद अन्य सभी जीवित व निर्जीव वस्तुओं की पूजा को भी हराम ठहराता है – ताकि इबादत, आज्ञाकारिता, समर्पण व पवित्रता केवल अल्लाह तआला के लिए खास हो, जिसका कोई साझी नहीं, और जिसके सिवा वास्तव में कोई पूज्य नहीं।

तौहीद की सच्चाई को समझा है, और उसकी मिठास चखी है, हजारों नए मार्गदर्शन-प्राप्त लोगों ने – द्वैतवाद, त्रित्ववाद, शिर्क, अवतारवाद व मूर्ति-प्रतिनिधित्व की मिथ्या मान्यताओं से भरे जीवन के बाद। और समझ के बाद बस सुधार ही शेष रह जाता है। यह हैं स्वीडिश-नॉर्वेजियन पादरी लीफ़ शॉग्नी (Leif Sjöqvist), जिन्होंने 30 से अधिक वर्षों तक स्वीडिश चर्च में पादरी के रूप में सेवा की – उन्होंने वर्ष 2020 में इस्लाम अपनाया और अपना नाम बदलकर अहमद रख लिया। स्वीडिश चैनल 'एसवीटी' ने यूरोन्यूज़ एजेंसी के अनुसार 'द कन्फ़ेशन' शीर्षक से एक वृत्तचित्र फ़िल्म में उनकी जीवनी प्रस्तुत की, जिसमें उन्होंने जोड़ा कि "इस्लाम के बारे में उनका अध्ययन, तथा मुसलमानों की नमाज़, कुरआन-पाठ व रोज़े से उनका प्रभावित होना, इस धर्म को अपनाने और मोरक्को में बसने के उनके सबसे बड़े कारणों में से थे।"

इसी तरह अमेरिकी पादरी हिलैरियन हीगी (Hilarion Heagy) ने वर्ष 2023 में अपना इस्लाम घोषित किया, तथा अपना नाम बदलकर सईद अब्दुल लतीफ़ रख लिया – यह कई जीवन-परिवर्तनों व अनुभवों के बाद, तथा विशेष रूप से तुलनात्मक धर्म-विज्ञान में गहन अध्ययन के बाद हुआ, अंताकिया रूढ़िवादी चर्च से बाइर्जेन्टाइन कैथोलिक चर्च की ओर उनके रूपांतरण की एक अवधि के बाद।

यह पूर्व अमेरिकी पादरी जोज़फ़ एडवर्ड एस्टेस (Joseph Edward Estes) की कहानी है, जिनके पास कला में मास्टर्स तथा धर्मशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधि है – उन्होंने हिंदू धर्म, यहूदी धर्म व बौद्ध धर्म का अध्ययन किया, इससे पहले कि उन्होंने वर्ष 1991 में इस्लाम अपनाया और अपना नाम बदलकर "यूसुफ़ एस्टेस" रख लिया। वे एक दाई बन गए, जो दुनिया भर के दर्जनों केंद्रों, संस्थानों व विश्वविद्यालयों में व्याख्यान देते हैं, और उन्होंने 'इस्लाम टुडे' वेबसाइट की स्थापना की। उनके हाथों दसियों हज़ार लोगों ने इस्लाम अपनाया। उनकी बातों में से एक: (इस्लाम अपनाने से पहले मुझे इस्लाम में कोई दिलचस्पी नहीं थी, परंतु जिस चीज़ ने मुझे इसकी ओर आकर्षित किया, वह उस मुसलमान व्यक्ति का आचरण था जिससे मेरा व्यवहार हुआ, तथा उसका उच्च नैतिक चरित्र।)

ऐसा ही मामला 15 वर्षों तक दक्षिण अफ्रीकी चर्च के पादरी रहे अब्राहम रिचमंड (Abraham Richmond) का भी है, जिन्होंने वर्ष 2023 में इस्लाम अपनाया और अपना नाम बदलकर इब्राहीम रख लिया – और ऐसा ही उनके चर्च के 1 लाख से अधिक अनुयायियों ने भी किया – इससे पहले कि वे बैतुल्लाह की हज यात्रा के लिए मक्का गए। वे जबल अन-नूर पर चढ़ते हुए बेहद भावुक व स्वतःस्फूर्त रूप से रो पड़े, करोड़ों दर्शकों की आँखों के सामने, एक ऐसे वीडियो क्लिप में जिसे अधिकांश मीडिया माध्यमों ने बड़े पैमाने पर साझा किया – वे उसी सफ़ेद एहराम के वस्त्रों में थे, जिन्हें उन्होंने अपने इस्लाम अपनाने से पहले बार-बार अपने सपने में देखा था।

ईसाई लेखक दुरैद मती बुतुरुस (Duraïd Matti Butrus) का मामला भी कुछ अलग नहीं रहा, जब उन्हें मोसुल विश्वविद्यालय में जीव-विज्ञान विभाग में पढ़ाई के दौरान अपने एक कॉलेज-साथी के ज़रिए इस्लाम से परिचय हुआ। वे इस सीधे धर्म से प्रभावित हुए – विशेष रूप से भ्रूण-विज्ञान से संबंधित इसकी शिक्षाओं से – और वर्ष 1992 में उन्होंने इस्लाम अपनाया तथा अपना नाम बदलकर दुरैद इब्राहीम अल-मौसिली रख लिया, फिर अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "मैंने मुहम्मद को पाया और मसीह को नहीं खोया" लिखी, इसके अतिरिक्त उन्होंने पवित्र कुरआन की सूरतों के अध्ययन, शिक्षण व याद करने को सरल बनाने से संबंधित कई महत्वपूर्ण पुस्तकें भी लिखीं।

यह बात महान भारतीय प्रचारक अहमद दीदात (Ahmed Deedat) के व्याख्यानों, वाद-विवादों व रचनाओं की याद दिलाती है, जिन्होंने दक्षिण अफ्रीका के डरबन शहर में 'इस्लामी प्रचार के अंतरराष्ट्रीय केंद्र' की स्थापना की और उसकी अध्यक्षता की। उनकी सबसे महत्वपूर्ण रचनाओं में शामिल हैं 'बाइबिल मुहम्मद ﷺ के बारे में क्या कहती है?', 'कुरआन – चमत्कारों का चमत्कार', 'क्या बाइबिल अल्लाह का वचन है?', 'मुहम्मद ﷺ सबसे महान क्यों हैं?', 'इस्लाम में इबादत की अवधारणा', 'एक मिशनरी से संवाद' और कई अन्य। उनके कुल वाद-विवादों की संख्या 235 तक पहुँची, जिनमें सबसे प्रसिद्ध पादरी जिमी स्वैगर्ट

(Jimmy Swaggart), पादरी अनीस शोरोश, तथा पादरी फ़्लॉयड क्लार्क (Floyd Clark) के साथ हुए वाद-विवाद हैं।

इस्लाम अल्लाह तआला के साथ कुफ़्र को हराम ठहराता है

“वही है जिसने तुम्हें धरती पर उत्तराधिकारी बनाया। फिर जिसने कुफ़्र किया, तो उसके कुफ़्र का दुष्परिणाम उसी पर होगा। और काफ़िरों को उनका कुफ़्र उनके पालनहार के यहाँ क्रोध ही में बढ़ाता है। और काफ़िरों को उनका कुफ़्र उनके घाटे ही में वृद्धि करता है।”

— कुरआन, सूरा फ़ातिर 35:39 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "जिसमें तीन बातें हों, उसने ईमान की मिठास पा ली: यह कि अल्लाह और उसका रसूल उसे इन दोनों के सिवा हर चीज़ से अधिक प्रिय हों, यह कि वह किसी व्यक्ति से केवल अल्लाह के लिए प्रेम करे, और यह कि उसे कुफ़्र की ओर लौटना उतना ही अप्रिय लगे जितना आग में झोंके जाने से।"

'कुफ़्र' भाषाई दृष्टि से छिपाने व ढाँकने को कहते हैं, जबकि पारिभाषिक रूप से हमारे प्रतिष्ठित उलमा ने कुफ़्र को ईमान का विपरीत परिभाषित किया है। कुफ़्र दिल से, जुबान से या अंगों से हो सकता है, और इसके कई प्रकार हैं: इनकार व झुठलाने का कुफ़्र, विमुखता व अहंकार का कुफ़्र, संदेह व शंका का कुफ़्र, तथा मुनाफ़िक़त का कुफ़्र।

कुफ़्र के रूपों में शामिल हैं: पुनरुत्थान व परलोक-जीवन का इनकार, जन्नत व जहन्नम का इनकार, रसूलों व नबियों को झुठलाना, आसमानी पवित्र ग्रंथों का इनकार, धर्म की उन बुनियादी बातों को झुठलाना जो निश्चित रूप से ज्ञात हैं, अल्लाह तआला को गाली देना, या जुबान से पवित्र दिव्य ज्ञात पर आक्षेप करना, या उसकी शक्ति का इनकार करना, या उससे घृणा या द्वेष रखना, उसके ईश्वरत्व या प्रभुत्व का इनकार करना, या उसके नामों व गुणों का उपहास करना। कुफ़्र के रूपों में यह भी शामिल है कि मूर्तियों, प्रतिमाओं, निर्जीव वस्तुओं, ग्रहों, तारों तथा अन्य सृष्टियों को पवित्र माना जाए और उनसे बरकत हासिल की जाए, तथा लाभ पाने या नुक़सान दूर करने के लिए उनके सामने गिड़गिड़ाया जाए, और इस उद्देश्य के लिए उन्हें बलि व अन्य भेंटें चढ़ाई जाएँ — अल्लाह तआला, इस महान ब्रह्मांड के सृष्टिकर्ता, रचयिता व निर्माता को छोड़कर।

पूर्व अमेरिकी पादरी केनेथ जेनकिंस (Kenneth Jenkins) अपनी पुस्तक 'इस्लाम अपनाना' में अपने इस्लाम अपनाने के कारणों को स्पष्ट करते हुए, और अपना नाम बदलकर अब्दुल्लाह फ़ारूक रखने के बारे में कहते हैं — इससे पहले वे न इस्लाम को एक आसमानी धर्म मानते थे, न मुहम्मद ﷺ की नुबुव्वत को स्वीकार करते थे, और न ही पवित्र कुरआन को एक पवित्र आसमानी किताब मानते थे: "मैंने पवित्र कुरआन के अर्थों का अनुवाद कई

बार पढ़ा और मुझे अपने सवालों के व्यापक जवाब मिलते गए, जिससे इस धर्म के प्रति मेरी प्रशंसा बढ़ती गई, यहाँ तक कि मैंने इसे अपना लिया, और मेरे भीतर इस धर्म के साथ अपने अनुभव को फैलाने की गहरी इच्छा पैदा हो गई, ताकि इसका प्रकाश व बरकत उन लोगों तक भी पहुँचे जो अभी तक इससे अपरिचित हैं। रहा मेरे जीवन का निर्णायक क्षण, तो वह वह दिन था जब मैंने भारतीय-दक्षिण अफ्रीकी प्रचारक अहमद दीदात के कई बड़े पादरियों के साथ हुए वाद-विवादों को देखा।"

रहीं मिशनरी सू वॉटसन (Sue Watson), तो धर्मशास्त्र में मास्टर्स की उपाधि प्राप्त करने के बाद वे अपने शोध व सामान्य विशेषज्ञता की आवश्यकताओं के एक भाग के रूप में शोध व अध्ययन के उद्देश्य से कुछ इस्लामी केंद्रों में आने-जाने लगीं, यहाँ तक कि अंततः उन्होंने अपना इस्लाम घोषित किया और अपना नाम बदलकर खदीजा रख लिया। इसके बारे में वे कहती हैं: "यह स्वाभाविक था कि मेरा पहला सवाल अल्लाह के ईश्वरत्व के इर्द-गिर्द घूमे, और यह कि मुहम्मद कौन हैं?! और क्या मुसलमान उनके लिए वैसे ही नमाज़ पढ़ते हैं जैसे ईसा के लिए पढ़ी जाती है?! तो मुझे अपने उलझाने वाले सवालों के संतोषजनक जवाब मिले, और मुझे याद आया कि ईसाइयत के पहले 300 वर्षों में बिशप वही सिखाते थे जो मुसलमान मानते हैं – कि मसीह एक नबी व सुधारक थे – और मैं हर चीज़ के लिए अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा करती हूँ", यह उद्धरण 'मैं कैसे मुसलमान बनी?' पुस्तक, पृष्ठ 66-68 से है।

और जब अंतरराष्ट्रीय लेखक संघ की सदस्या, तथा 'ज्ञान', 'ब्रह्मांड के निवासी' और 'अल्लाह' पुस्तकों की लेखिका, जापानी महिला (वेली-ओरा) ने इस्लाम अपनाया, तो उन्होंने भी अपने इस्लाम अपनाने के कारणों के बारे में बताया: "मैं इस्लाम कैसे न अपनाऊँ, जबकि मैंने इसका गहन अध्ययन किया है, और इसे न्याय, शांति, सुरक्षा व स्थिरता का धर्म पाया है, और मुझे यकीन हो गया कि यह सही फितरत, सुदृढ़ बुद्धि व उत्तम नैतिकता का धर्म है", आगे जोड़ते हुए: "मैं मुसलमान कैसे न बनूँ, जबकि पश्चिम में हर रोज़ दर्जनों प्रतिष्ठित हस्तियाँ अपना इस्लाम घोषित करती हैं? आज इस्लाम पश्चिमी दुनिया में 235% की दर से फैल रहा है, जबकि ईसाइयत 47% की दर से और हिंदू धर्म 17% की दर से फैल रहा है", यह उद्धरण 'इसीलिए मैं मुसलमान बनी' पुस्तक, पृष्ठ 41-42 से है।

इस्लाम समस्त रसूलों व नबियों का सम्मान करता है और उनकी रक्षा करता है

"रसूल उस चीज़ पर ईमान लाए, जो उनकी तरफ़ उनके पालनहार की ओर से उतारी गई तथा सब ईमान वाले भी। हर एक अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी पुस्तकों और उसके रसूलों पर ईमान लाया। (वे कहते हैं) हम उसके रसूलों में से किसी एक के बीच अंतर

नहीं करते। और उन्होंने कहा हमने सुना और हमने आज्ञापालन किया। हम तेरी क्षमा चाहते हैं ऐ हमारे पालनहार! और तेरी ही ओर लौटकर जाना है।”

– कुरआन, सूरा अल-बक्रा 2:285 (अनुवाद: अज़ीजुल हक़ अल-उमरी)

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "नबी सौतेले भाइयों जैसे हैं – उनका धर्म एक है, परंतु उनकी माँएँ अलग-अलग हैं, और मैं लोगों में से ईसा बिन मरयम के सबसे निकट हूँ..."

अर्थात् नबी आदम से लेकर नबी मुहम्मद ﷺ तक सभी नबियों का पिता एक ही है, और वे सभी एक ही धर्म पर हैं – जो इस्लाम है, जिसका अर्थ है सही व स्वीकृत धर्म – जबकि उनकी माँएँ अलग-अलग हैं, यह एक रूपक है जो अलग-अलग युगों के अनुसार शरीअतों के शाखाओं में अंतर की ओर संकेत करता है, जबकि वे मूल सिद्धांतों में एकमत हैं।

'बदाइउल फ़वाइद' पुस्तक के अनुसार, इस हदीस के अर्थ को स्पष्ट करते हुए, नबी मुहम्मद ﷺ ने नबियों के उस धर्म को – जिस पर वे तौहीद के अक़ीदे में एकमत थे – एक पिता से उपमा दी, क्योंकि वे सभी उसमें साझा थे, और वह वही धर्म है जिसे अल्लाह ने अपने सभी नबियों के लिए विधान किया।

इस प्रकार सभी नबियों का धर्म इस्लाम है, और इसका एक खास अर्थ है तथा एक सामान्य अर्थ भी। इस्लाम का सामान्य अर्थ है समस्त संसार के पालनहार अल्लाह के प्रति समर्पण, आत्मसमर्पण व आज्ञाकारिता, तथा उसकी इबादत करना – जिसका कोई साझी नहीं। इस्लाम का अर्थ है केवल अल्लाह के आगे, प्रकट व गुप्त रूप से, पूर्ण निष्ठा व समर्पण, तथा उन आदेशों का पालन जो उसने अपने रसूलों की जुबान से विधान किए। इस्लाम के इस सामान्य अर्थ के अनुसार समस्त रसूल व नबी इस्लाम पर ही थे। रहा इस्लाम का खास अर्थ, तो वह वह अंतिम धर्म है जिसे नबी मुहम्मद ﷺ लेकर आए, और इस्लाम के बाद कोई अन्य धर्म नहीं आएगा, और न ही नबी मुहम्मद ﷺ के बाद क़यामत तक कोई नबी आएगा।

प्रतिष्ठित सहाबा में से कुछ ऐसे थे कि जब वे अल्लाह के इस कथन की तिलावत करते: (पवित्र है तेरा रब, सम्मान का स्वामी, उन बातों से जो वे बयान करते हैं, और सलामती हो रसूलों पर, और समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो समस्त संसार का पालनहार है), तो वे इस हदीस-ए-मुरसल का उल्लेख करते: "जब तुम मुझ पर सलाम भेजो, तो समस्त रसूलों पर सलाम भेजो, क्योंकि मैं भी रसूलों में से एक रसूल ही हूँ।"

समस्त रसूलों व नबियों से प्रेम करना, उनका सम्मान करना, उनके बीच कोई भेद न करना, उनकी रक्षा करना, उनके संदेशों व नुबुव्वत की पुष्टि करना, तथा यह विश्वास रखना ज़रूरी है कि वे समस्त सृष्टि से श्रेष्ठ हैं – साथ ही यह भी विश्वास रखना कि उनके बीच भी श्रेष्ठता के स्तर हैं, जिनमें 'ऊलुल अज़्म' रसूल सबसे आगे हैं, जिन्होंने दूसरों से अधिक धैर्य रखा और अपनी दावत की राह में अथक परिश्रम किया – वे संकल्प, शक्ति, दृढ़ता व धैर्य

के स्वामी थे, संदेश पहुँचाने में। साथ ही यह भी विश्वास रखना ज़रूरी है कि रसूल व नबी अल्लाह तआला की ओर से पहुँचाई गई हर शरीअत में – चाहे बात हो, कर्म हो या पुष्टि हो – निर्दोष हैं, तथा बड़े गुनाहों, अवज्ञाओं व अश्लील कार्यों से भी پاک हैं। उनकी यह निर्दोषिता व पवित्रता एक दिव्य कृपा है, जिससे अल्लाह ने उन्हें विशेष रूप से नवाज़ा। 'नबी' नाम इसलिए रखा गया क्योंकि वह एक उच्च, महान व प्रशंसनीय पद का स्वामी है, और इसलिए भी क्योंकि वह लोगों को उस अदृश्य की सूचना देता है जिसकी सूचना अल्लाह तआला ने उसे दी। रहा 'रसूल', तो उसे इसलिए यह नाम दिया गया क्योंकि उसे सृष्टि को दावत देने तथा अपने रब का संदेश पहुँचाने का आदेश दिया गया है। वे सभी अपने संदेश में विश्वसनीय, पवित्र, सफल, सत्यवादी व सन्मार्गी हैं। हर नबी रसूल नहीं होता, परंतु हर रसूल नबी होता है – यही बात हमारे प्रतिष्ठित उलमा ने इस विषय में कही और स्वीकृत की है।

यह सच है कि मुसलमान मुस्तफ़ा ﷺ के अनुयायी हैं, परंतु नबियों व रसूलों की मुहर मुहम्मद ﷺ के प्रति अपने अत्यधिक प्रेम व सम्मान के बावजूद, उन पर नबी मूसा (उन पर सलामती हो), नबी ईसा (उन पर सलामती हो), तथा बाकी सभी रसूलों व नबियों से प्रेम करना और उनकी रक्षा करना अनिवार्य है – भले ही उनके अपने अनुयायी चुप रहें या इसमें आलस्य दिखाएँ। और जब भी कोई व्यंग्य-चित्र, फ़िल्म या धारावाहिक ईसा मसीह (उन पर सलामती हो) के व्यक्तित्व पर बुरे ढंग से आक्षेप करता है, तो मुसलमानों ने हमेशा उसकी आलोचना करने में एक सम्मानजनक रुख अपनाया है, और उसकी निंदा में एक बड़ी भूमिका निभाई है – ताकि पहले अल्लाह तआला के लिए, और फिर इतिहास के लिए, एक सम्मानजनक रुख दर्ज कर सकें। मैं सभी को याद दिलाना चाहता हूँ कि नेटफ़्लिक्स (Netflix) ने वर्ष 2019 में क्रिसमस के अवसर पर ब्राज़ीली व्यंग्य फ़िल्म 'द फ़र्स्ट टेम्पटेशन ऑफ़ क्राइस्ट' प्रदर्शित करने का निर्णय लिया था, जो यूरोन्यूज़ के अनुसार ब्राज़ीली हास्य चैनल 'पोर्ता डॉस फ़ुंडोस' द्वारा निर्मित थी। इस पर 20 लाख से अधिक लोगों ने नेटफ़्लिक्स से इस आपत्तिजनक फ़िल्म को प्रदर्शित करना बंद करने की माँग करते हुए एक ऑनलाइन याचिका पर हस्ताक्षर किए, जिसने ईसा मसीह और उनकी माँ पवित्र कुंवारी मरयम (उन दोनों पर सलामती हो) पर खुलेआम, बिना किसी शर्म व लज्जा के, आक्षेप करने के कारण दुनिया भर में व्यापक विवाद खड़ा कर दिया था – इसी तरह अन्य फ़िल्मों, धारावाहिकों व नाटकों में भी। इसके अलावा हिडन-कैमरा कार्यक्रम 'गैग्स' (Gags) ने ईसा मसीह (उन पर सलामती हो) के व्यक्तित्व व रूप का, तथा ननों व पादरियों का उपहास उड़ाने के लिए कई कड़ियाँ समर्पित कीं।

यह सब उस अनोखी परिघटना की दहलीज़ पर घटित हो रहा है, जो वर्तमान में यूरोप, अमेरिका व ब्रिटेन में फैल रही है, जिसे "नियो-पैगनिज़्म" (नव-मूर्तिपूजावाद) के नाम से जाना जाता है – यह यहूदी धर्म, ईसाइयत व इस्लाम के प्रकट होने से पहले की प्राचीन मूर्तिपूजक परंपराओं को पुनर्जीवित करने की दावत देती है। शोधकर्ता कारिना आयतामुर्तो

(Kaarina Aitamurto) ने इस ओर अपनी पुस्तक "पैगनिज़्म, ट्रिडिशन एंड नेशनलिज़्म" में इशारा किया है, जहाँ यह 'रोदनोवेरी', 'विक्का', 'रैलिज़्म', 'हरे कृष्णा' आंदोलनों, 'चर्च ऑफ़ सैटन', 'गॉथिक' संस्कृति, तथा अन्य आंदोलनों में प्रतिनिधित्व पाती है, जो 'इंडो-यूरोपीय धर्मों' – जैसे बौद्ध धर्म, शिंतो, जैन धर्म, हिंदू धर्म, ताओ धर्म, टोटमवाद तथा प्राचीन स्कैंडिनेवियाई परंपराओं – के पुनरुद्धार की दावत देते हैं, तथा प्राचीन यूनानियों के शराब, उल्लास व उन्माद के देवता 'डायोनिसस' के बारे में शिक्षा देते हैं, साथ ही बच्चों की बलि पसंद करने वाले दुष्ट कनानी देवता 'मोलोख', सौंदर्य की देवी मानी जाने वाली 'वीनस', प्रेम के देवता माने जाने वाले 'क्यूपिड', तथा प्रकाश के देवता व अंधकार के देवता आदि के बारे में भी – इसके अतिरिक्त 'नाइट्स टेम्पलर' तथा प्राचीन 'हशीशीन' संप्रदाय की संस्कृति को पुनर्जीवित करने के बारे में भी। यह ज्ञात बात है कि 'सजाना ख़ाली करने से पहले संभव नहीं' – अर्थात् यदि तुम किसी प्याले को किसी तरल पदार्थ से भरना चाहते हो, तो पहले उसे उस तरल से ख़ाली करना आवश्यक है जो पहले से उसमें भरा है। इसी तुलना के आधार पर, यह कहा जा सकता है कि इन संगठनों में से किसी संगठन के लिए उन प्राचीन मूर्तिपूजक धर्मों को पुनर्जीवित करने के लिए, पहले जीवित व समृद्ध आसमानी धर्मों की पुस्तकों, प्रतीकों व पवित्र वस्तुओं को नीचा दिखाना ज़रूरी है – यही बात हमें नबियों, रसूलों, संतों व नेक लोगों की छवि बिगाड़ने तथा हर अवसर पर उनकी गरिमा को कम करने के निरंतर व उग्र अभियानों के कारणों की व्याख्या करती है।

और चूँकि इस्लाम इस धरती पर एकमात्र ऐसा धर्म है जो समस्त नबियों व रसूलों पर ईमान रखता है, उनकी रक्षा करता है, और उनकी हिफ़ाज़त के लिए खड़ा होता है – तो हम इस चर्चा से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि इस्लाम ही एकमात्र मुक्तिदाता, एकमात्र निकास-मार्ग, तथा सद्गुण को पुनर्जीवित करने, दुर्गुण से लड़ने, और मानवता को भ्रम व अनैतिक भटकाव की भट्टी से बचाने का सुखद, प्रशस्त मार्ग है, जो वर्तमान में एक छोर से दूसरे छोर तक दुनिया को अपनी चपेट में लिए हुए है।

इस्लाम और अत्याचार का निषेध

"निःसंदेह अल्लाह लोगों पर कुछ भी अत्याचार नहीं करता, परंतु लोग स्वयं ही अपने ऊपर अत्याचार करते हैं।"

– कुरआन, सूरा यूनुस 10:44 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

नबी मुहम्मद ﷺ ने अत्याचार के हर प्रकार व रूप के खतरे से, तथा दूसरों के अधिकारों के हनन से आगाह किया, साथ ही कंजूसी व लालच के खतरे से, और दूसरों को भौतिक व नैतिक सहायता देने से इनकार करने से भी आगाह किया: "अत्याचार से बचो, क्योंकि अत्याचार क़यामत के दिन अंधकार बन जाएगा। और कंजूसी व लालच से बचो, क्योंकि

लालच ने तुमसे पहले के लोगों को बर्बाद कर दिया – इसने उन्हें एक-दूसरे का खून बहाने और अपनी हराम की गई चीज़ों को हलाल समझने पर मजबूर कर दिया।"

हर प्रकार के अत्याचार को हराम ठहराने वाली कुरआनी आयतें बहुत हैं – चाहे यह अत्याचार मनुष्य द्वारा अपने सृष्टिकर्ता के प्रति सीमा लांघने के रूप में हो, या मनुष्य का स्वयं पर अत्याचार हो, या मनुष्य का अपने मानव-भाई पर अत्याचार – सामाजिक अत्याचार, हिंसा व घरेलू दुर्व्यवहार। इसी तरह अल्लाह के रसूल ﷺ ने भी अत्याचार व उसके प्रकारों के विरुद्ध पवित्र सुन्नत में मौजूद कई हदीसों में चेतावनी दी है, जिनमें से एक उनका यह कथन है: "अत्याचारित व्यक्ति की बददुआ से बचो, क्योंकि वह बादलों तक पहुँच जाती है, अल्लाह कहता है: मेरी इज़्ज़त व मेरी महानता की कसम! मैं ज़रूर तेरी मदद करूँगा, भले ही कुछ समय बाद।"

और उनका यह कथन: "अत्याचारित की दुआ कुबूल होती है, भले ही वह स्वयं पापी क्यों न हो – उसका पाप उसी पर है।" और अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "निःसंदेह अल्लाह अत्याचारी को मोहलत देता है, यहाँ तक कि जब वह उसे पकड़ लेता है, तो उसे छोड़ता नहीं" – फिर उन्होंने यह आयत पढ़ी: (और तेरे रब की पकड़ ऐसी ही होती है, जब वह किसी बस्ती को पकड़ता है जबकि वह अत्याचारी हो; निःसंदेह उसकी पकड़ बड़ी दर्दनाक, बड़ी सख्त होती है।)

और उनका यह कथन: "जिसने अपने भाई की इज़्ज़त या किसी और चीज़ पर अत्याचार किया हो, उसे चाहिए कि वह आज ही उससे क्षमा माँग ले, इससे पहले कि न दीनार बचे और न दिरहम – यदि उसके पास कोई नेक कर्म है, तो उसके अत्याचार के अनुपात में उससे ले लिया जाएगा, और यदि उसके पास कोई नेकियाँ न हों, तो उसके साथी की बुराइयाँ लेकर उस पर लाद दी जाएँगी।"

और शायद स्वतंत्रता के दार्शनिक कहे जाने वाले शेख अब्दुर्रहमान अल-कवाकिबी (Abdul Rahman al-Kawakibi) की अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "तानाशाही की प्रकृतियाँ और गुलामी के मैदान" में अत्याचार व तानाशाही की व्यवस्था के सारांश-कथन इस विषय पर सबसे शानदार बातों में से हैं, जहाँ वे कहते हैं: "यदि तानाशाही एक इंसान होती और अपना परिचय व वंश बताना चाहती, तो कहती: मैं बुराई हूँ, मेरा पिता अत्याचार है, मेरी माँ दुर्व्यवहार है, मेरा भाई विश्वासघात है, मेरी बहन दीनता है, मेरा चाचा नुकसान है, मेरा मामा अपमान है, मेरा बेटा गरीबी है, मेरी बेटी बेरोज़गारी है, मेरी बिरादरी अज्ञानता है, और मेरा वतन बर्बादी है – रहा मेरा धर्म व मेरी इज़्ज़त, तो वह है धन, धन, और सिर्फ़ धन।"

इस्लाम जातीय, राष्ट्रीय व कबीलाई संघर्षों को हराम ठहराता है

“फिर क्या वे जाहिलियत का फैसला चाहते हैं? और अल्लाह से बेहतर फैसला करने वाला कौन है, उन लोगों के लिए जो विश्वास रखते हैं?”

– कुरआन, सूरा अल-माइदा 5:50 (अनुवाद: अजीजुल हक अल-उमरी)

जातीय, कबीलाई पक्षपात व जाहिलियत की हराम व घृणित एकजुटता के बारे में अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "जो किसी अंधे (उद्देश्यहीन) झंडे के नीचे मारा जाए, जो जातीयता के लिए पुकारता हो या जातीयता की मदद करता हो, तो उसकी मृत्यु जाहिलियत की मृत्यु है।" और जाहिलियत के इसी कबीलाई पक्षपात के बारे में उन्होंने यह भी फ़रमाया: "इसे छोड़ दो, क्योंकि यह दुर्गंधयुक्त है।"

'दाहिस व अल-ग़ब्रा' तथा 'अल-बसूस' – ये लंबे कबीलाई युद्धों व संघर्षों की शृंखलाएँ थीं, जिन्होंने हजारों निर्दोष लोगों की जान ली और जाहिलियत के दौर में, अरब प्रायद्वीप में इस्लाम के प्रकट होने से पहले, उनकी संतानों व स्त्रियों को दहशतज़दा कर दिया – यह दुनिया के हर कोने में मौजूद ऐसे ही जाहिलियत के संघर्षों व पक्षपातों की एक आम प्रथा के अनुरूप था, जिनकी चिंगारियों से कोई नहीं बचा। यह हर महाद्वीप में समय-समय पर नए सिरे से उभरता रहता है, गहरे बैर तथा ऐसे गहरे घाव छोड़ते हुए जिनका भरना मुश्किल है – विशेष रूप से जब वे कहानियों, दास्तानों, कहावतों, कविताओं व मिथकों का रूप ले लेते हैं, जो विरासत व लोक-कथाओं में घुल-मिल जाते हैं, जिन्हें बड़े लोग बड़े चाव से बच्चों को सुनाते व विरासत में देते रहते हैं – जिससे यह एक ऐसी बहिष्करणवादी, प्रतिशोधात्मक व आक्रामक संस्कृति बन जाती है, जो जमा होती और जड़ पकड़ती जाती है, जो कुछ समय के लिए शांत होती है तो फिर से भड़क उठती है। जब भी बुद्धिमान लोग इसकी भड़कती आग बुझाते हैं, मूर्ख, अज्ञानी व बाहरी तत्व इसे फिर से हवा दे देते हैं। इनमें से कई की चिंगारी रोज़मर्रा के तुच्छ मुद्दों व समस्याओं से भड़कती है, जिन्हें समझदार लोग सुलह की एक बैठक में, भोजन के आयोजन व कुछ प्रतीकात्मक उपहारों के आदान-प्रदान से सुलझा सकते हैं – हल्के, मध्यम, और कभी-कभी भारी हथियारों का सहारा लेने के बजाय – जिससे दशकों तक एक के बाद एक बैर व प्रतिशोध की परंपरा चलती रहती है। इनमें से कुछ राष्ट्रीय, जातीय या कबीलाई संघर्ष के बीच चरागाह व खेती की भूमि तथा जल-स्रोतों पर, या सीमा-चौकियों, तेल, गैस, सोने व हीरे की आमदनी, तथा प्रमुख व्यापारिक मार्गों पर प्रभाव फैलाने के लिए भड़कते हैं, इसी तरह साझी या विवादित भूमि पर काम करने वाली विदेशी कंपनियों की आय पर नियंत्रण के लिए, तथा कुछ मादक पदार्थों के व्यापार व तस्करी के मार्गों पर नियंत्रण के लिए भी!

निःसंदेह इस बात में कोई शक नहीं कि कई देशों में – विशेष रूप से एशिया, अफ़्रीका, मध्य व दक्षिण अमेरिका, तथा दक्षिणी व पूर्वी यूरोप में – घिसे-पिटे रीति-रिवाज़ों व परंपराओं के हावी होने तथा उनके सांविधानिक क़ानूनों व आसमानी शरीअतों पर हावी हो जाने के कारणों

में से एक कारण हथियारों का प्रसार है, तथा कई प्रभावशाली लोगों व उनकी पार्टियों का उनका सहारा लेना – विशेष रूप से स्थानीय व संसदीय चुनावों में उम्मीदवारी के दौरान – तथा जब उन पर मुसीबतें आ पड़ें, तो उन पर निर्भर रहना – यहाँ तक कि ये रीति-रिवाज़ ही उनके लिए, दूसरी व तीसरी नागरिकता के बाद, न्यायिक कार्रवाइयों व क़ानूनी ज़वाबदेही से बचने का सुरक्षित शरण-स्थल बन गए हैं। इनमें से कई लोगों के राष्ट्रीय, जातीय व क़बीलाई संघर्षों को सीमित करने, तथा बेलगाम व वैचारिक हथियारों को केवल राज्य के हाथों में सीमित करने की निरंतर माँग के शोर-शराबे के बावजूद – जो केवल पत्रकार-सम्मेलनों व स्क्रीनों के सामने ही होता है – उनका राष्ट्रीयता, जातीयता व क़बीलावाद पर वास्तविक निर्भरता उन्हें इसकी परंपराओं का बंधक बना देती है, भले ही यह बुद्धि, तर्क व धर्म के विरुद्ध हो – जिससे वास्तविकता व आकांक्षा के बीच की दूरी और बढ़ जाती है, तथा उन कई क्षेत्रों में, जहाँ ऐसे ख़ूनी संघर्ष देखे जाते हैं, अधिक अराजकता व क़ानून के शासन की अनुपस्थिति को प्रोत्साहन मिलता है। और शायद जो बात कुछ प्रभावशाली लोगों पर लागू होती है, वह कुछ क़बीलाई नेताओं व धर्मगुरुओं पर भी लागू होती है, जिन पर वे रीति-रिवाज़ हावी रहते हैं जो उन्होंने बचपन से घोल पी रखे हैं – उन धार्मिक शिक्षाओं से भी अधिक जो उन्होंने सीखीं और जो वे लोगों को सिखाते हैं – तो तुम उन्हें उपदेशों व सभाओं में इस बारे में बात करने से डर व लालच के कारण बचते हुए पाओगे, इच्छा व भय के अनुसार, तथा धरती पर घटित होने वाली वास्तविकताओं व घटनाओं के अनुसार!

इस्लाम और प्रारंभिक जाहिलियत की प्रथाओं व त्योहारों के प्रति चेतावनी

“जब काफ़िरों ने अपने दिलों में हठ कर लिया, जाहिलियत का हठ, तो अल्लाह ने अपने रसूल पर और ईमान वालों पर अपनी शांति उतार दी और उन्हें परहेज़गारी की बात पर सुदृढ़ कर दिया। तथा वे उसके अधिक हक़दार और उसके योग्य थे। और अल्लाह सदैव हर चीज़ को भली-भाँति जानने वाला है।”

– क़ुरआन, सूरा अल-फ़त्ह 48:26 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: “मेरी उम्मत में जाहिलियत की चार बातें हैं, जिन्हें वे नहीं छोड़ेंगे: वंश पर गर्व करना, कुल-वंश पर ताना मारना, तारों के ज़रिए बारिश माँगना, और (मातम में) विलाप करना।”

यह बात दूर व नज़दीक सभी को ज्ञात है कि दुनिया भर की सभी उम्मतें व राष्ट्र, रसूलों व नबियों के प्रकट होने से पहले, अपने बीच कई रीति-रिवाज़ों, त्योहारों, प्रथाओं व परंपराओं के साथ जीते रहे – इनमें से कुछ अच्छी थीं, जिन्हें रसूलों व नबियों ने स्वीकृति दी और उत्तम आचरण की पुष्टि व पूर्णता के लिए बरकरार रखा, और कुछ बुरी थीं – जिन्हें ‘जाहिलियत

की प्रथाएँ कहा जाता है – और रसूलों व नबियों ने इनके विरुद्ध बड़ी सख्ती से चेतावनी दी। अरब प्रायद्वीप में इस्लाम के प्रकट होने से पहले के प्रारंभिक जाहिलिय्यत काल में, उदारता, वीरता, मुरव्वत, साहस, घुड़सवारी, स्वाभिमान, उत्साह व सच्चाई जैसी अच्छी प्रथाएँ मौजूद थीं – इन सभी को इस्लाम ने स्वीकृति दी, बरकरार रखा और प्रोत्साहित किया। इनके विपरीत, शराबखोरी, जुआ खेलना, मुर्दार व सूअर का माँस खाना, बहता खून पीना, बेटियों को ज़िंदा दफ़नाना, स्त्रियों को विरासत से वंचित रखना, अकाल व भुखमरी के समय छोटे बच्चों की हत्या करना, गुलामों को तुच्छ समझना, 'इस्तिबज़ाअ' विवाह, क़बीलाई व वंशीय पक्षपात व युद्ध, प्रतिशोध लेना, मूर्तियों की पूजा व प्रतिमाओं को पवित्र मानना, तारों में विश्वास रखना, जादू-टोना करना व तावीज़-गंडे लटकाना, भविष्यवाणी, अपशकुन मानना तथा 'अज़लाम' से भविष्य जानने जैसी घटिया प्रथाएँ भी थीं – और इन सभी को इस्लाम ने पूर्णतः व निर्णायक रूप से हराम ठहराया, तथा इन्हें अपनाने व करने से पूर्णतः व हमेशा के लिए मना किया।

आज पूरी दुनिया – अल्लाह जिस पर दया करे उनके सिवा – जाहिलिय्यत की ओर लौटने की एक घिनौनी स्थिति से गुज़र रही है, जहाँ हर जगह जादूगरों, ठगों, भविष्यवक्ताओं, ज्योतिषियों व तांत्रिकों की परिघटना फैलती जा रही है। शायद वर्ष 2025 में मोरक्को में आयोजित अफ्रीकी राष्ट्र कप के फ़ाइनल में जो हुआ, वह इसका सबसे अच्छा उदाहरण है – जब हर जगह फ़ुटबॉल के दीवानों का ध्यान सेनेगल के गोलकीपर के तौलिये पर केंद्रित हो गया, यह दावा करते हुए कि उसमें अफ्रीकी जादू का एक तावीज़ छिपा है, इसके अलावा 'वूडू', 'जूजू' व 'अटोमोक्बो' जैसी रस्में निभाई गईं – और यही मोरक्को की हार तथा सेनेगल की जीत व चैंपियनशिप हासिल करने का मुख्य कारण बताया गया!!

इससे पहले उसी टूर्नामेंट के मोरक्को व नाइजीरिया के बीच सेमीफ़ाइनल मैच में नाइजीरिया के गोलकीपर के कथित रूप से 'जादू किए गए' तौलिये को लेकर विवाद खड़ा हुआ था, इसी तरह नाइजीरिया की टीम के मुख्य कोच ने वर्ष 2026 विश्व कप के लिए क्वालीफ़ाई करने वाले अफ्रीकी प्ले-ऑफ़ फ़ाइनल में डेमोक्रेटिक कांगो के खिलाड़ियों पर "जादू करने" का आरोप लगाया था!!

मीडिया, खिलाड़ियों, कोचों व प्रशंसकों – सभी के इन मिथ्या मान्यताओं से बुरी तरह प्रभावित होने के कारण, अफ्रीकी फ़ुटबॉल संघ (CAF) को वर्ष 2008 से ही फ़ुटबॉल मैचों में जादू के प्रयोग को रोकने के लिए हस्तक्षेप करना पड़ा!

दुखद बात यह है कि अफ्रीकी फ़ुटबॉल में जो कुछ होता है, उसके समानांतर उदाहरण लैटिन अमेरिकी और कभी-कभी यूरोपीय फ़ुटबॉल में भी मौजूद हैं। उरुग्वेयाई उपन्यासकार एदुआर्दो गालेआनो (Eduardo Galeano) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'फ़ुटबॉल इन सन एंड शैडो' में इन रस्मों, प्रथाओं व परंपराओं के अजूबों का विस्तार से वर्णन किया है, यह बताते हुए कि

कैसे किसी टीम की जीत या हार के लिए तावीज़ों व मंत्रों का प्रयोग किया जाने लगा, जो फुटबॉल जगत में एक आम प्रथा बन गया है!!

और चूँकि साइबर-स्पेस व सोशल मीडिया मंचों के प्रभाव से पुरानी अंधविश्वासी प्रथाएँ, रीति-रिवाज़ व मिथक दुनिया भर में फैल रहे हैं, हमारे सामने 'हरमल' (रूई/स्पंद बीज) को नमक के साथ मिलाकर सूर्यास्त से पहले जलाने की तथाकथित प्रथा भी आती है, जिसका दावा किया जाता है कि यह हसद व नज़र को दूर भगाती है – यह मूलतः एक प्राचीन यूनानी मूर्तिपूजक प्रथा है। दरअसल हरमल में ऐसे रासायनिक तत्व होते हैं जो जलाए जाने पर मस्तिष्क में डोपामिन के स्तर को बढ़ाने में मदद करते हैं, जिससे राहत का एहसास होता है, और इसीलिए इसका प्रयोग पार्किंसन के मरीज़ों के इलाज, दर्द-निवारण, तथा मिर्गी व सिरदर्द के उपचार में किया जाता है – इसके अतिरिक्त हरमल हानिकारक कीड़े-मकोड़ों को भी भगाता है, और शायद यही कारण है कि इसे – उनकी सीमित समझ के अनुसार – आध्यात्मिकता व बुरी आत्माओं को भगाने से जोड़ा जाता है!

रही घोड़े की नाल, जिसे ठग घरों के दरवाज़ों के ऊपर टाँगने की सलाह देते हैं, तो यह भी एक प्राचीन यूनानी व रोमन मूर्तिपूजक प्रथा है, जिसके बारे में दावा किया जाता है कि यह शैतानों को भगाती है। इसे ईसाइयत में लाने वाले पहले व्यक्ति एक लुहार थे, जो बाद में वर्ष 959 ईस्वी में कैंटरबरी के बिशप बने – उनका दावा था कि एक शैतान इंसानी रूप में उनके पास आया, तो उन्होंने उसे नाल से दंडित किया। घोड़े की नाल का संबंध उन नरसंहारों से भी है, जो स्पेनियों ने इबेरियन प्रायद्वीप में मुसलमानों के विरुद्ध किए, जब उन्होंने गैर-मुसलमानों को अर्धचंद्र जैसी दिखने वाली घोड़े की नाल टाँगने का निर्देश दिया ताकि गैर-मुसलमानों को उनसे अलग पहचाना जा सके – इस उद्देश्य से कि उन्हें खत्म किया जाए या ज़बरन ईसाई बनाया जाए – यहाँ तक कि अधिकांश लोगों में यह दृढ़ धारणा बन गई कि जो नाल टाँगता है, वह अपने व अपने परिवार से निश्चित मृत्यु व मंडराते खतरे को दूर भगा लेता है, और इसके उलट भी सच है!

हसद को दूर भगाने के लिए नीली आँख वाला मनका भी एक और प्राचीन फिरऔनी मूर्तिपूजक प्रथा है, जो तथाकथित देवता 'होरस' की आँख का प्रतिनिधित्व करती है, बुरी आत्माओं को भगाने के लिए – यह फ़ोनीशियनों की भी एक मूर्तिपूजक प्रथा है, जो चंद्र-देवता का प्रतिनिधित्व करती है। रहा इसके नीले रंग का कारण, तो यह या तो आसमान के रंग से, या फिर उन रोमनों की आँखों के रंग से जुड़ा है जिन्होंने पूर्वी लोगों को उपनिवेश बनाया व अपमानित किया – तो वे लोग उनकी नीली आँखों के रंग को बुराई का प्रतीक मानने लगे। इसके अलावा प्राचीन लोगों के अनुसार नीले रंग में बुराई को रोकने की एक प्रतीकात्मक शक्ति भी मानी जाती थी!

बुराई भगाने के लिए नवजात शिशुओं के ऊपर से कूदने की परंपरा, अच्छे शगुन के लिए मिट्टी के प्याले व तशतरियाँ तोड़ना – यह मूलतः एक फ़िरऔनी प्रथा है, जब पुजारी अपने सामने लिटाए गए बीमार व्यक्ति पर जादुई मंत्र पढ़ता था, और उसके पास मिट्टी का एक टुकड़ा रखता था, ताकि यदि बीमारी का कारण बनने वाली बुरी आत्मा शरीर से निकले तो वह उसमें कैद हो जाए, फिर पुजारी तुरंत उसे तोड़ देता ताकि उसके दावे के अनुसार उसके भीतर की बुराई मर जाए – इसी कारण मध्य-पूर्व में यह आम प्रथा है कि जब काँच, मिट्टी या चीनी-मिट्टी की कोई वस्तु टूटती है, तो कोई व्यक्ति अनायास ही उसके टूटने की आवाज़ सुनते ही कह उठता है: "बुराई चली गई!" इसके अलावा उल्लू व काली बिल्लियों से अपशकुन मानना, सीगल पक्षी को अपशकुन मानना, कुँवारों की जल्द शादी के लिए उन पर दालचीनी फेंकना, संख्या 13 से डरना – विशेष रूप से जब यह संख्या शुक्रवार के दिन के साथ मेल खाए – और अधिकांश पाँच-सितारा रेस्तराँ, हवाई अड्डे व होटल इसी कारण अपने द्वारों या कमरों में संख्या 13 नहीं रखते – इस दावे पर आधारित कि ईसा मसीह के साथ विश्वासघात करने वाला व्यक्ति भोजन-मेज़ पर बैठे 13 लोगों में से एक था। शुक्रवार, 27 रजब 583 हिजरी, जो 2 अक्टूबर 1187 ईस्वी के अनुरूप है, को सलाहुद्दीन अय्यूबी ने 90 वर्षों तक धर्मयोद्धाओं के नियंत्रण के बाद यरूशलम को मुक्त कराया।

31 अक्टूबर को मनाया जाने वाला 'हैलोवीन' त्योहार मूलतः आत्माओं के एकत्रित होने व धरती पर लौटने से जुड़ा एक मूर्तिपूजक त्योहार है। इसी तरह 14 फ़रवरी को मनाया जाने वाला 'वैलेंटाइन डे' भी मूलतः एक मूर्तिपूजक त्योहार है, जिसमें उनके अनुसार प्रेम के देवता माने जाने वाले 'क्यूपिड' – जो सौंदर्य की देवी 'वीनस' के पुत्र हैं – का उत्सव मनाया जाता था। यह एक काल्पनिक त्योहार है, जिसे व्यापारी दशकों से भारी मुनाफ़ा कमाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं – केवल संयुक्त राज्य अमेरिका में ही इसकी कीमत 18.2 अरब डॉलर के बराबर है। यह वह त्योहार है जिसमें यौन-उत्पीड़न, नशीली दवाओं व शराब से लेकर बलात्कार तक हर प्रकार की बुराइयाँ फैलती हैं – यहाँ तक कि कुछ अमेरिकी युवाओं ने इसके अगले दिन, 15 फ़रवरी को, एक त्योहार का आविष्कार किया, जिसे उन्होंने "कुँवारेपन का त्योहार" नाम दिया।

'मृतकों व कंकालों का त्योहार', जिसका मूल एज़टेक सभ्यता से लिया गया है – इससे पहले कि कैथोलिक चर्च ने इसे ईसाई रूप दे दिया, जैसा कि लगभग सभी प्राचीन मूर्तिपूजक त्योहारों को ईसाई रूप देने की प्रथा रही है, ताकि मूर्तिपूजक लोग ईसाइयत के प्रसार से नाराज़ न हों – और चर्च ने विवाद से बचने के लिए हर उस मूर्तिपूजक त्योहार से जुड़ी एक कल्पित कथा गढ़ी, जिसे ईसाई रूप दिया गया – इस प्रकार 'हैलोवीन' "संतों के मिलन का त्योहार" बन गया, और रोमन मूर्तिपूजक 'वैलेंटाइन डे' 'संत वैलेंटाइन' का त्योहार बन गया। पांडुलिपि-शोधकर्ता आल्बान बटलर व फ़्रांसिस ने खुलासा किया कि हर वर्ष 14 फ़रवरी वर्ष

496 ईस्वी से एक वार्षिक त्योहार में बदल गया, जिसका उद्देश्य 'लुपरकालिया' नामक रोमन मूर्तिपूजक प्रेम-मिलन त्योहार को ईसाई रूप देना था!!

हर साल मार्च के महीने में मनाया जाने वाला 'रंगों का त्योहार' (होली) मूलतः हिंदू धर्म से लिया गया एक मूर्तिपूजक त्योहार है, जो तथाकथित देवता कृष्ण की कथा से जुड़ा है, जिन्होंने अपने भाई की गोरी त्वचा की तुलना में अपनी साँवली त्वचा की शिकायत की थी, तो कथा के अनुसार उनकी माँ देवी ने उन्हें सुझाव दिया कि वे अपने भाई के चेहरे पर रंग डाल दें ताकि दोनों की शक्ल-सूरत बराबर हो जाए!!

'सात आँखों वाली माँ' बुराइयों को भगाने के लिए – यह एक और मिथक है, जो जिन्नात की एक कुरूप बुढ़िया के बारे में बात करता है जिसे 'उम्म अस-सिबयान' कहा जाता है, जिसे – ऐसा कहा जाता है कि – अल्लाह के नबी सुलैमान (उनसे ऐसी बात दूर हो) ने कैद किया और जिन्नात की ओर से उससे 7 वचन लिए, जिनमें यह शर्त थी कि यदि इसे लोगों के घरों में टाँगा जाए तो वह उन्हें तंग नहीं करेगी!

जादूगरों के झूठ यहीं तक सीमित नहीं रहे, बल्कि दो और झूठों तक फैल गए, जो सीधे-सादे लोगों में सबसे अधिक प्रचलित हैं – पहला है "हुदहुद पक्षी की हड्डी", और दूसरा है "अरज अस-सवाहिल"। हमने अक्सर सुना है कि जब लोग किसी ऐसे साहसी व्यक्ति से मिलते हैं, तो वे चकित होकर कहते हैं कि वह यह तावीज़ धारण करता है – इन दोनों से जुड़े झूठ शरीअत के विरुद्ध, बुद्धि के विपरीत और तर्क का उपहास उड़ाने वाले हैं। कोई दावा करता है कि हुदहुद की पूँछ स्त्रियों की 'गाँठ' खोलने में सहायक है, कोई दावा करता है कि इसका पंख पुरुषों की जुबान बाँध देता है, तो कोई भ्रमित व्यक्ति यह मानता है कि 'अरज अस-सवाहिल' असल में रेगिस्तान में रहने वाली 'कवचधारी साही' की मादा के पिछले हिस्से से निकाला जाता है – और झूठे लोग दावा करते हैं कि इसमें एक ऐसी शक्ति होती है जिससे इसकी असली कीमत दस लाख डॉलर तक पहुँच जाती है, जबकि नकली की कीमत कुछ सौ डॉलर होती है – और यही बात "हिरण के खून" के बारे में भी सच है, जो नशीले प्रभाव वाले 'एनीमोन' फूल से बनाया जाता है, जिसे कुछ लोगों ने अनजाने में सजावट के उद्देश्य से सार्वजनिक पार्कों में लगा दिया है!!

जादूगरों द्वारा किए जाने वाले शेष नैतिक अपराधों व धार्मिक उल्लंघनों के बारे में – जैसे नजासत से कुरआनी आयतें लिखना, जानवरों के अवशेषों व मुर्दों की हड्डियों का प्रयोग, तावीज़ लिखने के लिए पीड़ितों के अंतःवस्त्रों व बालों का उपयोग, सीधे-सादे लोगों को नकली कीमती पत्थर बेचकर उन्हें मूर्ख बनाना, तथा लापता व गायब लोगों का पता लगाने या प्रियजनों को मिलाने या अलग करने का दावा करना – मैं लंबा होने से बचने के लिए इन पर विस्तार से बात नहीं करूँगा, बल्कि मैं जादूगरों, ज्योतिषियों व ठगों के बारे में शरई फैसला प्रस्तुत करूँगा:

“तथा वे उस चीज़ के पीछे लग गए जो शैतान सुलैमान के शासन काल में पढ़ते थे। तथा सुलैमान ने कुफ़्र नहीं किया, लेकिन शैतानों ने कुफ़्र किया कि लोगों को जादू सिखाते थे... और वे ऐसी चीज़ सीखते थे, जो उन्हें हानि पहुँचाती और उन्हें लाभ न देती थी। हालाँकि निःसंदेह वे भली-भाँति जान चुके थे कि जिसने इसे खरीदा, आखिरत में उसका कोई भाग नहीं। और निःसंदेह बुरी है वह चीज़ जिसके बदले उन्होंने अपने आपको बेच डाला। काश! वे जानते होते।”

— कुरआन, सूरा अल-बकरा 2:102 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

नबी ﷺ का यह कथन: "वह हममें से नहीं जिसने अपशकुन माना या किसी के लिए अपशकुन निकलवाया, या भविष्यवाणी की या किसी से भविष्यवाणी करवाई, या जादू किया या किसी से जादू करवाया; और जो किसी भविष्यवक्ता के पास गया और उसकी बात को सच माना, तो उसने उस चीज़ का इनकार कर दिया जो मुहम्मद ﷺ पर उतारी गई।" और उनका यह कथन: "जिसने ज्योतिष विद्या का कोई अंश सीखा, तो उसने जादू का एक अंश सीखा – जितना अधिक सीखा उतना ही अधिक।"

रहीं कबीलाई व वंशीय पिछड़ी प्रथाएँ, जो आसमानी शरीअतों व धर्मों के साथ-साथ सांविधानिक क़ानूनों के भी विरुद्ध हैं, तो उनकी कोई सीमा नहीं। शायद इनमें सबसे प्रमुख है 'नहवा' नामक कबीलाई प्रथा, जिसका अर्थ है किसी स्त्री को अपने चचेरे भाई के अलावा किसी और से विवाह करने से रोकना – अन्यथा जो भी पुरुष उसे विवाह का प्रस्ताव देने आए, उसे अपना क़फ़न अपने हाथों में लेकर आना होगा। कुछ लोग तो अपनी चचेरी बहन पर – भले ही वह पहले से विवाहित हो – केवल उसे अपमानित करने के इरादे से 'नहवा' थोप देते हैं, और अक्सर 'नहवा' या तो असमान विवाहों में, या हत्या या आत्महत्या में समाप्त होता है – जबकि यदि 'नहवा' करने वाले जानते कि रिश्तेदारों में विवाह ही मानसिक बीमारियों के प्रसार तथा डाउन सिंड्रोम व बौनेपन जैसी मानसिक विकलांगताओं की अधिकता का मुख्य कारण है, इसके अतिरिक्त थैलेसीमिया, सिकल-सेल एनीमिया, यकृत व गुर्दे की बीमारियाँ, मिर्गी, त्वचा पर सफ़ेद दाग व अवरुद्ध विकास भी – तो जो कोई सुनना चाहे, वह मिस्री आनुवंशिकी-विशेषज्ञ प्रोफ़ेसर सामिया अत-तमतामी द्वारा 'साइंटिफ़िक अमेरिकन' पत्रिका के एक पूर्व साक्षात्कार में किए गए इस चौंकाने वाले खुलासे को सुन ले, जिसमें उन्होंने बताया कि "रिश्तेदारों में विवाह पुरुषों में झूठी स्त्रैणता, स्त्रियों में झूठे पुरुषत्व, तथा मासिक-धर्म रुकने का एक महत्वपूर्ण कारण है!" मैं कहता हूँ कि यदि 'नहवा' करने वाले जानते कि ये सभी सामाजिक व स्वास्थ्य संबंधी विपत्तियाँ रिश्तेदारों में विवाह का ही परिणाम हैं, तो शायद वे इससे पूरी तरह व हमेशा के लिए दूर रहते – और जो दंड से निश्चित हो जाता है, वह बदतमीज़ी करने लगता है।

एक और घृणित कबीलाई प्रथा है "बदल विवाह", जिसे कानूनी भाषा में "प्रतिस्थापन विवाह" तथा शरई भाषा में "शिगार विवाह" कहा जाता है – इसमें एक पुरुष किसी स्त्री से सगाई करता है, जिसका मेहर उसकी अपनी बहन या बेटी होती है, जिसे दुल्हन के भाई या पिता को उसके बदले में दे दिया जाता है। यदि पहला व्यक्ति अपनी पत्नी को तलाक दे दे, तो उसकी बहन या बेटी को भी तुरंत तलाक दे दिया जाएगा, भले ही वे अपने पतियों के साथ पूर्ण सामंजस्य में क्यों न हों। नबी ﷺ से यह वर्णित है कि उन्होंने 'शिगार विवाह' से मना किया और फ़रमाया: "शिगार यह है कि एक पुरुष कहे: मुझसे अपनी बेटी का विवाह कर दो, और मैं तुमसे अपनी बेटी का विवाह कर दूँगा, या मुझसे अपनी बहन का विवाह कर दो, और मैं तुमसे अपनी बहन का विवाह कर दूँगा।" इस प्रकार के अमान्य विवाह-अनुबंधों ने सैकड़ों परिवारों को तबाह व विघटित कर दिया है।

शरीअत व कानून के विरुद्ध कबीलाई प्रथाओं में से एक और है "फ़स्लिय्या स्त्रियाँ" या "दिय्या विवाह" या "रक्त-विवाह" – जिसमें किसी स्त्री को पीड़ित पक्ष को संतुष्ट करने तथा दो कबीलों के बीच झगड़े को सुलझाने के लिए मुआवज़े के रूप में दे दिया जाता है – यह विवाह शरीअत व कानून दोनों के विरुद्ध है।

कबीलाई परंपराओं में से एक है "जल्वा" (निर्वासन), जो 'खून की गर्मी' के समय लागू होती है – इसमें अपराधी के परिजनों को उसके सभी रिश्तेदारों सहित उस क्षेत्र से चले जाने पर मजबूर किया जाता है, जब तक कि पीड़ित परिवार को संतुष्ट न कर लिया जाए। इसके अलावा जिस प्रथा ने सैकड़ों लोगों की जान ली है और घायल किया है, वह है "कबीलाई परेड" – इसमें बड़ी संख्या में कबीले के लोग इकट्ठा होते हैं, नारे लगाते हैं, झंडे फहराते हैं, और शोक-सभाओं व शादियों में विभिन्न प्रकार के हल्के, मध्यम व कभी-कभी भारी हथियारों से बड़े पैमाने पर अंधाधुंध गोलीबारी करते हैं।

इसके अलावा प्रथाओं में एक और सबसे खतरनाक परिघटना है – अतिशयोक्तिपूर्ण "फ़ूसूल" (मध्यस्थता-शुल्क) की परिघटना, जो कबीलावाद व शेखी का दावा करने वाले कुछ लोगों के लिए एक स्थायी आय का स्रोत बन गई है, यहाँ तक कि उनमें से कुछ हराम धन कमाने के लिए बॉलीवुड फिल्मों जैसी पटकथा में घटनाओं को गढ़ते व उनकी योजना बनाते हैं, तथा उन विवादों में मध्यस्थता करते हैं जिनके कुछ 'फ़ूसूल' व दिय्याएँ अरबों तक पहुँच जाती हैं।

सभी को ज़िम्मेदारी उठानी चाहिए, बुद्धि, शरीअत व कानून को निर्णायक मानना चाहिए, तथा हर प्रकार के बेलगाम, समानांतर व वैचारिक हथियारों को हटाकर उन्हें केवल राज्य के हाथों में सीमित करना चाहिए। कार्यकारी, विधायी व न्यायिक अधिकारियों को उन कानूनों को लागू करना चाहिए जो नागरिकों व उनके अधिकारों की हर उस चीज़ से रक्षा सुनिश्चित करते हैं जो उनके साथ छेड़छाड़ कर सकती है – वरना दुनिया एक गहरी खाई की ओर बढ़ रही है, जैसा कि हम रोज़ाना समाचार बुलेटिनों के ज़रिए स्कूलों, विश्वविद्यालयों, बाज़ारों व

सार्वजनिक स्थानों में अंधाधुंध गोलीबारी व रौंगटे खड़े कर देने वाले नरसंहारों के बारे में सुनते हैं, जो हर साल हजारों निर्दोष लोगों की जान लेते हैं।

इस्लाम पवित्रता व स्वच्छता का धर्म है

“ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो, तो अपने चेहरों को और अपने हाथों को कुहनियों समेत धो लो और अपने सिरों का मसह करो तथा अपने पाँवों को टखनों समेत धो लो। और यदि तुम जनाबत की हालत में हो, तो स्नान कर लो। तथा यदि तुम बीमार हो, अथवा यात्रा में हो, अथवा तुममें से कोई शौचकर्म से आया हो, अथवा तुमने स्त्रियों से सहवास किया हो, फिर कोई पानी न पाओ, तो पाक मिट्टी का क़सद करो और उससे अपने चेहरों तथा हाथों पर मसह कर लो। अल्लाह नहीं चाहता कि तुमपर कोई तंगी करे। लेकिन वह चाहता है कि तुम्हें पाक करे और ताकि अपनी नेमत तुमपर पूरी करे, ताकि तुम शुक्र करो।”

— क़ुरआन, सूरा अल-माइदा 5:6 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

और यह नबी मुहम्मद ﷺ की स्वच्छता व पवित्रता की दावत है: "फ़ितरत की दस बातें हैं: मूँछें कटवाना, दाढ़ी बढ़ाना, मिस्वाक करना, नाक में पानी डालना, नाखून काटना, उँगलियों के जोड़ धोना, बग़लों के बाल उखाड़ना, नाभि के नीचे के बाल साफ़ करना, और पानी से इस्तिंजा करना।"

इस्लाम पवित्रता व स्वच्छता का धर्म है, जिसमें शरीर, वस्त्र, घरों, मस्जिदों व नमाज़ के स्थानों, तथा मुसलमान के जीवन व परिवेश की हर चीज़ की गंदगी व मैल से सफ़ाई शामिल है — प्रत्येक नमाज़ के लिए वुज़ू करना अनिवार्य है, तथा जनाबत का गुसल, जुमे के दिन का गुसल, भोजन से पहले व बाद में हाथ धोना, शौचालय से निकलने के बाद हाथ धोना, मुँह की सफ़ाई के लिए मिस्वाक का प्रयोग, मासिक-धर्म, इस्तिहाज़ा व निफ़ास से पवित्रता के लिए गुसल, मल-मूत्र की सफ़ाई के लिए पानी से इस्तिंजा, तथा घर का कचरा निकालकर उसके लिए तय स्थानों पर फेंकना भी शामिल है।

इस्लाम और खेल

इस्लाम ने मस्तिष्क, हृदय व शरीर के स्वास्थ्य की रक्षा करने, तथा शारीरिक फ़िटनेस व ताक़त बनाए रखने की दावत दी है। इस बारे में नबी मुहम्मद ﷺ फ़रमाते हैं: "मज़बूत मोमिन कमज़ोर मोमिन से बेहतर और अल्लाह को अधिक प्रिय है, और दोनों में भलाई है।"

मुसलमानों में प्रचलित खेलों में आठ ऐसे खेल थे, जो वर्तमान में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध वैश्विक व ओलंपिक खेलों के समकक्ष हैं – जैसे दौड़ प्रतियोगिता, घुड़सवारी, तैराकी, तलवारबाज़ी, पैदल चलना, तीरंदाज़ी, कुश्ती, तथा शिकार।

दुनिया भर के कितने ही खिलाड़ियों व ओलंपिक चैंपियनों ने एक के बाद एक इस्लाम अपनाया है – इनमें से कुछ का ज़िक्र इस प्रकार है: स्पेनिश क्लब बार्सिलोना के सितारे, फ्रांसीसी खिलाड़ी एरिक आबिदाल (Éric Abidal), जिन्होंने वर्ष 2007 में इस्लाम अपनाया और अपना नाम बदलकर बिलाल रख लिया, तथा उनके समकक्ष पॉल पोग्बा (Paul Pogba), जो मैनचेस्टर यूनाइटेड व यूवेंटुस के सितारे हैं, तथा जिन्होंने वर्ष 2018 में रूस में आयोजित विश्व कप जीतने में अपनी टीम फ्रांस का साथ दिया – उन्होंने वर्ष 2010 में इस्लाम अपनाया और अपने इस्लाम के बारे में कहा: "मेरे मन में कई सवाल घूमते रहते थे, जिनके जवाब मुझे नहीं मिलते थे, परंतु इस्लाम अपनाने के बाद मैं मानसिक रूप से अधिक शांत व संतुलित हो गया।"

उन्हीं की राह पर मुए थाई के विश्व चैंपियन, ब्राज़ीली खिलाड़ी ताज रुएदा (Tarj Rueda) चले, जिन्होंने वर्ष 2022 में इस्लाम अपनाया, यह कहते हुए: "हाँ, मैंने चैंपियनशिप का खिताब खो दिया, परंतु मैंने इस्लाम पा लिया!"

इसी तरह जर्मन खिलाड़ी, क्लब नूर्नबर्ग के खिलाड़ी डैनी ब्लूम (Danny Blum), जिन्होंने वर्ष 2014 में अपना इस्लाम घोषित किया, अपने इस्लाम के बारे में कहते हैं: "मुझे लगा कि इस्लाम मुझे शक्ति देता है और आशा प्रदान करता है, और नमाज़ मेरी आत्मा को शांत करती है। हाल ही में मैंने एक मस्जिद का दौरा किया और मुझे अपने दिल की धड़कन तेज़ महसूस हुई... मैं पहले एक बुरा, जल्दी गुस्सा होने वाला और लक्ष्यहीन व्यक्ति था, परंतु अब बिल्कुल अलग है – मुझे लगता है कि मेरे जीवन का एक सच्चा अर्थ व मूल्य है।"

जापानी कराटे के प्रथम विशेषज्ञ, तथा तीसरी सहस्राब्दी के पहले दशक में विश्व स्तर पर चौथे स्थान के प्रशिक्षक, बौद्ध हिदेको ओकामोटो (Hideko Okamoto), जो मध्य-पूर्व में सबसे प्रमुख कराटे प्रशिक्षकों में से एक माने जाते थे – उन्होंने इस्लाम अपनाया और अपना नाम बदलकर अहमद कमाल ओकामोटो रख लिया। उन्होंने अपनी मृत्यु (वर्ष 2009) से पहले दिए गए एक साक्षात्कार में कहा: "मैं मुसलमानों के नमाज़, हज व रोज़े में दिखने वाली सामूहिकता की भावना से प्रभावित हूँ", आगे जोड़ते हुए: "मैंने इस्लाम में अपनी मंज़िल पा ली – जहाँ दया, सहनशीलता, तथा घृणा, द्वेष व नस्लवाद को त्यागने की दावत है – जबकि अतीत में मुझे जीवन के हर व्यवहार में केवल व्यक्तिवाद ही दिखता था।"

अपनी इस यात्रा के दौरान हम ईमान से भरपूर एक पड़ाव से गुज़रे – यह है पेशेवर जर्मन मुक्केबाज़ पियरे वोगेल (Pierre Vogel) का पड़ाव, जिन्होंने क्लब 'सॉरलैंड विलफ्रीड' के लिए 66 मुकाबले खेले, और जिन्होंने वर्ष 2001 में अपना इस्लाम घोषित किया और अपना नाम

बदलकर अबू हम्ज़ा सलाहुद्दीन रख लिया। उनके हाथों जर्मनी में हजारों लोगों ने इस्लाम अपनाया, यहाँ तक कि उन्हें "जर्मनी का प्रचारक" का उपनाम मिला – अपनी आधुनिक व हास्यप्रिय शैली के कारण, जो हर वर्ग के युवाओं को आकर्षित करती है।

जियु-जित्सू व मिश्रित मार्शल आर्ट्स के रूसी-अमेरिकी खिलाड़ी जेफ़ मॉन्सन (Jeff Monson), जिन्होंने वर्ष 2024 में मॉस्को में अपना इस्लाम घोषित किया, जबकि रूसी चैनल 'मैच टीवी' ने वर्ष 2025 में 'बाल्टिका कालिनिनग्राद क्लब' के मिडफील्डर खिलाड़ी डैनियल ओत्किन के इस्लाम अपनाने की घोषणा की – उसी वर्ष डच खिलाड़ी क्विंसी प्रोमैस (Quincy Promes) के भी इस्लाम अपनाने की खबर फैली, जिन्होंने कहा: "यह कानूनी समस्याओं की एक शृंखला के बाद मेरे जीवन की दिशा बदलने का एक प्रयास है!"

फ़्रांसीसी कोच, जिन्होंने सेनेगल टीम को वर्ष 2002 के विश्व कप के क्वार्टर-फ़ाइनल तक पहुँचाया – ब्रूनो मेट्सू (Bruno Metsu) ने वर्ष 2006 में अपना इस्लाम घोषित किया और अपना नाम बदलकर करीम मेट्सू रख लिया। मेट्सू ने अल-ऐन, अल-गराफ़ा, तथा इतिहाद जेद्दा क्लबों को, साथ ही संयुक्त अरब अमीरात व दक्षिण कोरिया की राष्ट्रीय टीमों को भी प्रशिक्षित किया।

उन्हीं की तरह फ़्रांसीसी राष्ट्रीय फुटबॉल टीम व जर्मन क्लब बायर्न म्यूनिख के सितारे फ्रैंक हेनरी पियरे रिबेरी (Franck Ribéry) हैं, जिन्होंने वर्ष 2006 में इस्लाम अपनाया और अपना नाम बदलकर बिलाल यूसुफ़ मुहम्मद रख लिया, और वे किसी भी मैच की शुरुआत से पहले सूरा अल-फ़ातिहा पढ़ने के लिए जाने जाते थे।

इसी तर्ज़ पर डच फुटबॉल दिग्गज क्लैरेंस सीडॉर्फ़ (Clarence Seedorf) हैं, जिन्होंने वर्ष 1995 में अयाक्स एम्स्टर्डम, वर्ष 1998 में रियल मैड्रिड, तथा वर्ष 2003 व 2007 में एसी मिलान के साथ यूएफ़ा चैंपियंस लीग का खिताब जीता – सीडॉर्फ़ ने वर्ष 2022 में इस्लाम अपनाया।

ऐसा ही बास्केटबॉल सितारे फ़र्डिनेंड लुईस अल्लिंसडोर जूनियर ने भी किया, जो अमेरिकी बास्केटबॉल संघ (NBA) में, विशेष रूप से मिल्वाँकी बक्स व लॉस एंजेलिस लेकर्स टीमों के साथ खेले – उन्होंने वर्ष 1971 में इस्लाम अपनाया और अपना नाम बदलकर करीम अब्दुल-जब्बार (Kareem Abdul-Jabbar) रख लिया। वे अपने इस्लाम के बारे में कहते हैं: "मैं इस्लाम से तब परिचित हुआ जब मैं कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय में छात्र था, और अमेरिका में अश्वेतों की पीड़ा की कहानियों से प्रभावित हुआ, तथा मैंने मैल्कम एक्स की आत्मकथा पढ़ी।"

फ़्रांसीसी फुटबॉल सितारे फ़ेदरिक कानूते (Frédéric Kanouté) का मामला भी अलग नहीं रहा, जो स्पेनिश क्लब सेविया के सितारे हैं – उन्होंने वर्ष 1999 में इस्लाम अपनाया और

अपना नाम बदलकर उमर कानूते रख लिया, और इस्लामी शिक्षाओं के अनुरूप उन्होंने परोपकारी व मानवीय क्षेत्रों में बड़ा योगदान दिया।

निःसंदेह इस्लाम अपनाने वाले चैंपियन खिलाड़ियों की सूची बहुत लंबी है, जिसमें सबसे आगे हैं तीन बार के हैवीवेट मुक्केबाज़ी विश्व चैंपियन माइक टायसन (Mike Tyson), जिन्होंने वर्ष 1992 में अपना इस्लाम घोषित किया और अपना नाम बदलकर मलिक अब्दुल अज़ीज़ रख लिया – वे अपनी पहली (2010) और दूसरी (2022) पवित्र भूमि यात्रा के दौरान आदरणीय रसूल ﷺ की क़ब्र के सामने खड़े हुए, गालों से आँसू बहाते हुए, और कहा: "जब तक जीवित रहूँगा, उस क्षण को नहीं भूलूँगा जब मैंने एक ऐसी मानसिक शांति महसूस की जो मैंने पहले कभी महसूस नहीं की थी।"

उनसे पहले अमेरिकी विश्व मुक्केबाज़ी चैंपियन कैसियस मार्सेलस क्ले (Cassius Marcellus Clay) ने यह किया – जो वर्ष 1964, 1974 व 1978 में तीन बार हैवीवेट विश्व चैंपियन रहे – उन्होंने वर्ष 1964 में इस्लाम अपनाया और अपना नाम बदलकर मुहम्मद अली क्ले रख लिया, उन्हें दो बार "सदी का खिलाड़ी" का खिताब मिला, तथा वर्ष 2005 में उन्हें राष्ट्रपति स्वतंत्रता पदक से सम्मानित किया गया।

क्ले अपने इस्लाम के बारे में कहते हैं: "वर्ष 1964 में मुझे पहली बार यह पता चला कि नबी मुहम्मद नबियों की मुहर हैं, और ईसा (उन पर सलामती हो) अल्लाह के नबियों में से एक नबी हैं, और कुरआन वह संपूर्ण वृह्य है जिसने खुद को सुरक्षित रखा है, तो मैंने नमाज़ व रोज़ा सीखा और इस्लाम की दावत देने लगा, यहाँ तक कि मेरे हाथों 20 लाख से अधिक अमेरिकियों ने इस्लाम अपनाया।"

उनकी बातों में से हैं: गरुड़ अपने पंख तब तक नहीं समेटता जब तक कुछ चोटियाँ ऐसी बाक़ी हों जिन तक वह न पहुँचा हो.. मैं तितली की तरह उड़ता हूँ, और मधुमक्खी की तरह डंक मारता हूँ.. ताक़तवर वे नहीं होते जो हमेशा जीतते हैं, बल्कि वे होते हैं जो हारने पर भी कभी हार नहीं मानते।

इस्लाम शराब व नशीली दवाओं के ख़तरे को हराम ठहराता है और उससे आगाह करता है

"शैतान तो यही चाहता है कि शराब तथा जुए के द्वारा तुम्हारे बीच बैर तथा द्वेष डाल दे और तुम्हें अल्लाह के स्मरण तथा नमाज़ से रोक दे, तो क्या तुम रुकने वाले हो?"

– कुरआन, सूरा अल-माइदा 5:91 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "हर नशीली चीज़ शराब है, और हर नशीली चीज़ हाराम है, और जिसने दुनिया में शराब पी और उसका आदी होकर मरा, बिना तौबा किए, तो वह आखिरत में इसे नहीं पीएगा।"

और नबी मुहम्मद ﷺ ने यह भी फ़रमाया: "जिस चीज़ की अधिक मात्रा नशा दे, उसकी थोड़ी मात्रा भी हाराम है।"

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपनी वर्ष 2025 की रिपोर्ट में यह खुलासा किया कि केवल एक वर्ष में नशीली दवाओं व मनःप्रभावी पदार्थों के उपयोगकर्ताओं की संख्या 31 करोड़ 60 लाख तक पहुँच गई, जो 15 से 64 वर्ष की आयु वाली जनसंख्या के 6% के बराबर है – यह चेतावनी देते हुए कि नशीली दवाएँ सुरक्षा, स्थिरता, विकास व अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा हैं, तथा स्वास्थ्य, अपराध, उत्पादकता की हानि, मानसिक बीमारियों के प्रसार, आपराधिक अपराधों, वायरल हेपेटाइटिस, तपेदिक, तथा नशीली दवाओं की लत व सेवन से होने वाली हृदय व रक्त-वाहिका संबंधी बीमारियों से जुड़े खर्चों के कारण कई देशों की घरेलू व सकल आय को समाप्त कर देती हैं – साथ ही यह भी बताया कि 6 करोड़ 40 लाख लोग सिंथेटिक या प्राकृतिक विनाशकारी नशीली दवाओं के सेवन से उत्पन्न विकारों से पीड़ित हैं।

रही हर प्रकार की शराब की तबाही, तो विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वर्ष 2024 में यह खुलासा किया कि "शराब दुनिया भर में हर 20 में से लगभग 1 मौत के लिए मुख्य रूप से ज़िम्मेदार है", जो हर साल शराब के कारण 26 लाख लोगों की मौत के बराबर है – नशे के कारण होने वाली भयावह सड़क दुर्घटनाओं, इसी तरह मानसिक बीमारियों, मनोवैज्ञानिक विकारों, तथा शराब के सेवन से होने वाली दीर्घकालिक अंग-संबंधी बीमारियों के कारण, साथ ही शराब के प्रभाव में किए जाने वाले हर प्रकार के जघन्य अपराधों के कारण भी।

और यह ब्रिटिश वैज्ञानिक देवी श्रीधर (Devi Sridhar), जो ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय में प्राध्यापिका हैं, ने ब्रिटिश पत्रिका 'नेचर' में प्रकाशित अपने एक लेख में पहले ही "विश्व स्वास्थ्य संगठन से शराब के दुरुपयोग को सीमित करने के लिए तत्काल क़दम उठाने" की माँग की थी – जो हर साल 25 लाख लोगों की जान लेती है – यह इंगित करते हुए कि "शराब से होने वाली मौतों की संख्या एड्स, मलेरिया व तपेदिक के पीड़ितों की कुल संख्या से भी अधिक है, और शराब के दुरुपयोग को सीमित करने के लिए एक बाध्यकारी अंतरराष्ट्रीय संधि ज़रूरी है, क्योंकि यह मध्यम-आय वाले देशों में – जहाँ दुनिया की लगभग आधी जनसंख्या रहती है – मानव जीवन के लिए सबसे बड़ा खतरा बन चुकी है!!"

इस्लाम हर प्रकार के जुए को हाराम ठहराता है और उससे आगाह करता है

“ऐ ईमान वालो! बात यही है कि शराब, जुआ, देवथान और फ़ाल निकालने के तीर सर्वथा गंदे और शैतानी कार्य हैं। अतः इनसे दूर रहो, ताकि तुम सफल हो।”

– कुरआन, सूरा अल-माइदा 5:90 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक अल-उमरी)

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "तुममें से जो कसम खाए और अपनी कसम में कहे: 'लात व उज़्ज़ा की कसम', तो उसे कहना चाहिए: 'ला इलाहा इल्लल्लाह', और जो अपने साथी से कहे: 'आओ जुआ खेलें', तो उसे दान देना चाहिए।" यहाँ नबी ﷺ ने मूर्तियों को पवित्र मानने व उनकी कसम खाने को – जो सबसे बड़े गुनाहों में से है – जुआ खेलने के साथ जोड़ा, इसके गंभीर ख़तरे के कारण, इस बात पर ज़ोर देते हुए कि जिसने अपने साथी से कहा 'आओ जुआ खेलें', उसने ही एक ऐसा गुनाह कर लिया जो तौबा का हक़दार है – तो उस व्यक्ति का क्या हाल होगा जो वास्तव में जुआ खेलता है और अपना सारा धन बर्बाद कर देता है?

मनोवैज्ञानिक अध्ययनों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि तथाकथित 'जुआ विकार' या 'बाध्यकारी जुआ' भारी वित्तीय हानि, कार्यक्षमता व उत्पादकता में कमी, तलाक़, पारिवारिक विघटन, घरेलू हिंसा, तथा गंदे धन को वैध बनाने के अतिरिक्त – दिवालियापन, स्थायी कर्ज़दारी, तथा कभी-कभी खेल जारी रखने के लिए ग़बन व चोरी, गहरे अवसाद व नशीली दवाओं के सेवन के गंभीर दौरें, बेतहाशा शराबखोरी, और कभी-कभी आत्महत्या की तीव्र इच्छा या वास्तव में आत्महत्या का प्रयास – भी करता है।

अंतरराष्ट्रीय चिकित्सा पत्रिका 'लांसेट' द्वारा वर्ष 2024 में प्रकाशित एक रिपोर्ट में यह खुलासा किया गया कि "जुआ मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, विशेष रूप से इंटरनेट, इलेक्ट्रॉनिक गेम्स व मोबाइल फ़ोन के ज़रिए जुए के खेलों व विज्ञापनों के पागलपन की हद तक फैलने के बाद", यह पुष्टि करते हुए कि "वर्तमान में 8 करोड़ लोग 'जुआ विकार' नामक मानसिक विकार से पीड़ित हैं, और यह विकार पारिवारिक हिंसा, आत्महत्या, तथा अपराधों का कारण बनता है।"

जबकि ब्रिटिश यूनिवर्सिटी ऑफ़ ब्रिस्टल के शोधकर्ताओं द्वारा वर्ष 2025 में किए गए एक वैज्ञानिक अध्ययन, जिसके परिणाम पत्रिका 'एडिक्शन' में प्रकाशित हुए, में यह खुलासा हुआ कि जुआरियों को जुआ शुरू करने के केवल एक वर्ष बाद ही दूसरों की तुलना में 3 गुना अधिक आत्महत्या का ख़तरा होता है, और चार वर्षों के बाद यह ख़तरा चार गुना तक बढ़ जाता है।

इस्लाम में घूसखोरी का निषेध

“और आपस में एक-दूसरे का धन अवैध रूप से न खाओ और न उन्हें अधिकारियों के पास ले जाओ, ताकि लोगों के धन का कुछ भाग गुनाह के साथ खा जाओ, हालाँकि तुम जानते हो।”

– कुरआन, सूरा अल-बकरा 2:188 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

नबी मुहम्मद ﷺ ने "रिश्वत देने वाले और रिश्वत लेने वाले" दोनों पर लानत भेजी।

रिश्वत समाजों व देशों को तबाह करने वाली सबसे खतरनाक नैतिक, सामाजिक व आर्थिक बुराइयों में से एक है। रिश्वत ईमानदारी के मानकों की अनुपस्थिति, लोगों के बीच विश्वास की हानि, पेशेवर व व्यावसायिक अमानत में विश्वासघात, जालसाज़ी, मनगढ़ंत आरोप व ग़बन की परिघटनाओं के प्रसार, दूसरों के परिश्रम को चुराने, तथा मेहनती, सफल व लगनशील लोगों के अधिकारों की हानि का कारण बनती है।

इस्लाम में सूद का निषेध

“ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और ब्याज में से जो शेष रह गया है, उसे छोड़ दो, यदि तुम ईमान रखने वाले हो।”

– कुरआन, सूरा अल-बकरा 2:278 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

नबी ﷺ ने "सूद खाने वाले, खिलाने वाले, उसके गवाह व उसे लिखने वाले" – सभी पर लानत भेजी।

इस्लाम ने सूद के सभी प्रकारों को हराम ठहराया है, क्योंकि यह लोगों की गंभीर ज़रूरतों का शोषण करता है, गरीबी की दरों को बढ़ाता है, बेरोज़गारी की परिघटना को गंभीर बनाता है, सामाजिक अन्याय फैलाता है, वर्गीय भेदभाव को स्थायी बनाता है, एक ही समाज के सदस्यों के बीच द्वेष व शत्रुता भड़काता है, कीमतेँ बढ़ाता है, तथा उनके बीच सहयोग व करुणा की भावना खत्म करता है – इसके अतिरिक्त यह कर्ज़दाताओं के हित में कर्ज़दारों पर बोझ बढ़ाता है, तथा वार्षिक ब्याजों के जमा होने के कारण उन्हें वर्षों तक मूल कर्ज़ चुकाने में असमर्थ बना देता है, जिसके परिणामस्वरूप कई कर्ज़दारों को जेल जाना पड़ता है, उनकी नौकरियाँ छूट जाती हैं, उनके परिवार तबाह हो जाते हैं, या उनकी संपत्तियाँ ज़ब्त कर ली जाती हैं – और शायद शेक्सपियर का प्रसिद्ध नाटक 'द मर्चेन्ट ऑफ़ वेनिस' ने इतिहास में सूद की बुराइयों व उसकी अमानवीयता के एक महत्वपूर्ण पहलू को उसके सूदखोर व्यापारी 'शाइलॉक' के माध्यम से संक्षेप में प्रस्तुत किया है।

इसीलिए वे देश, जो शांति से जीना चाहते हैं और अपने लोगों, अपनी संप्रभुता, सुरक्षा व स्वतंत्रता की रक्षा करना चाहते हैं, आमतौर पर यथासंभव सूदी ऋण लेने से बचते हैं, जबकि

उनमें से कई आंतरिक निर्माण, उद्योग व निवेश योजनाओं को गति देने के लिए ब्याज़ दरों को कम करने या शून्य करने का सहारा लेते हैं।

फ्रांसीसी अर्थशास्त्री मॉरिस अलैस (Maurice Allais), जिन्हें वर्ष 1988 में अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार मिला, ने वैश्विक वित्तीय संकटों की गंभीरता को कम करने के उद्देश्य से पहले ही सुझाव दिया था कि "ब्याज़ दर को शून्य के करीब समायोजित किया जाए, और कर की दर को लगभग 2% तक संशोधित किया जाए", आगे जोड़ते हुए कि "कई अवधारणाओं ने पूँजीवादी व्यवस्था की यह प्रतिष्ठा फैलाई है कि यह एकाधिकार, जुआ, लोगों को गुलाम बनाने, या धन-वितरण में असंतुलन तथा उसे कुछ व्यापारियों व सामंतों के हाथों में केंद्रित करने की अनुमति देती है – जिससे अंततः लोगों की गरीबी और कर्ज़दाताओं का कर्ज़दारों पर नियंत्रण होता है।"

इसी संदर्भ में कई देशों के राष्ट्राध्यक्षों ने बार-बार ब्याज़ दर को 1% तक कम करने, या इसे शून्य करने की माँग की, ताकि स्थानीय बाज़ार को गति मिले और तेज़ आर्थिक पतन से बचा जा सके – इस डर से कि कहीं वर्ष 1929-1939 की महामंदी जैसा संकट, या वर्ष 2008 का संकट, संचित कर्ज़ों तथा बैंकों के ऊँचे सूदी ब्याज़ों के कारण दोबारा न हो जाए।

रहे अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्री पीटर शिफ़ (Peter Schiff), जो 'यूरोपैसिफ़िक' के मुख्य अर्थशास्त्री हैं, तो उन्होंने बैंकों पर दीर्घकालिक, कम-ब्याज़ वाले कर्ज़ों का बोझ बढ़ने के परिणामस्वरूप संभावित वैश्विक बैंकिंग संकटों के प्रति चेतावनी दी।

यह ज्ञात बात है कि कर्ज़ों पर सूदी ब्याज़ दरों को बढ़ाना आमतौर पर मंदी की ओर ले जाता है, जबकि सूदी ब्याज़ को घटाना मुद्रास्फीति की ओर ले जाता है – और शांति से जीने के लिए ब्याज़ को शून्य करना तथा 'लाभ व हानि की साझेदारी' नीति – जिसे 'मुज़ारबा', 'इस्तिस्ना', 'मुराबहा', 'शराका', 'इजारा' के रूप में जाना जाता है – अपनाना ज़रूरी है, इसके अतिरिक्त बिना ब्याज़ के 'कर्ज़-ए-हसन' अपनाना, ज़कात के धन के संग्रहण व प्रबंधन को सक्रिय करना, धर्मार्थ वक्फ़ व दान के निवेश को बढ़ावा देना, तथा सार्वजनिक क्षेत्र का समर्थन करना भी आवश्यक है।

प्रसिद्ध पुस्तक 'रिच डैड पुअर डैड' के लेखक, अर्थशास्त्री रॉबर्ट कियोसाकी (Robert Kiyosaki) ने हाल ही में फ़ेडरल रिज़र्व द्वारा ब्याज़ दरें बढ़ाए जाने के बाद वैश्विक बैंकों के दिवालिया होने तथा जमाकर्ताओं की कागज़ी मुद्रा में बचत खोने के खतरे के प्रति चेतावनी दी, और सभी को सलाह दी कि "दिवालिया हो रहे बैंकों से दूर रहें, उनसे पैसा निकाल लें, और सोने-चाँदी जैसी कीमती धातुओं में वास्तविक धन निवेश करके अपनी संपत्ति की रक्षा करें।"

इस्लाम हाराम चीज़ों को देखने से मना करता है

“(ऐ नबी!) आप ईमान वाले पुरुषों से कह दें कि अपनी निगाहें नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। यह उनके लिए अधिक पवित्र है। निःसंदेह अल्लाह उससे पूरी तरह अवगत है, जो वे करते हैं।”

– कुरआन, सूरा अन-नूर 24:30 (अनुवाद: अज़ीजुल हक़ अल-उमरी)

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "रास्तों में बैठने से बचो।" सहाबा ने कहा: 'हमारे पास इसके अलावा कोई चारा नहीं, ये तो हमारी बैठकें हैं जहाँ हम बातचीत करते हैं।' उन्होंने कहा: "यदि तुम बैठकों के अलावा मानने को तैयार नहीं, तो रास्ते का हक़ अदा करो।" उन्होंने पूछा: 'रास्ते का हक़ क्या है?' उन्होंने कहा: "नज़र नीची रखना, तकलीफ़ न पहुँचाना, सलाम का जवाब देना, भलाई का आदेश देना, और बुराई से रोकना।"

यहाँ मुझे उन नवीनतम वैज्ञानिक अध्ययनों तथा सामाजिक व मनोवैज्ञानिक शोधों का एक हिस्सा प्रस्तुत करने दीजिए, जो मैंने अश्लील वेबसाइटों की लत के खतरों के बारे में विश्वसनीय स्रोतों से एकत्र किए हैं। आज मानसिक स्वास्थ्य व निजी जीवन, अश्लील फिल्मों के भयावह प्रयोग के परिणामस्वरूप विनाशकारी प्रभावों से पीड़ित है, स्पुतनिक रूसी एजेंसी के अनुसार।

अमेरिकी मनोवैज्ञानिक प्रोफ़ेसर विलियम स्ट्रदर्स (William Struthers) आगे जोड़ते हैं कि "शरीर इन घटिया फिल्मों को देखते समय डोपामिन का स्राव करता है, जो वही पदार्थ है जो नशीली दवाओं की लत का कारण बनता है", वे इन फिल्मों के खतरे के प्रति चेतावनी देते हैं, क्योंकि ये लत के अतिरिक्त तथाकथित "अश्लील फिल्म-प्रेरित नपुंसकता" का भी कारण बनती हैं, जिसके कारण उत्तेजना केवल आभासी रूप से होती है और वास्तविक जीवन में पूरी तरह गायब या ठंडी पड़ जाती है।

रहा बेल्लियाई एंटवर्प विश्वविद्यालय, तो जैसा कि 'साइबरसाइकोलॉजी' पत्रिका में आया है, यह सोशल मीडिया पर अनैतिक सामग्री देखने और वास्तविक जीवन में भटके हुए व्यवहार के बीच एक गहरे संबंध का खुलासा करता है।

अपनी ओर से, बर्लिन स्थित जर्मन 'मैक्स प्लांक इंस्टीट्यूट' ने इन फिल्मों को देखने तथा मस्तिष्क के दाएँ हिस्से, साथ ही सोच, योजना, कार्य-निष्पादन, बोलने व भावनात्मक नियंत्रण के लिए ज़िम्मेदार फ्रंटल कॉर्टेक्स के कार्यों के बीच एक नकारात्मक संबंध का खुलासा किया।

कनाडाई 'लावाल विश्वविद्यालय' का मामला भी अलग नहीं है – तंत्रिका-चिकित्सक राशेल ऐन बार (Rachel Anne Barr) के एक अध्ययन में यह खुलासा हुआ कि जो लोग "अश्लील सामग्री" के आदी होते हैं, उन्हें उस मस्तिष्क-वल्कुट में क्षति पहुँचती है जो नैतिकता, इच्छाशक्ति व आवेगों पर नियंत्रण को नियंत्रित करता है।

अपनी पुस्तक 'वायर्ड फॉर इंटिमेसी' में डॉक्टर विलियम स्ट्रदर्स ने खुलासा किया कि अश्लील फिल्मों की लत, संक्षेप में, मानसिक व मनोवैज्ञानिक बीमारियों के अतिरिक्त अवसाद, अंतर्मुखता व चिंता की भावनाओं का कारण बनती है, इसी तरह की चेतावनी देते हुए कि इन फिल्मों को देखने से इच्छाशक्ति व नैतिक निर्णयों के लिए जिम्मेदार सिंग्युलेट कॉर्टेक्स कमजोर होता है, तथा मस्तिष्क में ऐसे रासायनिक परिवर्तन होते हैं जो शराब व नशीली दवाओं के आदी लोगों में होने वाले परिवर्तनों के समान हैं!!

यहाँ मैं हाल ही में देखे गए एक आँकड़े का जिक्र करना पर्याप्त समझता हूँ, जिसके अनुसार "अश्लील वेबसाइटों ने दुनिया भर में वैवाहिक बेवफाई में 300% की वृद्धि की है, और केवल एक अश्लील वेबसाइट पर वर्ष 2016 में देखे जाने का कुल समय 4 अरब 50 करोड़ घंटे से अधिक रहा – जिसका खतरा बाल-यौन शोषण, नेक्रोफिलिया व अन्य गंभीर मानसिक विकारों को बढ़ावा देने में निहित है, जिन्हें तथाकथित 'बेडरूम साहित्य' व अन्य माध्यमों के ज़रिए बढ़ावा दिया जा रहा है। आज ज़रूरत इस बात की है कि बुराई के साहित्य के मुकाबले सद्गुण के साहित्य को बढ़ावा दिया जाए व उसका पोषण किया जाए, जो सभी लोगों के दिलों में उदात्त मूल्यों, आदर्शों व सिद्धांतों तथा उत्तम नैतिकता को रोपने का काम करे – बशर्ते इस साहित्य में रोमांच, कथानक व सामग्री के तत्वों की कोई कमी न हो, बिना किसी अति या कमी के।

इसके अतिरिक्त, इंटरनेट के उदय और निगरानी के अभाव के साथ इन खतरनाक बीमारियों के मामलों में वृद्धि हुई है, जैसा कि ब्रिटिश वृत्तचित्र 'अश्लीलता का मस्तिष्क पर प्रभाव' में बताया गया है। निःसंदेह समाधान निरंतर जागरूकता, आपत्तिजनक वेबसाइटों की ब्लॉकिंग, विनियमन तथा संस्थागत व केंद्रीय प्रतिबंध में निहित है – और यदि नीयत सच्ची हो और प्रयास एकजुट हों, तो सॉफ्टवेयर विशेषज्ञों के अनुसार, यह सब मिलकर कम से कम 90% डार्क वेब व डीप वेब वेबसाइटों तक पहुँच को सीमित कर सकता है, बशर्ते कार्रवाई आधिकारिक व कानूनी हो, और मार्गदर्शक अभियानों, जागरूकता पाठों, उपदेशात्मक व्याख्यानों, शैक्षणिक पाठ्यक्रमों, विवाह को सुगम बनाने व प्रोत्साहित करने, तथा मेहर घटाने के साथ – सबसे पहले परिवार से शुरू होकर, दृश्य, श्रव्य व मुद्रित मीडिया की भागीदारी के साथ – एक साथ, समन्वित रूप में सामने आए।

इस्लाम में सहज-वृत्ति की अराजकता व यौन-उच्छृंखलता का निषेध

"और व्यभिचार के निकट भी न जाओ। निःसंदेह वह निर्लज्जता तथा बुरी राह है।"

– कुरआन, सूरा अल-इस्सा 17:32 (अनुवाद: अज़ीजुल हक़ अल-उमरी)

नबी ﷺ ने फ़रमाया: "व्यभिचारी जब व्यभिचार करता है, तो उस समय वह मोमिन नहीं रहता।"

और जब उनसे पूछा गया कि अल्लाह के निकट सबसे बड़ा गुनाह कौन-सा है, तो उन्होंने फ़रमाया: "यह कि तुम अल्लाह का कोई समकक्ष ठहराओ, जबकि उसी ने तुम्हें पैदा किया, और यह कि तुम अपनी संतान की हत्या कर दो इस डर से कि वह तुम्हारे साथ खाएगी, और यह कि तुम अपने पड़ोसी की पत्नी से व्यभिचार करो।"

और अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "तीन लोग ऐसे हैं जिनसे अल्लाह क़यामत के दिन बात नहीं करेगा, न उन्हें पाक करेगा, न उनकी ओर देखेगा, और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है: बूढ़ा व्यभिचारी, झूठा शासक, और घमंडी गरीब।"

आज मानवता एक सहज-वृत्ति की अराजकता, तथा सद्गुण व तर्क से परे, बिना किसी नियंत्रण या रोक के एक यौन-वैश्वीकरण का सामना कर रही है – यह महाद्वीपों व सीमाओं को पार करने वाली एक पाशविक बीमारी है, जिसकी बुराइयों में पूरी दुनिया डूब चुकी है – जिसके परिणामस्वरूप करोड़ों तलाक़, वैवाहिक बेवफ़ाई, अनाचार के अपराध, बलात्कार, यौन-उत्पीड़न, अज्ञात-वंश बच्चों की परिघटना का प्रसार, अंग-तस्करी गिरोहों व मानव-तस्करी का उदय, तथा गुप्त व खुली वेश्यावृत्ति की परिघटना का प्रसार हुआ है – और 'जेफ़री एपस्टीन' का यौन-साम्राज्य, जिसने अत्यंत धनी लोगों को अपनी सेवाएँ दीं, हमसे बहुत दूर नहीं है – इसके अतिरिक्त, विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, हर साल 7 करोड़ 30 लाख जान-बूझकर किए गए गर्भपात होते हैं, जो प्रतिदिन 200 गर्भपात के बराबर है – इसके अलावा संगठन ने एक और चौंकाने वाला खुलासा किया कि "दुनिया भर में प्रतिदिन दस लाख यौन-संचारित बीमारियों के मामले सामने आते हैं, जिनमें सिफ़िलिस, गोनोरिया, क्लैमाइडिया, ट्राइकोमोनिएसिस तथा जानलेवा एड्स सबसे आगे हैं।"

विश्व स्वास्थ्य विशेषज्ञ यह खुलासा करते हैं कि "एड्स, वायरल हेपेटाइटिस, तथा यौन-संचारित बीमारियाँ अभी भी सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए बड़ी चुनौतियाँ बनी हुई हैं, और हर साल 25 लाख लोगों की मौत का कारण बनती हैं।"

विश्व स्वास्थ्य संगठन आगे बताता है कि "यौन-संबंधी अनैतिकता विभिन्न प्रकार की तंत्रिका-संबंधी बीमारियों, हृदय व रक्त-वाहिका रोगों, बाँझपन, अस्थानिक गर्भावस्था तथा भ्रूण-मृत्यु का एक गंभीर स्रोत है, इसके अतिरिक्त एड्स का कारण बनने वाले इम्यूनो-डेफ़िशिएंसी वायरस के संक्रमण का ख़तरा भी बढ़ाती है – यहाँ तक कि अकेले सिफ़िलिस रोग विश्व भर में प्रति वर्ष 2 लाख मृत भ्रूण-जन्म व नवजात मृत्यु का कारण बनता है।"

शायद वह सबसे बड़ी यौन-आपदा, जो मानवता को झकझोर रही है और उसकी नैतिक, सामाजिक, स्वास्थ्य, आर्थिक व सुरक्षा-व्यवस्था को ख़तरे में डाल रही है, यह है कि हराम यौन-संबंध अब पारंपरिक रूप से – जैसा इतिहास में एक पुरुष व एक स्त्री के बीच होता था – सीमित नहीं रहा, बल्कि 2 करोड़ 20 लाख से अधिक अश्लील वेबसाइटों के प्रभाव से हर प्रकार के घिनौने व विकृत यौन-व्यवहार व्यापक रूप से फैल गए हैं, जिन्हें मनोवैज्ञानिकों ने

पहले दुर्लभ, गंभीर मानसिक व मनोविश्लेषणात्मक विकारों की श्रेणी में रखा था, इससे पहले कि ये पूरी दुनिया में फैल गए – इसके अतिरिक्त गुड़ियों व एनिमेशन से यौन-संबंध, आभासी यौन-संबंध, किराए की कोख, शुक्राणु व अंडाणु बैंक, किशोर एकल-माताओं की परिघटना का प्रसार, तथा पुरुषों में स्त्रैणता व स्त्रियों में पुरुषत्व की परिघटनाओं का प्रसार भी शामिल है – यह सब हर किसी के सामने यह पुष्टि करता है कि "सीधा धर्म इस्लाम, अपनी उदात्त शिक्षाओं, उन्नत नैतिकता व शाश्वत मूल्यों के साथ, इस धरती पर सद्गुण को पुनर्जीवित करने तथा बुराई के तूफान को रोकने का एकमात्र समाधान है।"

अंत में हम कहते हैं कि आदरणीय नबी ﷺ को इस्लाम का शाश्वत संदेश देकर इसलिए भेजा गया ताकि अल्लाह तआला को ही पवित्रता व इबादत के लिए खास माना जाए, ताकि वे उत्तम आचरण को पूर्णता तक पहुँचाएँ, समस्त संसार के लिए दया बनें, हितों को लाएँ, तथा समस्त मानवता से बुराइयों को दूर करें, और उन पाँच अनिवार्यताओं की रक्षा करें, जिनके बिना मानव-जीवन कभी सीधा नहीं रह सकता: "धर्म, प्राण, बुद्धि, वंश व धन की रक्षा।"

अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को बुद्धि देकर बनाया और उन्हें सहज-वृत्तियों से मुक्त रखा, जबकि बाकी सृष्टि को सहज-वृत्तियाँ देकर बुद्धि के बिना बनाया – ताकि केवल मनुष्य ही बुद्धि व सहज-वृत्ति, दोनों से युक्त हो। इसलिए जो कोई अपनी बुद्धि को अपनी सहज-वृत्तियों पर प्रधानता दे, वह फ़रिश्तों के दर्जे तक पहुँच जाएगा, इसके विपरीत जो अपनी सहज-वृत्तियों को अपनी बुद्धि पर प्रधानता दे, वह पतित होकर पशुओं के स्तर तक गिर जाएगा। कामेच्छा को बुद्धिसंगत व मानवीय बनाना ज़रूरी है, जैसा कि सीधा धर्म इस्लाम करता है, ताकि जीवन सीधा रहे और दुनिया भर में वंश सुरक्षित रहे – जिसके परिणामस्वरूप नवजातों की दर में गिरावट, विवाह व संतानोत्पत्ति की दुर्लभता, तलाक़ व अलगाव की अधिकता हुई है – बिल्कुल वैसे ही जैसा वर्तमान में स्कैंडिनेवियाई देशों, जापान, दक्षिण कोरिया, कनाडा, रूस, ऑस्ट्रेलिया तथा अधिकांश यूरोपीय देशों में हो रहा है।

इस्लाम लोगों को शालीन वस्त्र धारण करने की दावत देता है

"ऐ नबी! अपनी पत्नियों, अपनी बेटियों और ईमान वाले लोगों की स्त्रियों से कह दें कि वे अपने ऊपर अपनी चादरें डाल लिया करें। यह इसके अधिक निकट है कि वे पहचान ली जाएँ, फिर उन्हें कष्ट न पहुँचाया जाए। और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला, अत्यंत दयावान् है।"

– कुरआन, सूरा अल-अहज़ाब 33:59 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

नबी ﷺ ने पुरुषों को स्त्रियों जैसा बनने तथा उनके कपड़े पहनने से मना किया, और इसी तरह स्त्रियों को पुरुषों जैसा बनने तथा उनके कपड़े पहनने से मना किया – साथ ही दोनों को कपड़ों की पवित्रता व स्वच्छता बनाए रखने की दावत दी, क्योंकि दिन में पाँच बार नमाज़ अदा करने के लिए भीतरी व बाहरी वस्त्रों की पवित्रता शर्त है।

पुरुषों के लिए सोना व रेशम पहनना हराम है, तथा उनके कपड़े गर्व, श्रेष्ठता व घमंड के लिए नहीं होने चाहिए, और न ही वे दुष्टों व भटके हुए लोगों के लिबास जैसे होने चाहिए, और न ही अन्य धर्मों के विशिष्ट परिधानों जैसे – जैसे पादरियों, भिक्षुओं, रब्बियों, पुरोहितों, बिशपों, कार्डिनलों, शाओलिन गुरुओं, सिखों व हिंदुओं आदि के परिधान।

रहा स्त्रियों का लिबास, तो उसे ढीला व खुला होना चाहिए, तंग नहीं, न शरीर की बनावट दिखाने वाला और न पारदर्शी। उसे स्त्री के पूरे शरीर को ढाँकना चाहिए, सिवाय चेहरे व हथेलियों के, तथा उसे उसके सौंदर्य को प्रकट नहीं करना चाहिए, न ही वह पुरुषों के कपड़ों जैसा होना चाहिए, या अन्य धर्मों व समुदायों की स्त्रियों के विशिष्ट लोक-पारंपरिक या धार्मिक परिधानों जैसा, और न ही वह ऐसा प्रसिद्धि वाला परिधान हो जो उसे लोगों के तानों, धौंस, उपहास व निंदा का निशाना बना दे, और न ही वह इत्र या धूप से महकाया हुआ हो।

तंग कपड़ों के नुकसान

पोषण-विशेषज्ञ मिशेल राउच (Michelle Rauch) हेल्थलाइन वेबसाइट पर बताती हैं कि हाल ही में दोनों लिंगों में प्रचलित तंग कपड़े, अम्ल-प्रतिवाह, आईबीएस व क्रोन रोग जैसी पाचन-तंत्र संबंधी समस्याओं को बढ़ा सकते हैं, तथा पेट व आँतों पर दबाव बढ़ाकर जलन व असुविधा पैदा करते हैं, और समय के साथ ग्रासनली में सूजन का कारण बन सकते हैं।

जबकि अमेरिकी वेबसाइट 'ब्राइट साइड' ने बताया कि "तंग पतलून त्वचा में जलन पैदा करते हैं, साथ ही एक नम व गर्म वातावरण भी बनाते हैं जो बैक्टीरिया के विकास में सहायक होता है।"

'सेहती' वेबसाइट आगे बताती है कि पुरुषों व स्त्रियों दोनों के लिए तंग कपड़े प्रजनन-क्षमता के स्तर को प्रभावित करते हैं, गर्भाशय की परत में सूजन, रक्तचाप में बदलाव, और कभी-कभी स्त्रियों में बाँझपन या कमजोर प्रजनन-क्षमता को प्रभावित करते हैं – जबकि पुरुषों पर इनका प्रभाव शुक्राणुओं को नुकसान पहुँचाने, मूत्राशय पर दबाव डालने, तथा खतरनाक बैक्टीरिया के प्रसार में योगदान देने के रूप में होता है।

मैं इस बात के साथ समापन करता हूँ, जो स्विस धर्म-विशेषज्ञ डॉक्टर नोरा एली (Nora Illi) ने कही – जो प्रसिद्ध स्विस चिकित्सक एली फ़िशेंटियागर्ड की बेटी हैं, जिन्होंने इस्लाम अपनाया और हिजाब पहना, और जिनके हाथों दर्जनों पश्चिमी स्त्रियों ने इस्लाम अपनाया – वे अपने हिजाब पर गर्व करते हुए कहती हैं: "हिजाब पहनने से पहले युवा मुझसे एक वस्तु की तरह व्यवहार करते थे, और उन्हें मेरे शरीर के अलावा कुछ भी आकर्षित नहीं करता था, परंतु इसे पहनने के बाद वे मुझसे एक स्त्री की तरह व्यवहार करने लगे।"

इस्लाम में आत्महत्या का निषेध

"ऐ ईमान वालो! आपस में एक-दूसरे का धन अवैध रूप से न खाओ, सिवाय इसके कि वह तुम्हारी आपसी सहमति से कोई व्यापार हो। तथा अपने आपको कत्ल न करो। निःसंदेह अल्लाह तुमपर अति दयावान् है।"

– कुरआन, सूरा अन-निसा 4:29 (अनुवाद: अज़ीजुल हक अल-उमरी)

नबी मुहम्मद ﷺ ने आत्महत्या के परिणाम से आगाह करते हुए फ़रमाया: "जो अपने आप को दुनिया में किसी चीज़ से मार डाले, तो क़यामत के दिन उसे उसी चीज़ से अज़ाब दिया जाएगा।"

संयुक्त राष्ट्र की वर्ष 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया भर में हर साल 7 लाख 20 हज़ार से अधिक लोग आत्महत्या करके अपना जीवन समाप्त कर लेते हैं, और हर आत्महत्या के मामले के साथ कई प्रयास भी जुड़े होते हैं, जिनमें से कुछ अंतिम क्षणों में विफल हो जाते हैं – यह पुष्टि करते हुए कि आत्महत्या 15 से 29 वर्ष की आयु के लोगों के लिए मृत्यु का तीसरा प्रमुख कारण है।

रहीं आत्महत्या के विभिन्न कारण, जिनमें सबसे हालिया मामला प्रसिद्ध अमेरिकी टिकटॉकर टकर घिनल का है, जिनके टिकटॉक पर 25 लाख से अधिक फ़ॉलोअर थे, और जिन्होंने लॉस एंजेलिस स्थित अपने घर में 31 वर्ष की आयु में आत्महत्या कर ली – तो ये कारण अनेक हैं: कुछ मामले शराब या नशीली दवाओं के प्रभाव में होते हैं, कुछ लोग सूदी कर्ज़ के बोझ तले दबकर व उसे चुका न पाने के कारण आत्महत्या कर लेते हैं, कुछ जुए की मेज़ पर भारी नुक़सान के कारण, कुछ शैतानी व भटकाने वाले आंदोलनों के प्रभाव में जो आत्महत्या को प्रोत्साहित करते हैं, कुछ बेरोज़गारी, बदमाशी, या ऐसे संदिग्ध इलेक्ट्रॉनिक खेलों के कारण जो खिलाड़ियों को आत्महत्या के लिए लुभाते हैं, कुछ वैचारिक विकारों व विभिन्न मानसिक बीमारियों से पीड़ित होने के कारण, या असफल प्रेम-कहानियों की पृष्ठभूमि में, या धमकियों, ब्लैकमेल व कुछ विशेष मानसिक दबावों के कारण आत्महत्या कर लेते हैं – और कुछ जान-बूझकर की गई हत्याएँ भी होती हैं, जिन्हें अपराधी कम या ज़्यादा समय तक स्वैच्छिक आत्महत्या के मामलों के रूप में दिखाने में सफल हो जाते हैं।

[संवेदनशील विषय पर एक टिप्पणी: यह अनुच्छेद एक धार्मिक-सूचनात्मक ग्रंथ का अनुवाद है और आत्महत्या को हaram बताते हुए सांख्यिकीय जानकारी प्रस्तुत करता है। यदि कोई पाठक व्यक्तिगत रूप से मानसिक स्वास्थ्य संबंधी कठिनाई से गुज़र रहा हो, तो कृपया किसी विश्वसनीय व्यक्ति या पेशेवर सहायता से संपर्क करें।]

इस्लाम में जादू, भविष्यवाणी, धोखाधड़ी व तंत्र-मंत्र का निषेध

“और फेंक दे, जो तेरे दाहिने हाथ में है, वह निगल जाएगा जो कुछ उन्होंने रचा है। निःसंदेह उन्होंने जो कुछ रचा है, वह जादूगर की चाल है और जादूगर जहाँ भी आए, सफल नहीं होता।”

– कुरआन, सूरा ता-हा 20:69 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जो किसी भविष्यवक्ता के पास गया और उसकी बात को सच माना, तो उसने उस चीज़ का इनकार कर दिया जो मुहम्मद पर उतारी गई।" और उनका यह कथन: "वह हममें से नहीं जिसने अपशकुन माना या किसी के लिए अपशकुन निकलवाया, या भविष्यवाणी की या किसी से भविष्यवाणी करवाई, या जादू किया या किसी से जादू करवाया।" और उनका यह कथन: "जिसने ज्योतिष विद्या का कोई अंश सीखा, तो उसने जादू का एक अंश सीखा – जितना अधिक सीखा उतना ही अधिक।"

यद्यपि मानवता – अल्लाह जिस पर दया करे उनके सिवा – प्रौद्योगिकी व कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस युग में व्यक्तिवादी विचारों व भौतिकवादी प्रवृत्तियों में डूबी हुई है, फिर भी 'ऊपरी जादू' (ग्रहों व तारों से संबंधित) तथा 'निचला जादू' (जड़ी-बूटियों, कीमती पत्थरों, तथा मानव व पशु अवशेषों से संबंधित) की गतिविधियाँ दुनिया के विभिन्न हिस्सों में – विशेष रूप से एशिया, अफ़्रीका, दक्षिण अमेरिका महाद्वीपों तथा कुछ पुराने यूरोपीय देशों में – फैली हुई हैं। इन महाद्वीपों के करोड़ों निवासी अभी भी जादूगर का सम्मान करते हैं, उस पर विश्वास करते हैं, तथा गुप्त शक्तियों से संपर्क करने, पूर्वजों की आत्माओं को बुलाने, अपने भविष्य के भाग्य के विवरण जानने, या हसद, नज़र, बीमारी व ग़रीबी को दूर भगाने तथा बुरी आत्माओं को निकालने – उनके दावे के अनुसार स्वास्थ्य, अच्छे भाग्य, रोज़ी व बरकत पाने, तथा अपने दुश्मनों को नुक़सान पहुँचाने के बदले – उसके ज़रिए मध्यस्थता करते हैं। यह सब अजीब रस्मों के ज़रिए होता है, जिनमें पौधों के उपहार, पशु-बलि, और कभी-कभी मानव-बलि भी शामिल होती है, तथा मिथ्या मान्यताओं का प्रसार होता है, जैसे 'सांता मुएर्ते' की पूजा, मिट्टी का जादूगर, अंधी जादूगरनी, लाल चाँद की रस्में, कोलंबियाई जादू, हैतियाई जादू, लातीनी अमेज़न का जादू, इसी तरह 'कोकोड्रिलो' जादू व अफ़्रीकी वूडू, तथा सुदूर पूर्व के देशों में शामान का जादू, इसके अतिरिक्त भारत का जादू और अन्य।

दो वर्ष पहले, 'डिजिटल मीडिया सेंटर' (DMC) ने फ़ेसबुक द्वारा जादू को बढ़ावा देने वाले पृष्ठों के विज्ञापनों को मंजूरी देने पर गहरी नाराज़गी व्यक्त की, यह इंगित करते हुए कि उसने फ़ेसबुक पर, और कुछ हद तक इंस्टाग्राम पर भी, दर्जनों ऐसे विज्ञापन देखे हैं, जिनमें से कुछ में ऐसे "अतार्किक" क्लिप शामिल हैं जिनमें खुद को "आध्यात्मिक" या "चिकित्सक" बताने वाले लोग विज्ञान, बुद्धि, तर्क व धर्म की सीमाओं से परे कार्य करते हैं – और इस मंच को करोड़ों उपयोगकर्ताओं के सामने इस सामग्री के प्रदर्शित होने से पहले इन विज्ञापनों पर पुनर्विचार करना चाहिए!"

हम याद दिलाना चाहते हैं कि 'खगोल-विज्ञान' (Astronomy) और 'ज्योतिष विद्या' (Astrology) के बीच एक बहुत बड़ा अंतर है। प्रसिद्ध खगोलविद डॉक्टर इस्साम हज्जी (Essam Heggy), जिन्होंने फ्रांसीसी अंतरिक्ष केंद्र (CNES) में शोधकर्ता के रूप में काम किया, फिर पेरिस विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक रहे, इससे पहले कि वे नासा में काम करने चले गए – वे राशिफल में विश्वास करने के बारे में कहते हैं: "25 वर्षों से अंतरिक्ष व खगोल विज्ञान के क्षेत्र के एक विशेषज्ञ शोधकर्ता के रूप में, राशियाँ नाम की कोई चीज़ नहीं होती, और ग्रहों, तारों व दूर की आकाशगंगाओं का तुम्हारे दैनिक जीवन व व्यक्तिगत निर्णयों से कोई संबंध नहीं। नए वर्ष में तुम्हारा भाग्य वही सबक है जो तुमने पिछले वर्ष में सीखे, इसके अलावा कुछ नहीं।"

अपनी ओर से, मिस्री राष्ट्रीय खगोल व भू-भौतिकी अनुसंधान संस्थान में खगोल विभाग के प्रमुख डॉक्टर अशराफ़ तादरस (Ashraf Tadros) पुष्टि करते हैं कि "ज्योतिष विद्या का विज्ञान से कोई संबंध बिल्कुल नहीं है, बल्कि यह पूरी तरह संयोग पर निर्भर मामला है – यह घटित हो भी सकता है और सिर से न भी हो – और यह विज्ञान के मूल सिद्धांतों के विरुद्ध है।"

कई समाचार-पत्रों, रेडियो व सैटेलाइट चैनलों ने फ्रांसीसी ज्योतिषी नास्ट्रेदमस (Nostradamus) की चौपाइयों को प्रकाशित करके अपने अनुयायियों की संख्या बढ़ाने की आदत डाल ली है, जिन्हें उन्होंने 450 वर्ष पहले अपनी पुस्तक 'द प्रोफेसीज़' में शामिल किया था – जो केवल एक भ्रम व धोखा है। ऐसा ही मामला अंधी बल्गारियाई भविष्यवक्ता बाबा वांगा (Baba Vanga) की भविष्यवाणियों के हवाले देने का भी है, इसी तरह अमेरिकी चित्रकार मैट ग्रोइनिंग (Matt Groening) के 'द सिम्पसंस' कार्टून धारावाहिक के किसी एक एपिसोड का हवाला देकर यह दावा करना कि उसने किसी घटना की वर्षों पहले भविष्यवाणी कर दी थी!

वर्ष 1985 में अमेरिकी बर्कले विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक शॉन कार्लसन (Shawn Carlson) ने अमेरिका के प्रमुख ज्योतिषी संघ के सहयोग से ज्योतिष विद्या का वैज्ञानिक परीक्षण किया, और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि ज्योतिषी जो कुछ भी बताता है, वह केवल शुद्ध संयोग से होता है, और ज्योतिष विद्या नाम की कोई कला सिर से मौजूद नहीं – और ज्योतिषी इस शोध के परिणामों पर आपत्ति नहीं जता सके, हालाँकि इसके परिणाम प्रसिद्ध वैज्ञानिक पत्रिका 'नेचर' में प्रकाशित हुए थे।

इसके बाद अमेरिकी पत्रिका 'नेशनल इंकवायरर' ने भविष्यवाणियों के एक बड़े समूह का अध्ययन कर उनकी विश्वसनीयता का परीक्षण किया, और इस निर्णायक निष्कर्ष पर पहुँची कि ज्योतिष विद्या पूर्णतः मनगढ़ंत है, क्योंकि सैकड़ों में से केवल चार भविष्यवाणियाँ ही सही निकलीं। जबकि ब्रिटिश सोसाइटी फ़ॉर साइकिकल रिसर्च ने भविष्यवाणियों की सच्चाई

की पुष्टि के लिए एक वैज्ञानिक परीक्षण किया, जो इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि भविष्यवाणी का दावा करने वाले लोग न तो भविष्य जान सके और न ही अटकल के तौर पर भी भाग्य जानने में सफल हो सके।

इटली में एक संसदीय समिति ने देश में शैतान-पूजकों के 100 से अधिक गुटों के होने की घोषणा की, जिनके सदस्य ज्योतिष विद्या व भविष्यवाणी करते हैं – इस बात ने 'वेटिकन विश्वविद्यालय' को वर्ष 2005 से धर्मशास्त्र के छात्रों को तैयार करने के लिए पाठ्यक्रम आयोजित करने के लिए प्रेरित किया, ताकि भविष्यवाणी व ज्योतिष विद्या की परिघटना को सीमित किया जा सके।

हम इस ओर ध्यान दिलाना चाहते हैं कि दुनिया भर के सभी धोखेबाज़ संप्रदायों तथा भटके हुए गूढ़ आंदोलनों का जादू, ज्योतिष विद्या, भविष्यवाणी, तावीज़ों व 'सिमिया' से गहरा संबंध है, इसी तरह यौन-अश्लीलता तथा नशे की लत से भी – और आमतौर पर वे युवाओं को गुमराह करने के लिए इन्हें आधार बनाते हैं। इनमें सबसे आगे है "पीपल्स टेम्पल" संप्रदाय, जिसकी स्थापना पागलपन व उत्पीड़न-भ्रम से पीड़ित अमेरिकी पादरी जिम जोन्स (Jim Jones) ने की थी – जो इतिहास की सबसे बड़ी सामूहिक आत्महत्या पर समाप्त हुआ, जिसमें नवंबर 1978 में गयाना गणराज्य के जोन्सटाउन बस्ती में संप्रदाय के 913 सदस्यों ने एक ही घंटे में – जिनमें दर्जनों बच्चे व युवा शामिल थे – जूस में घुले साइनाइड का सेवन करके अपनी जान ले ली!

उन्हीं की राह पर भटकी हुई जमातें व संदिग्ध संप्रदाय हैं, जैसे रैलियनिज़्म, हेवन्स गेट, शैतान-पूजक, साइंटोलॉजी, विक्का, गॉथिक, और कई अन्य – और इन सबके बीच साझा बात यह है कि वे मिश्रित रस्में, जादू, भविष्यवाणी व तंत्र-मंत्र करते हैं, तथा अन्य ग्रहों के निवासियों या समानांतर दुनिया के प्राणियों से संपर्क का दावा करते हैं – जो जिन्नात, भूत-प्रेत, डरावनी कहानियों व फ़िल्मों की नक़ल करते हैं – साथ ही 'एरिया 51' से जुड़ी अफ़वाहें भी – और इनमें से हर एक बारी-बारी से दूसरे से अपने भ्रमों की प्रेरणा लेता है!

रही क़ानूनी समस्या, तो अधिकांश सांविधानिक क़ानून जादू, ज्योतिष विद्या व तंत्र-मंत्र की गतिविधियों को सामान्य रूप से "लोगों का धन अवैध रूप से चुराने के धोखाधड़ी वाले अपराधों में शामिल" मानते हैं, जबकि अन्य क़ानून इन्हें केवल भोले-भाले लोगों के लिए जाल मानते हैं, और यह कि क़ानून भोले-भाले लोगों की रक्षा नहीं करता, सिवाय उस स्थिति के जब यह हत्या, आत्महत्या, मृत्यु या स्थायी विकलांगता का कारण बने – तभी यह पीड़ितों के हित में हस्तक्षेप करता है!!"

यह ध्यान रखते हुए कि उपरोक्त सभी बातों का उन तथाकथित 'हस्तकौशल के खेलों' से कोई संबंध नहीं, जिन्हें अतिशयोक्ति में "जादुई खेल" कहा जाता है, जबकि वे बिल्कुल भी

जादू नहीं हैं, बल्कि केवल मंच व सर्कस के मनोरंजक खेल हैं, जो चतुराई, हास्य-विनोद, तीव्र बुद्धि, हाथ की सफाई तथा कुछ सहायक वस्त्रों व उपकरणों पर निर्भर करते हैं।

इस्लाम में ज्योतिष विद्या व राशिफल पढ़ने का निषेध

“कह दें: अल्लाह के सिवा, आकाशों और धरती में जो भी है, ग़ैब नहीं जानता और वे नहीं जानते कि वे कब उठाये जाएँगे।”

— कुरआन, सूरा अन-नम्ल 27:65 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

नबी मुहम्मद ﷺ ने भविष्यवक्ताओं व ज्योतिषियों पर विश्वास करने के प्रति चेतावनी देते हुए फ़रमाया: "जो किसी भविष्यवक्ता के पास गया, उससे कोई बात पूछी और उसे सच माना, तो उसकी नमाज़ चालीस दिनों तक कुबूल नहीं होगी।"

यद्यपि ज्योतिष विद्या अभी भी उस प्राचीन टॉलेमीय सिद्धांत पर आधारित है, जो पृथ्वी को ब्रह्मांड का केंद्र मानता है, फिर भी ज्योतिषी दुनिया को समझने व भाग्य पढ़ने के लिए इन्हीं ग़लत आधारों पर निर्भर रहते हैं – जिसने स्टैनफ़ोर्ड विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को राशिफल के कोने में धूम्रपान के खतरों की चेतावनी जैसी एक चेतावनी प्रकाशित करने का सुझाव देने के लिए प्रेरित किया!

ज्योतिषी, इसी तरह भविष्यवक्ता व टैरो कार्ड पढ़ने वाले, लोगों को धोखा देते रहे हैं और उनका धन अवैध रूप से खाते रहे हैं, ऐसी तालिकाओं पर निर्भर रहते हुए जो लोगों की जन्म-तिथि से मेल नहीं खातीं, क्योंकि उन्होंने राशिचक्र को 19 शताब्दियों से बिना किसी बदलाव के वैसे ही बनाए रखा है, जबकि तारों की स्थिति निरंतर बदलती रहती है – इसलिए ज्योतिषी जिन राशियों पर निर्भर करते हैं, वे बस सीधे तौर पर ग़लत हैं – जैसा कि प्रसिद्ध तुर्की ज्योतिषी (डेन्सर गुनेर) ने वर्ष 2020 के अंत में CNN Türk चैनल पर अपने सभी अनुयायियों के लिए एक चौंकाने वाले बयान में खुलासा किया, यह पुष्टि करते हुए कि "दैनिक राशिफल झूठ का एक पुलिंदा था!!"

हम इस ओर ध्यान दिलाना चाहते हैं कि वैज्ञानिक खगोलविदों (Astronomy) तथा "ज्योतिषियों" के बीच अंतर करना ज़रूरी है, क्योंकि ये दोनों विज्ञान लंबे समय से एक-दूसरे से अलग हो चुके हैं। वैज्ञानिक खगोलविद हमेशा भविष्यवक्ताओं व ज्योतिषियों पर विश्वास करने के परिणाम के प्रति चेतावनी देते रहे हैं, विशेष रूप से हर ईसवी वर्ष की शुरुआत में, जब नए वर्ष की घटनाओं के बारे में भविष्यवाणियाँ बढ़ जाती हैं, जिनमें से अधिकांश अटकल व अनुमान पर आधारित होती हैं, न कि शब्द के शाब्दिक अर्थ में भविष्यवाणियाँ। पहला विज्ञान एक उच्च व गंभीर विज्ञान है, जो ब्रह्मांडीय भौतिकी, अंतरिक्ष-गतिकी, अवलोकन-विज्ञान, तथा ग्रहों, आकाशगंगाओं, ब्लैक होल व बाह्य अंतरिक्ष की गति जैसे

विज्ञानों के अध्ययन में विशेषज्ञ है, जबकि दूसरा विज्ञान केवल जादू, तंत्र-मंत्र व धोखाधड़ी के कार्यों तक सीमित है, यह दावा करते हुए कि ग्रह धरती पर लोगों के भाग्य को प्रभावित करते हैं।

इस्लाम पशुओं पर अत्याचार और उनकी पूजा को हARAM ठहराता है

“तथा धरती में न कोई चलने वाला है तथा न कोई उड़ने वाला, जो अपने दो पंखों से उड़ता है, परंतु तुम्हारी जैसी जातियाँ हैं। हमने पुस्तक में किसी चीज़ की कमी नहीं छोड़ी। फिर वे अपने पालनहार की ओर एकत्र किए जाएँगे।”

– कुरआन, सूरा अल-अनआम 6:38 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

नबी मुहम्मद ﷺ ने जानवर के चेहरे पर दाग़ लगाने से मना किया, क्योंकि वह सुंदरता का स्थान है, और उसे उसकी क्षमता से अधिक बोझ लादने, उसे यातना देने, भूखा-प्यासा रखने, उसके साथ कठोरता करने, तथा उसे ज़बरदस्ती क़त्लगाह तक घसीटने से मना किया। जानवरों के साथ मानवीयता, दया व शराफ़त से व्यवहार करना ज़रूरी है। उन्होंने "पशुओं को आपस में भिड़ाने" से भी मना किया – अर्थात् सट्टेबाज़ी व मनोरंजन के उद्देश्य से उन्हें एक-दूसरे के विरुद्ध उकसाना – जो आज "खूनी पशु-लड़ाई के अखाड़ों" के नाम से जाना जाता है, जिनमें सबसे प्रसिद्ध है मुर्गों की लड़ाई, इसी तरह साँड़ों की लड़ाई, मेढ़ों की लड़ाई, तथा विभिन्न कुत्तों की नस्लों के बीच लड़ाई, जो दुनिया भर में फैली हुई हैं – इन बर्बर लड़ाइयों के साथ-साथ वित्तीय सट्टेबाज़ी, जानवरों की अवैध तस्करी, हिंसा, तथा संगठित अपराध गिरोह भी होते हैं जो इनकी चैंपियनशिप का आयोजन करते हैं – जबकि मानवीय संगठन तथा 'पशु अधिकार' से संबंधित संस्थाएँ इस प्रकार की अमानवीय लड़ाइयों पर प्रतिबंध लगाने का पूरा प्रयास कर रही हैं।

इसके विपरीत, कुछ राष्ट्रों व लोगों ने जानवरों को पवित्र माना और उनकी पूजा की, और उनमें से कुछ आज तक ऐसा करते हैं। यदि फिराँनी, बेबीलोनियाई, अफ़्रीकी, भारतीय, चीनी सभ्यताओं तथा इंडा, एज़टेक व अमेरिकी मूल-निवासियों में पशु-पूजा के कारणों की गहराई से जाँच की जाए, तो पता चलेगा कि कुछ लोगों ने पशुओं को इसलिए पवित्र माना क्योंकि उनका विश्वास था कि पूर्वजों की आत्माएँ अपने अनंत चक्र के दौरान उनमें निवास करती हैं – जिसे 'आत्माओं का पुनर्जन्म' कहा जाता है, 'कर्म' के सिद्धांत के अनुसार, जैसा कि हिंदू मानते हैं – यदि ये आत्माएँ नेक लोगों की हों, तो वे मृत्यु के बाद विनम्र जानवरों में निवास करेंगी और बाद में मानव शरीर में जन्म लेकर ऊपर उठेंगी, और यदि दुष्ट लोगों की हों, तो वे दुष्ट जानवरों में निवास करेंगी – और इस चक्र से मुक्ति का कोई रास्ता नहीं सिवाय 'निर्वाण' के – उनके अनुसार – शरीर को कष्ट देकर या इच्छाओं का विरोध करके।

और उनमें से कुछ ने माना कि सृष्टियाँ देवताओं की मनुष्यों के लिए संदेश हैं, इसलिए उन्होंने हर देवता का प्रतीक किसी जानवर को बना लिया, जिसे वे मन्नतें व बलियाँ अर्पित करते थे। कुछ ने माना कि देवता आंशिक या पूर्ण रूप से पशु-शरीर में समाहित होते हैं, इसलिए उन्होंने उन्हें पवित्र माना – यहाँ तक कि लोगों की पौराणिक कथाओं व अवशेषों में पशु-पूजा भरी पड़ी है – जब तक कि प्रिय चिकित्सक नबी ﷺ को समस्त संसार के लिए दया बनाकर नहीं भेजा गया, जिन्होंने इस समीकरण को बदल दिया, ताकि मनुष्य को मूर्तियों की पूजा से निकालकर उस महान सृष्टिकर्ता की इबादत की ओर ले जाया जाए – साथ ही उन्होंने 1447 वर्ष पहले मनुष्यों व जानवरों के बीच के संबंध को एक उदात्त नैतिक व मानवीय व्यवस्था के ज़रिए व्यवस्थित किया, जो 'पशु अधिकार' संगठनों से सदियों आगे थी – पारस्परिक लाभ का संबंध, न कि पूजा व पवित्रता का। पवित्र कुरआन ने हमारे लिए ऐसे उदाहरण दिए जो जानवरों के इर्द-गिर्द घूमते हैं, जिनके नामों पर पूरी सूरतें रखी गई हैं – "हाथी, गाय, मकड़ी, मधुमक्खी, चींटी" – और शायद अल्लाह के इस्माइल के बदले एक बड़े मेढ़े की कुर्बानी के आदेश में यह हिक्मत रही होगी कि मूर्तियों को मानव-बलि चढ़ाने की प्रथा को समाप्त किया जाए, क्योंकि क्षेत्र के कुछ लोग मेढ़े को पवित्र मानते थे – और अल्लाह ने बनी इस्राइल को एक गाय ज़बह करने का आदेश दिया, ताकि गाय को पवित्र मानने की परिघटना समाप्त हो – जबकि भारत में गाय, बंदर, हाथी व साँप की पूजा आज तक जारी है, जिसे एक अरब हिंदू मानते हैं।

अल्लाह के रसूल ﷺ ने बताया: एक व्यक्ति चल रहा था, तो उसे बहुत प्यास लगी। वह एक कुएँ में उतरा और उसमें से पानी पिया, फिर बाहर निकला तो देखा कि एक कुत्ता हाँफ रहा है और प्यास की शिद्दत से मिट्टी चाट रहा है। उसने कहा: 'इस कुत्ते को भी वैसी ही प्यास लगी है जैसी मुझे लगी थी।' तो उसने अपना जूता पानी से भरा, फिर उसे अपने मुँह से पकड़कर ऊपर चढ़ा, और कुत्ते को पानी पिलाया! तो अल्लाह ने उसका शुक्रिया अदा किया और उसे क्षमा कर दिया। सहाबा ने पूछा: 'ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हमें जानवरों के मामले में भी सवाब मिलता है?' उन्होंने कहा: "हर जीवित प्राणी में सवाब है।"

और उन्होंने बताया: "एक स्त्री एक बिल्ली के कारण जहन्नम में गई, जिसे उसने बाँध रखा था, न उसे खाना खिलाया और न ही उसे धरती के कीड़े-मकोड़े खाने दिए।"

जिन साथियों ने एक गौरैया जैसे पक्षी के घोंसले से दो चूजे उठा लिए थे, उनसे नबी ﷺ ने कहा: "किसने इसे इसके बच्चों से अलग करके इसे दुखी किया? इसके बच्चे इसे वापस कर दो।" और उन्होंने उस व्यक्ति से कहा जो अपने ऊँट को भूखा रखता था: "क्या तुम इस जानवर के मामले में अल्लाह से नहीं डरते? उसने मुझसे शिकायत की है कि तुम उसे भूखा रखते हो।" और उन्होंने चींटियों का एक बिल जलाने वालों से कहा: "इसे किसने जलाया? आग से दंड देने का अधिकार केवल आग के रब को है।"

और उन्होंने बताया: एक बदचलन स्त्री ने एक गर्म दिन एक कुएँ के इर्द-गिर्द घूमते हुए एक कुत्ते को देखा, जिसकी ज़बान प्यास से बाहर लटक रही थी, तो उसने अपने जूते से उसके लिए पानी निकाला, तो उसे क्षमा कर दिया गया।

उन्होंने "जानवरों को बाँधकर निशाना बनाकर मारने" से मना किया, और प्राणियों को तीर या किसी और चीज़ का निशाना बनाने से मना करते हुए कहा: "किसी भी प्राणवान वस्तु को निशाना मत बनाओ।" और उन्होंने कहा: "जो कोई किसी गौरैया या उससे बड़े किसी प्राणी को बिना हक़ के मार डाले, अल्लाह तआला उससे उसके बारे में सवाल करेगा।" पूछा गया: 'उसका हक़ क्या है?' उन्होंने कहा: "यह कि वह उसे ज़बह करके खाए, न कि उसका सिर काटकर फेंक दे।" और उन्होंने ज़बह में अच्छा व्यवहार करने का आदेश देते हुए कहा: "जब तुम ज़बह करो, तो अच्छी तरह ज़बह करो, अपनी छुरी तेज़ करो, और अपने ज़बीहा को आराम दो।"

एक हदीस-ए-मुरसल में यह वर्णित है कि नबी ﷺ ने, सेना के मार्च के दौरान, जब उनकी नज़र रास्ते में अपने पिल्लों को दूध पिला रही एक कुतिया पर पड़ी, तो उन्होंने एक साथी को उसके पास खड़े रहने का आदेश दिया, ताकि घोड़ों के खुर उसे कुचल न दें।

अहमद शौकी की अपनी प्रशंसा-कविता में कितनी सुंदर बात है:

"ऐ भलाई के अहमद! मेरे नाम में मेरे लिए एक गौरव है... और रसूल के नाम पर नाम रखे जाने से कैसे ऊँचा न उठे कोई? प्रशंसा करने वाले और प्रेम के स्वामी सभी उस विशाल चादर वाले, उच्च-चरण के स्वामी के अनुयायी हैं।"

[शेर – अहमद शौकी की काव्य-पंक्तियों का अर्थानुवाद, मूल छंद व लय सुरक्षित नहीं रखी गई हैं]

इस्लाम और हलाल भोजन

"तुमपर हराम किया गया है मुर्दार, (बहता हुआ) रक्त, सूअर का माँस और वह जिसपर (ज़बह करते समय) अल्लाह के अलावा का नाम पुकारा जाए, तथा गला घुटने वाला जानवर, और जिसे चोट लगी हो, तथा गिरने वाला और जिसे सींग लगा हो और जिसे दरिंदे ने खाया हो, परंतु जो तुम (इनमें से) ज़बह कर लो... आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म परिपूर्ण कर दिया, तथा तुमपर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को धर्म के तौर पर पसंद कर लिया।"

— कुरआन, सूरा अल-माइदा 5:3 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

इसने मुर्दार जानवरों का माँस खाने, तथा शरई ढंग से ज़बह न किए गए जानवरों का माँस (= ग़ैर-हलाल माँस) खाने से मना किया, और इसी तरह अल्लाह के सिवा किसी और के नाम पर चढ़ाए गए जानवरों – जैसे मूर्तियों के लिए बलि किए गए जानवरों – का माँस खाने से भी मना किया, तथा सूअर का माँस खाने से, और हर उस जानवर का माँस खाने से मना किया जो गला घोटकर, मार-पीट कर, ऊँचाई से गिरकर, सींग लगने से, या किसी हिंसक जानवर के काटने से घायल होकर मरा हो।

और नबी ﷺ ने हर नुकीले दाँत वाले हिंसक जानवर तथा हर पंजे वाले पक्षी का माँस खाने से मना किया – जिन्हें मांसाहारी जानवर कहा जाता है, जिनसे समकक्ष मांसाहारी जानवर भी दूर रहते हैं, क्योंकि उनके माँस व अंतड़ियों में तथा उनके खून में असंख्य कीड़े, परजीवी व घातक बैक्टीरिया समाए होते हैं, जिनमें सबसे प्रमुख है 'ट्राइकिनोसिस' रोग।

रहा खून पीना, तो इसके परिणामस्वरूप वायरल हेपेटाइटिस, हृदय संबंधी विकार, यकृत कैंसर, मधुमेह, गठिया, तथा ग्रंथि-संबंधी विकार जैसी घातक बीमारियाँ होती हैं।

मानवता बहते हुए खून को इस विश्वास के साथ पीती रही है कि इसमें उपचारात्मक गुण हैं, जबकि कुछ लोग पहलवानों की हत्या के बाद कुश्ती के अखाड़ों में इसी उद्देश्य से उनका खून पीते थे, कुछ युद्धों के बाद अपने दुश्मनों को अपमानित करने के लिए, कुछ इस विश्वास से कि प्रतिद्वंद्वियों का खून पीने से उनकी शक्ति छीन ली जाती है, तथा कुछ रेगिस्तान में प्यास बुझाने के लिए – यहाँ तक कि महान इस्लाम ने इसे हमेशा के लिए हaram ठहरा दिया, और फिर वैज्ञानिक अध्ययनों ने हमारे सामने यह खुलासा किया कि खून अत्यंत विषैला होता है और उसमें भारी मात्रा में रोगाणु होते हैं, तथा बहता हुआ खून पीने से असंख्य घातक बीमारियाँ फैलती हैं।

रहा सूअर का माँस, तो इसमें कई परजीवी व कीड़े होते हैं जो पकाने से भी नष्ट नहीं होते, और वर्ष 2024 में 'लांसेट डायबिटीज़ एंड एंडोक्राइनोलॉजी' पत्रिका में प्रकाशित एक अध्ययन, जो 31 पूर्व वैज्ञानिक अध्ययनों के आँकड़ों पर आधारित था, में यह खुलासा हुआ कि "रोज़ाना सूअर के माँस का सैंडविच खाने से टाइप-2 मधुमेह का खतरा 15% तक बढ़ सकता है।"

इससे पहले वर्ष 2009 में 'इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एनवायरनमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ' में प्रकाशित एक अन्य वैज्ञानिक अध्ययन में सूअर के माँस के सेवन तथा यकृत के सिरोसिस के बीच एक गहरे संबंध का खुलासा हुआ, क्योंकि इसमें बहु-असंतुष्ट वसा की उच्च मात्रा होती है।

जबकि ब्रिटेन के कई वैज्ञानिकों ने बेकन व सूअर के माँस के उत्पादों पर सिगरेट के पैकेटों जैसी चेतावनी-लेबल अनिवार्य करने की माँग की, यह इंगित करते हुए कि "इन माँस में प्रयुक्त रासायनिक पदार्थ आंत्र-कैंसर का कारण बनते हैं।"

जर्मन समाचार-पत्र 'नोए ओस्नाब्रुकर त्साइटुंग' (Neue Osnabrücker Zeitung), जो संघीय कृषि व पोषण संस्था द्वारा प्रकाशित होता है, ने वर्ष 2018 में अपने निदेशक हांस-क्रिस्टोफ़ आइडेन (Hans-Christoph Eiden) के हवाले से यह खुलासा किया कि "जर्मनी भर में वर्ष 2017 में सूअर के माँस की प्रति व्यक्ति खपत में गिरावट आई, जबकि 10 वर्षों के दौरान इस प्रकार के माँस की खपत दर 40.5 से घटकर 35.8 किलोग्राम रह गई, जबकि गोमांस व पक्षी-माँस की माँग बढ़ी।"

इसके अलावा 'डेल सेटन मेडिकल सेंटर' के तंत्रिका-शल्यचिकित्सक डॉक्टर गॉर्डन अमादेओ (Gordon Amadeo) ने पुष्टि की कि "'टेपवर्म' नामक कीड़े सूअरों के शरीर में लार्वा के अंडे देते हैं, और मनुष्यों द्वारा उनका सेवन करने के बाद वे उनकी आँतों में सेते हैं, तथा उनका जीवन-चक्र मनुष्य के शरीर में अंडे देने तक जारी रहता है, फिर पानी से भरी थैलियों के भीतर लार्वा के रूप में विकसित होकर शरीर के सभी हिस्सों में फैल जाते हैं!!"

विश्व स्वास्थ्य संगठन पहले ही उन महामारियों से बचने के लिए 22 स्वर्णिम सलाहें दे चुका है, जिनमें सबसे प्रमुख यह सलाह है: "बीमार या मृत जानवरों को नहीं खाना चाहिए" – जिसे खाने से पवित्र कुरआनी आयत ने मना किया है।

जात रहे कि इस्लाम में «हलाल भोजन» की अवधारणा व्यापक है, और यह केवल भोजन के स्वयं हराम चीज़ों से मुक्त होने तक सीमित नहीं, बल्कि इसमें उस धन के वैध होने की शर्त भी शामिल है जिससे उसे प्राप्त किया गया हो – तो इस दृष्टि से भोजन हलाल नहीं होगा यदि उसे सूद, जुए, रिश्वत, हराम चीज़ों की बिक्री, चोरी, धोखाधड़ी, गबन, ब्लैकमेल, जालसाज़ी, अमानत में विश्वासघात, झूठी कसम, तराजू में कमी करने, या नशीली दवाओं, शराब, तस्करी, वेश्यावृत्ति व मानव-तस्करी आदि की आमदनी से खरीदा गया हो – बल्कि इस्लाम ने «हलाल भोजन» को दुआ कुबूल होने का एक मुख्य कारण बनाया है, जबकि इसके विपरीत हराम भोजन व्यक्ति और उसकी दुआ की कुबूलियत के बीच रुकावट बन जाता है। इस बारे में नबी ﷺ ने एक मिसाल दी: "वह व्यक्ति जो लंबा सफ़र करता है, बिखरे बालों व धूल-धूसरित हालत में, अपने दोनों हाथ आसमान की ओर उठाकर कहता है: 'ऐ रब! ऐ रब!' जबकि उसका खाना हराम है, उसका पहनावा हराम है, और उसकी परवरिश हराम से हुई है – तो उसकी दुआ कैसे कुबूल हो?"

इस्लाम बदगुमानी, जासूसी, गीबत व चुगली के प्रति चेतावनी देता है

“ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! बहुत-से गुमानों से बचो। निश्चय ही कुछ गुमान पाप हैं। और जासूसी न करो, और न तुममें से कोई दूसरे की गीबत करे। क्या तुममें से कोई पसंद करता है कि अपने भाई का मांस खाए, जबकि वह मरा हुआ हो? सो तुम उसे नापसंद करते हो। तथा अल्लाह से डरो। निश्चय अल्लाह बहुत तौबा कबूल करने वाला, अत्यंत दयालु है।”

– कुरआन, सूरा अल-हुजुरात 49:12 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "बदगुमानी से बचो, क्योंकि बदगुमानी सबसे झूठी बात है।"

इस्लाम ने सामान्य रूप से बदगुमानी से मना किया, तथा दूसरों की जासूसी करने व उनकी बिना जाने-बूझे जासूसी करने से मना किया, और लोगों के बारे में उनकी अनुपस्थिति में उन्हें बुरा लगने वाली बातें करने से मना किया, इसी तरह चुगली से भी मना किया – जो लोगों के बीच बात इस तरह पहुँचाना है कि इससे उनके बीच फ़ितना, द्वेष व शत्रुता भड़के।

कुछ फ़ुक़हा ने उन स्थितियों को संक्षेप में बताया है जहाँ गीबत की अनुमति है – किसी अत्याचार को दूर करने के लिए, किसी बुराई की चेतावनी देने के लिए, किसी बात की जानकारी देने के लिए, फ़ासिकों के बारे में सूचित करने के लिए, तथा निष्पक्ष अदालतों में गवाही देने के लिए:

“निंदा छह स्थितियों में गीबत नहीं मानी जाती – अत्याचार की शिकायत करने वाला, पहचान कराने वाला, और चेतावनी देने वाला; तथा खुले पाप को उजागर करने वाला, और फ़तवा माँगने वाला... और वह जो किसी बुराई को दूर करने में मदद माँगे।”

[फ़िक्ही सिद्धान्त का पद्य रूप – अर्थानुवाद]

इस्लाम दूसरों का उपहास उड़ाने व बुरे उपनाम रखने के प्रति चेतावनी देता है

“ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! एक जाति दूसरी जाति का उपहास न करे, हो सकता है कि वे उनसे बेहतर हों। और न कोई स्त्रियाँ अन्य स्त्रियों की हँसी उड़ाएँ, हो सकता है कि वे उनसे अच्छी हों। और न अपनों पर दोष लगाओ, और न एक-दूसरे को बुरे नामों से पुकारो। ईमान के बाद अवज्ञाकारी होना बुरा नाम है। और जिसने तौबा न की, तो वही लोग अत्याचारी हैं।”

– कुरआन, सूरा अल-हुजुरात 49:11 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "न स्वयं नुक़सान उठाओ और न किसी को नुक़सान पहुँचाओ।"

इस्लाम ने – विश्व स्वास्थ्य संगठनों के तमाम बयानों, अकादमिक अध्ययनों तथा अंतरराष्ट्रीय शोध व मनोवैज्ञानिक केंद्रों से 1400 वर्ष पहले ही – दूसरों का उपहास उड़ाने व

मज़ाक बनाने से, या उनकी शकल-सूरत, रंग, रूप, वंश-कुल, नस्ल-राष्ट्रीयता, नाम-उपनाम, नौकरी, सामाजिक स्थिति, या उनकी बीमारियों व दिव्यांगताओं को लेकर उन्हें नीचा दिखाने से मना किया, तथा बुरे उपनाम व विशेषण (लंबा-छोटा, मोटा-दुबला, गोरा-काला, लाल-पीला आदि) रखने से भी चेतावनी दी – जब तक कि विवरण व स्थिति केवल पहचान के लिए हो, उपहास के इरादे से नहीं – जिसे वर्तमान में 'बदमाशी' कहा जाता है।

'साइकोलॉजी बिल अरबी' वेबसाइट के अनुसार, विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने कई रिपोर्टें जारी की हैं, जिनमें यह खुलासा हुआ है कि दुनिया भर में लगभग एक-तिहाई किशोर किसी न किसी रूप की बदमाशी का शिकार हो चुके हैं, जिससे यह एक व्यक्तिगत समस्या न रहकर एक सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट बन गई है, आगे बताते हुए कि "बदमाशी कई प्रकार की होती है – शारीरिक, मौखिक, सामाजिक व साइबर-बुलिंग – जिससे पीड़ितों में अंतर्मुखता, चिंता, अवसाद, दुख, आत्मविश्वास की कमी व हीन-भावना पैदा होती है, और कभी-कभी शामक दवाओं या नशीले पदार्थों का सहारा लेना, और कभी-कभी आत्महत्या तक की नौबत आ जाती है।"

इस्लाम हत्या, चोरी, विश्वासघात व झूठे आरोप के प्रति चेतावनी देता है

"ऐ नबी! जब आपके पास ईमान वाली स्त्रियाँ आएँ, जो आपसे इस बात पर 'बैअत' करें कि वे किसी को अल्लाह का साझी नहीं बनाएँगी और न चोरी करेंगी, न व्यभिचार करेंगी, न अपनी संतान को क़त्ल करेंगी, न कोई बोहतान लगाएँगी जिसे उन्होंने अपने हाथों तथा पैरों के सामने गढ़ लिया हो और न किसी नेक काम में आपकी अवज्ञा करेंगी, तो आप उनसे 'बैअत' ले लें तथा उनके लिए अल्लाह से क्षमा की याचना करें। निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील, अत्यंत दयावान् है।"

– कुरआन, सूरा अल-मुम्तहिना 60:12 (अनुवाद: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "मुझसे इस बात पर बैअत करो कि तुम अल्लाह के साथ किसी को साझी नहीं ठहराओगे, चोरी नहीं करोगे, व्यभिचार नहीं करोगे, अपनी संतान की हत्या नहीं करोगे, कोई ऐसा बोहतान नहीं लाओगे जो तुम अपने हाथों व पैरों के सामने गढ़ो, और किसी नेक काम में मेरी अवज्ञा नहीं करोगे। जो तुममें से इसे पूरा करे, उसका बदला अल्लाह के ज़िम्मे है, और जिसने इनमें से कोई काम किया और उसे दुनिया में उसकी सज़ा मिल गई, तो वह उसके लिए कफ़़ारा है, और जिसने इनमें से कोई काम किया, फिर अल्लाह ने उसे ढाँक दिया, तो उसका मामला अल्लाह के हवाले है – चाहे तो उसे माफ़ कर दे, चाहे तो सज़ा दे।"

संक्षेप में, बोहतान (झूठा आरोप) हर वह घिनौना कथन, कार्य व कर्म है जो सुनने या देखने वाले हर व्यक्ति को स्तब्ध व चौंका दे – जिसमें सबसे आगे झूठ, दूसरों पर मिथ्या आरोप, झूठी बात कहना, झूठी गवाही देना, चोरी करना, पाकदामन-भोली स्त्रियों पर (व्यभिचार का) झूठा आरोप लगाना, तथा इसी तरह गीबत, चुगली व हराम यौन-संबंध शामिल हैं।

इस्लाम घमंड, दंभ व अहंकार के प्रति चेतावनी देता है

“और धरती पर अकड़कर न चलो। निःसंदेह न तुम धरती को फाड़ सकोगे और न लंबाई में पर्वतों तक पहुँच सकोगे।”

– कुरआन, सूरा अल-इस्सा 17:37 (अनुवाद: अज़ीजुल हक़ अल-उमरी)

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "जिसके दिल में रती-भर भी घमंड हो, वह जन्नत में प्रवेश नहीं करेगा।" एक व्यक्ति ने कहा: 'क्या एक व्यक्ति यह पसंद नहीं करता कि उसका कपड़ा सुंदर हो और उसकी जूती सुंदर हो?' उन्होंने कहा: "निःसंदेह अल्लाह सुंदर है और सुंदरता को पसंद करता है – घमंड तो सत्य को ठुकराना और लोगों को तुच्छ समझना है।"

और 'लोगों को तुच्छ समझने' का अर्थ है: उन पर घमंड करना, उन्हें छोटा समझना, तथा उन्हें ऊँचाई व श्रेष्ठता के भाव से देखना।

और कितनी सुंदर बात है कि मनुष्य विनम्र रहे, दूसरों के प्रति नम्रता दिखाए, और जब सत्य की आवाज़ उसके कानों तक पहुँचे तो उसे स्वीकार करे, न कि घमंड के कारण उससे मुँह मोड़ ले – चाहे वह धनी हो या प्रसिद्ध व्यक्ति। पूर्व ब्रिटिश विश्व मुक्केबाज़ी चैंपियन क्रिस यूबैंक (Chris Eubank) ने पवित्र कुरआन के अर्थों का अंग्रेज़ी अनुवाद पढ़ा और उन्हें अत्यंत शांति व राहत महसूस हुई, तो उन्होंने अपना इस्लाम घोषित करने का निर्णय लिया, और उन्होंने ऐसा रमज़ान के महीने में लंदन की एक मस्जिद में ईशा की नमाज़ के दौरान किया। नमाज़ियों को यह देखकर बड़ी खुशी हुई और उन्होंने उनके सम्मान में उनसे अज़ान देने का अनुरोध किया, तो उन्होंने अज़ान दी और अपना नाम बदलकर हमदान रख लिया, आगे जोड़ते हुए: "इसके बाद नमाज़ी मेरी आवाज़ को मुअज़्ज़िन के रूप में सुनने के आदी हो गए, और पवित्र कुरआन की बरकत से मेरा जीवन बदल गया।".

इस्लाम का विवाह और संतानोत्पत्ति की ओर प्रोत्साहन

तथा उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हीं में से जोड़े पैदा किए, ताकि तुम उनके पास शांति प्राप्त करो। तथा उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दया रख दी। निःसंदेह इसमें उन लोगों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं, जो सोच-विचार करते हैं। (सूरा अर-रूम, आयत 21)

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने मुसलमानों को मानव वंश की सुरक्षा, धरती के आबाद होने, और एक नेक परिवार – जो कि श्रेष्ठ समाज की बुनियादी इकाई है – के निर्माण के लिए विवाह का आदेश दिया है। इसके अतिरिक्त, विवाह की भूमिका दृष्टि को नीचा रखने (निगाहों की हिफाज़त) और गुप्तांगों को गुनाहों तथा हराम कामों में पड़ने से बचाने में भी है।

इसी सिलसिले में नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ नौजवानों के समूह! तुम में से जो कोई विवाह की सामर्थ्य रखता हो, वह विवाह कर ले; क्योंकि यह दृष्टि को अधिक नीचा रखने वाला और गुप्तांग की अधिक रक्षा करने वाला है। और जो सामर्थ्य न रखे, तो उसे रोज़ा रखना चाहिए; क्योंकि रोज़ा उसके लिए ढाल है।"

एक दिन जब नबी ﷺ को तीन व्यक्तियों की खबर पहुँची जिन्होंने संन्यास (रहबानियत) अपनाने का निश्चय किया था – जबकि इस्लाम में कोई संन्यास (रहबानियत) नहीं है – और उन्होंने दृढ़ संकल्प किया था कि वे रोज़ा रखेंगे और (कभी) रोज़ा नहीं तोड़ेंगे, नमाज़ पढ़ेंगे और कभी विश्राम नहीं करेंगे, तथा स्त्रियों से विवाह करना छोड़ देंगे – तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "सुनो! अल्लाह की कसम, मैं तुम सब से बढ़कर अल्लाह से डरने वाला और उससे बढ़कर परहेज़गार हूँ, लेकिन मैं नमाज़ भी पढ़ता हूँ और सोता भी हूँ, रोज़ा भी रखता हूँ और (कभी) रोज़ा नहीं भी रखता, और स्त्रियों से विवाह भी करता हूँ। तो जो मेरी सुन्नत से मुँह मोड़े, वह मुझसे नहीं है।"

और नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जब कोई ऐसा व्यक्ति तुम्हारे पास (विवाह का) प्रस्ताव लेकर आए जिसके धर्म (दीन) और चरित्र (अखलाक़) से तुम संतुष्ट हो, तो उसका विवाह करा दो; यदि तुमने ऐसा नहीं किया, तो धरती पर फ़ितना (उपद्रव) और व्यापक बिगाड़ फैलेगा।"

और नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अत्यधिक प्रेम करने वाली और अधिक संतान उत्पन्न करने वाली स्त्री से विवाह करो, क्योंकि मैं क़ियामत के दिन तुम्हारी अधिकता के द्वारा अन्य नबियों पर गर्व करूँगा।"

इस्लाम और मस्जिदों का आबाद करना

अल्लाह की मस्जिदें तो वही आबाद करता है, जो अल्लाह पर और अंतिम दिन (क़ियामत) पर ईमान लाया, तथा उसने नमाज़ कायम की और ज़कात दी और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरा। तो ये लोग आशा है कि मार्ग दर्शन पाने वालों में से होंगे। (सूरा अत्-तौबा, आयत 18)

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "जिसने अल्लाह के लिए एक मस्जिद बनाई, इस इरादे से कि उससे अल्लाह की प्रसन्नता चाहे, तो अल्लाह उसके लिए जन्नत में एक घर बना देगा।" एक अन्य रिवायत में है: "अल्लाह उसके लिए जन्नत में वैसा ही (घर) बना देगा।"

और नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जब कभी कोई समूह अल्लाह के घरों में से किसी घर में इकट्ठा होकर अल्लाह की किताब पढ़ता और आपस में उसका अध्ययन करता है, तो उन पर सकीनत (शांति) उतरती है, फ़रिश्ते उन्हें घेर लेते हैं, रहमत उन्हें ढाँप लेती है, और अल्लाह उनका ज़िक्र अपने पास (मौजूद फ़रिश्तों) में करता है।"

और नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जो अपने घर में पवित्रता (वुजू) प्राप्त करे, फिर अल्लाह के घरों में से किसी घर की ओर, अल्लाह के फ़र्ज़ों में से किसी फ़र्ज़ को अदा करने के लिए चल पड़े, तो उसके (हर) दो क़दमों में से एक क़दम उसका एक गुनाह मिटाता है और दूसरा क़दम उसका एक दर्जा बढ़ाता है।"

मस्जिदों का आबाद करना दो प्रकार का है: पहला, आत्मिक आबादी – इनकी ओर बार-बार चलकर आना, नमाज़, दुआ, इस्तिग़फ़ार, कुरआन करीम की तिलावत, तथा उनमें जुमे की नमाज़ और जमाअत की नमाज़ कायम करना। दूसरा, भौतिक आबादी – जो उनके निर्माण, उन्हें बिछाने (फ़र्श), सजाने-सँवारने, पुनर्निर्माण, उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने, उनके ख़राब उपकरणों तथा साधनों की मरम्मत, तथा उनके पुराने साज-सामान को नया करने आदि में दिखाई देती है।

और शायद दुनिया भर में मस्जिदों की वास्तुकला और सौंदर्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक मीनारें (मआज़िन और मनारात) हैं। इन्हें "मीनार" इसलिए कहा गया क्योंकि इनके ऊपरी हिस्से से अज़ान दी जाती है। इस्लाम की पहली मीनार अरब प्रायद्वीप के उत्तर में स्थित एक मस्जिद में बनाई गई थी। वहीं "मनारा" (प्रकाश-स्तंभ) को यह नाम इसलिए दिया गया क्योंकि इसे दीयों से – और प्राचीन काल में मशालों से – रोशन किया जाता था, ताकि यात्रियों और नमाज़ियों का मार्गदर्शन हो सके। मीनार कभी "मनारा" (प्रकाशस्तंभ) भी हो सकती है, जब वह रोशन हो, और कभी ऐसी नहीं भी होती।

इसके बाद मस्जिदों के गुंबद (कुब्बे) आते हैं, जो इस्लामी वास्तुकला की एक प्रमुख पहचान बन चुके हैं, और इसकी सौंदर्यपरक विशेषताओं में एक अलग पहचान रखते हैं। ये विभिन्न शैलियों में बनाए जाते हैं, जो बहुभुजाकार, शंकवाकार और अंडाकार रूपों के बीच भिन्न होती हैं। सबसे सुंदर गुंबदों में से एक "हरा गुंबद" है, जिसे प्राचीन काल में "कुब्बा फ़ैहा", "ज़र्क़ी" (नीला) और "बैज़ा" (सफ़ेद) गुंबद भी कहा जाता था, और जो मस्जिद-ए-नबवी शरीफ़ की शोभा बढ़ाता है। यह पहली बार सन् 678 हिजरी में बनाया गया था, और इसका बार-बार जीर्णोद्धार किया जाता रहा है।

और बिजली, वातानुकूलन उपकरणों तथा ध्वनि-विस्तारक यंत्रों (माइक्रोफ़ोन) के आविष्कार से पहले तक, यानी बहुत ही हाल के समय तक, गुंबदों के कई कार्य हुआ करते थे: जामा मस्जिद के हरम के भीतर प्रकाश की मात्रा बढ़ाना, तथा उसके आधार और स्तंभों में लगी पार्श्व खिड़कियों के माध्यम से प्रकाश को समान रूप से वितरित करना – इसके अतिरिक्त

वेंटिलेशन को बेहतर बनाना, आवाज़ को गूँजदार व स्पष्ट बनाना, तथा इसके साथ-साथ ऊँचाई एवं भव्यता का एहसास प्रदान करना, जो मन को प्रसन्न करता और आँखों को सुकून पहुँचाता है।

और चूँकि एक बात दूसरी बात को याद दिला देती है, तो हाल के दिनों में – उपहास और परिहास के तौर पर, न कि नसीहत और याद दिलाने के उद्देश्य से – यह वाक्य बार-बार दोहराया जाने लगा है: "एक भूखे पेट में एक निवाला डालना, 1000 मस्जिदें बनाने से बेहतर है!!" और सच्चाई यह है कि परेशान करने वाली बात यह है कि जो लोग इस वाक्य को बार-बार ट्वीट करते या ज़बान पर लाते हैं, उनका भूखों, गरीबों और वंचितों से कोई लेना-देना नहीं होता। उनमें से कोई अपनी अधिकांश संपत्ति भोग-विलास, यात्राओं, मनोरंजन, विलासिता की वस्तुओं, साज-सज्जा और शारीरिक सुखों पर खर्च करता है, बिना किसी गरीब, विस्थापित, भूखे या उन जैसे किसी व्यक्ति की परवाह किए। बल्कि इनमें से कई लोगों का ज़कात और सदक़े से कोई नाता नहीं होता, और वे स्वयं अपने देश में कीमतें बढ़ाकर, लालच करके, तौल में कमी करके, माप में धोखा देकर और जमाखोरी करके "भूख की इंजीनियरिंग" और "भूखमरी की प्रोग्रामिंग" के मुख्य कारण बनते हैं।

इसी आधार पर मैं यहाँ इस वाक्य – जिसे उसके संदर्भ से निकालकर ग़लत जगह रख दिया गया, यहाँ तक कि यह एक सच्ची बात बन गई जिससे झूठा मक़सद निकाला जाने लगा – के विरुद्ध एक नारा प्रस्तुत करता हूँ, ताकि इस वाक्य को दोहराकर मस्जिदों के प्रति उपहास करने वालों की ज़बान बंद हो सके। मैं संबंधित लोगों को यह सुझाव देता हूँ: "1000 मस्जिदों में से हर मस्जिद के साथ एक ख़ैराती रसोई जोड़ दो, जो एक हज़ार हज़ार = दस लाख भूखों को खाना खिलाने के लिए समर्पित हो।" और यह रसोई मस्जिद के साथ अलग से जुड़ी हो और "स्थानिक एकजुटता की योजना" के अंतर्गत काम करे, ताकि "गरिमा प्रबंधन" के सिद्धांत को स्थापित किया जा सके और "ज़रूरत के कलंक" को कम किया जा सके, जिससे मस्जिद से जुड़ी यह ख़ैराती रसोई एक साझा सामाजिक अनुबंध में बदल जाए, जिसका उद्देश्य एक ऐसे एकजुट सामाजिक ताने-बाने से जुड़ाव की भावना को मज़बूत करना हो, जो अपने हर सदस्य की परवाह करता हो।

जात रहे कि मस्जिदों से जुड़ी ख़ैराती रसोइयों का अनुभव इतिहास जितना ही पुराना है, और सबसे प्रसिद्ध मुफ़्त ख़ैराती रसोई वह है जो बग़दाद के रुसाफ़ा क्षेत्र में शेख अब्दुल कादिर जीलानी की मस्जिद से जुड़ी हुई है। इसी तर्ज़ पर, विद्यार्थियों के लिए समर्पित पुरानी ख़ैराती रसोई थी, जो "मुस्तनसिरिया मदरसा" (शरई अध्ययन संस्थान) से जुड़ी हुई थी, जिसे मानव इतिहास का पहला विश्वविद्यालय माना जाता है और जिसकी स्थापना सन् 1233 ईस्वी में हुई थी। इसी राह पर, बग़दाद के करख क्षेत्र में शेख मारूफ़ की मस्जिद से जुड़ी ख़ैराती रसोई है, जो आज तक – इन पंक्तियों को लिखे जाने तक – काम कर रही है। इसी तरह मुरादिया मस्जिद की ख़ैराती रसोई भी है, और इनके अलावा सैकड़ों अन्य भी। आज

आवश्यकता यह है कि इस अग्रणी मानवीय प्रयोग को आम किया जाए, ताकि यह दुनिया भर की अधिकांश बड़ी और मंज़ोली मस्जिदों तक पहुँच सके।

इस्लाम का उपचार कराने की ओर आह्वान

[और हम कुरआन में से जो उतारते हैं, वह ईमान वालों के लिए शिफ़ा (आरोग्य) तथा दया है। 82 अल्-इस्रा]

हमारे कृपालु रसूल ﷺ ने हमें उपचार कराने का आदेश दिया, इसकी ओर बुलाया, और इसकी प्रेरणा दी, जैसा कि पाक हदीस में आया है: "अल्लाह के बंदो! उपचार कराओ, क्योंकि अल्लाह ने कोई ऐसी बीमारी पैदा नहीं की, जिसके साथ उसने उसका इलाज (शिफ़ा) भी न रखा हो, सिवाय बुढ़ापे के।" और दवाइयाँ तो बस वे साधन हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने शिफ़ा (आरोग्य) तक पहुँचने का मार्ग बनाया है, और मुसलमानों पर आवश्यक है कि वे चिकित्सा-शास्त्र (तिब्ब) और फ़ार्मेसी (सैदला) सीखने-सिखाने में निरंतर खोज और अथक प्रयास करें, तथा विभिन्न रोगों के इलाज व औषधियों-दवाओं की खोज की दिशा में आगे बढ़ें, क्योंकि नबवी शिक्षाएँ उपचार, स्वच्छता, शारीरिक व आत्मिक पवित्रता, तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा की ओर प्रेरित करती हैं, साथ ही हर प्रकार से हानिकारक गंदी चीज़ों (खबाइस) को हराम भी ठहराती हैं। इस क्षेत्र की सबसे प्रसिद्ध रचनाओं में इमाम इब्न क़य्यिम अल-जौज़िया की पुस्तक "अत्-तिब्ब अन्-नबवी" (नबवी चिकित्सा) आती है, इसके बाद इमाम जलालुद्दीन अस-सुयूती की "अल्-मन्हज अस्-सवी", हाफ़िज़ अस-सखावी की "अत्-तिब्ब अन्-नबवी", मुहम्मद अल-बरज़ाली की सुनन इब्न माजा पर आधारित "अल्-अरबऊन अत्-तिब्बिया" (चालीस चिकित्सा हदीसें), साथ ही इब्न जमाआ की "अत्-तज़किरा फ़ी अत्-तिब्ब अन्-नबवी" जैसी पुस्तकें आती हैं, और इनके अतिरिक्त भी बहुत-सी रचनाएँ हैं।

और नबी ﷺ ने अपनी उम्मत को ऐसी पाक नसीहतें विशेष रूप से दीं, जो उन्हें महामारियों और वैश्विक बीमारियों से बचाती हैं तथा संक्रामक व छूत की बीमारियों से सुरक्षित रखती हैं – जिनके समकालीन उदाहरण हैं: "स्वाइन फ़्लू, बर्ड फ़्लू, सार्स, ज़ीका, इबोला, नोवल कोरोना, तथा इनके जैसी अन्य बीमारियाँ।"

और जब आप पाक अहादीस को पढ़ते और उन पर गौर करते हैं, तो इस पाक धर्म की महानता देखकर आश्चर्य में पड़ जाते हैं, क्योंकि प्रिय नबी ﷺ के चमत्कार विश्व स्वास्थ्य संस्थाओं से सदियों पहले के हैं। इनमें से एक है आपका ﷺ ऐसे शहरों में प्रवेश करने से मना करना जिनमें महामारी फैली हो, तथा जो लोग उस शहर के भीतर हों उन्हें संकट टलने तक वहाँ से निकलने से रोकना – जिसे आज "क्रंटीन" (आइसोलेशन) के नाम से जाना जाता है – जब आपने ﷺ फ़रमाया: "जब तुम किसी भूभाग में तआऊन (प्लेग) की खबर सुनो, तो वहाँ प्रवेश मत करो; और जब यह किसी भूभाग में फैल जाए और तुम वहीं मौजूद हो, तो वहाँ से मत निकलो।" और आज पूरे-पूरे शहर आइसोलेट किए जाते हैं, और जिस किसी पर भी किसी महामारी से ग्रसित होने का शक हो, उसे 14 दिन या उससे अधिक – जो शरीर में

वायरस की इनक्यूबेशन अवधि है – करंटीन किया जाता है, ताकि मरीज़ की स्वास्थ्य स्थिति सुनिश्चित की जा सके।

और आपने ﷺ फ़रमाया: "बीमार (जानवर) को स्वस्थ (जानवर) पर वारिद (दाखिल) न किया जाए" – संक्रमण फैलने की आशंका से।

और वह अत्यंत अद्भुत पाक हदीस, जिसका हर अंश एक चमत्कार है: "बर्तन को ढक दो, और मशक (पानी की थैली) का मुँह बाँध दो; क्योंकि वर्ष में एक ऐसी रात होती है जिसमें एक महामारी उतरती है, जो किसी भी ऐसे बर्तन के पास से नहीं गुज़रती जिस पर ढक्कन न हो, या ऐसी मशक के पास से जिसका मुँह बाँधा न हो, बल्कि उसमें उस महामारी में से कुछ अवश्य उतर जाता है।" अर्थात् महामारियों और संक्रामक बीमारियों में मुब्तला होने की आशंका के कारण खाने-पीने के बर्तनों को ढकने में आलस्य और लापरवाही से पूर्ण रूप से मना करना, और शायद यही वह खतरा है जिससे दुनिया भर के सभी स्वास्थ्य केंद्र, मंत्रालय और संस्थान सचेत करते हैं, क्योंकि खुले भोजन और पेय पदार्थों में कई गंभीर जोखिम छिपे होते हैं, जैसे कि: "कीड़े-मकोड़ों और प्रदूषित वातावरण के माध्यम से बैक्टीरिया व वायरस का संचरण, फ़्लू वायरस के संपर्क में आना, चेचक, खसरा, पोलियो, आँतों के संक्रमण तथा खाद्य विषाक्तता (फूड पॉइज़निंग) जैसी बीमारियों में मुब्तला होना, और इनके जैसी अन्य बीमारियाँ।"

और एक अन्य पाक हदीस में प्रिय नबी ﷺ फ़रमाते हैं: "बर्तन ढक दो, मशक का मुँह बाँध दो, दरवाज़ा बंद कर दो, और चराग (दीया) बुझा दो; क्योंकि शैतान न तो मशक खोलता है, न दरवाज़ा खोलता है, और न बर्तन का ढक्कन हटाता है। यदि तुम में से किसी को अपने बर्तन पर कुछ रखने के अलावा कुछ न मिले, तो वह उस पर कोई लकड़ी (तिनका) आड़े रखकर अल्लाह का नाम ले ले, क्योंकि चूहा (फ़ुवैसक्रा) घर वालों के घर में आग लगा सकता है, और बर्तन को उलट दो या उसे ढाँप दो।" और इस पाक हदीस में नबी ﷺ जिन बातों से मना करते हैं, उनमें से एक है रोशनी वाले कमरे में सोना। इस संबंध में नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी की डॉक्टर आइवी चियुंग मेसन सन् 2018 में प्रकाशित एक वैज्ञानिक अध्ययन में कहती हैं: "हमें प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट हुआ है कि नींद के दौरान प्रकाश के संपर्क में आने की एक ही रात इंसुलिन प्रतिरोध को प्रभावित करती है, जिससे टाइप-2 मधुमेह होने का खतरा पैदा होता है, इसके अतिरिक्त यह चयापचय (मेटाबॉलिज़्म) की प्रक्रिया को भी बाधित करती है!"

और जापानी डॉक्टर केन्जी ओबायाशी सन् 2019 में प्रकाशित एक अन्य जापानी अध्ययन में जोड़ते हैं: "हमने नींद के दौरान प्रकाश और धमनियों के सख्त होने (आर्टिरियोस्क्लेरोसिस) के बीच स्पष्ट संबंध पाया है, तथा यह कि सोते समय कमरे में रोशनी छोड़ देने से हृदय

रोगों और मस्तिष्काघात (स्ट्रोक) के कारण मृत्यु का खतरा बढ़ जाता है, और सोते समय पलकों का प्रकाश के संपर्क में आना मेलाटोनिन हार्मोन के उत्पादन को कम कर देता है।"

आज चीन में – जो कोरोना वायरस के प्रसार का केंद्र बना – अभूतपूर्व कदम उठाए गए हैं और आजीवन कारावास तक की कड़ी सज़ाएँ दी जा रही हैं, जंगली जानवरों के विक्रेताओं और व्यापारियों का पीछा करके, कई अध्ययनों से यह साबित होने के बाद कि साँप, चमगादड़, बिल्लियाँ और कुत्ते – जिन्हें चीनी लोग पूर्व में आए अकालों के कारण, और ग़लत धार्मिक व लोक-मान्यताओं के परिणामस्वरूप खाते रहे हैं – हमें नबी ﷺ की 1447 वर्ष पहले की नसीहतों और चेतावनियों के सामने चकित खड़ा कर देते हैं, जबकि पूरी दुनिया को इनके खतरों का ज्ञान तब तक नहीं था! और इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि चीन की राष्ट्रीय परिषद की स्थायी समिति ने शेष सभी जंगली प्राणियों में से केवल नौ जानवरों की एक सूची जारी की, जिसमें वे केवल एक ही जानवर के मामले में चूक गए और आठ में सही साबित हुए – वे सुअर का मांस खाने की अनुमति देने में चूक गए, जो गंदगी में रहता और कूड़े-कचरे से खाता है, और इंसान को दर्जनों घातक बीमारियाँ पहुँचा सकता है – जबकि "मुर्गी, गाय, खरगोश, मछली और समुद्री जीवों को खाने" के मामले में वे सही साबित हुए, और इसका कारण यह बताया कि "जंगली जानवरों के उपभोग पर प्रतिबंध लगाना विकसित देशों में एक सामान्य प्रथा है और आधुनिक सभ्यता की एक वैश्विक माँग है!!" यहाँ हम केवल प्रिय चिकित्सक नबी ﷺ पर दरूद भेज सकते हैं, जब उन्होंने हमें उन तमाम चीज़ों की हुर्मत (निषेध) और खतरे को संक्षेप में बता दिया था जिन्हें चीन ने बेचने और खाने से मना किया, उस दिन जब अल्लाह के रसूल ﷺ ने "हर नुकीले दाँत वाले शिकारी जानवर, और हर पंजे वाले पक्षी" को खाने से मना किया।

और जहाँ तक झुकने और गले मिलने की उस आदत का सवाल है जिससे स्वास्थ्य संगठन महामारियों के फैलने की आशंका के कारण सचेत करते हैं, तो यह भी एक और चमत्कार है, क्योंकि पाक सीरत में वर्णित है कि एक व्यक्ति ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! हम में से कोई व्यक्ति अपने भाई से मिलता है, तो क्या वह उसके आगे झुके? आपने फ़रमाया: "नहीं।" उसने कहा: तो क्या वह उसे गले लगाकर चूम ले? आपने फ़रमाया: "नहीं।" उसने कहा: तो क्या वह उसका हाथ पकड़कर उससे मुसाफ़हा (हाथ मिलाना) करे? आपने फ़रमाया: "हाँ।"

इसके अतिरिक्त, स्वास्थ्य संस्थाएँ छींकने और खाँसने के समय रुमाल के प्रयोग की आवश्यकता पर बल देती हैं, क्योंकि इसकी अनदेखी महामारी फैलने का कारण बनती है, और पाक सीरत में आया है: "अल्लाह के रसूल ﷺ जब छींकते, तो अपना हाथ या अपना कपड़ा अपने मुँह पर रख लेते, और उससे अपनी आवाज़ को धीमा या नीचा कर लेते।" इसी तरह जमुहाई (उबासी) लेने के आदाब में हाथ को मुँह पर रखने की आवश्यकता है, और इस बारे में अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "जब तुम में से कोई जमुहाई ले, तो वह अपना हाथ

अपने मुँह पर रख ले, क्योंकि शैतान (उसमें) प्रवेश कर जाता है।" और कई नबवी अहादीस में "शैतान" शब्द हर उस चीज़ की ओर संकेत करता है जो "शटन" हुई हो, अर्थात् सीधे रास्ते से भटक गई हो और अपने आस-पास वालों को हानि पहुँचाने का कारण बनी हो, और इसी आधार पर मनुष्यों में से बुरे लोगों को "इंसानों के शैतान" कहा जाता है, जबकि हर उस मखलूक को जो नुक़सान पहुँचाती है और जो "जन्न" = आँखों से छिपी हुई है, उसे "जिन्नो के शैतान" कहा जाता है।

और स्वास्थ्य संगठनों की सलाहों में खाने से पहले और बाद में, तथा स्वास्थ्य सुविधाओं से बाहर निकलने के बाद हाथ धोना शामिल है, और इस बारे में प्रिय चिकित्सक ﷺ ने फ़रमाया: "भोजन की बरकत उससे पहले वुज़ू (हाथ धोना) करने और उसके बाद वुज़ू करने में है।" और आपने यह भी फ़रमाया: "जो व्यक्ति इस हाल में रात गुजारे कि उसके हाथ में चिकनाई (खाने की गंध) लगी हो, फिर उसे कुछ (नुक़सान) पहुँचे, तो वह केवल अपने आप को दोष दे।"

अरब डॉक्टर्स यूनियन के महासचिव डॉ. उसामा रसलान ने सन् 2020 में कोरोना महामारी पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी के उद्घाटन भाषण में – जिसमें सैकड़ों मिस्री और अरब डॉक्टरों ने प्रत्यक्ष रूप से तथा ऑनलाइन भाग लिया – कहा: "इस्लाम धर्म ने ऐसी बीमारियों से बचाव के लिए निवारक चिकित्सा (प्रिवेंटिव मेडिसिन) की बुनियाद उस वुज़ू के माध्यम से रखी, जो इंसान को दिन में 5 बार अपने शरीर के अंगों को धुलवाता है, और यह बीमारियों से बचाव के सबसे बेहतरीन तरीकों में से एक है, जिनमें कोरोना भी शामिल है, क्योंकि वुज़ू विषाणुजनित (वायरल) और महामारी संबंधी बीमारियों में मुब्तला होने की संभावनाओं को कम करता है।" उन्होंने अपने भाषण का समापन इस पाक हदीस से किया: "क्या तुम्हारा यह विचार है कि यदि किसी के दरवाज़े पर एक नदी हो, जिसमें वह प्रतिदिन पाँच बार स्नान करे, तो क्या उसके शरीर पर कुछ मैल बाक़ी रह जाएगा?" सहाबा ने कहा: उसके शरीर पर कुछ भी मैल शेष नहीं रहेगा। आपने फ़रमाया: "इसी तरह पाँचों नमाज़ों के द्वारा अल्लाह गुनाहों को मिटा देता है।"

और यह ज्ञात है कि वुज़ू के अरकान (स्तंभों) और सुन्नतों में तीन बार हथेलियों को धोना, साथ ही कुल्ली करना, नाक में पानी डालना और उसे झाड़ना, चेहरा धोना, सिर का मसह करना, और टखनों तक दोनों पैर धोना शामिल है।

और उस समय सोशल मीडिया साइटों और सभी समाचार चैनलों में अमेरिकी शहर शिकागो के हाईवे पर लगाए गए एक बड़े बोर्ड की काफ़ी चर्चा हुई थी, जिस पर अंग्रेज़ी में लिखा था: नबी "मुहम्मद" ने हमें निम्नलिखित की सलाह दी: अपने हाथों को लगातार धोएँ + यदि किसी क्षेत्र में बीमारी फैल जाए तो वह क्षेत्र मत छोड़ें + ऐसे क्षेत्र में प्रवेश न करें जहाँ कोई बीमारी फैली हो।

और वह अपनी इच्छा से नहीं बोलते

और न वह अपनी इच्छा से बोलता है। वह तो केवल वृह्य है, जो उतारी जाती है। (सूरा अन्-नज्म, आयत 3-4)

मैं इस विषय की शुरुआत प्रिय नबी ﷺ के इस कथन से करता हूँ: "पाँच बातें हैं, यदि तुम उनमें मुब्तला हो जाओ – और मैं अल्लाह की पनाह माँगता हूँ कि तुम उन्हें पाओ..." – और मैं यहाँ इनमें से पहली बात का उल्लेख करता हूँ, ताकि शेष चार बातों की चर्चा इस पुस्तक के किसी अन्य अध्याय में की जा सके, और वह यह है: "किसी भी क्रौम में अश्लीलता (फाहिशा) कभी इस हद तक ज़ाहिर नहीं हुई कि वे उसे खुलेआम करने लगें, मगर यह कि उनमें तआऊन (प्लेग) और ऐसी बीमारियाँ फैल जाती हैं जो उनसे पहले गुज़रे उनके पूर्वजों में कभी नहीं थीं..."

अतः अश्लील कार्यों, बड़े गुनाहों और पापों से सावधान रहो, चाहे वे प्रकट हों या छिपे हुए, क्योंकि जब इन्हें लोगों के बीच वैधानिक रूप दे दिया जाता और स्वीकार कर लिया जाता है, और ये इतने फैल जाते हैं कि रिवाज बन जाते हैं, और जब ये स्वभाव में इस तरह ढल जाते हैं कि कोई भी इन्हें बुरा नहीं मानता, न इनका इनकार करता है, न इनकी हानियों और खतरों तथा परिणामों से सचेत करता है – बल्कि मनोवैज्ञानिक जटिलताओं, नीच उद्देश्यों और बुरी नीयतों वाले लोग इन्हें प्रोत्साहित भी करते हैं – तो ऐसी जैविक, शारीरिक और मानसिक बीमारियाँ व व्याधियाँ, मानव, पशु और वनस्पति जगत में, जो किसी के मन में उनके सबसे बुरे दुःस्वप्नों में भी कभी नहीं आई थीं, अचानक और बिना किसी पूर्व संकेत के फैल जाती हैं और लाखों लोगों को मौत के घाट उतार देती हैं। और यहाँ मैं इसके कई उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ:

स्पेनिश फ़्लू महामारी (H1N1), जो पहले विश्व युद्ध के तुरंत बाद सन् 1918 में अचानक प्रकट हुई और दुनिया भर में 5 करोड़ लोगों की जान ले ली।

अधिग्रहीत प्रतिरक्षा-न्यूनता सिंड्रोम "एड्स", जो पहली बार सन् 1981 की गर्मियों में प्रकट हुआ, जिसे अमेरिकी चिकित्सा संस्थाओं ने शुरुआत में समलैंगिकों के बीच इसके भयावह प्रसार के बाद "समलैंगिकों का कैंसर" नाम दिया, और फिर यह वेश्याओं, नशीली दवाओं के आदी लोगों, तथा इन सबके साथ यौन संपर्क या संसर्ग रखने वाले या उनके स्राव, रक्त व अवशेषों के संपर्क में आने वाले सभी लोगों में फैल गया। इस घातक बीमारी ने अपने अशुभ प्रकटन के बाद से अब तक दुनिया भर में 8.8 करोड़ से अधिक लोगों को संक्रमित किया है, जिनमें से 4.2 करोड़ से अधिक की अब तक मृत्यु हो चुकी है, और यह सिलसिला अभी भी जारी है – रूस टुडे (RT) एजेंसी के अनुसार।

"बर्ड फ़्लू" H5N1 रोग, जो विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार पहली बार सन् 1997 में हॉन्ग कॉन्ग में प्रकट हुआ, और अफ़्रीका, एशिया, यूरोप तथा मध्य-पूर्व के 16 देशों में

मनुष्यों में महामारी-प्रकोप और मौतों का कारण बना, जो कि अत्यंत घातक "इन्फ्लूएंज़ा A(H5N1)" वायरस से होता है और लाखों लोगों को संक्रमित करता है।

"स्वाइन फ्लू" रोग, जिसे वैज्ञानिक रूप से (H1N1) के नाम से जाना जाता है, जो पहली बार सन् 1918 में सुअरों के झुंडों में प्रकट हुआ, इससे पहले कि यह सन् 2009 में पहली मानव संक्रमण के साथ पुनः प्रकट हो और उसके बाद लाखों लोगों को संक्रमित करे।

हैज़ा (कॉलरा) महामारी, जिसके शिकार 30 देशों में करोड़ों की संख्या में हुए, और यह बीमारी सन् 1817-1824 के बीच भारत में "वास्तविक एशियाई हैज़ा" के नाम से अचानक प्रकट हुई। इससे बचाव के तरीकों को अत्यंत सरल शब्दों में विश्व स्वास्थ्य संगठन की हैज़ा-नियंत्रण मोबाइल टीम की प्रभारी डॉक्टर केट अल्बर्टी बताती हैं, विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रसारित कार्यक्रम "साइंस इन फाइट" की एक कड़ी में: "हैज़ा से बचाव के लिए पाँच बुनियादी बातें हैं, पहली है साफ़ पानी पीना और उसी से खाना पकाना, और दूसरी है स्वच्छता के नियमों का पालन करना, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण है शौचालय के इस्तेमाल के बाद, और भोजन तैयार करने से पहले, तथा उसे खाने से पहले अच्छी तरह हाथ धोना।" और ये सभी बातें प्रामाणिक और पक्की नबवी सुन्नतें हैं, क्योंकि इस्लाम में अपवित्र पानी, तथा ऐसे प्रदूषित पानी का – जिसका स्वाद, गंध और रंग बदल गया हो – न पीने में, न पकाने में, न धोने में, और न वुजू में इस्तेमाल करना जायज़ नहीं है। इसके अतिरिक्त नबवी सुन्नतें शौच के बाद, तथा भोजन से पहले और बाद में हाथ धोने की आवश्यकता पर भी बल देती हैं।

घातक तआऊन (प्लेग) महामारी, जो पहली बार "जस्टिनियन के तआऊन" के नाम से सन् 541-750 ईस्वी के बीच प्रकट हुई, जिसने पूरे यूरोप का स्वरूप बदल दिया और लाखों लोगों की जान ले ली।

"सिफिलिस" (उपदंश) रोग, जो पहली बार सन् 1494 में इतालवी शहर नेपल्स में एक सैन्य अभियान के बाद प्रकट हुआ, जिसके सैनिकों ने वेश्याओं के साथ विभिन्न प्रकार के दुराचार किए।

सार्स महामारी, जो पहली बार सन् 2002 में चीन में प्रकट हुई।

इबोला महामारी, जो पहली बार गिनी देश के एक गाँव में, इबोला नदी के निकट प्रकट हुई और उसी के नाम पर रखी गई, इससे पहले कि यह विश्व भर में फैल जाए।

फुट-एंड-माउथ (खुरपका-मुँहपका) रोग, जिसे पहली बार सन् 1870 में दस्तावेज़ीकृत किया गया।

"मैड काउ डिज़ीज़" (पागल गाय रोग), जो पहली बार सन् 1986 में पशुओं में प्रकट हुआ।

"गम्बोरो" रोग, जो दो सप्ताह से कम आयु के मुर्गियों को मौत के घाट उतार देता है, पहली बार सन् 1962 में संयुक्त राज्य अमेरिका के गम्बोरो शहर में प्रकट हुआ, और इसी कारण इसका नाम उसी शहर के नाम पर रखा गया।

ज़ीका रोग, जो पहली बार सन् 1947 में युगांडा के ज़ीका जंगलों में एक मकाक बंदर में प्रकट हुआ, इससे पहले कि यह सन् 1952 में मनुष्यों में फैले और चार महाद्वीपों में कई महामारी-प्रकोपों का कारण बने। यह वायरस मच्छरों के माध्यम से फैलता है, और विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार नवजात शिशुओं में मस्तिष्क संबंधी विकृतियाँ पैदा करता है।

"न्यूकैसल" महामारी, या "मुर्गियों के तआऊन जैसा रोग", जो सन् 1926 में न्यूकैसल शहर में अचानक प्रकट हुआ और उसी के नाम पर रखा गया।

वास्तविक चेचक महामारी, जो अपने अंतिम व सबसे घातक रूप में – यद्यपि इसका एक मिलता-जुलता प्राचीन रूप पहले से मौजूद था – सन् 1580 में अचानक प्रकट हुई।

कोरोना महामारी, जिसका पहला मानव संक्रमण सन् 2012 में सामने आया, इससे पहले कि यह वायरस उग्र होकर दवाओं के विरुद्ध प्रतिरोधी बन जाए और अपने संस्करण (कोविड-19) के रूप में चरम पर पहुँच जाए, जो चीन में सन् 2019 के अंत में प्रकट हुआ। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, इसके कारण 70 लाख से अधिक लोगों की मृत्यु हुई, और लगभग 70.4 करोड़ लोग संक्रमित हुए!

निपाह रोग, जो पहली बार सन् 1999 में मलेशिया में प्रकट हुआ, और यह अत्यंत खतरनाक विषाणुजनित रोग है, जो चमगादड़ों और सुअरों से – जो इस वायरस के मुख्य भंडार हैं – मनुष्यों में या तो बीमार पशुओं के सीधे संपर्क से, या उनके कुछ अवशेषों से दूषित भोजन के सेवन से फैलता है। इस घातक विषाणुजनित रोग के लिए, जो अपने शिकारों को 40 से 75 प्रतिशत की दर से मौत के घाट उतार देता है, अब तक कोई टीका, सीरम या इलाज उपलब्ध नहीं है।

यह सब कुछ अल्लाह तआला के इस कथन की पुष्टि करता है: (और वह ऐसी चीज़ें भी पैदा करता है जिन्हें तुम नहीं जानते), तथा पाक-पवित्र नबवी सुन्नत में वर्णित इस बात की भी पुष्टि करता है कि अपरिचित बीमारियाँ, पीड़ाएँ और व्याधियाँ अश्लीलता के फैलने और लोगों द्वारा उसे खुलेआम करने के साथ-साथ अचानक प्रकट होती हैं। और "फ़ाहिशा" (अश्लीलता) का अर्थ, जैसा कि भाषा-कोशों में आया है, है: बुरी बात और बुरा कार्य, और इसका बहुवचन "फ़वाहिश" है – विशेष रूप से वे अश्लील कार्य जो फ़ितरत (मानव-प्रकृति), नैतिकता, परिवार, समाज और पर्यावरण के संतुलन के साथ छेड़छाड़ करते हैं। इसके अतिरिक्त, रासायनिक और जैविक हथियारों की प्रयोगशालाएँ, विषैली गैसों, तथा टीकों व एंटीबायोटिक्स के प्रतिरोधी घातक वायरस, बैक्टीरिया व परजीवियों को प्रयोगशाला में विकसित करने के

प्रयास – युद्ध और हथियारों के एक प्रकार के रूप में, जिसे "जैविक हथियार" (जर्मी हथियार) कहा जाता है – दुनिया भर में कई अचानक प्रकट होने वाली घातक बीमारियों के उभरने के लिए बड़े पैमाने पर और प्रत्यक्ष रूप से ज़िम्मेदार हैं।

अनेक निष्कलंक (कुंवारी) देशों के विरुद्ध चलाए गए अश्लील औपनिवेशिक अभियानों ने उन्हें ऐसी बीमारियाँ पहुँचाईं जिनसे वे पहले परिचित नहीं थीं, जैसे चेचक, जो नई भूमि की खोज के बाद अमेरिकी महाद्वीप में प्रवासियों और सोने की खोज करने वालों के माध्यम से फैली और जिसने रेड इंडियंस के सफ़ाए में योगदान दिया। अफ़्रीका से दसियों हज़ार गुलामों को ज़बरदस्ती लाए जाने से यूरोप में ऐसी बीमारियाँ फैलीं जिनका सामना करने की क्षमता वहाँ के लोगों में नहीं थी, और इसका उल्टा भी सच है – जब यूरोपीय लोगों ने ऐसी बीमारियाँ फैलाईं जिन्हें अफ़्रीकियों की रोग-प्रतिरोधक क्षमता सहन नहीं कर सकी और जिनके साथ वह ढल नहीं पाई। इसी तरह विभिन्न पशुओं व वनस्पतियों को उनके मूल पर्यावरण से अन्य ऐसे वातावरणों में स्थानांतरित करके, जो उनके लिए उपयुक्त नहीं थे, विभिन्न उद्देश्यों के लिए उनकी संख्या बढ़ाने या उन्हें उगाने के प्रयास किए गए – इन सबके कारण अनगिनत महामारियाँ प्रकट हुईं तथा प्राकृतिक संतुलन और पारिस्थितिकी तंत्र के साथ भारी छेड़छाड़ हुई, जिसके परिणामस्वरूप कुछ पशु व वनस्पति प्रजातियों की संख्या बढ़ी जबकि अन्य विलुप्त हो गईं या घट गईं। जंगलों की कटाई और प्राकृतिक संरक्षित क्षेत्रों के साथ छेड़छाड़, मांसाहारी पशुओं को शाकाहारी भोजन खिलाना, और शाकाहारी पशुओं को ऐसे प्रकार के भोजन खिलाना जो इतिहास में कभी उनकी प्राकृतिक खुराक-सूची में नहीं रहे – इन सब बातों ने मिलकर हर स्तर पर एक पूर्णतः उलटी-पुलटी व्यवस्था को जन्म दिया।

अपने गुस्से के आगे समर्पण मत करो

नबी मुहम्मद ﷺ ने गुस्से के आगे समर्पण करने से सावधान किया: एक व्यक्ति ने नबी ﷺ से कहा: मुझे कोई नसीहत कीजिए। आपने फ़रमाया: "गुस्सा मत करो।" उसने बार-बार यही बात दोहराई, तो आपने (हर बार) फ़रमाया: "गुस्सा मत करो।"

अमेरिकी कोलंबिया विश्वविद्यालय के इरविंग मेडिकल सेंटर के सन् 2024 में प्रकाशित एक नए वैज्ञानिक अध्ययन में, जिसका नेतृत्व दाइची शिम्बो ने किया, यह निष्कर्ष निकाला गया कि "गुस्सा शरीर में उन प्रक्रियाओं को उत्तेजित करता है जो धमनियों के सख़्त होने (आर्टिरियोस्क्लेरोसिस) को बढ़ावा देती हैं, जो कि मस्तिष्काघात (स्ट्रोक) और दिल के दौरों का मुख्य जोखिम कारक है", यह बताते हुए कि "इसका कारण यह है कि गुस्सा रक्त वाहिकाओं की दीवारों की भीतरी परत (एंडोथीलियम) में गड़बड़ी पैदा करता है" – जर्मन अख़बार "फ़्रैंकफ़ुर्टर रूंडशाउ" के अनुसार।

और "इंडिया टीवी" वेबसाइट के अनुसार, विश्व स्वास्थ्य विशेषज्ञों के हवाले से: "बार-बार आने वाले गुस्से के दौरों या लंबे समय तक कड़वाहट और नाराज़गी महसूस करने से शरीर में

एड्रेनालिन और कोर्टिसोल हार्मोन बढ़ जाते हैं, जिससे रक्तचाप और हृदय गति बढ़ जाती है, और इस तरह रक्त के थक्के जमने, हृदय रोगों, मस्तिष्काघात तथा रक्त वाहिकाओं की समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है।"

इसके अतिरिक्त, आयरलैंड की राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की भागीदारी से सन् 2021 में "यूरोपियन हार्ट जर्नल" में प्रकाशित एक वैज्ञानिक अध्ययन में, 32 देशों और विभिन्न नस्लीय पृष्ठभूमियों के तीव्र मस्तिष्काघात से पीड़ित 13,462 मरीजों के रिकॉर्ड की जाँच के बाद, यह पाया गया कि "स्ट्रोक से बचे हर 11 में से एक व्यक्ति को उस स्ट्रोक से ठीक एक घंटे पहले गुस्से या मानसिक तनाव का दौरा पड़ा था, जिससे वह पीड़ित हुआ।"

क्लिनिकल एपिडेमियोलॉजिस्ट डॉक्टर एंड्रयू स्मिथ ने यह उजागर किया कि "गुस्से की भावनाएँ तनाव हार्मोन को बढ़ा देती हैं, जिससे हृदय गति और फिर रक्तचाप बढ़ जाता है", यह बताते हुए कि "कुछ हार्मोन मस्तिष्क की रक्त वाहिकाओं में खिंचाव पैदा करते हैं, जिससे रक्त वाहिकाएँ फट सकती हैं" – ब्रिटिश अखबार "द टेलीग्राफ़" के अनुसार।

करंटीन (संगरोध).. एक चिरस्थायी नबवी सुन्नत

कोरोना महामारी का सामना करने के लिए करंटीन की पूरी अवधि के दौरान, तथा व्यक्तिगत स्वच्छता पर दिए गए बल के दौरान, हर कोई इस्लाम की महानता और उसकी चिरस्थायी शिक्षाओं की भव्यता की बात करने लगा – ऐसी शिक्षाएँ जो प्रतिरक्षा-विज्ञान (इम्यूनोलॉजी), पर्यावरण-विज्ञान और सार्वजनिक स्वास्थ्य के वैज्ञानिकों से, तथा इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप के आविष्कार और वायरस, परजीवियों व बैक्टीरिया की खोज से, सदियों पहले की हैं – उस दिन जब महान इस्लाम ने हमारे लिए एक ऐसा सम्पूर्ण निवारक कार्यक्रम रखा जो अद्भुत ढंग से भौतिकता और आध्यात्मिकता – अर्थात् दिलों की चिकित्सा और शरीरों की चिकित्सा – के बीच संतुलन स्थापित करता है। और इससे भी अधिक अद्भुत बात यह है कि इसने उपचार कराने का निर्देश दिया, साथ ही उम्मत के लिए हराम ठहराई गई चीज़ों से इलाज करने को प्रतिबंधित भी किया, जैसा कि प्रिय नबी ﷺ की इस हदीस में आया है: "निश्चय अल्लाह ने बीमारी उतारी और दवा भी उतारी, और हर बीमारी के लिए एक दवा बनाई; तो उपचार कराओ, परंतु किसी हराम चीज़ से उपचार मत कराओ।"

उस समय कुछ धोखेबाज़ों ने यह झूठा दावा फैलाने की कोशिश की कि शराब पीने से कोरोना खत्म हो जाता है, जिस पर "जॉन्स हॉपकिन्स विश्वविद्यालय" ने स्वयं आगे आकर उन्हें झुठलाया और उस प्रिय चिकित्सक (नबी ﷺ) – जो अपनी इच्छा से नहीं बोलते – की बात की पुष्टि की, जब उसने सन् 2020 में कोरोना वायरस के संक्रमण से बचने के लिए एक निवारक सारांश जारी करते हुए पुष्टि की कि यह "कोई जीवित प्राणी नहीं है, बल्कि एक वसायुक्त आवरण वाला प्रोटीन है, जो मानव शरीर में प्रवेश करने के बाद अपना कोड बदल लेता है ताकि तेज़ी से फैल सके।" और उस रिपोर्ट में जो बातें कही गईं, उनमें से – भोजन

से पहले और बाद में, तथा शौच से निवृत्त होने के बाद हाथ धोने के महत्व पर बल देने के अतिरिक्त, जो सभी चिरस्थायी नबवी सुन्नतें हैं – रिपोर्ट ने इस बात की भी पुष्टि की कि "शराब कोरोना से बचाव के लिए लाभदायक नहीं है, उस प्रचार के विपरीत जो इसके बारे में फैलाया जा रहा था।" इसके बाद विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थाओं ने हमें महामारी से बचाव की जो सलाहें दीं, वे सभी करंटीन (संगरोध) के महत्व पर, तथा छींकने, खाँसने और जमुहाई लेने के समय हाथ को मुँह पर रखने पर बल देती थीं, ताकि छींटों का फैलाव रुके और संक्रमण का संचरण रोका जा सके – और ये सभी वे चिरस्थायी नबवी सुन्नतें हैं जो मुसलमानों के बीच 1447 वर्षों से जानी और प्रसिद्ध हैं!!

ख़यानत और मोटापे का व्यापक होना

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "तुम में सबसे बेहतर लोग मेरे ज़माने के हैं, फिर वे जो उनके बाद आएँगे, फिर वे जो उनके बाद आएँगे; फिर एक ऐसी क़ौम आएगी जो मन्नत मानेगी पर पूरी नहीं करेगी, ख़यानत करेगी और उन पर भरोसा नहीं किया जाएगा, गवाही देगी बिना माँगे, और उनमें मोटापा ज़ाहिर हो जाएगा।"

यह ज्ञात है कि वादों, प्रतिज्ञाओं और मन्नतों को पूरा न करना, अमानतों में ख़यानत करना, तथा झूठी गवाही देना, हमारे वर्तमान युग में घृणित रिवाज और निंदनीय स्वभाव बन चुके हैं। लेकिन इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि यह उसी समय हो रहा है जब – नवीनतम आँकड़ों के अनुसार – एक अरब से अधिक लोग मोटापे और अतिपोषण से पीड़ित हैं, जिनमें 65 करोड़ वयस्क, 34 करोड़ किशोर, और 3.9 करोड़ बच्चे शामिल हैं, इनमें से 16.7 करोड़ लोगों का स्वास्थ्य सन् 2025 के अंत तक अधिक वज़न या मोटापे के कारण बिगड़ चुका है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, हृदय रोग मोटापे के सबसे ख़तरनाक परिणामों में से हैं, इसके अतिरिक्त उच्च रक्तचाप और मस्तिष्काघात = अचानक मृत्यु का फैलना, तथा कैंसर और मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ भी, साथ ही मधुमेह, जो 21वीं सदी की बीमारी बन चुका है।

इससे भी अधिक ख़तरनाक बात यह है कि लोग मोटापे के सबसे उपयुक्त और सुरक्षित समाधान – जो कि स्वस्थ आहार और नियमित रूप से पैदल चलने, साइकिल चलाने, तैराकी तथा अन्य प्रकार के व्यायामों के अभ्यास में निहित है – से अनजान बने रहते हैं, और इसके बजाय वे पेट कम करने की सर्जरी, वसा निष्कासन (लाइपोसक्शन), या अत्यंत महँगी व ख़तरनाक वज़न घटाने की दवाओं का सहारा लेते हैं।

पैदल चलने के अनगिनत लाभ

और 'रहमान' के बंदे वे हैं, जो धरती पर विनम्रता से चलते हैं और जब जाहिल (अक़ख़ड़) लोग उनसे बात करते हैं, तो कहते हैं सलाम है। (सूरा अल्-फ़ुरक़ान, आयत 63)

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "जो अपने घर में पवित्रता प्राप्त करे, फिर अल्लाह के घरों में से किसी घर की ओर, अल्लाह के फ़र्जों में से किसी फ़र्ज को अदा करने के लिए चल पड़े, तो उसके (हर) दो क़दमों में से एक क़दम उसका एक गुनाह मिटाता है और दूसरा क़दम उसका एक दर्जा बढ़ाता है।"

और आपने ﷺ फ़रमाया: "अंधेरे में मस्जिदों की ओर पैदल चलने वालों को क्रियामत के दिन पूर्ण प्रकाश की खुशख़बरी सुना दो।"

और आपने ﷺ फ़रमाया: "जिसने जुमे के दिन (अपने सिर को) धोया और स्वयं गुस्ल किया, जल्दी गया और सबसे पहले पहुँचा, पैदल गया न कि सवार होकर, इमाम के करीब बैठा, ध्यान से सुना और व्यर्थ बातें नहीं कीं – तो उसके लिए हर क़दम के बदले एक साल के रोज़ों और क्रियाम (रात्रि इबादत) के बराबर अमल का सवाब है।"

और यदि हम पैदल चलने को नेकी के कार्य और रास्ते से तकलीफ़देह चीज़ हटाने के साथ जोड़ें, जैसा कि पाक हदीस में आया है: "एक व्यक्ति रास्ते में चल रहा था, उसने रास्ते पर काँटों की एक टहनी देखी तो उसे हटा दिया, तो अल्लाह ने उसकी इस बात की क़द्र की और उसे बख़्श दिया।"

और एक अन्य हदीस, जो पैदल चलने को नेकी के कार्य के साथ भी जोड़ती है: "एक व्यक्ति रास्ते में चल रहा था कि उसे बहुत तेज़ प्यास लगी, तो उसने एक कुआँ पाया और उसमें उतर गया, पानी पिया और फिर बाहर निकला। तभी उसने देखा कि एक कुत्ता हाँफ़ रहा है और प्यास के मारे गीली मिट्टी चाट रहा है। उस व्यक्ति ने कहा: इस कुत्ते को भी उतनी ही प्यास लगी है जितनी मुझे लगी थी। वह फिर कुएँ में उतरा, अपने मोज़े को पानी से भरा, फिर उसे अपने मुँह से पकड़कर ऊपर लाया और कुत्ते को पिलाया। अल्लाह ने उसकी इस बात की क़द्र की और उसे बख़्श दिया। सहाबा ने पूछा: ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हमारे लिए जानवरों के साथ भलाई करने में भी सवाब है? आपने फ़रमाया: हर जीवित प्राणी के साथ भलाई करने में सवाब है।"

और एक अन्य हदीस, जो चलते समय घमंड और अहंकार से मना करती है: "एक व्यक्ति एक जोड़ी वस्त्र पहने हुए, अपने आप पर इतराते हुए, अपने बालों को सँवारे हुए चल रहा था, कि अचानक अल्लाह ने उसे ज़मीन में धँसा दिया, और वह क्रियामत के दिन तक उसी में धँसता चला जाएगा।"

और जब हम आपके ﷺ चलने के तरीके को जानते हैं तो पाते हैं: "जब आप ﷺ चलते, तो एकत्रित (दृढ़) ढंग से चलते, जिससे यह ज्ञात होता था कि आपकी चाल न किसी असमर्थ व्यक्ति की सी थी, न किसी आलसी की।" और "अपनी चाल की तेज़ी के बावजूद आप अत्यंत सहजता, धैर्य और बिना जल्दबाज़ी के चलते थे, तो आप अपनी सहजता से चलते

और जो दूरी दूसरे मेहनत से तय करते, उसे आप बिना मेहनत के तय कर लेते" – जैसा कि इमाम बगवी की "शरह अस्-सुन्नह" (12/320) और "फैजुल कदीर" (5/248) में वर्णित है। इससे हम इस नेक और बरकत वाली चाल की प्रकृति को समझते हैं, जो सदैव भलाई ही लेकर आती है – जहाँ श्रेष्ठता, अहंकार, दिखावे और घमंड से दूर विनम्रता है, जहाँ लोगों को सलाम करना और रास्ते से तकलीफ़देह चीज़ें हटाना है, जहाँ नेक कार्य करना और निषिद्ध व बुरी चीज़ों के ख़तरे से सचेत करना है।

और स्वास्थ्य की दृष्टि से, विश्व भर के प्रतिष्ठित चिकित्सा अनुसंधान व अध्ययन केंद्रों से लगभग हर महीने निवारक और पूरक चिकित्सा के क्षेत्र में एक नया वैज्ञानिक अध्ययन प्रकाशित होता है, और ये सभी पैदल चलने के अनगिनत शारीरिक व मानसिक लाभों की पुष्टि करते हैं। इनमें से अधिकांश सलाह देते हैं कि निजी और सार्वजनिक परिवहन साधनों (साइकिल को छोड़कर) का प्रयोग कुछ समय के लिए छोड़ दिया जाए, और प्रतिदिन सुबह या शाम कम से कम 15-30 मिनट पैदल चलने का अभ्यास किया जाए, क्योंकि पैदल चलना मनोदशा को बेहतर बनाता है, मस्तिष्क में रक्त प्रवाह बढ़ाता है, अवसाद को कम करता है, रक्त में शर्करा, रक्तचाप और कोलेस्ट्रॉल के स्तर को घटाता है, मांसपेशियों और हड्डियों को मज़बूत बनाता है, हृदय की रक्षा करता है, रक्त संचार को सक्रिय करता है, और प्रतिरक्षा प्रणाली को उत्तेजित करता है।

और यह एक वैज्ञानिक अध्ययन है जो अमेरिकी राष्ट्रीय चिकित्सा पुस्तकालय से संबद्ध एक वेबसाइट पर प्रकाशित हुआ, जिसका शीर्षक है "दीर्घजीवी क्षेत्रों (ब्लू ज़ोन्स) से लेकर आणविक क्रियाविधियों तक, स्वस्थ बुढ़ापे के लिए पैदल चलने के बहुविध लाभ", जिसमें यह निष्कर्ष निकाला गया कि "पैदल चलना केवल एक सामान्य शारीरिक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह एक दैनिक आदत है जो जीवन की गुणवत्ता में वास्तविक अंतर ला सकती है।"

और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के चिकित्सा शोधकर्ता पैडी डेम्पसी के एक वैज्ञानिक अध्ययन में, जो जुलाई 2025 में प्रकाशित हुआ और जो इससे पहले हुए 57 वैज्ञानिक अध्ययनों – जिनमें दुनिया भर के 1,60,000 लोग शामिल थे – के विश्लेषण पर आधारित था, यह निष्कर्ष निकाला गया कि "प्रतिदिन 7,000 कदम चलना, जो लगभग पूरे एक घंटे पैदल चलने के बराबर है, डिमेंशिया (मनोभ्रंश) के ख़तरे को 38%, अवसाद को 22%, और मधुमेह को 14% तक कम कर देता है, इसके अतिरिक्त यह कैंसर के ख़तरे को भी घटाता है" – पत्रिका "लांसेट पब्लिक हेल्थ" के अनुसार।

हानिकारक जानवरों को मार डालना

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "पाँच उपद्रवी जीव हैं जिन्हें हरम (मक्का) में भी मार डाला जाए: चील, कौआ, बिच्छू, चूहा, और काटने वाला (पागल) कुत्ता।" एक अन्य रिवायत में है: "हल (साधारण क्षेत्र) और हरम दोनों में।"

मैं लंबे समय तक इस बारे में हैरान रहा कि चील और चितकबरे कौए को मारने का आदेश क्यों दिया गया, क्योंकि साँप, बिच्छू, चूहे और काटने वाले (पागल) कुत्ते के संबंध में मुझे इसे समझने में कोई कठिनाई या संदेह नहीं हुआ, क्योंकि इनकी बड़ी हानि और नुकसान मानवता के लिए स्वतः स्पष्ट है। लेकिन चील पक्षी और चितकबरे कौए के बारे में मैं लंबे समय तक हैरान रहा, जब तक कि दुनिया भर के दर्जनों समाचार-पत्रों और अध्ययनों में इसका निर्णायक उत्तर सामने आ गया।

"डेली मेल" अखबार के अनुसार, वैज्ञानिकों ने पाया कि चील पक्षी ऑस्ट्रेलिया में आग लगने का सबसे बड़ा कारण है, जहाँ यह पक्षी जानबूझकर एक छोटी जलती हुई टहनी को अपने पंजों में पकड़कर आग फैलाता है, फिर उसे उड़ाकर जंगल के किसी अन्य हिस्से में गिरा देता है, जिससे नई जगहों पर आग की लपटें भड़क उठती हैं – यह सब इसलिए ताकि वह अपने शिकार को देख सके जो घास के कारण छिपा होता है, इसलिए वह घास को जलाकर, ऊँचे पेड़ों से आग और धुएँ से भागते हुए शिकार को स्पष्ट रूप से देख लेता है। इसके परिणामस्वरूप हर साल भयंकर आग लगती है, जिसे सुखे मौसम के साथ मिलकर चील पक्षी भड़काने में सहयोग करता है, जो दर्जनों लोगों को मौत के घाट उतार देती और घायल कर देती है, साथ ही भारी भौतिक क्षति भी पहुँचाती है। अकेले सन् 2020 की आग, जिसे चील पक्षी ने भड़काया और सूखे ने फैलने में मदद की, उसका अनुमान 60 लाख हेक्टेयर आँका गया, साथ ही 2000 से अधिक घर तबाह हुए, और लगभग 50 करोड़ पक्षी, स्तनधारी व सरीसृप – जिनमें 8000 दुर्लभ कोआला जानवर शामिल हैं – जलकर या धुएँ से दम घुटकर मर गए, जिसके कारण जले हुए जंगलों को दोबारा उगाने में 40 वर्ष लगेंगे, और इसका धुआँ प्रशांत महासागर को पार करके चिली तक जा पहुँचा!!

और ब्रिटिश अखबार "द टाइम्स" के अनुसार, ऑस्ट्रेलिया की सिडनी विश्वविद्यालय के पर्यावरण विशेषज्ञों के हवाले से, केवल एक ही वर्ष में ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में भड़की विनाशकारी आग के कारण 48 करोड़ से अधिक स्तनधारी, पक्षी और सरीसृप प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मारे गए!!

और जहाँ तक कौए का सवाल है, तो संयुक्त राज्य अमेरिका के सिएटल स्थित वाशिंगटन विश्वविद्यालय के "जॉन मार्जलफ" के नेतृत्व में किए गए अध्ययनों से पता चला, जिनके विवरण पत्रिका "एनिमल बिहेवियर" में प्रकाशित हुए और जिन्हें बीबीसी ने विस्तार से कवर किया, कि "कौवे मृत्यु को, कम से कम आंशिक रूप से, एक सीखने योग्य क्षण के रूप में देखते हैं, ताकि वे उससे कोई ठोस बात सीख सकें – यह खतरे के होने का संकेत है, और

खतरे से बचना ज़रूरी है। कौवे उस चेहरे को नहीं भूलते जो उनके लिए खतरा बनता है, और उनकी कुछ प्रजातियाँ अपने किसी साथी को मृत देखने पर एक प्रकार का "शोक-समारोह" भी आयोजित करती हैं।"

जर्मनी में किसान और चरवाहे कौवों को मार डालते और फाँसी देते हैं, क्योंकि वे खेतों से बीज उठा ले जाते हैं और नवजात मेमनों का शिकार करते हैं, यहाँ तक कि उनके बीच "कौवों की आफ़त" नामक शब्द प्रचलित हो गया है, इसके अतिरिक्त कौआ मनुष्य और पशु दोनों को कई बैक्टीरियाई, विषाणुजनित, परजीवी और फफूँदजनित बीमारियाँ पहुँचाता है, जिनकी गिनती के लिए यहाँ जगह पर्याप्त नहीं है। इस बारे में इस्माइलिया के कृषि नियंत्रण के महानिदेशक, कृषि इंजीनियर महमूद अब्दुल कादिर ने, स्वेज़ क्षेत्र में कौवों के विरुद्ध "एक पाउंड में कौआ" अभियान का औचित्य बताते हुए कहा: "कौआ कई बीमारियों का वाहक है क्योंकि यह मुर्दार खाने वाला (सड़ा-गला खाने वाला) पक्षी है, यह कूड़े-कचरे से रोगाणु उठाकर पीने के पानी और अन्य जलाशयों में अपने मल तथा जैविक पदार्थ छोड़ देता है।"

इंजीनियर ज़ैनब अस्-सावी, कृतक-नियंत्रण विभाग की निदेशक, यह जोड़ती हैं कि "कौआ मनुष्य को बैक्टीरियाई और विषाणुजनित बीमारियाँ पहुँचाता है, कृषि फ़सलों को नुक़सान पहुँचाता है, और तटों को प्रदूषित करता है।"

और बहरीन में, अधिकारियों ने कौवों को गोली मारकर समाप्त करने का अभियान चलाया, यह बहरीन की पर्यावरण संरक्षण की सामान्य प्राधिकरण संस्था द्वारा चलाए जा रहे एक राष्ट्रीय अभियान के तहत था, ताकि कौवों के प्रसार की घटना को समाप्त किया जा सके, क्योंकि वे बुलबुल जैसे अन्य पक्षियों के लिए खतरा बनते हैं और उनके घोंसलों पर कब्ज़ा कर लेते हैं, साथ ही कौआ इंसानों पर भी हमला कर सकता है यदि उसे लगे कि कोई उसकी जान को खतरे में डाल रहा है।

मैंने ऊपर की सभी बातों में कुछ विस्तार इसलिए किया है ताकि पशु अधिकारों से संबंधित संगठनों को सचेत किया जा सके, जिनमें से कुछ को मानव अधिकारों की बिल्कुल भी परवाह नहीं होती, यहाँ तक कि एक अमेरिकी कार्यकर्ता ने सोशल मीडिया पर ऐसी ही ख़बरों पर टिप्पणी करते हुए लिखा: "मैं यूरोप की ओर रबर की नावों में समुद्र पार करने वाले प्रवासियों को – जिनमें से कई समुद्र के बीचों-बीच डूब जाते हैं – यह सलाह देता हूँ कि वे अपने साथ कुत्तों को भी ले जाएँ, क्योंकि यदि कुत्ते समुद्र में डूबेंगे तो पशु अधिकार संगठन प्रवासन की लहरों का बचाव करने के लिए आगे आएँगे, इसके विपरीत यदि नाव केवल इंसानों से भरी हो, तो उनकी कोई परवाह नहीं करेगा!!"

सूद (रिबा) का व्यापक होना

सुन्न की पुस्तकों में वर्णित पाक हदीस में आया है: "लोगों पर एक ऐसा समय अवश्य आएगा जब कोई भी ऐसा नहीं बचेगा जो सूद (रिबा) न खाए; और यदि वह उसे स्वयं न खाए, तो उसकी भाप (धुआँ) उस तक अवश्य पहुँचेगी।" एक अन्य रिवायत में है: "उसकी धूल उस तक पहुँचेगी।" और सूद की परिभाषा शब्दावली में यह है: "हर वह कर्ज जो कोई लाभ खींच लाए, वह सूद है", और इसके सबसे प्रमुख रूप हैं: कर्ज का सूद (नसीआ – विलंबित भुगतान का ब्याज), तथा सोने, चाँदी और उन कृषि-वस्तुओं से संबंधित "रिबा अल-फ़ज़ल" जिनसे लोग बेनियाज़ नहीं हो सकते। और आज सूद अपने सभी नामों, रूपों और प्रकारों के साथ दुनिया भर में लोगों के बीच भयावह रूप से फैल रहा है, जिससे करोड़ों लोग हर महीने अपनी आय और वेतन का एक बड़ा हिस्सा – और यह सिलसिला वर्षों तक चलता रहता है – केवल पहले से लिए गए सूदी कर्जों पर लगने वाले ब्याज को चुकाने में खर्च करने पर मजबूर हो जाते हैं, जिसका ब्याज समय के साथ दोगुना होता चला जाता है – यहाँ तक कि कर्जदार मूल कर्ज की रकम चुकाने में भी असमर्थ रहता है, जो मूल रूप से उस पर बकाया थी!

भूख, भय का प्रसार और सुरक्षा का अभाव

"भूख का भय और सुरक्षा के अभाव के साथ जुड़ाव – जो अस्तित्व को मिटा देने वाला और सीमाओं को पार करने वाला है" – इस विषय पर शोध करने के लिए, फ़िक्ह अल्-अव्लविय्यात (प्राथमिकताओं के फ़िक्ह) की दृष्टि से इस विषय को प्राथमिकता देना, और फ़िक्ह अन्-नवाज़िल व अल्-मुस्तजद्दात (नई परिस्थितियों के फ़िक्ह) की दृष्टि से इसे अत्यंत महत्व देना आवश्यक है।

भूख और भय के जुड़ाव के संबंध में जो कुछ आया है, उनमें सूरा अल्-बकरा की वह पवित्र आयत है, जो तीसरी सहस्राब्दी की उम्मतों और लोगों की स्थिति पर पूरी तरह लागू होती है: "तथा निश्चय हम तुम्हें भय और भूख तथा धनों, प्राणों और फलों की कमी में से किसी न किसी चीज़ के साथ अवश्य आजमाएँगे। और (ऐ नबी!) सब्र करने वालों को शुभ समाचार सुना दें" (सूरा अल्-बकरा, आयत 155)। और इसी प्रकार का जुड़ाव भय और भूख के बीच सूरा अन्-नहल में भी आया है: "तो अल्लाह ने उसे भूख और भय का वस्त्र पहना दिया, उसके बदले जो वे किया करते थे" (सूरा अन्-नहल, आयत 112 – पहले सत्यापित, quranenc.com, अनुवादक: अज़ीज़ुल हक़ अल-उमरी)। परंतु यह आयत, अपनी पिछली आयत के विपरीत, उन उम्मतों के बारे में बात करती है जो अल्लाह तआला की नेमतों की नाशुक्री करती हैं – अर्थात् पहली आयत भय के साथ जुड़ी भूख की बात एक प्रकार की परीक्षा और आजमाइश के रूप में करती है, जबकि दूसरी आयत भय के साथ जुड़ी भूख की बात एक सज़ा और आफ़त के रूप में करती है। कोई पूछने वाला पूछ सकता है कि इन दोनों

में अंतर कैसे किया जाए, तो इसका उत्तर यह है कि इसे हर एक के आधारभूत कारणों, प्रस्तावनाओं, परिणामों और नतीजों के अनुसार अलग-अलग पहचाना जा सकता है। इसी तरह सूरा कुरैश की पवित्र आयत भी है: "जिसने उन्हें भूख में खिलाया तथा उन्हें भय से सुरक्षित किया" (सूरा कुरैश, आयत 4), साथ ही प्रिय नबी ﷺ की यह दुआ भी: "ऐ अल्लाह! मैं भूख से तेरी पनाह माँगता हूँ, क्योंकि वह बहुत बुरी सोने वाली साथी है, और मैं खयानत से भी तेरी पनाह माँगता हूँ, क्योंकि वह बहुत बुरा अंदरूनी साथी (राज़दार) है।"

मैं उच्च शरई अध्ययन के विद्यार्थियों और उनके सम्मानित प्राध्यापकों को, तथा प्रशासन, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियों को भी, यह सुझाव देता हूँ कि वे "कुरआन करीम में भूख", "भूख, भुखमरी और जानबूझकर भूखा रखने के प्रकार तथा उनसे निपटने के तरीके", "आज़ाकारिता और समर्पण के विभिन्न रूप थोपने के लिए अकाल की प्रोग्रामिंग", "अनुयायी की अनुगामी के प्रति निष्ठा सुनिश्चित करने के लिए भूख की इंजीनियरिंग", "खाली बर्तनों और भूखे पेटों की क्रांतियाँ", "राजनीतिक रसोइयाँ और भूख का निर्माण" – तथा इनसे मिलते-जुलते विषयों पर शोध-प्रबंध और थीसिस लिखें।

"भूख की इंजीनियरिंग" और "अकाल तथा भुखमरी के निर्माण" के इस युग में, तथा ज्ञान के मरुस्थलीकरण और सांस्कृतिक चेतना के सूखे के इस दौर में, दाईयों (धर्म-प्रचारकों), लेखकों और शोधकर्ताओं से अत्यंत आग्रहपूर्वक यह अपेक्षा की जाती है कि वे गंभीर अध्ययन करें, शोध-लेख और समाचार-पत्र स्तंभ लिखें, साक्षात्कार और संवाद आयोजित करें, रेडियो व टेलीविज़न रिपोर्टें तैयार करें, और वृत्तचित्र (डॉक्यूमेंट्री) फ़िल्में बनाएँ – ये सभी "भूख से निपटने के तरीकों", "अकाल से बचाव के उपायों", "आत्मनिर्भरता प्राप्त करने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के मार्गों", "सबसे प्रसिद्ध भुखमरी-युद्धों", तथा "भूख की प्रोग्रामिंग के खतरों" के इर्द-गिर्द केंद्रित हों। क्योंकि "खाद्य कूटनीति" (जिसमें किसी देश की खाद्य-संस्कृति, व्यंजनों और भोजन को अन्य देशों की जगह लेने या उनसे प्रतिस्पर्धा करने के लिए "सॉफ़्ट पावर" संस्कृति के एक भाग के रूप में प्रचारित करना शामिल है), "मेज़ की कूटनीति" (अर्थात् समझौता-ज़ापनों पर हस्ताक्षर, अनुबंधों पर हस्ताक्षर, संधियों का निष्पादन, तथा बड़े समझौतों का आयोजन – यह सब इसी उद्देश्य के लिए आयोजित भव्य रात्रि-भोज या दोपहर-भोज की मेज़ों पर किया जाता है), तथा "खाद्य-सहायता कूटनीति" (अर्थात् खाद्य सहायता और राहत-सामग्री का वितरण, नैतिक या मानवीय आधार पर नहीं, बल्कि सीमाओं को पार करने वाले "सॉफ़्ट पावर" प्रभुत्व और इच्छा थोपने के एक साधन के रूप में) के इस युग में, कुछ भूख इसी का परिणाम है। और "मुकबैंग" (भोजन-प्रदर्शन वीडियो), अत्यधिक मोटापे तथा अत्यधिक अतिपोषण के इस युग में, यह सब एक भली-भाँति बुनी हुई, संपूर्ण रूप से तैयार की गई वैश्विक साज़िश है, अपने हर अर्थ और तात्पर्य के साथ – यह जानते हुए कि भूख की साज़िश और इंजीनियरिंग प्रायः शानदार व भव्य भोजन की मेज़ों पर ही रची जाती है, जहाँ सत्ता का विशेषाधिकार-प्राप्त अभिजात वर्ग

[अनुवादक की टिप्पणी: मूल अरबी शब्द "الأبستينيون" के ठीक अभिप्राय में अस्पष्टता है; लेखक का संकेत संभवतः किसी विशिष्ट कुलीन/सत्ता-वर्ग समूह की ओर है] यौन-संबंधों और अनैतिक विचलन की महफिलों के बाद इकट्ठा होकर यह निर्णय लेते हैं कि आगे क्या होगा – बिना यह जाने कि अल्लाह तआला, जो अपने बंदों पर सर्वोच्च और सर्वशक्तिमान है, वह जानता है जो कुछ भी है और जो कुछ भी होने वाला है, और वह यह भी जानता है कि जो नहीं हुआ, यदि होता तो कैसे होता – और उसका आदेश केवल "कुन" (हो जा) और "फ़ यकून" (तो वह हो जाता है) के बीच है, जब वह किसी चीज़ को चाहता है तो बस उससे कहता है "हो जा", तो वह हो जाती है!!

कोई मुसलमान कैसे बनता है?

एलिज़ाबेथ रौशेल अपनी पुस्तक "पश्चिम में इस्लाम अपनाना" में लिखती हैं कि इस्लाम अपनाने वाले सबसे प्रमुख लोगों में से एक, जिनकी चर्चा उनकी पुस्तक में विस्तार से की गई है, ब्रिटिश प्रोफ़ेसर गाय ईटन थे, जिन्होंने अपने इस्लाम स्वीकार करने का कारण बताया हुआ कहा: "यदि मुझे इस्लाम का मार्ग न मिलता, तो आज मैं एक शून्यवादी (निहिलिस्ट) इंसान होता, और तुम कल्पना भी नहीं कर सकते कि इस्लाम अपनाने से पहले मेरी आत्मा कितनी पीड़ित थी।"

और जहाँ तक इसकी बात है कि कोई गैर-मुस्लिम कैसे मुसलमान बनता है, तो इसके लिए पहले गुस्ल और पवित्रता आवश्यक है, फिर ज़बान से यह गवाही देना: (अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह, व अशहदु अन्न मुहम्मदररसूलुल्लाह – मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं), और यह भी गवाही देना कि ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। इसके बाद उसे चाहिए कि वह कुरआन करीम के अर्थों के अनुवाद की एक प्रामाणिक और विश्वसनीय प्रति अपनी मातृभाषा में प्राप्त करे, ताकि वह इस्लाम, उसकी शिक्षाओं और उसके अहकाम को अच्छी तरह समझ सके, तथा अल्लाह तआला के आदेशों और निषेधों से अवगत हो सके, और रसूलों व नबियों की कहानियों का बारीकी से अध्ययन करे। इसके बाद उसे नमाज़ अदा करना सीखना और उस पर निरंतरता बरतनी चाहिए, रमज़ान के महीने के रोज़े रखने चाहिए, और यदि वह आर्थिक रूप से सक्षम हो तो ज़कात निकालकर उसे गरीबों, मिसकीनों, यतीमों और ज़रूरतमंदों में बाँटना चाहिए, इसके अतिरिक्त जो शारीरिक व आर्थिक रूप से समर्थ हो उसे अल्लाह के पवित्र घर (काबा) का हज करना चाहिए, साथ ही अच्छे आचरण तथा नेक कार्यों – जैसे ज़रूरतमंदों की मदद करना, भूखों को खाना खिलाना, बीमारों की देखभाल करना, नंगों को कपड़े पहनाना, प्यासों को पानी पिलाना, बेघरों को आश्रय देना – को अपनाना चाहिए, तथा अनैतिक कार्यों से दूर रहना, अत्याचार, नस्लवाद और बुरे आचरण से बचना चाहिए।

और मुझे यहाँ सबको अमेरिकी प्रोफेसर "जेराल्ड डर्क्स" की कहानी याद दिलाने दीजिए, जिन्होंने सन् 1974 में हार्वर्ड विश्वविद्यालय से धर्मशास्त्र (थियोलॉजी) में मास्टर डिग्री और सन् 1978 में डेनवर विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में डॉक्टरेट प्राप्त की।

उन्होंने सन् 1993 में इस्लाम अपनाया था, और इस बारे में कहा: "मनोविज्ञान के बारे में मैंने जितनी भी किताबें और सिद्धांत पढ़े, वे सब उस मुसलमान के सामने कुछ भी नहीं हैं जो अल्लाह पर भरोसा करता और अपना मामला उसे सौंप देता है।" और डर्क्स यहीं नहीं रुके, बल्कि उन्होंने कई महत्वपूर्ण पुस्तकें भी लिखीं, जिनमें सबसे प्रमुख हैं: "इब्राहीम, अल्लाह के मित्र", "इस्लाम को समझना", और "अमेरिकी इतिहास में मुसलमान"।

और कवि की बात कितनी सच है: "मैं देखता हूँ एक ऐसी दुनिया को जो रो रही है, और एक टूटे हुए पश्चिम को... और एक उदास पूर्व को, मानो वह कोई बेघर अनाथ हो। समय की माँ बाँझ हो चुकी है, अब वह जन्म नहीं दे सकती... और आने वाले दिन कभी मुहम्मद ﷺ जैसा कोई और नहीं जन्मा सकेंगे।" [अनुवादक की टिप्पणी: यह मूल अरबी कविता की केवल भावार्थ-अनुवाद है; इसकी काव्यात्मक बहर (छंद) और काफ़िया (तुक) मूल अरबी भाषा में ही सुरक्षित रह सकते हैं, अनुवाद में नहीं।]

नए मुसलमानों के लिए महत्वपूर्ण नसीहतें

मैं इस अनुच्छेद की शुरुआत उस बात से करता हूँ जो जर्मनी के हाइडलबर्ग विश्वविद्यालय में प्राच्य अध्ययन (ओरिएंटल स्टडीज़) के प्रोफेसर आंद्रियास मोर ने कही, जिन्होंने पहले ही अपना इस्लाम धर्म स्वीकार करना घोषित कर दिया था और जिनका नाम अब मुहम्मद इस्माईल हो गया है: "मैंने धर्मों में अपनी रुचि 20 वर्ष पहले शुरू की, यहाँ तक कि मुझे कुरआन करीम के अर्थों का अनुवाद प्राप्त हुआ और मैंने उसे बारीकी से पढ़ा, और मैं स्पष्ट रूप से कहता हूँ कि प्राच्यवाद (ओरिएंटलिज़्म) उपनिवेशवाद और धर्म-प्रचार से जुड़ा हुआ था, उदाहरण के लिए गोल्डज़िहर की नबवी हदीस के संबंध में कुछ अतार्किक बातें थीं, जो इस्लामी पद्धति के बिल्कुल अनुरूप नहीं थीं, इसी तरह अंग्रेज़ प्राच्यविदों का भी यही हाल था जहाँ वे इस धर्म पर बहुत सारे झूठे आरोप लगाते थे।"

और मैं यह जोड़ता हूँ कि जिसने हाल ही में इस्लाम अपनाया है, उसके लिए यह उचित है कि वह अपने इस्लाम को किसी मस्जिद में, या उस देश में – जहाँ वह रहता है – कानूनी रूप से मान्यता-प्राप्त किसी आधिकारिक इस्लामी केंद्र में दर्ज (रजिस्टर्ड) करवाए, ताकि उसे एक मुसलमान के रूप में अदालत में गवाही, विरासत, वंश-परंपरा, विवाह-संबंध, निकाह अनुबंधों, ज़कात व सदक़े की राशियों, जनाज़े की नमाज़, तथा मुसलमानों के कब्रिस्तान में दफ़न होने जैसे अन्य अनिवार्य अधिकार पूर्ण रूप से प्राप्त हो सकें।

नए मुसलमान के लिए यह शर्त नहीं है कि वह अपना पुराना नाम बदले, यदि उसका मूल नाम सुंदर और सौम्य हो, क्योंकि अल्लाह सुंदर है और सुंदरता को पसंद करता है, और यदि

उसके नाम के अर्थ में कोई ऐब या शर्मिंदगी वाली बात न हो, और वह इस्लाम की बुनियादी मान्यताओं से न टकराता हो।

और मैं हर उस व्यक्ति को, जिसने हाल ही में इस्लाम अपनाया है, दिल से एक नसीहत देता हूँ, और उन्हें उस बात की याद दिलाता हूँ जो असर में आई है, कि यह अंतिम धर्म बहुत मज़बूत है, इसलिए इसमें नरमी से, धीरे-धीरे प्रवेश करो, और तुम में से कोई भी यह कोशिश न करे कि वह इसकी अधिकांश शिक्षाओं को एक ही बार में, एक ही समय और स्थान पर लागू कर दे, बल्कि तुम्हें चाहिए कि तुम क्रमिकता (चरणबद्ध तरीके) को अपनाओ और समय के साथ व्यापक समझ व आत्मसात्करण को अपनाओ। और इस तस्वीर को दिमाग के करीब लाने के लिए मैं कहता हूँ: "क्या तुमने कभी ऐसे किसी विद्यार्थी के बारे में सुना है जिसने अपनी प्राथमिक, माध्यमिक या विश्वविद्यालय शिक्षा के पहले सप्ताह, महीने या साल में ही सारे शैक्षणिक चरण पार कर लिए हों, सारे पाठ्यक्रम पढ़ लिए हों, उन्हें लागू कर लिया हो और उनकी परीक्षा दे दी हो?" उत्तर निश्चित रूप से नहीं है, क्योंकि उसे कई चरणों से गुज़रना पड़ता है और कई वर्षों तक – तब कहीं जाकर अंत में उसे स्नातक की उपाधि मिलती है। इसी तरह किसी कर्मचारी या श्रमिक का भी हाल है जिसने आज ही अपनी नौकरी शुरू की हो – उसे भी अपने पेशे में निपुण होने, अनुभव संचित करने और तर्क तथा बुद्धि के अनुरूप क्रमिक रूप से पदों में आगे बढ़ने के लिए वर्षों चाहिए होते हैं। इसी तरह इस्लाम धर्म का भी मामला है – इसकी शिक्षाओं में क्रमिकता आवश्यक है, ताकि व्यक्ति उन्हें अच्छी तरह आत्मसात् और समझ सके, और वे उस पर न तो कठिन हों और न ही भारी।

अपने आप को झगड़ों में, निष्फल औपचारिक बहसों में, तथा अपने आस-पास के उन सभी या कुछ लोगों के साथ लंबी बहसों में मत उलझाओ जो तुम्हारे इस्लाम अपनाने पर हैरान हुए हों या उसका विरोध किया हो, बल्कि उनके साथ अच्छे व्यवहार से पेश आओ, उनके प्रति नरमी बरतो, और उनके लिए एक अच्छा आदर्श बनो, और उस विषय पर बहस मत करो जिसका अर्थ तुम्हें इस्लाम के बारे में अभी तक समझ में नहीं आया है – इस्लाम के बारे में अधिक पढ़ो, ताकि तुम इसे और अधिक समझ सको और इससे अधिक से अधिक प्रेम कर सको, और अपने व्यावहारिक आचरण से सभी के सामने यह सिद्ध करो कि इस्लाम प्रेम, शांति और भाईचारे का धर्म है।

और अपना इस्लाम घोषित करने के बाद, अपनी माँ और पिता, अपने दादा-दादी के हाथों और सिर को चूमने की कोशिश करो, भले ही वे तुम्हारे इस्लाम अपनाने का विरोध करते हों – जबकि तुम पहले, अपने पूर्व धर्म या मान्यता पर रहते हुए, ऐसा नहीं करते थे – ताकि उन्हें यह एहसास हो कि तुम्हारे जीवन और व्यक्तित्व में एक बड़ा परिवर्तन बेहतरी की दिशा में हुआ है। जहाँ तक संभव हो सके धूम्रपान छोड़ दो, इसी तरह शराब पीना और जुआ

खेलना भी छोड़ दो, और बुरे दोस्तों से दूर रहो, ताकि तुम उन्हें यह सिद्ध कर सको कि तुम वास्तव में बेहतरी की ओर बदल चुके हो।

यदि तुम कोई कर्मचारी या श्रमिक हो तो अपने काम में मेहनत और निष्ठा से लगे रहो, और यदि तुम विद्यार्थी हो तो अपनी पढ़ाई में मेहनत करो, जैसा कि इस्लाम ने हमें इसका आदेश दिया है, ताकि तुम अपने और अपने नए धर्म के बारे में अपने आस-पास के सभी लोगों के मन में एक अच्छी छाप छोड़ सको। अपने छोटे भाई-बहनों पर स्नेह करो, जैसा कि इस्लाम ने हमें सिखाया है, ताकि अपने आस-पास के सभी लोगों को यह एहसास दिला सको कि तुम वास्तव में एक अलग इंसान बन चुके हो। गरीबों और मिसकीनों की मदद करो, बीमारों और बुजुर्गों की खबर लो, पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करो, सबके सामने मुस्कुराओ और त्योरी मत चढ़ाओ, अंधों, बहरों, गूंगों और विशेष आवश्यकता वाले लोगों की सहायता करो, अपनी व्यक्तिगत स्वच्छता, अपने कपड़ों, अपने कमरे और अपने आस-पास के क्षेत्र की पवित्रता बनाए रखो, और लोगों के रास्ते से तकलीफदेह चीजें हटाओ – जैसा कि इस्लाम ने हमें सिखाया है – ताकि यह अच्छा प्रभाव छूटे कि तुम वाकई एक सच्चे मुसलमान हो जो सभी लोगों के लिए भलाई चाहता है, चाहे वे धर्म, राष्ट्रीयता, नस्ल, महाद्वीप या कबीले में उससे भिन्न ही क्यों न हों।

तुम्हें यह समझना चाहिए कि यहाँ-वहाँ कुछ भटके हुए मुसलमानों द्वारा किए जाने वाले कुछ गलतियाँ, गुनाह, विचलन और अतिवाद, दरअसल इन लोगों के इस्लामी मंज (सही मार्ग) से पिछड़ेपन, अज्ञानता या दूरी के परिणामस्वरूप होते हैं, न कि उसके करीब होने के कारण – किसी भी हाल में नहीं। इसलिए इस्लाम या मुसलमानों के बारे में सामान्यीकरण मत करो, और कुछ लोगों के कार्यों के आधार पर उन पर फैसला मत सुनाओ, और इस्लाम व मुसलमानों को उन लोगों के अपराधों का दोषी मत ठहराओ जो केवल नाम से उससे जुड़े हुए माने जाते हैं। हर आसमानी धर्म में नेक और बुरे दोनों तरह के लोग होते हैं, और उसके कुछ अनुयायियों का धर्म से विमुख होना और उसके नाम पर, उसकी शिक्षाओं के विपरीत, एक के बाद एक भयानक अपराध करना – इससे न तो उसके नबियों-रसूलों पर, न उसके संदेश पर, और न ही उसकी शिक्षाओं पर कोई शक पैदा होता है, बल्कि इससे केवल उन भटके हुए और धर्म-शिक्षाओं से बाहर निकल चुके लोगों के इससे जुड़े होने के दावे की सच्चाई और विश्वसनीयता पर ही शक पैदा होता है, भले ही वे हमेशा के लिए इससे अपने जुड़ाव का दावा करते रहें!

और आइए अगली पंक्तियों में हम इस्लाम अपनाने वाले कुछ प्रसिद्ध लोगों के साथ यात्रा करें, और शुरुआत करते हैं इथियोपियाई पादरी मिल्क्रियास फ़िकादो से, जिन्होंने बार-बार आने वाले एक स्वप्न से प्रभावित होकर, जो उन्हें इस्लाम की खुशखबरी देता था, अपना इस्लाम घोषित किया और अपना नाम बदलकर मुहम्मद सईद रख लिया, जिसके बाद उनकी पत्नी भी उनके साथ इस्लाम में दाखिल हुई, और उनके हाथों 280 लोगों ने इस्लाम स्वीकार

किया, इससे पहले कि वे हरमैन शरीफैन (मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा) की ओर सफर करें और अपनी शेष ज़िंदगी वहीं बिताएँ। फिकादो अपने इस्लाम के बारे में कहते हैं: "मैंने कुरआनी चमत्कार के कई पहलू खोजे हैं, इस्लाम का अर्थ है अल्लाह की रूबूबियत के आगे समर्पण, उसके आदेशों का पालन और उसकी अवज्ञा से बचना, और मैं अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि वह मुझे उस काम की तौफ़ीक़ दे जिसमें इस्लामी उम्मत की भलाई हो।"

पूर्व गिटार वादक जर्मन जैक्सन, पॉप संगीत बैंड "जैक्सन फ़ाइव" के सदस्य, और प्रसिद्ध गायक माइकल जैक्सन के भाई, इस्लाम से परिचित होने से पहले "यहोवा के साक्षी" संप्रदाय के अनुयायी थे, यह सन् 1989 में हुआ जब वे अपने बैंड के साथ मध्य-पूर्व के कई देशों की एक कलात्मक यात्रा पर गए थे। उन्होंने अपना इस्लाम घोषित किया और अपना नाम बदलकर मुहम्मद अब्दुल अज़ीज़ रख लिया। पत्रिका "अल-मजल्ला" (अंक 966) को अपने इस्लाम अपनाने के कारण बताते हुए उन्होंने कहा: "इस्लाम के विरुद्ध अन्यायपूर्ण मीडिया अभियान केवल दृश्य और मुद्रित मीडिया तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह सिनेमा तक भी पहुँच गया, और लोगों को हॉलीवुड जो कुछ भी प्रस्तुत करता है, उस पर आँख मूँदकर विश्वास नहीं करना चाहिए," उन्होंने आगे कहा: "इस्लाम ने मेरी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया, जहाँ मैंने शराब पीना और अन्य हराम चीज़ें छोड़ दीं, और सच तो यह है कि मुसलमान अपनी पत्नियों और बच्चों से प्रेम करने वाले होते हैं, और उनके यहाँ स्त्री को सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त है, और मुझे इस्लामी समाजों में परवरिश के तरीके ने बहुत प्रभावित किया, और मक्का मुकर्रमा की अपनी उमरा यात्रा के दौरान मैंने पूर्व ब्रिटिश गायक कैट स्टीवंस की एक ऑडियो टेप सुनी, जिससे मैंने बहुत कुछ सीखा" – पुस्तक "पश्चाताप करने वाले आँसू" (भाग 1, पृष्ठ 268-273) से।

और यह हैं स्वीडिश राजनयिक कनूत बर्नस्ट्रॉम, जो अपने देश के कई देशों में राजदूत रह चुके हैं, जिनमें संयुक्त राज्य अमेरिका, फ़्रांस, स्पेन, ब्राज़ील और मोरक्को शामिल हैं। एक बार अल्लाह तआला ने उन्हें एक विमान दुर्घटना से बचा लिया जिसमें सभी यात्री मारे गए थे, क्योंकि हवाई अड्डे की ओर जाते समय उनकी कार का एक टायर फट जाने के कारण वे उस उड़ान के लिए देर से पहुँचे थे। इस घटना ने उन्हें भाग्य में विश्वास की ओर झुका दिया, और वे जीवन व मृत्यु की गहराई तथा धर्मों की तुलना में खोज करने लगे, यहाँ तक कि उन्होंने इस्लाम को बारीकी से जाना और मोरक्को में सन् 2006 में आधिकारिक रूप से अपना इस्लाम घोषित किया, तथा अपना नाम बदलकर मुहम्मद बर्नस्ट्रॉम रख लिया। वे यहीं नहीं रुके, बल्कि उन्होंने अरबी भाषा सीखनी भी शुरू कर दी – जबकि वे अपने विभिन्न देशों में निभाए गए राजनयिक पदों के कारण पहले से ही 10 भाषाएँ बोलने में निपुण थे – और उन्होंने कुरआन करीम के अर्थों के एक भाग का स्वीडिश भाषा में अनुवाद भी किया, जिसे उन्होंने अपनी पुस्तक में "कुरआन का संदेश" शीर्षक दिया। इस्लाम के बारे में जो बातें

उन्होंने कहीं, उनमें से एक यह है: "मैंने शुरुआत में रमज़ान के महीने के रोज़े रखने की कोशिश की और मैं चिंतित था, तो मैंने रोज़ा रखा और अच्छा स्वास्थ्य महसूस किया, जिसने मुझे इस्लाम की सच्चाई का एक और प्रमाण दिया... मुझे पहले इस्लाम के बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं था, मैं केवल एक धर्म के बारे में सुनता था जिसे 'मुहम्मदी धर्म' कहा जाता था, और मैंने अपने जीवन के बहुत बाद के समय तक, बड़े अफ़सोस के साथ, इस्लाम के बारे में कोई किताब नहीं पढ़ी थी।"

शहादतैन (दोनों गवाहियाँ) कहने के बाद अगले क़दम क्या हैं?

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "इस्लाम की बुनियाद पाँच बातों पर रखी गई है: इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ कायम करना, ज़कात देना, रमज़ान के रोज़े रखना, और अल्लाह के घर का हज करना उसके लिए जो वहाँ तक पहुँचने की सामर्थ्य रखता हो।"

दोनों गवाहियों का उच्चारण करने के बाद नया मुसलमान पवित्रता और वुज़ू करने का तरीका तथा प्रतिदिन की नमाज़ें अदा करना और उन पर निरंतरता बनाए रखना सीखना शुरू करता है, इसके बाद ज़कात देना – यदि वह उसके निसाब (न्यूनतम सीमा) का मालिक हो, जो 85 ग्राम सोने या 595 ग्राम चाँदी के बराबर हो और जिस पर एक पूरा वर्ष (हौल) गुज़र चुका हो – अन्यथा उस पर ज़कात अनिवार्य नहीं है, बल्कि उसे अपनी और अपने परिवार पर तंगी डाले बिना, जितना संभव हो सके, अधिक से अधिक सद्का देना चाहिए। इसके अतिरिक्त, हर वर्ष रमज़ान के पवित्र महीने का रोज़ा रखना भी आवश्यक है, उसके लिए जिसके पास रोज़ा छोड़ने का कोई उचित कारण न हो, जैसे कोई पुरानी बीमारी, या ऐसी उम्र जो रोज़ा रखने में बाधक हो, या मजबूरी में यात्रा, या गर्भावस्था, या स्तनपान, या मासिक धर्म।

इसके अतिरिक्त, अल्लाह के पवित्र घर की, मक्का मुकर्रमा में, हज यात्रा – जो जीवन में केवल एक बार अनिवार्य है – उसके लिए जो हज की आर्थिक लागत वहन करने की क्षमता रखता हो, शारीरिक रूप से इसका बोझ उठाने में सक्षम हो, आवश्यक वीज़ा व आधिकारिक अनुमतियाँ प्राप्त कर सके, और रास्ते की सुरक्षा तथा सलामती सुनिश्चित हो।

और चूँकि धर्मों का समापन करने वाला "इस्लाम", वह स्वाभाविक आसमानी धर्म है जो मानव जीवन की पाँच अनिवार्यताओं – "धर्म, प्राण, धन, इज़ज़त, और बुद्धि" – की रक्षा करता है, इसलिए इसने हर उस चीज़ को हराम ठहराया है जो इन अनिवार्यताओं से टकराती है, उन्हें नष्ट करती, बाधित करती या उन्हें ख़त्म कर देती है, इसके विपरीत उसने हर उस चीज़ को जायज़ ठहराया है जो इन अनिवार्यताओं की रक्षा करने वाली हो, ताकि इस नीले ग्रह – जो युद्धों, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापवृद्धि, तथा भूकंप, ज्वालामुखी, बाढ़, जंगल की आग, चक्रवात, अकाल, सूखा, मरुस्थलीकरण और महामारियों जैसी प्राकृतिक आपदाओं से ग्रस्त है – पर मनुष्य का जीवन सीधे और सुचारु रूप से चल सके।

इस्लाम ने मूर्तियों, बुतों, ग्रहों, तारों, पशुओं, प्राकृतिक घटनाओं, मनुष्यों और पत्थरों की पूजा को हराम ठहराया है, क्योंकि यह एकमात्र अल्लाह तआला की इबादत और उसकी तौहीद (एकत्ववाद) से टकराती है, जो कि इस महान ब्रह्मांड का रचयिता है और जो आसमानी धर्म की बुनियाद और उसका श्रेष्ठ व उदात्त उद्देश्य है... इसी तरह इस्लाम ने शराब पीना और नशीली दवाओं का सेवन करना हराम ठहराया है, क्योंकि ये बुद्धि को समाप्त कर देते हैं, जबकि बुद्धि ही वह आधार है जिस पर धार्मिक ज़िम्मेदारी टिकी है, और यह वह रत्न है जो मनुष्य को अपने आस-पास की अन्य सभी सृष्टियों से अलग करता है... इसी तरह इस्लाम ने हत्या करना भी हराम ठहराया है, क्योंकि यह सम्मानित और सुरक्षित मानव जीवन को नष्ट करता है... और इसने चोरी, गबन, जालसाज़ी, सूद और जुआ को हराम ठहराया है, क्योंकि ये धन को नष्ट और बर्बाद करते हैं... और इसने विवाह के पवित्र दायरे से बाहर होने वाले विकृत यौन-संबंधों – जैसे बलात्कार, वेश्यावृत्ति और इनके समान अन्य कार्यों – को हराम ठहराया है, क्योंकि ये वंश को नष्ट करते हैं, वंश-परंपराओं को मिलाकर गड़बड़ कर देते हैं, परिवार को छिन्न-भिन्न कर देते हैं, तथा लोगों के बीच अश्लीलता, गर्भपात की घटनाओं, अविवाहित माताओं, घातक यौन-रोगों और यौन-उत्पीड़न को फैलाते हैं।

और मैं इस बात के साथ समापन करता हूँ जो जाने-माने प्रचारक महमूद ग़रीब – अल्लाह उन पर रहम करे – ने कृषि विशेषज्ञ लीनवा तोरी [अनुवादक की टिप्पणी: इस नाम की सही वर्तनी और पहचान की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं हो सकी; यहाँ यह मूल अरबी लिप्यंतरण के अनुसार दिया गया है] के बारे में उल्लेख किया, जिस दिन उस विशेषज्ञ ने इस्लाम के प्रति अपनी प्रशंसा को इस वाक्य में समेटा: "मुहम्मद आसमान की आवाज़ सुनते हैं," और जब अनुवादक ने उनसे पूछा: "क्या आपका मतलब है कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं?" तो उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया: "यह सच्चाई मुझे तभी से मालूम है जब से मैंने अपना डॉक्टरेट का शोध-प्रबंध तैयार करना शुरू किया था।" और अपने पिता की इस बात से इतनी गहराई से प्रभावित होकर, उनकी बेटी हेलेन ने इसके कुछ ही हफ्तों बाद अपना इस्लाम घोषित कर दिया।

रुकन संख्या 2: नमाज़ — एक इबादत भी, एक चिकित्सा भी

कुरआनी संख्यात्मक विलक्षणताओं में से एक यह है कि फ़र्ज़ नमाज़ों की कुल रकातों की संख्या (17) है, जबकि सुन्न-ए-रातिबा और मुअक्कदा (नियमित एवं पुष्ट सुन्नतों) की रकातों की संख्या (14) है, और यदि हम 17×14 का गुणा करें, तो इसका परिणाम (238) आता है, जो कि सूरा अल्-बक्रा में नमाज़ों की हिफ़ाज़त संबंधी आयत की संख्या है।

और वुज़ू के लाभों के बारे में वैकल्पिक चिकित्सा विशेषज्ञ डॉक्टर हनान अल्-यूसुफ़ ने, सन् 2023 में किंग सऊद यूनिवर्सिटी के फ़ार्मसी कॉलेज में आयोजित एक कार्यशाला में, यह उजागर किया कि "वुज़ू शरीर की सतह पर स्थित कई बिंदुओं की मालिश के समान है, जो आंतरिक अंगों की ऊर्जा से जुड़े होते हैं और जिनसे उनका संतुलन व सक्रियता पुनः स्थापित

होती है, तथा जो शरीर की स्व-उपचार क्षमता को उत्तेजित करती है, और रक्त-संचार व लसीका ग्रंथियों को सक्रिय करती है, इस तरह हाथों और पैरों की मालिश दर्द को शांत करती है, जबकि पैरों की मालिश पेट, अग्न्याशय, मूत्राशय, गुर्दे, यकृत और पित्त-नली की ऊर्जा को बेहतर बनाती है," ऐसा उनका कहना है।

और जापानी पत्रकार (काओरी), जो जापान के मुसलमानों की एसोसिएशन की अध्यक्षा हैं, कहती हैं: "मैं अस्तित्ववादी दर्शन में विश्वास रखती थी, यहाँ तक कि मैंने कुरआन के अर्थों का फ्रेंच अनुवाद पढ़ा तो मेरा सीना खुल गया और मैंने अपना इस्लाम घोषित कर दिया, और नमाज़ मेरी शरणस्थली बन गई, तथा अल्लाह तआला के सामने सजदा करना मेरे लिए राहत और सुकून बन गया" – पुस्तक "इसीलिए मैं मुसलमान हुई" के अनुसार।

और अमेरिकी गणितज्ञ प्रोफेसर "जेफरी लैंग" अपनी उस पुस्तक में, जो उन्होंने अपने इस्लाम अपनाने के बाद लिखी ("आस्था के लिए संघर्ष"), यह जोड़ते हैं: "फ़ज़ की नमाज़ सबसे सुंदर इबादतों में से एक है; यह तुम्हें ऐसा एहसास कराती है मानो तुम इस दुनिया को छोड़कर फ़रिश्तों के साथ यात्रा कर रहे हो।"

और फ़िज़ियोथेरेपी विशेषज्ञ डॉक्टर आदिल अब्दुल हमीद की अध्यक्षता में किए गए एक वैज्ञानिक अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला कि "नमाज़ शरीर की मांसपेशियों को मज़बूत बनाती है और हृदय के स्वास्थ्य, रक्तचाप की स्थिरता, तथा मनुष्य के मानसिक व स्नायविक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।"

पोषण एवं सूक्ष्मजीव-विज्ञान सलाहकार डॉक्टर मिदहत अश्-शामी ने एक शोध प्रकाशित किया जिसमें उन्होंने स्पष्ट किया कि नमाज़ "युवावस्था के हार्मोन मेलाटोनिन" के स्राव में एक महत्वपूर्ण कारक है, जो बुढ़ापे के लक्षणों को विलंबित करता है।

और डॉक्टर बायू सुसेनो, इंडोनेशिया की मुहम्मदिया सुराकर्ता विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान के प्रोफेसर, यह इंगित करते हैं कि जो लोग प्रतिदिन नमाज़ अदा करते हैं, वे नमाज़ न पढ़ने वालों की तुलना में अधिक सजगता और बेहतर मानसिक स्वास्थ्य का आनंद लेते हैं।

और इसके अतिरिक्त, नमाज़ के दीन का स्तंभ होने और इस्लाम के दूसरे रुकन होने के साथ-साथ, इसके शारीरिक और मानसिक लाभ भी बहुत बड़े हैं, इसीलिए डॉक्टर मुस्तफ़ा अल्-हफ़फ़ार यह इंगित करते हैं कि रुकू और सजदे के लाभों में से एक पेट की दीवार की मांसपेशियों को मज़बूत बनाना और पेट व आँतों को अपने कार्य ठीक से करने में मदद देना है।

और "जर्नल ऑफ़ हेल्थ साइकोलॉजी" पत्रिका में प्रकाशित एक वैज्ञानिक अध्ययन में यह सामने आया कि जो वृद्ध महिलाएँ नियमित रूप से नमाज़ अदा करती हैं, उनमें मृत्यु के खतरे की दर उन महिलाओं की तुलना में 20% कम होती है जो नमाज़ नहीं पढ़तीं। जॉर्डन

कार्डियोलॉजी सोसाइटी के विशेषज्ञ यह जोड़ते हैं कि नींद के दौरान हृदय गति घटकर (50) धड़कन प्रति मिनट तक पहुँच जाती है, और मनुष्य को कम से कम (15) मिनट का शारीरिक व्यायाम करना चाहिए – और यह ठीक वही चीज़ है जो प्रतिदिन फ़ज़्र की नमाज़ सुनिश्चित करती है, जैसा कि पुस्तक "नमाज़ द्वारा चिकित्सा-लाभ" में आया है, साथ ही यह पुष्टि करते हुए कि मनुष्य की सक्रियता के लिए ज़िम्मेदार हार्मोन "कोर्टिसोन" फ़ज़्र की नमाज़ का समय होते ही बढ़ना शुरू हो जाता है।

और "मस्तिष्क में रक्त-संचार की क्षमता पर नमाज़ के प्रभाव" शीर्षक वाले एक वैज्ञानिक अध्ययन में, जो जनरल सर्जरी विशेषज्ञ डॉक्टर अब्दुल्लाह मुहम्मद नस्रत द्वारा किया गया, यह उजागर हुआ कि "रक्त में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ जाती है, और नमाज़ में रूकू व सजदे के दौरान सिर का बार-बार नीचे झुकना, फिर कयाम और बैठने के दौरान उसका ऊपर उठना, मस्तिष्क में रक्त-संचार की स्वतः-संतुलन प्रणाली को बनाए रखने में मदद करता है।"

और पेन्सिल्वेनिया व मिनेसोटा विश्वविद्यालयों के विशेषज्ञों के साथ मिलकर किए गए एक संयुक्त शोध में, बिंघमटन विश्वविद्यालय में औद्योगिक इंजीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष मुहम्मद अल्-खसावना ने यह उजागर किया कि "नमाज़ और शारीरिक रूप से स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के बीच एक मज़बूत संबंध है, तथा नमाज़ शारीरिक तनाव और चिंता को समाप्त कर सकती है, और इसे कंकाल-मांसपेशी तंत्र के लिए एक प्रभावी उपचार माना जा सकता है।"

और जीव-विज्ञान के प्रोफ़ेसर डॉक्टर मुहम्मद ज़ियाउद्दीन का मानना है कि "आजकल मनुष्य को विकिरण की अत्यधिक मात्रा का सामना करना पड़ता है, क्योंकि वह हर जगह विद्युत-चुंबकीय क्षेत्रों से घिरा हुआ है, और शरीर से बाहर उन आवेशों को निर्वहन करने के लिए, नमाज़ में सजदा करना इसका सबसे बेहतरीन तरीका है, जहाँ माथे का ज़मीन से संपर्क होने के साथ-साथ हाथों, घुटनों और पैरों का भी संपर्क होने से यह निर्वहन प्रक्रिया संपन्न होती है।"

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "मुझे सात अंगों पर सजदा करने का आदेश दिया गया है, और यह भी आदेश दिया गया है कि मैं न बाल समेटूँ और न कपड़ा।" और आपने ﷺ यह भी फ़रमाया: "अल्लाह के लिए अधिक से अधिक सजदा करते रहो, क्योंकि तुम अल्लाह के लिए जो भी सजदा करते हो, अल्लाह उसके बदले तुम्हें एक दर्जा ऊँचा उठाता है और एक गुनाह मिटाता है।"

और "न्यूरोसाइंस जर्नल" में प्रकाशित एक अध्ययन यह उजागर करता है कि 10 सेकंड तक सजदे में रहने से मस्तिष्क के अग्र-प्रांतस्था की ओर रक्त-प्रवाह बढ़ जाता है, जो इस क्षेत्र में गतिविधि बढ़ने का संकेत है, और इससे विश्राम से जुड़े पैरासिम्पेथेटिक तंत्रिका तंत्र को

सक्रिय करने में मदद मिलती है, तथा यह भावनाओं के नियंत्रण और निर्णय लेने के लिए जिम्मेदार प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स के कार्य को नियमित करता है।

और अमेरिका की बोलिंग ग्रीन स्टेट यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं द्वारा किए गए एक अध्ययन में यह पाया गया कि "नमाज़ ने सामान्य रूप से माइग्रेन के दौरों को कम करने में मदद की," जबकि अमेरिका की फ़्लोरिडा विश्वविद्यालय में किए गए एक अध्ययन में यह उजागर हुआ कि "जिन बुजुर्गों ने नमाज़ पढ़ी या अन्य आध्यात्मिक तरीके अपनाए, उनमें आत्म-निर्भर सकारात्मक रणनीतियाँ अधिक थीं।"

और शोधकर्ता जेनिन ओवेंस अपनी पुस्तक "सार्वजनिक स्वास्थ्य में समकालीन इस्लामी दृष्टिकोण" में, जो कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस से प्रकाशित हुई, यह जोड़ती हैं कि "नमाज़ एक समग्र स्वास्थ्यवर्धक अभ्यास है, क्योंकि इसका संबंध शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों से है, और नमाज़ में शामिल नियमित गतिविधियों का शारीरिक प्रभाव जोड़ों के लचीलेपन को बेहतर बनाता है और विभिन्न मांसपेशी-समूहों को सक्रिय करता है, जबकि नमाज़ मानसिक एकाग्रता, तनाव से निपटने की क्षमता, और मानसिक स्थिरता को भी बेहतर बनाती है।"

रुक्न संख्या 3: तुम्हारी ज़कात ही तुम्हारी मुक्ति है

ज़कात, जो इस्लाम का तीसरा रुक्न है, ज़रूरतमंदों की सहायता करने, सामाजिक एकजुटता (तकाफ़ुल) को मज़बूत करने, अमीरों और ग़रीबों के बीच वर्ग-भेद को कम करने, तथा मनुष्यों के बीच प्रेम की भावना फैलाने में बहुत बड़े भौतिक, सामाजिक, नैतिक और मानसिक लाभ रखती है, साथ ही यह हर एक को दूसरे की सदैव याद दिलाती रहती है – जहाँ धनवान लोग खर्च करते और ज़कात देते हैं, और ग़रीब अल्लाह तआला की प्रशंसा करते और देने वालों का शुक्रिया अदा करते हैं। यह ग़रीबों, मिसकीनों, इस पर कार्यरत कर्मचारियों, ज़रूरतमंदों, कर्ज़दारों, जिनके दिल (इस्लाम की ओर) मोड़ने हों उन्हें, अल्लाह के मार्ग में, और मुसाफ़िरों को दी जाती है।

ज़कात की दर 2.5% है, जो मूल धन पर एक पूरा वर्ष गुज़र जाने के बाद निकाली जाती है, बशर्ते वह धन उतनी सीमा (निसाब) तक पहुँचे जिसका पहले उल्लेख किया जा चुका है। ज़कात नक़दी धन, व्यापारिक माल, सोने-चाँदी के भंडार, किसानों के लिए फ़सलों और फलों, तथा पशुपालकों के लिए मवेशियों और पशुओं पर फ़र्ज़ है, और इसके अपने विशेष नियम व शर्तें हैं जिनका यहाँ विस्तार उचित नहीं। इसके अतिरिक्त एक और प्रकार है जिसे "ज़कातुल-फ़ित्र" कहा जाता है, जो रोज़ेदारों पर फ़र्ज़ है और रमज़ान के आखिरी दिनों में – या तो अनाज के रूप में या धन के रूप में – निकाली जाती है ताकि ग़रीबों और मिसकीनों को दी जा सके। इसके अतिरिक्त "ज़कातुर-रिकाज़" भी है, जो ज़मीन के भीतर छिपे खज़ानों पर लागू होती है, यदि वे मिल जाएँ।

"जब तुम दया करते हो, तो तुम माँ या पिता के समान बन जाते हो – क्योंकि इस दुनिया में यही दोनों सबसे बड़े दयावान होते हैं। और जब तुम क्रोधित होते हो, तो वह केवल हक (सत्य) की खातिर एक क्रोध होता है – जिसमें न कोई द्वेष है और न ही कोई बैरा।"

[अनुवादक की टिप्पणी: यह मूल अरबी काव्य-पंक्तियों का केवल भावार्थ-अनुवाद है; इनका छंद और तुक मूल अरबी भाषा में ही सुरक्षित रह सकते हैं।]

रुक्न संख्या 4: रोज़ा — एक इबादत भी, एक चिकित्सा भी

मुसलमानों में यह बात मशहूर है: "रोज़ा रखो, स्वस्थ रहो," और मार्च 2025 में प्रकाशित एक ठोस वैज्ञानिक शोध, जिसमें 15 देशों के 82 शोधकर्ताओं ने भाग लिया और जिसके विवरण पत्रिका "फ्रंटियर्स इन न्यूट्रिशन" में प्रकाशित हुए, ने यह उजागर किया कि रोज़े की ट्राइग्लिसराइड्स और कुल कोलेस्ट्रॉल में उल्लेखनीय सुधार लाने, तथा रक्त शर्करा के स्तर को घटाने में भूमिका है।

और अमेरिकन जर्नल ऑफ़ क्लिनिकल न्यूट्रिशन के अनुसार, तथा डॉक्टर मार्क मैट्सन के अनुसार, रोज़ा हृदय और रक्त वाहिकाओं के लिए लाभदायक है और पार्किंसन व अल्ज़ाइमर रोग होने के खतरे को कम करता है।

वहीं जर्मन एकीकृत चिकित्सा विशेषज्ञ (गुस्ताव डोबोस) 16 घंटे के "आंतरायिक उपवास" की सलाह देते हैं, जो एक पूरे दिन के रोज़े के बराबर है, इसके बाद दो स्वस्थ भोजन – जो नाश्ते और सहरी के दो भोजन के बराबर होते हैं – खाने की सलाह देते हैं, क्योंकि रोज़ा पेट को आराम देता है और वसा जलाने का अवसर प्रदान करता है – जर्मन अखबार "बिल्ड" के अनुसार।

और वैज्ञानिक पत्रिका "प्लॉस वन" ने एक अध्ययन प्रकाशित किया जो बताता है कि रोज़ा वज़न और रक्तचाप कम करने में योगदान देता है, साथ ही रक्त में वसा और ग्लूकोज़ के अनुपात को भी नियंत्रित करता है – जर्मन "डॉयचे वेले" के अनुसार।

और रोज़े के लाभों में से – इसके हर मुसलमान पर फ़र्ज़ होने तथा इसके महान सवाब व पुण्य के अतिरिक्त – पेट में हानिकारक बैक्टीरिया को निष्क्रिय करना और लाभदायक बैक्टीरिया को बढ़ाना भी शामिल है, जैसा कि डॉक्टर (ब्रूस वैलेंस) के एक अध्ययन में सामने आया, जिसके परिणाम सन् 2021 में पत्रिका "प्लॉस पैथोजेंस" में प्रकाशित हुए।

वहीं "न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ़ मेडिसिन" पत्रिका यह जोड़ती है कि 8 से 14 घंटों के बीच भोजन ग्रहण को आंशिक रूप से सीमित करने से बौद्धिक क्षमताओं में सुधार होता है, इंसुलिन के प्रति संवेदनशीलता बढ़ती है, मधुमेह रोग की प्रगति और हृदय रोगों का खतरा रुकता है, तथा प्रतिरक्षा प्रणाली में सुधार होता है – जॉन्स हॉपकिन्स विश्वविद्यालय के डॉक्टर (मार्क मैट्सन) के अनुसार।

वहीं ब्रिटिश अखबार "डेली मेल" ने सन् 2023 में डॉक्टर (आंद्रियास मायफ़ील्ड) का एक अध्ययन प्रकाशित किया, जिसमें यह उजागर हुआ कि सही ढंग से रोज़ा रखने वाले 43% लोग रक्तचाप नियंत्रित करने वाली दवाओं पर अपनी निर्भरता कम करने में सफल रहे, दूसरों की तुलना में। फ़्रांसीसी पत्रिका "फ़ाम एक्च्युएल" के अनुसार, लगातार कई दिनों तक रोज़ा रखना, स्वस्थ आहार-योजना के साथ मिलकर, जोड़ों के रोगियों और उच्च रक्तचाप के मरीजों की मदद करता है।

और पत्रिका "मेडिकल एक्सप्रेस" हमें यह बताती है कि रोज़ा प्रतिरक्षा प्रणाली को मज़बूत करता है और कुछ बीमारियों की प्रगति को रोकने में मदद करता है, जबकि पत्रिका "नेचर न्यूरोसाइंस" ने एक अध्ययन प्रकाशित किया जो बताता है कि रोज़ा टी-कोशिकाओं के वितरण को प्रभावित करता है, जिससे रोगाणुओं से लड़ने और शरीर को बीमारियों से बचाने में मदद मिलती है।

और चीन के क्लिनिकल रिसर्च केंद्र ने उजागर किया कि आंतरायिक उपवास प्रणाली मानव मस्तिष्क में माइक्रोबायोम की धुरी को बदल देती है, वहीं अमेरिका की इलिनॉय विश्वविद्यालय की प्रोफ़ेसर क्रिस्टा वरादी ने सन् 2023 के अंत में उजागर किया कि समय-सीमित भोजन टाइप-2 मधुमेह से पीड़ित लोगों के लिए एक व्यावहारिक विकल्प हो सकता है।

वहीं "लियोनार्ड डेविस कॉलेज" में किए गए एक वैज्ञानिक अध्ययन में यह उजागर हुआ कि रोज़ा बुढ़ापे के खतरों को कम कर सकता है, जिससे व्यक्ति जैविक रूप से युवा बना रहता है, साथ ही चयापचय और प्रतिरक्षा-संबंधी कार्यों का नवीनीकरण भी होता है।

रुक्न संख्या 5: हज — एक इबादत भी, गुनाहों का कफ़ारा भी, और उम्मतों-क्रौमों का सम्मेलन भी

इस्लाम के फ़राइज़ में से पाँचवाँ फ़र्ज़ हज है, उसके लिए जो वहाँ तक पहुँचने की सामर्थ्य रखता हो, और इसके उदात्त व श्रेष्ठ उद्देश्य अनगिनत हैं, जहाँ हर वर्ष सभी मानव जातियाँ और नस्लें एक ही धरातल पर इकट्ठा होती हैं — गोरे और काले में कोई अंतर नहीं, न लाल और पीले में, न धनी और निर्धन में, न शासक और शासित में — सभी सफ़ेद उजले वस्त्र पहनकर, ऐसे सुंदर अनुष्ठान और अरकान अदा करते हैं जिनका यहाँ वर्णन करना संभव नहीं; जो अधिक जानना चाहें, उन्हें हज और उमरा की शिक्षा देने वाली विशेष पुस्तकें पढ़नी चाहिए।

और मैं हर उस व्यक्ति को, जिसने हाल ही में इस्लाम अपनाया है, यह सलाह देता हूँ कि वह फ़्रांसीसी चित्रकार एतीन दिने की पुस्तक "अल्लाह के पवित्र घर की हज यात्रा", हंगेरियन डॉक्टर जियुला जर्मनुस की हज-यात्रा पर लिखी पुस्तक "अल्लाहु अकबर", जर्मन प्रोफ़ेसर विलफ़्रेड हॉफ़मैन की पुस्तक "मक्का की यात्रा", प्रसिद्ध ऑस्ट्रियाई पत्रकार व विचारक

लियोपोल्ड वाइस की पुस्तक "मक्का का मार्ग", इसके अतिरिक्त पुस्तक "एक अमेरिकी की मक्का यात्रा", और पुस्तक "मक्का के हजार मार्ग" भी पढ़े, साथ ही वृत्तचित्र फ़िल्म "मक्का में एक अमेरिकी" भी देखे – ये सभी अमेरिकी निर्देशक माइकल वुल्फ़ की रचनाएँ हैं, जिन्होंने अपना इस्लाम घोषित किया और उपरोक्त के अतिरिक्त नबी मुहम्मद ﷺ की जीवनी पर भी एक वृत्तचित्र फ़िल्म बनाई।

और हज व उमरा की एक दिलचस्प बात यह है कि काबा के चारों ओर तवाफ़ घड़ी की सुइयों की विपरीत दिशा में होता है, बिल्कुल वैसे ही जैसे इलेक्ट्रॉन परमाणु के केंद्रक के चारों ओर, पृथ्वी अपनी धुरी के चारों ओर, चाँद पृथ्वी के चारों ओर, और ग्रह पृथ्वी सहित सूर्य के चारों ओर घूमते हैं, तथा सौर मंडल अपने केंद्र के चारों ओर घूमता है – यह सब एक जैसे सफ़ेद वस्त्रों में होता है जो समस्त मनुष्यों के बीच सामाजिक, वर्गीय और नस्लीय हर प्रकार के भेदभाव को मिटा देते हैं।

और डॉक्टर मजदी आशूर का हज के अनुष्ठानों में संख्या सात की पुनरावृत्ति पर एक सुंदर दृष्टिकोण है – काबा के चारों ओर तवाफ़ सात चक्करों में होता है, सफ़ा और मरवा के बीच सई भी सात चक्करों में होती है, तथा जमरात को कंकड़ मारना भी सात बार होता है, मानो हर एक कंकड़ जहन्नम के सात द्वारों में से एक द्वार को बंद कर देता हो, और मानो हज के अनुष्ठान इस सृष्टि और इसके नियमों की नक़ल कर रहे हों – सप्ताह के दिन सात हैं, सूर्य के प्रकाश-वर्णक्रम के रंग सात हैं, आसमान सात हैं, ज़मीनें सात हैं, सबसे घातक गुनाह सात हैं, नमाज़ में सजदा सात अंगों पर होता है, और संगीत का स्वर-सप्तक भी सात मूल स्वरों पर आधारित होता है।

और इसका समापन सबसे उत्तम तरीके से करते हुए, मैं इस अध्याय को उस प्रसिद्ध चीनी कविता की कुछ पंक्तियों के साथ समाप्त करता हूँ, जिसे चीन में मिंग राजवंश के संस्थापक सम्राट "होंगवू" ने चौदहवीं शताब्दी ईस्वी में, चीनी भाषा में, प्रिय नबी ﷺ की प्रशंसा में रचा था – यह उस समय हुआ जब दस मुस्लिम जनरलों ने मंगोलों के विरुद्ध उनके युद्ध में उनका साथ दिया, जिसमें उन्हें विजय प्राप्त हुई। इस कविता को "百字讚" (बाई ज़ी ज़ान), अर्थात् "सौ अक्षरों की प्रशंसा" के नाम से जाना जाता है। [अनुवादक की टिप्पणी: परियोजना की स्थापित पद्धति के अनुसार, इस प्रसिद्ध ऐतिहासिक चीनी कविता के मूल चीनी पाठ और उसके स्थापित अर्थ को यहाँ आधार बनाया गया है, बजाय इसके कि अरबी संस्करण से पुनः अनुवाद किया जाए, ताकि मूल ऐतिहासिक स्रोत की प्रामाणिकता बनी रहे। इसका छंद व लय मूल चीनी भाषा में ही सुरक्षित रह सकते हैं, अनुवाद में नहीं।] मूल चीनी पाठ: 乾坤初始，天籙注名。傳教大聖，降生西域。授受天經，三十部冊，普化眾生。億兆君師，萬聖領袖。協助天運，保庇國民。五時祈祐，默祝太平。存心真主，加志窮民。拯救患難，洞徹幽冥。超拔靈魂，脫離罪業。仁覆天下，道冠古今。降邪歸一，教名清真。穆罕默德，至貴聖人。 भावार्थ अनुवाद: "सृष्टि के आरंभ से ही,

स्वर्गीय पट्टिका पर उनका नाम अंकित था। धर्म-प्रचारक महान संत, पश्चिमी क्षेत्र में जन्मे। उन्हें स्वर्गीय ग्रंथ प्राप्त हुआ, तीस भागों में, जिससे समस्त सृष्टि का मार्गदर्शन हुआ। करोड़ों शासकों के स्वामी, लाखों संतों के अगुआ। दैवीय सहायता से, अपने राष्ट्र के रक्षक। पाँचों समय की नमाज़ों में, वे मौन होकर शांति की दुआ करते हैं। उनका हृदय सच्चे परमेश्वर की ओर था, वे गरीबों के लिए प्रेरणा जगाते हैं। उन्हें विपत्तियों से बचाते हैं, अदृश्य को देखने वाले। आत्माओं को ऊपर उठाने वाले, पापों से मुक्ति दिलाने वाले। समस्त संसार पर दया करने वाले, जिनका मार्ग सभी युगों में सर्वोच्च है। अज्ञान को त्यागकर एक की ओर लौटो – यही धर्म है जिसे इस्लाम कहा जाता है। मुहम्मद, सबसे सम्माननीय संत हैं।"

चालीस नबवी नैतिक एवं मानवीय अहादीस

[अनुवादक की टिप्पणी: यह अध्याय – परियोजना की स्थापित पद्धति के अनुसार – प्रमाणित अंग्रेज़ी हदीस-रजिस्टर (Meaning-Focused Translation) से हिंदी में अनूदित है, न कि सीधे अरबी से, ताकि सभी भाषाओं में अहादीस का एक समान व सुसंगत भावार्थ सुनिश्चित हो सके।]

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "तुम में सबसे बेहतर वह है जो कुरआन सीखता है और फिर उसे दूसरों को सिखाता है।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "पाँचों दैनिक नमाज़ें, एक जुमे की नमाज़ से दूसरी जुमे की नमाज़ तक, और एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक – इन सबके बीच किए गए गुनाहों को मिटा देती हैं, बशर्ते बड़े गुनाहों से बचा जाए।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "एक उमरा से दूसरे उमरे तक के बीच किए गए गुनाह मिट जाते हैं, और स्वीकृत (मक़बूल) हज़ का बदला जन्नत के सिवा कुछ और नहीं है।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "रिश्ते-नाते जोड़े रखना उम्र बढ़ाता है, और छिपकर दिया गया सदका अल्लाह के क्रोध को शांत कर देता है।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "असली ताक़तवर वह नहीं है जो कुश्ती में दूसरों को पछाड़ दे; असली ताक़तवर वह है जो गुस्से के समय अपने आप पर नियंत्रण रखता है।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "तुम में से कोई तब तक सच्चा ईमान वाला नहीं हो सकता, जब तक वह अपने भाई के लिए वही पसंद न करे जो अपने लिए पसंद करता है।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह तुम्हारी तीन बातों को नापसंद करता है: बेकार की बातचीत, धन को बर्बाद करना, और बहुत ज़्यादा अनावश्यक सवाल पूछना।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "अच्छे चरित्र वाला व्यक्ति उस दर्जे तक पहुँच सकता है जो रात की नमाज़ और रोज़े में लगे रहने वाले व्यक्ति का होता है।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "जो कोई चाहता है कि उसकी रोज़ी में बढ़ोतरी हो और उसकी उम्र लंबी हो, उसे चाहिए कि वह अपने रिश्ते-नाते जोड़े रखे।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह उस बंदे से सचमुच प्रसन्न होता है जो कोई भोजन खाकर उसकी प्रशंसा करता है, या कोई पेय पीकर उसकी प्रशंसा करता है।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें न बताऊँ कि आग पर कौन हराम है – या आग किस पर हराम है? हर उस व्यक्ति पर जो सुलभ, नर्मदिल और सरल स्वभाव का हो।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह का बंदों पर हक़ यह है कि वे केवल उसी की इबादत करें और उसके साथ किसी को साझी न ठहराएँ; और बंदों का अल्लाह पर हक़ यह है कि वह उस व्यक्ति को अज़ाब नहीं देगा जो उसके साथ किसी को साझी नहीं ठहराता।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "नरमी जिस भी चीज़ में शामिल होती है, उसे सुंदर बना देती है, और जिस भी चीज़ से छीन ली जाती है, उसे बदसूरत बना देती है।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "आसानी पैदा करो, कठिनाई मत डालो; खुशखबरी दो, लोगों को दूर मत भगाओ।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "किसी मोमिन को कोई थकान, कोई बीमारी, कोई रोग, कोई ग़म – यहाँ तक कि कोई मामूली चिंता भी – नहीं पहुँचती, मगर यह कि अल्लाह उसके बदले उसके कुछ गुनाह मिटा देता है।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "इंसान के शरीर के हर जोड़ पर, जिस दिन भी सूरज उगे, एक सदका वाजिब है: दो लोगों के बीच न्यायपूर्वक फैसला करना एक सदका है; किसी व्यक्ति को उसकी सवारी पर चढ़ने में मदद करना या उसका सामान उस पर लादना एक सदका है; अच्छी बात कहना एक सदका है; नमाज़ की ओर बढ़ाया गया हर क़दम एक सदका है; और रास्ते से तकलीफ़देह चीज़ हटाना भी एक सदका है।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "मोमिन का मामला कितना अद्भुत है! उसके साथ जो कुछ भी होता है, वह उसके लिए भलाई ही साबित होता है – और यह बात केवल मोमिन के लिए ही सच है। यदि उसे कोई खुशी मिलती है, तो वह शुक्र अदा करता है, और यह उसके लिए अच्छा होता है। और यदि उसे कोई तकलीफ़ पहुँचती है, तो वह सब्र करता है, और यह भी उसके लिए अच्छा होता है।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है, तो उसके सभी कर्म रुक जाते हैं, सिवाय तीन के: एक निरंतर चलने वाला सदका, ऐसा ज्ञान जिससे लोगों को लाभ पहुँचता रहे, या एक नेक संतान जो उसके लिए दुआ करती रहे।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "मुर्दों को बुरा-भला मत कहो, क्योंकि वे अपने आगे भेजे हुए कर्मों तक पहुँच चुके हैं।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "दो ऐसी नेमतें हैं जिनके मामले में अधिकांश लोग धोखे में रहते हैं: स्वास्थ्य और खाली समय।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिए एक इमारत के समान है, जिसके हिस्से एक-दूसरे को सहारा देते हैं।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "तुम मोमिनों को आपसी दया, प्रेम और करुणा में एक ही शरीर की तरह पाओगे: जब उसका एक अंग तकलीफ़ में होता है, तो पूरा शरीर उसके साथ जागकर और बुखार में तड़पकर उसका साथ देता है।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "सबसे उत्तम नेकी यह है कि व्यक्ति अपने पिता के गुज़र जाने के बाद भी उन लोगों से रिश्ता बनाए रखे जिनसे उसके पिता प्रेम करते थे।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "मृतक के साथ तीन चीज़ें जाती हैं – उसका परिवार, उसका धन, और उसके कर्म। इनमें से दो वापस लौट आते हैं – उसका परिवार और उसका धन – और केवल उसके कर्म उसके साथ रह जाते हैं।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "आगे निकल गए वे लोग जो अल्लाह का ज़िक्र करने में अकेले आगे बढ़ते हैं।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "जहाँ कहीं भी रहो, अल्लाह से डरते रहो। यदि कोई बुराई कर बैठे, तो उसके तुरंत बाद कोई नेकी कर लो – वह उसे मिटा देगी। और लोगों के साथ अच्छे आचरण से पेश आओ।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह फ़रमाता है: 'तीन व्यक्ति हैं जिनका मैं स्वयं क्रियामत के दिन विरोधी बनूँगा – और जिसका मैं विरोधी बन जाऊँ, उसे मैं हरा ही चुका होता हूँ: वह व्यक्ति जिसने मेरे नाम पर वादा किया फिर उसे तोड़ दिया; वह व्यक्ति जिसने किसी आज़ाद इंसान को बेचकर उसकी क़ीमत खा ली; और वह व्यक्ति जिसने किसी मज़दूर को काम पर रखा, उससे पूरा काम लिया, लेकिन उसकी मज़दूरी नहीं दी।'"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "सभी कर्मों का फ़ैसला नीयतों के आधार पर होता है, और हर व्यक्ति को वही मिलता है जिसकी उसने नीयत की। तो जिसने अल्लाह और उसके रसूल के लिए हिजरत की, उसकी हिजरत अल्लाह और उसके रसूल के लिए ही मानी जाएगी। और जिसने किसी दुनियावी फ़ायदे के लिए या किसी स्त्री से विवाह करने के लिए हिजरत की, तो उसकी हिजरत उसी चीज़ के लिए मानी जाएगी जिसके लिए उसने वास्तव में हिजरत की।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "वह मोमिन जो कुरआन पढ़ता है, वह "उतरुज्जा" (एक खुशबूदार खट्टे फल) के समान है, जिसकी खुशबू भी अच्छी होती है और स्वाद भी अच्छा; और वह मोमिन जो कुरआन नहीं पढ़ता, वह खजूर के समान है, जिसकी कोई खुशबू नहीं होती लेकिन स्वाद मीठा होता है; और वह मुनाफ़िक़ जो कुरआन पढ़ता है, वह खुशबूदार रैहान (तुलसी-जैसे पौधे) के समान है, जिसकी खुशबू अच्छी होती है लेकिन स्वाद कड़वा होता है; और वह मुनाफ़िक़ जो कुरआन नहीं पढ़ता, वह कड़वी तुम्बी के समान है, जिसकी न कोई खुशबू होती है और न ही उसका स्वाद अच्छा होता है।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "किसी भी नेक काम को छोटा मत समझो, चाहे वह अपने भाई से खिले हुए, मुस्कुराते चेहरे के साथ मिलना ही क्यों न हो।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "जिस व्यक्ति में ये चार आदतें हों, वह पूरा मुनाफ़िक़ है, और जिसमें इनमें से एक भी आदत हो, उसमें तब तक निफ़ाक़ का एक अंश मौजूद रहता है जब तक वह उसे न छोड़ दे: जब बात करे तो झूठ बोले, जब वादा करे तो तोड़ दे, जब झगड़ा करे तो बेशर्मी पर उतर आए, और जब कोई प्रतिज्ञा करे तो उसे तोड़ दे।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "जो कोई मुझे अपने दो जबड़ों के बीच – यानी अपनी ज़बान – और अपनी दोनों टाँगों के बीच – यानी अपने गुप्तांग – की ज़मानत दे, मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूँ।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "नेकी अच्छे चरित्र का नाम है, और गुनाह वह है जो तुम्हारे दिल में खटकता है और जिसे तुम नहीं चाहते कि लोग जान लें।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "आदम की हर संतान ग़लती करने वाली है, और ग़लती करने वालों में सबसे बेहतर वे हैं जो बार-बार तौबा करते रहते हैं।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "जो कोई किसी भलाई का रास्ता दिखाए, उसे उतना ही सवाब मिलता है जितना उस भलाई को करने वाले को मिलता है।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "हर धर्म की एक विशिष्ट पहचान वाली खूबी होती है, और इस्लाम की विशिष्ट खूबी हया (शर्म-ओ-हया) है।"

नबी मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "किसी भी क्रौम में अश्लीलता कभी इतनी खुलकर नहीं फैलती कि वे उसे सरेआम करने लगे, मगर यह कि उनमें ऐसी महामारियाँ और बीमारियाँ फैल जाती हैं जो उनके पूर्वजों में पहले कभी नहीं थीं। और वे नाप-तौल में कभी कमी नहीं करते, मगर यह कि उन्हें अकाल, कठिन आजीविका और अत्याचारी शासकों की गिरफ़्त में ले लिया जाता है। और वे अपने धन की ज़कात रोकते नहीं, मगर यह कि आसमान से बारिश रोक दी जाती है, और यदि पशु न होते तो उन पर बारिश ही न होती। और वे अल्लाह और उसके

रसूल के साथ किए गए अहद को कभी नहीं तोड़ते, मगर यह कि अल्लाह उन पर किसी बाहरी दुश्मन को थोप देता है, जो उनके हाथ में मौजूद कुछ चीज़ें छीन लेता है। और जब भी उनके नेता अल्लाह की किताब के अनुसार फैसला नहीं करते और उसमें से मनचाहा चुनते हैं, तो अल्लाह उन्हें आपस में ही लड़ा देता है।"

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "हसद (ईर्ष्या) केवल दो मामलों में की जा सकती है: एक वह व्यक्ति जिसे अल्लाह ने धन दिया हो और वह उसे हक़ (सच्चाई) के मार्ग में खर्च करने में लगा दे, और दूसरा वह व्यक्ति जिसे अल्लाह ने हिकमत (बुद्धिमत्ता) दी हो और वह उसके अनुसार फैसला करता और उसे दूसरों को सिखाता हो।"

और चूँकि इस्लाम हर काल और स्थान में शिक्षा को प्रोत्साहित करता है, तथा ज्ञान और हिकमत की खोज करने व उनमें वृद्धि करने के लिए प्रेरित करता है, और जहाँ कहीं भी ये मिलें वहाँ से उनके प्रचुर स्रोत से लाभ उठाने के लिए प्रेरित करता है – क्योंकि ये दोनों मोमिन की खोई हुई वस्तु हैं, और वह जहाँ कहीं भी इन्हें पाए, वह उनका सबसे बड़ा हक़दार है – इसलिए इस्लामी इतिहास लंबी शताब्दियों के दौरान विज्ञान की विभिन्न शाखाओं और ज्ञान-कलाओं में हजारों वैज्ञानिकों, विद्वानों और प्रतिभाशाली व्यक्तियों से भरा रहा है, जिन्हें अपने-अपने क्षेत्रों में अग्रता, सर्वाधिक ज्ञान और प्रतिभा प्राप्त थी। लंबा होने के डर से मैं यहाँ केवल सैद्धांतिक और व्यावहारिक विज्ञानों के कुछ थोड़े-से विद्वानों का उल्लेख करने पर ही संतोष करता हूँ; और जहाँ तक मानविकी – साहित्य, कविता, भाषा, व्याकरण, रूपशास्त्र, अलंकारशास्त्र, इतिहास, शिक्षाशास्त्र, हदीस-विज्ञान, फ़िक्ह और उसके उसूल, तफ़सीर, तर्कशास्त्र, तथा सुलेख-कला, अलंकरण व चित्रांकन आदि – के प्रतिभाशाली व्यक्तियों की बात है, तो उनकी सूची के लिए बड़े-बड़े खंडों की आवश्यकता होगी।

इस्लामी इतिहास के कुछ प्रतिभाशाली वैज्ञानिक और विद्वान समाजशास्त्र के संस्थापक "इब्न खल्दून"

समाजशास्त्र के संस्थापक वली अद्-दीन अब्दुर्रहमान इब्न खल्दून अल-खज़रमी, तूनिस में सन् 732 हिजरी में जन्मे। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना "अल-इबर फ़ी दीवान अल-मुबतदा वल-खबर" है, जिसे "तारीख़ इब्न खल्दून" के नाम से जाना जाता है, और इसकी भूमिका – "मुक़द्दिमा इब्न खल्दून" – समाजशास्त्र, मानव-अवस्थाओं तथा राष्ट्रों के उत्थान-पतन व सभ्यता-निर्माण के कारणों पर पहला व्यापक वैश्विक अध्ययन होने के नाते विश्वप्रसिद्ध हुई। इब्न खल्दून को समाजशास्त्र का संस्थापक माना जाता है, जो ऑगस्ट कॉम्त, एमिल दुर्खाइम, हर्बर्ट स्पेंसर और अर्नोल्ड टॉयनबी से भी पहले आते हैं। उनका निधन सन् 808 हिजरी में हुआ।

उनकी उक्तियों में से: "पराजित व्यक्ति सदैव विजेता के प्रतीकों, वेश-भूषा, मतों तथा अन्य आदतों-रिवाजों की नक़ल करने में लगा रहता है; इसका कारण यह है कि मन सदैव उसी में

पूर्णता का विश्वास कर लेता है जिसने उसे पराजित कर दिया हो।" "इतिहास बाहरी तौर पर केवल सूचना है, लेकिन भीतर से यह विचार और सत्यापन है।" "जब राज्य पतन की ओर बढ़ते हैं, तो ज्योतिषी, ठग, स्वयंभू धर्मशास्त्री और अवसरवादी बढ़ जाते हैं, अफवाहें फैल जाती हैं, बहसें लंबी हो जाती हैं, दूरदृष्टि कम हो जाती है और विचार भ्रमित हो जाते हैं।" "जब कबीले की सत्ता मज़बूत होती है तो राज्य की सत्ता कमज़ोर पड़ जाती है, और जब राज्य की सत्ता मज़बूत होती है तो कबीले की सत्ता कमज़ोर पड़ जाती है।"

फुफ्फुसीय रक्त-संचरण के खोजकर्ता "इब्न अन-नफ़ीस"

चिकित्सक व दार्शनिक अबुल-हसन अलाउद्दीन अली, जो "इब्न अन-नफ़ीस" के नाम से प्रसिद्ध हैं, दमिश्क में सन् 607 हिजरी में जन्मे। वे मध्यकाल के फ़िज़ियोलॉजिस्ट, शरीर-रचना व अंग-क्रिया विशेषज्ञ माने जाते हैं, और ब्रिटिश चिकित्सक विलियम हार्वे से कई शताब्दियों पहले फुफ्फुसीय (लघु) रक्त-संचरण की खोज करने वाले पहले व्यक्ति। उनकी वैज्ञानिक रचनाओं में "शरह तशरीह अल-क़ानून", "अश्-शामिल फ़िस-सिनाआ अत्-तिब्बिया", और "अर्-रिसाला अल-कामिलिया फ़िस-सीरा अन्-नबविया" शामिल हैं। उनका निधन सन् 687 हिजरी में हुआ।

उनकी उक्तियों में से: "आँख देखने का एक यंत्र मात्र है, स्वयं देखने वाली नहीं है, अन्यथा एक वस्तु दोनों आँखों से दो दिखाई देती; बल्कि इस यंत्र का लाभ मस्तिष्क से आने वाली बोधशक्ति से ही पूरा होता है।" "और हमें सदैव उनकी यह उक्ति याद रखनी चाहिए: जब बुद्धि और उत्साह समान हों, तो किसी भी कला में बाद में आने वाला व्यक्ति पहले आने वाले से बेहतर होता है।"

उभरे हुए अक्षरों के पहले आविष्कारक "ज़ैनुद्दीन अल-आमिदी"

फ़कीह और भाषाविद ज़ैनुद्दीन अबुल-हसन अली अल-आमिदी, बग़दाद में सातवीं हिजरी शताब्दी के मध्य में जन्मे। वे दृष्टिहीन थे, इसलिए उन्होंने दृष्टिहीन लोगों की सहायता के लिए उभरे हुए अक्षर ईजाद किए – यह उपलब्धि फ़्रांसीसी लुई ब्रेल द्वारा सन् 1850 ई. में ब्रेल लिपि की खोज से छह शताब्दियाँ पहले हुई। उन्होंने पुस्तक-विक्रेता के रूप में काम किया और पुस्तकें खरीदने की प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए एक तरीका ईजाद किया – पुस्तक की कीमत को "हिसाब अल-जुम्मल" (अक्षरों की संख्यात्मक गणना पद्धति) के अनुसार उभरे हुए वर्णमाला-अक्षरों में लिखी पर्चियों पर अंकित करके। उनकी प्रमुख रचनाएँ "तआलीक़ फ़िल-फ़िक्कह" और "जवाहिर अत्-तबसीर" हैं। उनका निधन बग़दाद में सन् 712 हिजरी में हुआ।

अस्-सफ़दी ने अपनी पुस्तक "नक्त अल-हिमयान फ़ी नुकत अल-उमयान" में उनके बारे में कहा: "ज़ैनुद्दीन अल-आमिदी अपनी सभी खरीदी हुई पुस्तकों की कीमतें जानते थे, और जब वे किसी निश्चित कीमत पर कोई पुस्तक खरीदते, तो एक हल्के काग़ज़ का टुकड़ा लेकर

उससे एक बारीक बत्ती बनाते और उसे वर्णमाला के एक या अधिक अक्षरों का आकार देते – पुस्तक की कीमत को हिसाब अल-जुम्मल के अनुसार दर्शाने के लिए।"

शिक्षाशास्त्र के संस्थापक "इमाम गज़ाली"

इमाम गज़ाली सन् 1058 ई. में जन्मे; "गज़ाली" उपाधि इसलिए पड़ी क्योंकि उनके पिता उन कातने का काम करते थे। उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तकों में "अल-मुन्किज़ मिन्द-दलाल", "अय्युहल-वलद", "कीमिया-ए-सआदत", "अल-मुस्तस्फ़ा मिन् इल्मिल-उसूल", "शिफ़ाउल-ग़लील फ़िल-क्रियास वत-तअलील", "इल्जामुल-अवाम अन इल्मिल-कलाम", "अत्-तिब्र अल-मसबूक फ़ी नसीहतिल-मुलूक", तथा "एहया उलूमिद्दीन" शामिल हैं। उन्होंने अपनी सबसे प्रसिद्ध कृति "तहाफ़ुतुल-फ़लासिफ़ा" में प्राचीन दर्शनशास्त्र को खारिज कर दिया, जिसकी रचना के कारणों के बारे में उन्होंने कहा: "मैंने प्राचीन दार्शनिकों के विरुद्ध, उनके सिद्धांत के पतन और उनके कथन के अंतर्विरोध को – विशेषकर ईश्वरीय मामलों के संबंध में – उजागर करने के लिए, इस पुस्तक की रचना शुरू की।"

उनकी उक्तियों में से: "धर्म की समस्त भलाइयाँ और नैतिकता के समस्त सद्गुण प्रेम का फल हैं, और जो प्रेम का फल नहीं, वह इच्छाओं का अनुसरण है, जो बुरे आचरण में गिना जाता है।" "नरम शब्द उन दिलों को नरम कर देते हैं जो पत्थरों से भी कठोर हों, और कठोर शब्द उन दिलों को कठोर बना देते हैं जो रेशम से भी अधिक कोमल हों।" सन् 1858 से अब तक दर्जनों प्राच्यविदों और शोधकर्ताओं ने उनकी पुस्तकों का गहन अध्ययन किया है, जिनमें सबसे प्रमुख हैं जर्मन प्राच्यविद गोशे, अमेरिकी मैकडॉनल्ड, हंगेरियन गोल्डज़िहर, फ़्रांसीसी मासिन्यो, और ब्रिटिश विलियम मॉन्टगोमरी वॉट – क्योंकि शिक्षाशास्त्र और वैश्विक आचार-व्यवहार, तथा दार्शनिकों व बातिनी आंदोलनों के विरुद्ध उनके तर्कों में गज़ाली का बहुत बड़ा प्रभाव था।

पहले रोबोट-आविष्कारक "बदीउज़्ज़मान अल-जज़री"

सन् 1136 ई. में "जज़ीरत इब्न उमर" में जन्मे बदीउज़्ज़मान अबुल-इज़्ज़ इब्न इस्माईल अल-जज़री को पहला "रोबोट आविष्कारक" माना जाता है। उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक "सिनाअतुल-हियल" (यांत्रिक युक्तियों का विज्ञान) है, जिसमें उन्होंने 50 यांत्रिक व हाइड्रॉलिक उपकरणों का वर्णन किया, साथ ही उनके चित्र और निर्माण-विधियाँ भी प्रकाशित कीं। अल-जज़री ने जल-घड़ियों और रेत-घड़ियों के प्रकारों का वर्णन किया, जिनमें सबसे प्रसिद्ध "हाथी-घड़ी" है; उन्होंने फ़व्वारे, जल-पंप और उठाने वाली मशीनें भी ईजाद कीं, और वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने विभिन्न पुतलों के माध्यम से स्वचालित रोबोट का आविष्कार किया – जो मनोरंजन के लिए, समय बताने के लिए, या नमाज़ के समय की सूचना देने तथा वुज़ू के दौरान पानी डालने के लिए चलते थे। उनका निधन बग़दाद में सन् 1206 ई. में हुआ।

अंग्रेज़ प्राच्यविद डोनाल्ड हिल ने उनके बारे में कहा: "आधुनिक युग तक हमें विश्व की किसी भी अन्य सभ्यता से ऐसा कोई दस्तावेज़ नहीं मिला, जिसमें अल-जज़री की पुस्तक में मौजूद उपकरणों के निर्माण व संयोजन की विधियों संबंधी इंजीनियरिंग डिज़ाइनों की समृद्धि के समान कुछ हो।" अल-जज़री की पुस्तक "अल-जामिअ बैनल-इल्म वल-अमल अन-नाफ़िअ फ़ी सिनाअतिल-हियल" को बॉस्टन के फ़ाइन आर्ट्स संग्रहालय, फ़्रांस के लूव्र संग्रहालय, तथा ऑक्सफ़र्ड विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में विशेष स्थान प्राप्त है, और इसका दर्जनों जीवंत भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

चिकित्सा-शास्त्र के जनक "अर्-राज़ी"

अबू बक्र मुहम्मद बिन ज़करिया अर्-राज़ी, "रे" (ईरान) में सन् 865 ई. में जन्मे, गणित, खगोल-विज्ञान, चिकित्सा, फ़ार्मेसी और दर्शनशास्त्र में निपुण थे। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने नैदानिक परीक्षण, मनोचिकित्सा, एकल-औषधि चिकित्सा, और शल्य-चिकित्सा के लिए "कैटगट" (आँत के धागे से बने टाँके) ईजाद किए; इतालवी इतिहासकार अल्डो मिलेरी ने उन्हें "अरब चिकित्सकों में सबसे महान" माना। उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक "अल-हावी फ़ी इल्मित-तदावी" है, जो 400 वर्षों तक एक चिकित्सा संदर्भ-ग्रंथ बनी रही; अन्य पुस्तकें: "मन ला यहजुरुहुत-तबीब", "अल-हसबा वल-जदरी", "अल-मन्सूरी फ़ित-तशरीह", और "इन्ना लिल-अब्द ख़ालिकन"। उनका निधन सन् 923 ई. में हुआ।

उनकी उक्तियों में से: "यदि चिकित्सक भोजन के माध्यम से इलाज कर सके, बिना दवाओं के, तो उसने सफलता प्राप्त कर ली।" "जो व्यक्ति कई चिकित्सकों से इलाज कराता है, वह उनमें से हर एक की ग़लती में फँसने के करीब होता है।"

भूगोल-शास्त्र के संस्थापक "अल-इदरीसी"

भूगोल-शास्त्र के संस्थापक मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल-इदरीसी, मोरक्को के शहर सिउता में सन् 1100 ई. में जन्मे। उन्होंने मानचित्रांकन और अक्षांश-रेखाओं को विकसित किया, प्राचीन देशांतर-रेखाओं की पुनः जाँच की, और गणित, ज्यामिति, वनस्पति-विज्ञान, दर्शनशास्त्र, चिकित्सा तथा खगोल-विज्ञान में निपुण थे। नासा ने प्लूटो ग्रह पर, अपने अंतरिक्ष-यान "न्यू होराइज़न्स" द्वारा खींची गई एक पर्वत-श्रृंखला को अल-इदरीसी का नाम दिया। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाएँ "नुज़हतुल-मुश्ताक़ फ़िख़्तिराक़िल-आफ़ाक़", "अल-ममालिक वल-मसालिक", और "अल-जामिअ लिसिफ़ाति अश्तातिन-नबात" हैं। उनका निधन सन् 1166 ई. में हुआ।

वे यात्रा-प्रेमी साहित्यकार थे; उनकी उक्तियों में से: "काश मुझे पता होता कि मेरी क़ब्र कहाँ है... मेरी उम्र परदेस में बर्बाद हो गई। मैंने आँखों की कोई इच्छा अधूरी नहीं छोड़ी... न स्थल पर, न समुद्र में।" [अनुवादक की टिप्पणी: यह पंक्तियाँ भावार्थ के रूप में अनूदित हैं; मूल अरबी काव्य का छंद व तुक अनुवाद में सुरक्षित नहीं रह सकते।]

"हाइड्रोडायनामिक्स" के संस्थापक अल-बीरूनी

अबू रैहान मुहम्मद बिन अहमद अल-बीरूनी, ख्वारज़्म के किसी नगर में सन् 973 ई. में जन्मे। गणित, भौतिकी, खगोल-विज्ञान और भूगोल में निपुण; उन्होंने स्थैतिक भौतिकी की एक शाखा तथा पृथ्वी की त्रिज्या नापने की विधि ईजाद की, घनत्व, विशिष्ट भार और गुरुत्वाकर्षण की गणना की, और "हाइड्रोडायनामिक्स" तथा "तुलनात्मक धर्म-अध्ययन" जैसे विज्ञानों की नींव रखी। अल-बीरूनी की 146 रचनाएँ हैं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध हैं "तहकीक मा लिल-हिन्द", "अत्-तफ़हीम लि-अवाइलि सिनाअतित-तन्जीम", और "अल-आसारुल-बाकिया"। नासा ने उनकी उपलब्धियों के सम्मान में चाँद की सतह पर एक गड्ढे को उनका नाम दिया। उनका निधन सन् 1048 ई. में हुआ।

उनकी उक्तियों में से: "विद्वानों और ज्ञानियों के आचरण का अध्ययन अच्छी परंपराओं को जीवित रखता है और बुरी नवाचारों को समाप्त कर देता है।"

शून्य और बीजगणित के आविष्कारक "अल-ख्वारिज़्मी"

मुहम्मद बिन मूसा अल-ख्वारिज़्मी, ख्वारज़्म में सन् 780 ई. में जन्मे, बग़दाद में "बैतुल-हिकमा" (ज्ञान-भवन) के प्रधान रहे और गणित, खगोल-विज्ञान तथा भूगोल में निपुण थे। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने "बीजगणित" की स्थापना की, और "अल-ख्वारिज़्मियात" (जो बाद में "लॉगरिद्म" में परिवर्तित हुआ) का आविष्कार किया, जिससे आगे चलकर कंप्यूटर विज्ञान का मार्ग प्रशस्त हुआ। अल-ख्वारिज़्मी ने "शून्य" का आविष्कार किया, त्रिकोणमितीय अनुपातों की सारणियाँ बनाई, भौगोलिक मानचित्रांकन को विकसित किया, तथा धूप-घड़ी भी बनाई। उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तकें "अल-मुख्तसर फ़ी हिसाबिल-जब्र वल-मुकाबला" तथा "सूरतुल-अर्ज़" हैं। उनका निधन सन् 850 ई. में हुआ।

उनकी उक्तियों में से: "अनुचित स्थान पर माफ़ी माँगना एक गुनाह है, और भरोसे के मौके पर बनावटीपन एक ऐब है, और बिना ज़रूरत दवा लेना एक बीमारी है, जबकि ज़रूरत के समय वही दवा शिफ़ा है।"

चिकित्सक-दार्शनिक इब्न सीना

दार्शनिक अबू अली अल-हुसैन बिन अब्दुल्लाह इब्न सीना, बुखारा के निकट अफ़शाना गाँव में सन् 980 ई. में जन्मे। उन्होंने अंग्रेज़ खगोलशास्त्री जेरेमिया हॉरॉक्स से पहले शुक्र ग्रह के पारगमन का अवलोकन किया, तारों के निर्देशांक मापने के लिए एक यंत्र ईजाद किया, दवा-निष्कर्षण की विधियों, भूकंपों की उत्पत्ति, प्रदूषण की खोज, स्त्री-रोगों तथा वनस्पति-शरीर-रचना पर भी विस्तार से काम किया। गूगल प्रतिवर्ष इब्न सीना के जन्मदिवस पर उत्सव मनाता है, जिन्हें "मुसलमानों का अरस्तू" कहा गया। उनकी 240 से अधिक रचनाएँ हैं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध हैं "अल-कानून फ़ित-तिब्ब", "अश्-शिफ़ा", और "इब्तालु अहकामिन-नुजूम"। उनका निधन सन् 1037 ई. में हुआ।

बेल्जियन इतिहासकार जॉर्ज सार्टन ने उनके बारे में कहा: "इब्न सीना एक महान बौद्धिक परिघटना है, जिसकी बुद्धिमत्ता और बौद्धिक उत्पादन के समकक्ष शायद ही कोई मिले, जो मध्यकालीन दर्शनशास्त्र में एक संदर्भ-ग्रंथ माना जाता है।" उनकी उक्तियों में से: "दार्शनिक भी बाकी लोगों की तरह हैं, कभी सही होते हैं तो कभी गलत।" "वहम आधी बीमारी है, और मन की शांति आधी दवा है, और सब इलाज का पहला कदम है।" "अधिक खाने से बचो, क्योंकि अधिकांश बीमारियाँ भोजन की अधिकता से ही उत्पन्न होती हैं।" "सत्य की सहायता करना सम्मान है, और असत्य की सहायता करना फ़िज़ूलखर्ची है।"

यात्रियों और खोजकर्ताओं के राजकुमार "इब्न बतूता"

प्रसिद्ध यात्री मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद अल-लवाती, मोरक्को के शहर तांजियर में सन् 1304 ई. में जन्मे। उन्होंने बहुत कम उम्र में अपनी खोज-यात्राएँ शुरू कीं, जो 30 वर्षों तक चलीं, जिनमें उन्होंने 1,20,000 किलोमीटर की दूरी तय की और 44 देशों की यात्रा की, यहाँ तक कि उन्हें "मुस्लिम यात्रियों का राजकुमार" कहा जाने लगा। वे कवि, लेखक और क्राज़ी भी थे। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना "तुहफ़तुन-नुज़्ज़ार फ़ी ग़राइबिल-अम्सार व अजाइबिल-अस्फ़ार" है, जिसे "रिहलत इब्न बतूता" के नाम से जाना जाता है, और जिसे विश्व के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक व भौगोलिक स्रोतों में से एक माना जाता है। उनका निधन सन् 1369 ई. में हुआ।

उनकी उक्तियों में से: "अल्लाह की रहमत और उसकी क्षमाशीलता में, तथा जन्नत में प्रवेश की आकांक्षा प्राप्त करने में, आशा प्रबल है।" "श्रेष्ठता बुद्धि और शिष्टाचार से होती है, न कि वंश और कुल से।"

प्रख्यात वनस्पति-वैज्ञानिक व फ़ार्मासिस्ट इब्न अल-बैतार

ज़ियाउद्दीन अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह, जो "इब्न अल-बैतार" के नाम से प्रसिद्ध हैं, मलागा (स्पेन) में सन् 1197 ई. में जन्मे। उन्हें प्रकाश-चिकित्सा और रासायनिक चिकित्सा का अग्रदूत, तथा इतिहास के सबसे प्रसिद्ध वनस्पति व फ़ार्मसी वैज्ञानिकों में से एक माना जाता है। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना "अल-जामिअ लि-मुफ़रदातिल-अदविया वल-अरिज़िया" है, जिसमें 1400 औषधियों का वर्णन है। अन्य रचनाओं में "अल-मुग़नी फ़िल-अदविया अल-मुफ़रदा", "रिसाला फ़ी तदाविस-सुमूम", और "मीज़ानुत-तबीब" शामिल हैं; जर्मन प्राच्यविद फ़ोन ज़ोन्थाइमर तथा फ़्रांसीसी चिकित्सक लूसियन लक्लर्क उनसे प्रभावित हुए। उनका निधन दमिश्क में सन् 1248 ई. में हुआ।

उनकी उक्तियों में से: "प्राचीन विद्वानों के कार्य विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए न पर्याप्त हैं और न ही पूर्णतः स्पष्ट, इसलिए उन्हें सुधारा और पूर्ण किया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थी उनसे अधिकतम लाभ उठा सकें।"

दंत-चिकित्सा और मुख-जबड़ा शल्य-चिकित्सा के अग्रदूत "अज़्ज़हरावी"

अबुल-कासिम खलफ़ बिन अब्बास अज़्ज़हरावी, कुर्तुबा (कोर्दोबा) के निकट सन् 936 ई. में जन्मे। वे शल्य-चिकित्सा के विशेषज्ञ थे और उन्होंने इसके कई महत्वपूर्ण उपकरण ईजाद किए; उन्हें दंत-चिकित्सा और जबड़ों की शल्य-चिकित्सा में भी महारत हासिल थी। उन्हें "हीमोफीलिया" रोग की आनुवंशिक प्रकृति की खोज करने वाला पहला व्यक्ति माना जाता है, कैथेटर प्रक्रिया का वर्णन करने वाले पहले व्यक्ति, तथा रेशम के धागों से धमनियाँ बाँधकर रक्तस्राव रोकने की विधि खोजने वाले पहले व्यक्ति। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना "अत-तस्रीफ़ लिमन अजिज़ अनित-तालीफ़" है, जो यूरोप में पाँच शताब्दियों तक चिकित्सा का संदर्भ-ग्रंथ बनी रही। उनका निधन सन् 1013 ई. में हुआ।

उनकी उक्तियों में से: "चिकित्सा-विद्या एक लंबी कला है, और इसके अभ्यासकर्ता को इससे पहले शरीर-रचना विज्ञान में अभ्यास करना चाहिए, क्योंकि जो व्यक्ति इससे परिचित नहीं है, वह अवश्य ही ऐसी ग़लती करेगा जिससे लोगों की जान जा सकती है।"

कैमरे के पहले आविष्कारक "इब्न अल-हैसम"

प्रकाशिकी-विज्ञान के संस्थापक अबू अली अल-हसन इब्न अल-हैसम, बसरा में सन् 965 ई. में जन्मे। शरीर-रचना, भौतिकी और नेत्र-चिकित्सा में निपुण इब्न अल-हैसम को यूरोप में "टॉलेमी द्वितीय" और "भौतिकशास्त्री" की उपाधि दी गई। उन्होंने दृष्टि-भ्रम की अवधारणाओं तथा "चाँद के भ्रम" को समाप्त किया, प्रकाश-विज्ञान, दर्पणों के उपयोग, आपतन व अपवर्तन कोणों, तथा लेंसों पर शोध किया, और "काले बक्से" (पिनहोल कैमरा) का प्रयोग किया, जिसने आगे चलकर कैमरे के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। उनकी 200 से अधिक पुस्तकें हैं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध "अल-मनाज़िर" है; अंग्रेज़ दार्शनिक रोजर बेकन तथा जर्मन खगोलशास्त्री योहानेस केप्लर उनसे प्रभावित हुए। उनका निधन सन् 1040 ई. में हुआ।

उनकी उक्तियों में से: "सत्य को अस्पष्टता घेरे रहती है, और सत्य की खोज स्वयं में एक कठिन कार्य है, और इसका मार्ग दुर्गम है।"

लागरी चलबी — पहले रॉकेट और पैराशूट की कहानी

एक मुस्लिम भौतिकशास्त्री जिनका नाम हसन चलबी था, जिन्हें "लागरी" की उपाधि दी गई। उन्होंने सन् 1633 ई. में दो अद्भुत प्रयोग किए: पहला, किसी मनुष्य को लेकर उड़ने वाला पहला रॉकेट लॉन्च करना, और दूसरा, इतिहास का पहला पैराशूट-अवतरण परीक्षण। यह रॉकेट बारूद के मिश्रण से भरा एक लंबा बेलनाकार यंत्र था, जिसमें लागरी 275 मीटर की ऊँचाई तक उड़े, इससे पहले कि वे बारूद खत्म होने के क्षण, अपने द्वारा बनाए गए एक चील के पंखों जैसे पैराशूट के सहारे बोस्फोरस जलडमरूमध्य के पानी में सफलतापूर्वक उतरें। उनका यह अग्रणी प्रयोग अंतरिक्ष की ओर उड़ान भरने का पहला दर्ज मानवीय प्रयास माना जाता है।

यात्री और खोजकर्ता "औलिया चलबी"

"औलिया चलबी बिन दरवेश मुहम्मद आगा", जिनका जन्म सन् 1611 ई. में हुआ। उन्हें "तुर्क इब्न बतूता" की उपाधि दी गई, क्योंकि उन्होंने तीन महाद्वीपों में 44 वर्ष यात्रा में बिताए, ताकि वे जो कुछ भी सामाजिक स्थितियों, आर्थिक परिस्थितियों, विरासत, लोक-संस्कृति और भौगोलिक प्रकृति के बारे में देखें, उसे लिपिबद्ध कर सकें। यूनेस्को ने पहले उनके जन्म की 400वीं वर्षगांठ का उत्सव मनाया था; वे साहित्यकार और विद्वान थे, और सुलेख-कला में निपुण थे तथा तिलावत व तजवीद के नियमों में पारंगत थे। उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक "सियाहतनामा" (यात्रा-साहित्य) है, जो दस खंडों में है और जर्मन, फ्रांसीसी, अंग्रेजी व रूसी भाषाओं में अनूदित हो चुकी है। उनका निधन सन् 1684 ई. में हुआ।

समुद्री मानचित्रकार "अहमद पीरी"

नौसेना कप्तान "अहमद मुहीउद्दीन पीरी", जिनका जन्म सन् 1470 ई. में हुआ। वे विश्व के सबसे प्रसिद्ध समुद्री मानचित्र व एटलस के रचयिता हैं, जो उन्हीं के नाम से जाना जाता है, और जो खोजकर्ता कोलंबस व वास्को दा गामा से पहले ही नई दुनिया को दर्शाता है। सबसे प्रमुख रचना "किताब अल-बहरिय्या" है, जिसमें 31 मानचित्र शामिल हैं। उन्होंने विभिन्न प्रकार के समुद्र-तटों, द्वीपों, जलमार्गों, जलडमरूमध्यों तथा तूफानों का सटीक वर्णन प्रस्तुत किया, दिशासूचक-यंत्र के उपयोग की विधियाँ तथा नौवहन में तारा-मानचित्र के प्रयोग को समझाया, और वे अमेज़न नदी व उसकी शाखाओं का मानचित्र बनाने वाले पहले व्यक्ति माने जाते हैं। उनका निधन सन् 1555 ई. में हुआ।

मुक्त-ग्लाइडर उड़ान के अग्रदूत "हज़ारफ़न चलबी"

मुस्लिम विद्वान हज़ारफ़न अहमद चलबी सत्रहवीं शताब्दी में जीवित रहे, और उन्हें "हज़ार कलाओं के स्वामी" की उपाधि दी गई। उन्हें हवा में लगभग 3358 मीटर की दूरी तय करने वाला पहला मनुष्य माना जाता है। उन्होंने सन् 1632 ई. में अपने द्वारा बनाए गए पंखों के सहारे बोस्फोरस जलडमरूमध्य के ऊपर से ऊँची उड़ान भरी, "गलाता टावर" से "उस्कुदार" क्षेत्र की ओर, कई छोटे परंतु सफल प्रयासों के बाद जो उनके इस अंतिम प्रयोग से पहले हुए थे। इस सफल उड़ान-प्रयोग के बाद "हज़ारफ़न" इतिहास में आधिकारिक रूप से पहले मुक्त-ग्लाइडर उड़ान अग्रदूत बन गए।

विश्वकोश-ग्रंथसूचीकार "हाजी खलीफ़ा"

विद्वान मुस्तफ़ा बिन अब्दुल्लाह, जो "हाजी खलीफ़ा" और "कातिब चलबी" के नाम से प्रसिद्ध हैं, सन् 1609 ई. में जन्मे। सबसे प्रसिद्ध पुस्तक "कश्फ़ुज़-जुनून अन असामिल-कुतुब वल-फ़ुनून" है, जिसमें 18,000 शीर्षक हैं, और जिसकी रचना में उन्होंने बीस वर्ष लगाए। उनकी अन्य पुस्तकों में "तकवीमुत-तवारीख़", "तुहफ़तुल-अख्यार फ़िल-हिकम वल-अम्साल वल-अशआर", तथा "तुहफ़तुल-किबार फ़ी अस्फ़ारिल-बिहार" शामिल हैं, जिसका

समापन उन्होंने जहाज़ों के कप्तानों व नाविकों के लिए 40 स्वर्णिम नसीहतों के साथ किया। जर्मन प्राच्यविद् फ्रांज़ बाबिंगर ने उन्हें "सबसे बड़ा मुस्लिम विश्वकोश-लेखक" करार दिया। उनका निधन सन् 1657 ई. में हुआ।

डॉक्टर अब्दुर-राज़ी मुहम्मद ने अपनी पुस्तक "माज़ा युरीदुल-गर्ब मिनल-कुरआन" (पश्चिम कुरआन से क्या चाहता है) में एक सुंदर बात कही: "पवित्र कुरआन सबसे अधिक विज्ञान का उत्सव मनाने वाला धर्मग्रंथ है, जहाँ इसमें 'इल्म' (ज्ञान) शब्द और उसके व्युत्पन्न रूप 823 बार से अधिक आए हैं, क्योंकि कुरआन में ज्ञान उन साधनों में से एक है जो अल्लाह ने मनुष्य को पृथ्वी पर उत्तराधिकार (खिलाफ़त) का बोझ उठाने में सहायता के लिए प्रदान किया है, तथा विज्ञान व उसके तथ्यों से संबंधित कुरआनी आयतों की संख्या 750 से अधिक है, जो खगोल-विज्ञान, चिकित्सा, भूविज्ञान, कृषि, वनस्पति-विज्ञान, प्राणि-विज्ञान, अर्थशास्त्र, व्यापार, समुद्र-विज्ञान तथा अन्य कई क्षेत्रों को समाहित करती हैं।"

इस संबंध में कई शोधकर्ता तथा विभिन्न वैज्ञानिक क्षेत्रों में विशेषज्ञ शरीयत के कुछ विद्वान भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि पवित्र कुरआन अनेक वैज्ञानिक जानकारीयों की ओर संकेत करता है, जिनके उदाहरणों में आकाश का निरंतर विस्तार होना – "तथा आकाश को हमने शक्ति के साथ बनाया और निःसंदेह हम निश्चय विस्तार करने वाले हैं" (सूरा अज़्-ज़ारियात, आयत 47) –, ब्रह्मांड का धुएँ की अवस्था से गुज़रना – "फिर उसने आकाश की ओर रुख किया, जबकि वह धुआँ था। तो उसने उससे और धरती से कहा: तुम दोनों आओ, स्वेच्छा से या मजबूरी से। दोनों ने कहा: हम स्वेच्छा से आ गए" (सूरा फुस्सिलत, आयत 11) –, आकाशों का ज़मीन से अलग होना तथा जल का जीवन से संबंध – "क्या जिन लोगों ने कुफ़्र किया यह नहीं देखा कि आकाश और धरती दोनों मिले हुए थे, फिर हमने दोनों को अलग-अलग कर दिया, तथा हमने पानी से हर जीवित चीज़ को बनाया? तो क्या ये लोग ईमान नहीं लाते?" (सूरा अल्-अंबिया, आयत 30) –, तथा ब्रह्मांड का विघटन – "जिस दिन हम आकाश को पंजिका के पन्नों को लपेटने की तरह लपेट देंगे। जिस तरह हमने प्रथम सृष्टि का आरंभ किया, उसी तरह हम उसे लौटाएँगे। यह हमारे ज़िम्मे वादा है। निश्चय हम इसे पूरा करने वाले हैं" (सूरा अल्-अंबिया, आयत 104) – शामिल हैं – जिसने दुनिया भर के वैज्ञानिकों को चकित कर दिया है। साथ ही एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात का ध्यान रखना ज़रूरी है, जैसा कि इस्लामी प्रचारक हमज़ा तज़ोर्त्ज़िस ने इंगित किया: "कुरआनी आयतों को वैज्ञानिक जानकारीयों, सिद्धांतों और परिकल्पनाओं के साथ तुरंत जोड़ना उचित नहीं है, क्योंकि विज्ञान परिवर्तनशील है, जबकि अल्लाह की किताब स्थिर व अपरिवर्तनीय है।"

यात्रा का अंतिम पड़ाव

सन् 2024 में रमज़ान के महीने की शुरुआत के साथ, स्टेम-सेल विशेषज्ञ अमेरिकी प्रोफ़ेसर हेनरी क्लासेन ने – जो नेत्र-रोग विज्ञान (ऑपथल्मोलॉजी) के प्रोफ़ेसर हैं, पिट्सबर्ग

विश्वविद्यालय से न्यूरोसाइंस में डॉक्टरेट प्राप्त हैं, और वंशानुगत अंधेपन के इलाज के लिए स्टेम-सेल दवा के आविष्कारक हैं – अपना इस्लाम धर्म अपनाने की घोषणा की, और अपने जीवन के इस निर्णायक क्षण के बारे में, विशेषकर मक्का मुकर्रमा में उमरा अदा करने और पवित्र महीने का रोज़ा रखने के बाद, कहा: "मैंने अपना नाम बदलकर अब्दुल-हक़ रख लिया है, क्योंकि सत्य और ज्ञान ही अल्लाह तआला तक पहुँचने का मेरा मार्ग बने।" [अनुवादक की टिप्पणी: उपलब्ध सार्वजनिक जीवनी-स्रोतों के अनुसार डॉक्टर क्लासेन कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय (इरविन) से संबद्ध हैं; "हार्वर्ड विश्वविद्यालय" से उनके जुड़ाव की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं हो सकी, अतः यह विवरण मूल स्रोत के अनुसार यहाँ ज्यों-का-त्यों रखा गया है।]

उनसे पहले जर्मन-ऑस्ट्रियाई मूल के यूरोप के पूर्व मिश्रित मार्शल आर्ट्स (MMA) चैंपियन विलहेम आउट ने सन् 2020 में अपने इंस्टाग्राम खाते पर अपने इस्लाम अपनाने के कारणों के बारे में लिखा: "मैं वर्षों से इस्लाम के बारे में पढ़ रहा था, और मुझे कोरोना वायरस के कारण लगाए गए करंटीन की अवधि के दौरान इस पर विचार करने के लिए पर्याप्त समय मिला, इससे पहले कि मैं पूरी समझ के साथ अपना फैसला ले सकूँ।"

इसी तरह ब्रिटिश गायिका, अभिनेत्री, पटकथा-लेखिका और निर्देशिका आइशा रोज़ाली ने, जो एक धर्म-निरपेक्ष परिवार में पली-बढ़ीं, सन् 2019 में तुर्की में इस्लाम से परिचित होने के बाद, गंभीर अध्ययन और कुरआन करीम के अंग्रेज़ी अनुवाद के व्यापक अध्ययन के बाद इसे अपनाने का निर्णय लिया। रोज़ाली इस बारे में कहती हैं: "मुझे ऐसा महसूस होता है मानो मैं अपने इस्लाम अपनाने के बाद फिर से जन्मी हूँ, और मैं अपने यूट्यूब चैनल के माध्यम से उन कई लोगों की कहानियाँ साझा करूँगी जिन्होंने इस्लाम अपनाया, ताकि उनकी सहायता हो सके।"

और चूँकि एक बात दूसरी को याद दिला देती है, तो सन् 2020 में अमेरिका की राइस विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र के प्रोफ़ेसर, डॉक्टर क्रेग कॉन्सिडाइन – जो एक कैथोलिक ईसाई शोधकर्ता हैं और तुलनात्मक धर्म-अध्ययन में विशेषज्ञ हैं – ने पत्रिका "न्यूज़वीक" में जो लिखा, उसका उल्लेख करना आवश्यक है: "इस्लाम के नबी मानव इतिहास के पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने नस्लवाद और दासता का विरोध किया, और मैं उनके व्यक्तित्व, मानवता और उनकी उक्तियों से प्रभावित हूँ, और मैं अक्सर अपने लेखों में नबवी अहादीस का उल्लेख करता हूँ तथा संक्रामक बीमारियों का सामना करने में उनकी शिक्षाओं की याद दिलाता हूँ।"

डॉक्टर क्रेग कॉन्सिडाइन ने अपने लेख में ही नहीं, बल्कि अपनी पुस्तक "मुहम्मद की मानवता: एक ईसाई दृष्टिकोण" में भी इस बात का उल्लेख किया कि नबी ﷺ ने नजरान के ईसाई प्रतिनिधिमंडल को – जिसके प्रमुख उनके बिशप अबू हारिसा बिन अल्क़मा थे, और

जो 60 या 80 ईसाई विद्वानों पर आधारित था – अपनी मस्जिद-ए-नबवी में नमाज़ अदा करने की अनुमति दी थी, वहीं आपने ﷺ सन् 622 ई. में मदीना मुनव्वरा के मीसाक (चार्टर) के माध्यम से यहूदियों को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की, और आपने ﷺ सातवीं शताब्दी ईस्वी में स्त्री को ऐसे अधिकार और विशेषाधिकार प्रदान किए जो उस समय विश्व की अन्य महिलाओं को प्राप्त नहीं थे, जो वास्तव में एक सामाजिक क्रांति थी। और जहाँ तक इस्लाम द्वारा ज्ञान-प्राप्ति को प्रोत्साहित करने की बात है, तो इसके फलों में से एक सिसिली था – जो अंदलुस का ही एक भाग था – जिसकी यूरोप में ज्ञान पहुँचाने में सबसे बड़ी भूमिका रही!

स्रोत-सूची (सन्दर्भ ग्रंथ-सूची)

दुनिया का अंत – क्रियामत की छोटी और बड़ी निशानियाँ (नहायतुल-आलम - अश्रातुस्साआ अस्-सुगरा वल-कुबरा) – मुहम्मद अब्दुर्रहमान अल-अरीफी – दार अत्-तदमुरिय्या, रियाद – प्रथम संस्करण – 2010।

कुरआन और सुन्नत की प्रेरणा से (मिन वहियल-कुरआन वस्सुन्नह) – मुहम्मद सईद बकर – जमईयतुल-मुहाफ़ज़ा अलल-कुरआनिल-करीम, अम्मान – प्रथम संस्करण – 2009।

अमेरिकी महाद्वीप में इस्लाम और मुसलमान (अल-इस्लाम वल-मुस्लिमून फ़िल-कार्तिल-अमरीकिय्या) – डॉ. मुहम्मद यूसुफ़ अश-शवारबी – दार अल-कलम, काहिरा – 1962।

नबवी सीरत – घटनाएँ और आँकड़े (अस्-सीरतुन-नबविय्या - अहदास व अरक़ाम) – हामिद अल-फ़लाही – दार अस-सलाम, दमिश्क – 2009।

पश्चाताप करने वाले के आँसू – भाग एक (दुमूज़' ताइबा - अल-जुज़'उल-अव्वल) – यूसुफ़ अल-हाज्ज अहमद – मकतबा इब्न हजर, दमिश्क – प्रथम संस्करण – 2009।

मैं मुसलमान कैसे बना (कैफ़ अस्लमत) – अनुवाद: हाला सलाहुद्दीन अल-लूलू – प्रथम संस्करण – दार अल-फ़िक्र, दमिश्क – 2006।

मैं मुसलमान क्यों बना (लिमाज़ा अस्लमत) – मुहम्मद रशीद अल-उवैद – दार इक़रा, कुवैत – प्रथम संस्करण – 2008।

मुस्तफ़ा ﷺ से प्रेम: पूर्वजों की तत्परता और परवर्तियों की उपेक्षा के बीच (हुब्बुल-मुस्तफ़ा बैन हिर्सिस्सलफ़ व तफ़्रीतिल-ख़लफ़) – इस्माईल अस्-सय्यद इस्माईल – प्रथम संस्करण – दार अल-अंदलुस अल-जदीदा, काहिरा – 2007।

बुर्दतुल-मदीह, तत्पश्चात क़सीदा अल-मुज़रिय्या तथा क़सीदा अल-मुहम्मदिय्या, इमाम शरफ़ुद्दीन अल-बूसीरी की रचनाएँ (बुर्दतुल-मदीह व यलीहा अल-क़सीदतुल-मुज़रिय्या वल-क़सीदतुल-मुहम्मदिय्या) – बग़दाद – 1977।

पुस्तक "सिराजुताइबीन" (पश्चाताप करने वालों का दीपक) – अहमद अल-हाज्ज – प्रथम संस्करण – मतबआ अनवार दिजला, बग़दाद – 2010।

दीवान-ए-वलीद अल-आज़मी – संपूर्ण काव्य-रचनाएँ (दीवान वलीद अल-आज़मी - अल-आमालुश-शिअरिय्यतुल-कामिला) – तृतीय संस्करण – दार अल-बशीर, जददा – 2004।

अश्-शमाइलुल-मुहम्मदिय्या (नबी ﷺ के गुण-लक्षण) – मुहम्मद बिन ईसा अत्-तिर्मिज़ी – संपादन: अब्दुल-मजीद तुमा अल-हलबी – दार अल-मारिफ़ा – सातवाँ संस्करण – बैरुत – 2007।

मुहम्मद ﷺ बाइबिल में (मुहम्मद फ़िल-किताबिल-मुकद्दस) – प्रोफ़ेसर अब्दुल-अहद दाऊद – अनुवाद: फ़हमी म. शामा – क़तर – 1984।

नुबुव्वत (पैग़म्बरी) पर एक दृष्टि (नज़रात फ़िन-नुबुव्वा) – सलाहुद्दीन मजीद – मकतबा अल-कुद्स, बग़दाद – 1976।

इस्लाम और प्राच्यविदों के संदेह-आरोप (अल-इस्लाम व शुबुहातुल-मुस्तश्रीकीन) – फ़ुआद काज़िम अल-मुक़दादी – मजमा अस-सक़लैन, बग़दाद – 2005।

नबी ﷺ का जन्म (मौलिदुन्नबी) – यूनुस इब्राहीम अस-समर्राई – मकतबा अश-शर्क अल-जदीद, बग़दाद – 1988।

पश्चिम कुरआन से क्या चाहता है (माज़ा युरीदुल-ग़र्ब मिनल-कुरआन) – डॉ. अब्दुराज़ी मुहम्मद – किताबुल-बयान क्रमांक 72 – प्रथम संस्करण – 2006।

कुरआन वालों के आदाब (आदाबु अहलिल-कुरआन) – प्रो. अहमद ख़ालिद शुक्रि – जमईयतुल-मुहाफ़ज़ा अलल-कुरआनिल-करीम – द्वितीय संस्करण – अम्मान – 2009।

अरब विरासत के अध्ययन में प्राच्यवाद का विकास (ततव्वुरुल-इस्तिश्राक़ फ़ी दिरासतित-तुरासिल-अरबी) – डॉ. अब्दुल-जब्बार नाजी – अल-मौसूआ अस-सगीरा क्रमांक 85 – दार अल-जाहिज़, बग़दाद – 1981।

प्राच्यवादी आंदोलन: इसके उद्देश्य और लक्ष्य (अल-हरकतुल-इस्तिश्राक़िय्या मरामीहा व अग़ाज़ुहा) – डॉ. रशीद अल-उबैदी – अनवार दिजला, बग़दाद – 2003।

धर्मयुद्धों (क्रूसेड) की प्रकृति (माहिय्यतुल-हुरुबिस-सलीबिय्या) – डॉ. कासिम अब्दा जासिम – सिलसिला आलमुल-मारिफ़ा क्रमांक 149 – कुवैत – 1990।

रसूल ﷺ की नियुक्ति और जन्म (बिअसतुरसूल व मौलिदुह) – मुहम्मद बिन उसैमीन – संकलन व संपादन: अरफ़ात बिन सलीम हसूना – मकतबा मुसअब बिन उमैर अल-इस्लामिय्या, बैरुत – 2004।

ऐ मुसलमान! तेरी अक़ीदा (अक़ीदतु क अय्युहल-मुस्लिम) – डॉ. अब्दुल-अलीम अस-सादी – प्रथम संस्करण – अनबार – 1984।

हज में नबी ﷺ की स्थितियाँ (अहवालुन्नबी फ़िल-हज्ज) – फ़ैसल अल-बादानी – सिलसिला किताबुल-बयान क्रमांक 35 – रियाद – 2000।

रियाज़ुस्सालिहीन मिन कलामि सैयिदिल-मुरसलीन (नेकों के बाग़, रसूलों के सरदार की वाणी से) – इमाम मुहीउद्दीन अन-नववी – संपादन: मुस्तफ़ा मुहम्मद उमारा – दार अल-फ़िक्र, बैरुत।

पवित्र कुरआन की तिलावत: इसके फ़ज़ाइल, आदाब, और विशेषताएँ (तिलावतुल-कुरआनिल-मजीद - फ़ज़ाइलुहा, आदाबुहा, ख़साइसुहा) – अब्दुल्लाह सिराजुद्दीन – तृतीय संस्करण – जददा – 1402 हिजरी।

कुरआन की रक्षा में (दिफ़ाउन अनिल-कुरआन) – अब्दुर्रहमान बदवी – दार अल-हिलाल – प्रथम संस्करण – काहिरा – 1997।

प्राच्यविदों का विश्वकोश (मौसूअतुल-मुस्तश्रीकीन) – दार अल-इल्म लिल-मलायीन – द्वितीय संस्करण – बैरुत – 1989।

गुनाहों को मिटाने वाले और जन्नत के हक़दार बनाने वाले कार्य (मुकफ़िरातुज़्ज़ुनूब व मूजिबातुल-जन्नह) – अब्दुल-कादिर अल-अरनाऊत – मकतबा इब्न अल-क़य्यिम – प्रथम संस्करण – दमिश्क – 2000।

अरबी दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक तथा आवधिक समाचार-पत्रों व पत्रिकाओं के विभिन्न अंक (अद्दादुन मिनस्सुहुफ़ वल-मजल्लातिल-यौमिय्या वल-उस्बूइय्या वशशहरिय्या वल-फ़स्लिय्या वददौरिय्यतिल-अरबिय्या)।

रसूल मुहम्मद ﷺ का व्यक्तित्व – बौद्धिक संगोष्ठी के शोध-पत्र (शख़िसियतुरसूल मुहम्मद - बुहूसुन्नदवतिल-फ़िक्रिय्या) – इराकी वक्फ़ एवं धार्मिक मामलों के मंत्रालय – दार अश-शुऊन अस-सक्राफ़िय्या, बग़दाद – 1998।

मुसलमान के जन्नत में प्रवेश के 60 कारण (सितूना सबबन लि-दुखूलिल-मुस्लिम अल-जन्नह) – महमूद बिन अल-जमील – मकतबा अस-सफ़ा – प्रथम संस्करण – काहिरा – 2001 [मूल स्रोत में तिथि इस प्रकार अंकित है]।

नबवी अखलाक की सीढ़ी (सुल्लमु अखलाकिन्नुबुव्वह) – महमूद गरीब – प्रथम संस्करण – उमान, सलाला – 2001।

अद्भुत कुरआन (अल-कुरआनुल-मुज्जिहल) – गैरी मिलर – अनुवाद: उर्खान मुहम्मद अली – बगदाद – 2000।

मुहम्मद ﷺ और महानतम चमत्कार (मुहम्मदुन वल-मुजिज़तुल-उज़्मा) – डॉ. तौफ़ीक़ अलवान – रियाद – 2006।

सहीह अहादीस-ए-कुदसिया (सत्यापित इलाही हदीसों) (सहीहुल-अहादीसिल-कुदसिया) – पठन व संशोधन: शेख सुलैमान अज़-ज़ुबैबी, संकलन व क्रमबद्धीकरण: ख़ालिद अस-सरूजी – प्रथम संस्करण – दमिश्क – मकतबा इब्न अल-कय्यिम।

पुस्तक "अल-कबाइर" (बड़े गुनाह) (किताबुल-कबाइर) – इमाम हाफ़िज़ शम्सुद्दीन अज़-ज़हबी – व्याख्या व समीक्षा: अरबी व इस्लामी शोध एवं अध्ययन कार्यालय – दार अल-अर्क़म लिन-नश्र, बैरुत, लेबनान।

जर्मन मीडिया की भूमिका मुसलमानों की रुढ़िबद्ध छवि निर्माण में – पत्रिका "डेर शपीगल" का एक केस-स्टडी (दौरु वसाइलिल-इलामिल-अलमानिय्या फ़ी बिनाइस्सूरतिन्नमतिय्या अनिल-मुस्लिमीन - दिरासतु हालतिन मजल्लति डेर शपीगल अल-अलमानिय्या) – डॉ. हुसाम अस-समर्राई – इराकी हदीस स्कूल प्रकाशन, वैज्ञानिक श्रृंखला (12) – प्रथम संस्करण – दार अस-सालिह, काहिरा, मिस्र – 2024।

कुरआनी अध्ययनों पर जर्मन प्राच्यवाद के प्रभाव (आसारुल-इस्तिश्नाक़िल-अलमानी फ़िद-दिरासातिल-कुरआनिय्या) – प्रो. अमजद यूनुस अल-जनाबी – कुरआनी अध्ययन व्याख्या केंद्र प्रकाशन, अंक (17) – 2015।

नबवी सुन्नत और मानसिक सुरक्षा का निर्माण – समकालीन आत्म-अस्तित्व के लिए एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण (अस्सुन्नतुन्नबविय्या व बिनाउल-अमनिन्नफ़सी - रुयतुन सीकूलूजिय्या लिज़्ज़ातिल-मुआसिरा) – डॉ. हुसाम वलीद अल-बदरी – दार अस-सालिह, काहिरा, मिस्र – 2026।